

प्राकृतग्रन्थपरिषद् ग्रन्थाङ्क ९

सिरिदेववायगविरहयं

## नंदीसुक्तं

सिरिजिणदासगणिमहस्तरविरहयाए चुण्णीए संजुयं

—♦—

संशोधकः सम्पादकः

मुनिपुण्यविजयः

जिनागमरहस्यवेदिजैनाचार्यश्रीमद्विजयानन्दसूरिवर( प्रसिद्धनाम-आभारामजीमहाराज )शिष्यरत्न—

ग्राचीनजैनभाष्टागारोद्धारकप्रबर्तकश्रीमत्कान्तिविजयान्तेवासिनां

श्रीजैनआत्मानन्दप्रन्थमालासम्पादकानां मुनिप्रवरश्रीचतुरविजयानां विनेयः

1354  
१३५४

—○—

प्राकृत ग्रन्थ परिषद्,

वाराणसी-५

अहमदाबाद-९,

## प्रकाशकीय निवेदन

जैन आगम प्रन्थों के प्रकाशनके लिए अब तक अनेक व्यक्ति और संस्थाओंने प्रयत्न किया है। ई. १८४८ में सर्व प्रथम लिटवेनसन ने कल्पसूत्रका अनुवाद प्रकाशित किया किन्तु वह क्षतिपूर्ण था। वस्तुतः वेबर ही सर्वप्रथम विद्वान माने जायेंगे जिन्होंने इस दिशामें नवा प्रस्थान शुरू किया। उन्होंने ई. १८६५—६६ में भगवती सूत्रके कुछ अंशों का संपादन किया और उन पर टिप्पणीरूप अपना अध्ययन भी लिखा।

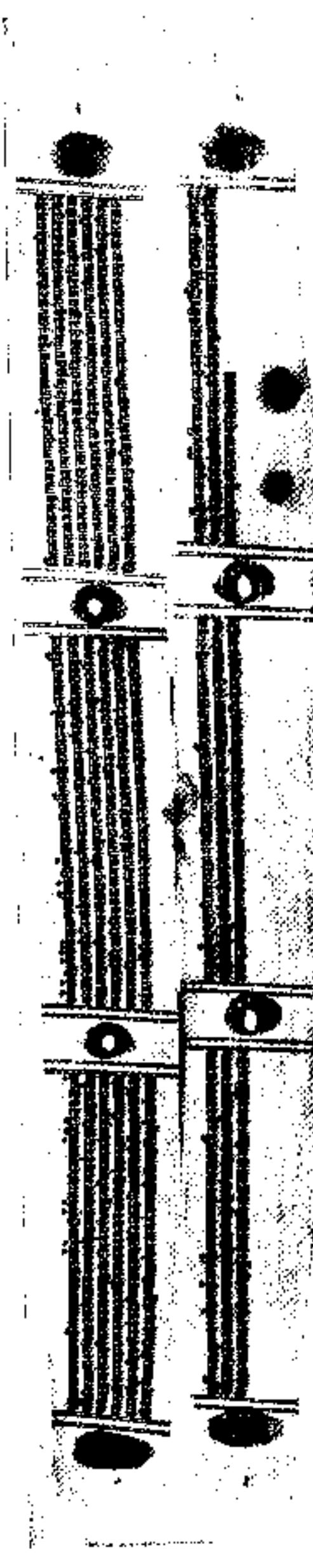
राय धनपतसिंह बहादुरने आगमोंका प्रकाशन (१८७३) में शुरू किया और कई आगम प्रकाशित किये किन्तु उनका मूल्य हस्तप्रतों की मुद्रित आवृत्तिसे कुछ अधिक था। फिर भी— विद्वानों को दुर्लभ वस्तु सुलभ बनानेका श्रेय उन्हें है ही। जेक्षोवीका कल्पसूत्र (ई. १८७९), और आचारांग (ई. १८८२), त्युमनका औपषातिक (ई. १८८३) और आवश्यक (ई. १८९७), स्टेट्स्थलका ज्ञाताधर्मकथा का कुछ अंश (ई. १८८१), होर्नलका उपासकदर्शा (ई. १८९०), शुभिंगके आचारांग (ई. १९१०) इत्यादि प्रन्थ आगमों के संपादनकी कला में आधुनिक विद्वानों को सम्मत ऐसी पद्धति को अपनाकर प्रकाशित हुए थे। फिर भी लाला मुखदेव सहायद्वारा कठिन अमोलिककृत हिन्दी अनुवाद के साथ (ई. १९१४—२०) जो ३२ आगम प्रकाशित हुए तथा आगमोदय समिति द्वारा समप्र सटीक आगमों का ई. १९१५में जो मुद्रण प्रारंभ हुआ उनमें उस पद्धति की उपेक्षा ही हुई। आचार्य सागरानन्दसूरि द्वारा संपादित संस्करण शुद्धिकी और मुद्रण की दृष्टिसे राय धनपतसिंहके संस्करणसे भागे बढ़ा हुआ है और विद्वानोंके लिये उपयोगी भी मिल हुआ है। इस संस्करणके प्रकाशनके बाद जैनधर्म और दर्शनके अध्ययन और संशोधन में जो प्रगति हुई उसका श्रेय आचार्य सागरानन्दसूरिको है। किन्तु इतना होने पर भी आगमों की आधुनिक पद्धतिसे समर्पित वाचना की आवश्यकता तो बनी ही रही थी। पाटनमें ई. १९४३ में आगम प्रकाशनके लिए जिनागम प्रकाशिनी संसदकी स्थापना की गई किन्तु उससे अब तक कुछ भी प्रकाशन हुआ नहीं। पू. पा. मुनिश्री पुण्यविजयजी लगातार चालीससे भी अधिक वर्ष से इस प्रयत्नमें हैं कि आगमोंका युसंवादित संस्करण प्रकाशित हो। उन्होंने इस दृष्टिसे प्राचीन प्रतों की शोध करके कहौं मूल आगमों और उनकी प्राकृत-संस्कृत टीकाओंके पाठ संशोधित किए हैं। इतना ही नहीं उन्होंने टीकाओंमें या अन्य पन्थोंमें आगमोंके जो अवतरण आये हैं उनका आवार केर भी पाठशुद्धिका प्रयत्न किया है। उनके इस प्रयत्नको ही मुख्यरूपसे नज़र समझ रख कर स्वतन्त्र भारतके प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्रप्रसादने ई. १९५३ में प्राकृत प्रन्थ परिषद्की स्थापना की। अबतक इस परिषद् के द्वारा प्राकृत भाषाके कई महत्वपूर्ण प्रन्थ युसंवादित होकर प्रकाशित हुए हैं। तथा पं. द्वारगोविंददासका मुप्रसिद्ध पाइयसदमहण्डवो भी पुनः मुद्रित हुआ है। प्राकृत प्रन्थपरिषद् के द्वारा सटीक आगमोंका प्रकाशन होना है यह जानकर केवल मूल आगमोंके प्रकाशनके लिए बंकईकू महावीर जैन विद्यालयने ई. १९६० में योजना बनाई और पू. मुनिश्री का सहकार मांगा जो सहर्ष दिया गया।

यह परम हर्षका विषय है कि प्राकृत प्रन्थ परिषद् अब अपने मुख्य ध्येय के जनुसार आगमप्रकाशनके क्षेत्रमें भी प्रवेश कर रही है और समग्र आगमके मंगलभूत नन्दीसूत्र आ० जिनदास भद्रतर कृत चूर्णि और आचार्य हरिभद्रकृत चृति आदिके साथ नवम और दशम प्रन्थके रूपमें प्रकाशित कर रही है। इसका श्रेय पू. पा. मुनिगज श्री पुण्यविजयजी को है जिन्होंने बड़े परिश्रम से इनका संपादन दीर्घकालीन अध्यवसायसे अनेक हस्तप्रतो और टीकाओंके आश्रयसे किया है। इसके लिए प्राकृत प्रन्थ परिषद् और विद्वज्ञात उनका कर्णी रहेगा।

नदिदस्त्रमूलकी 'जै' संशक्तविके प्रथम पत्रकी प्रथम दृष्टि और अंतिम ( २६वें ) पत्रकी द्वितीय दृष्टि ।

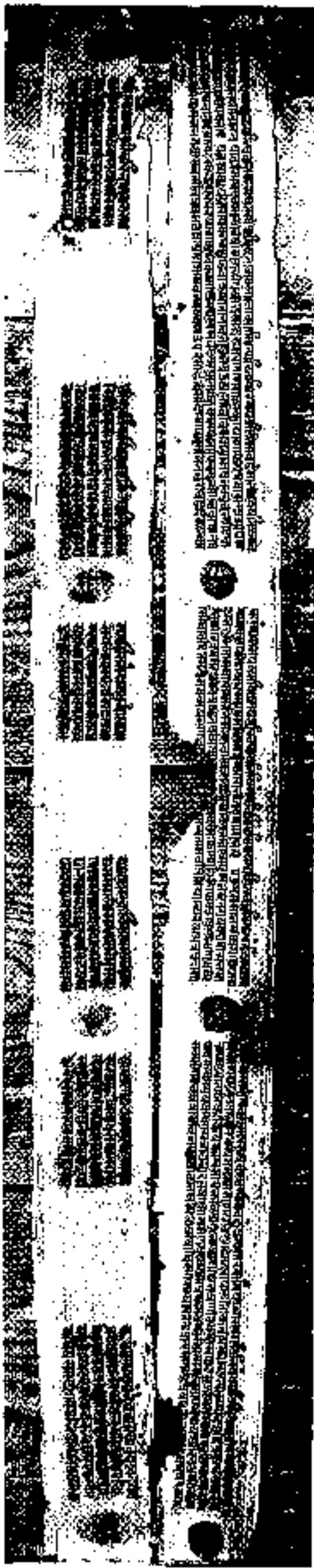


नदिदस्त्रमूलकी 'चौ' संशक्त प्रतिके प्रथम और अंतिम ( ३५वें ) पत्रकी द्वितीय दृष्टि ।



नदिदस्त्रमूलकी 'जै' संशक्तविका जिस पत्रसे शारभ होता है उस १८वें पत्रकी और अंतिम ( २२३वें ) पत्रकी द्वितीय दृष्टि ।

‘सं’ ने इक निन्दा प्रयोग के साथ लेखे गई शीर्षकों विवरणों को प्रतिके प्रथम और अंतिम (रेट्रॉवे) पत्रकों द्वितीय दृष्टि ।



निन्दा प्रयोग के ‘सं’ रेट्रॉवे पत्रिके प्रथम और अंतिम (४२वे) पत्रकों द्वितीय दृष्टि ।

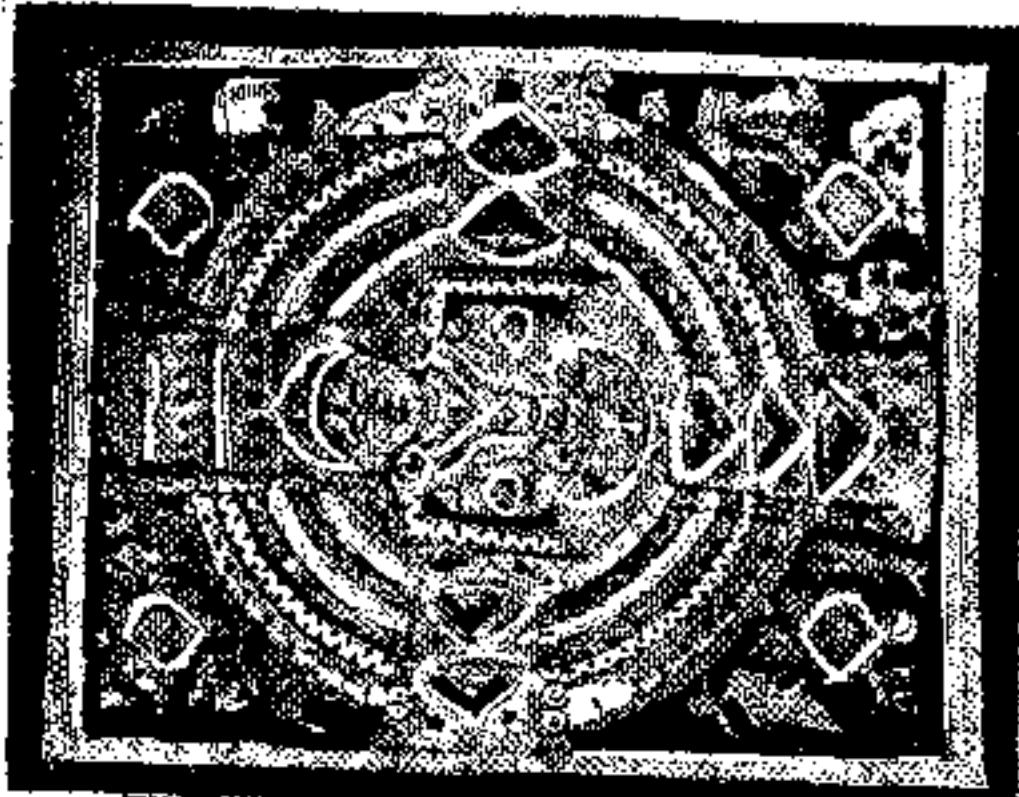
3

卷之三

卷之三

द्वारा दृष्टि सम्बन्धी

二



સુરત

नहिं दृश्यते मूलकीं । हुँ । अश्वक प्रतिक प्रथम, और सुनार्य पत्रकों द्वारा यह उचित (विक्रम बण्ठन के क्रिएटर्स द्वारा दिये गये) बना

## प्रस्तावना

### ॥ जयन्तु वीतरागाः ॥

चूर्णिसहित नन्दीसूत्रके संशोधनके लिये मूलसूत्रकी आठ और चूर्णिकी चार, एवं सब मिलकर बारह प्रतियाँ सामने रखकी गई हैं। इनमें से मूलसूत्रकी तीन और चूर्णिकी एक, ये चार ताडपत्रीय प्रतियाँ हैं। इन सबोंका परिचय इस प्रकार है—

**जे० प्राते**—यह प्रति जेसबमेरके किलेमें स्थित खरतरगच्छीय युगप्रधान आचार्य श्रीजिनभद्रसूरि ताडपत्रीय ज्ञानभंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। सूचीमें इस प्रतिका क्रमांक ७७ है। इसमें पत्र १ से २६ में नन्दीसूत्र मूल है और पत्र १ से २९७ में श्रीमल्यगिरिसूरिकृत वृत्ति है। प्रतिकी लंबाई-चौड़ाई ३३॥×२॥ हंच है। प्रतिपत्रमें पत्रकी चौड़ाईके अनुसार चार या पांच पंक्तियाँ लिखी हैं। प्रति तीन विभागमें लिखी गई है। प्रति शुद्धतम है। पुष्टिकाके लेखानुसार इस प्रति का संशोधन खरतरगच्छीय आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिने स्वयं किया है। अनेक स्थानपर आपने उपयोगी टिप्पनीयाँ भी की हैं, जो हमने हमारे सुदृणमें तत्त्व स्थान पर दे दी हैं। प्रतिकी लिपि सुन्दरतम है। अन्तमें लेखककी पुष्टिका इस प्रकार है—

स्वस्ति । संवत् १४८८ वर्षे श्रीसत्यपुरे पौष वदि १० दिने श्रीपार्वदेवजन्मकल्याणके श्रीखरतरगणाधिपैः  
श्रीजिनराजसूरिपट्टालंकारसारैः प्रभुश्रीमज्जिनभद्रसूरिसूर्यावितारैः श्रीनन्दिसिद्धान्तपुस्तकं स्वहस्तेन शोधितं  
पाठितं च । तच्च श्रीश्रमणसङ्घेन वाच्यमानं चिरं नन्दतु ॥

सामान्यतया श्रीजिनभद्रसूरिके उपदेशसे लिखाई गई प्रतियाँ स्तम्भतीर्थ(खंभात)निवासी खरतरगच्छीय श्रावक परीक्षित धरणाशाह या श्रीमालिङ्गातीय (१) बलिराज-उद्यराजकी पाई गई हैं। किन्तु इस प्रतिमें इन तीनोंमेंसे किसीके नामका उल्लेख नहीं है। यहां यह भी स्पष्ट होता है कि अपने विहारगत क्षेत्रोंमें भी आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिको अन्य सुख्य कार्योंके साथ साथ पुस्तकलेखन-संशोधन-अध्यापनादि कार्य भी था।

**सं० प्रति**—यह प्रति पाटन-संघवीपाटाके लघुपोशालिक ताडपत्रीय जैन ज्ञानभंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। इसके पत्र ८२ हैं। प्रतिपत्रमें तीन या चार पंक्ति लीखी हैं। प्रतिपंक्तिमें ४० से ४३ अंकर लिखे हैं। प्रति दो विभागमें लिखी है। इसकी लंबाई-चौड़ाई १३×१॥ हंचकी है। प्रतिकी लिपि सामान्यतया अच्छी है। अन्तमें लेखककी पुष्टिका नहीं है। इसके अन्तमें अनुशासनन्दी नहीं है।

**खं० प्रति**—यह प्रति खंभातके श्रीशहन्तिनाथताडपत्रीय जैनज्ञानभंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। प्राच्यविद्यामंदिर-बड़ौदासे प्रकाशित इस भंडारकी सूचीमें इसका क्रमांक ३८ है। इसमें पत्र १ से १८ में नन्दीसूत्र मूल है, पत्र १८-१९ में अनुशासनन्दी है और पुनः पत्र १ से २४७ में नन्दीसूत्रकी मल्यगिरीया वृत्ति है। प्रतिकी लंबाई-चौड़ाई ३१॥×२॥ हंच है। ताडपत्रकी चौड़ाईके अनुसार तीनसे पाँच पंक्तियाँ लिखी हुई हैं। प्रतिपंक्तिमें १०१ से ११९ अंकर लिखे पाये जाते हैं। प्रति शुद्धप्राप्य है और लिपि सुन्दरतम है। प्रति तीन विभागमें लीखी गई है। अन्तमें इस प्रकारकी पुष्टिका है—

स० १२९२ वर्षे वैशाख शुदि १३ अथेह वीजापुरे श्रावकशैषशालायां श्रीदेवभद्रगणि पं० मल्य-  
कीर्ति पं० अजितप्रभगणिप्रभृतीनां व्याख्यावतः संसारासारतां विजिन्त्य सर्वज्ञोऽं शालं प्रभाणमिति मनसि  
शाला सा० धणपालसुत सा० रत्नपाल ठ० गजसुत ठ० विजयपाल श्रे० देवदासुत श्रे० वीतहण महं०  
जिणदेव महं० वीकलसुत ठ० आसपाल श्रे० सालदा ठ० सहजासुत ठ० अरसीह सा० राहडसुत सा०  
लाहडप्रभृतिसमस्तश्रावकैः सोक्षकलप्रार्थकैः समस्तचतुर्विधसंवस्य पठनार्थं वाचनार्थं च समर्पिणाय लिखापितस् ॥३॥  
इन्हीं किजापुरके श्रावकोंकी लिखाई हुई अन्य कहे ताडपत्रीय प्रतियाँ खंभातके इस भाण्डागारमें विश्वासा दिए गए हैं।

**डे० प्रति**—यह प्रति अहमदाबादके डेला उपाश्रयके ज्ञानभंडारकी है। इसमें मलयगिरीया टीका भी पंचपाठरूपसे लिखित है। साथमें अनुज्ञानन्दी भी है। कागज पर लिखी हुई यह प्रति अनुमान सत्रहबीं सदीमें लिखी मालूम होती है।

**ल० प्रति**—यह प्रति अहमदाबाद ल्वारकी पोलके उपाश्रयके ज्ञानभंडारकी है। इसकी पत्रसंख्या ३५ है। हरेक पत्रमें नव पंक्तियाँ हैं। हरेक पंक्तिमें ३१ से ४२ अक्षर लिखे हैं। प्रतिकी लिपि सुन्दरतम् है। अक्षर मोटे हैं। कागज पर लिखी हुई इस प्रतिके अंतमें लेखककी पुष्टिका इस प्रकार है—

नन्दी सम्भता ॥३॥ सं. १४८५ वर्षे काल्युन सुदि ७ शनौ श्रीमीमपढ़ीय....[अक्षर बीगाड दिये हैं] ।

श्री ॥३॥ शुभं भवतु ॥३॥

इस पुष्टिकामें जो अक्षर बीगाड दिये हैं उनके स्थानमें बहार इस प्रकार नये अक्षर लिखे हैं—

साह श्रीवच्छासुत साह सहिसकस्य स्वपुण्यार्थं पुस्तकभंडारे कारापिता मुत वर्धमानपुस्तकपरिपालनार्थं ॥ ३ ॥

**मो० प्रति**—यह प्रति पाटन—श्रीहेमचंद्राचार्यजैनज्ञानभंदिरमें स्थित मोदी ज्ञानभंडारकी है। यह प्रति विक्रमकी सोलहबीं सदीमें लिखी हुई है।

**शु० प्रति**—यह प्रति पाटन—श्रीहेमनन्दज्ञानभंदिरमें स्थित शुभनीरलैनज्ञानभंडारकी है। प्रति प्रायः शुद्ध है। प्रति अनुमान सत्रहबीं सदीके उत्तरार्द्धमें लिखी प्रतीत होती है।

**मु० प्रति**—यह प्रति आगमोद्धारक श्रीसागरानन्दसूरिवरसम्पादित श्रीमलयगिरिकृतटीकायुक्त है। जो आपने आगमवाचनके समय सम्पादित की है। यह आवृत्ति वि. सं. १९७३में आगमोद्यसमिति—सुरतकी ओरसे प्रकाशित हुई है।

### चूर्णिकी प्रतियाँ

**जे० प्रति**—यह प्रति जेसलमेर किलेमें स्थित श्रीजिनभद्रीय ताडपत्रीय जैन ज्ञानभंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। इसका क्रमांक ४१० है। इस क्रमांकमें तीन प्रत्य हैं—१. दशवैकालिक अगस्त्यसिंहीया चूर्णी पत्र १८४ । २. नन्दीसूतचूर्णी पत्र १८५—२२३ । ३. अनुयोगद्वारसूत्रचूर्णी पत्र १२४—२७५ । इनमेंसे नन्दीचूर्णी और अनुयोगद्वारचूर्णी, ये दोनों चूर्णीयाँ किसी गीतार्थकी संशोधित हैं। प्रतिकी लंबाई—चौडाई २५×२। हृचकी है। प्रतिके अंतमें लेखनसंवत् या लेखककी पुष्टिका नहीं है। तथापि प्रतिका रंग-दंग देखनेसे प्रतीत होता है कि—यह प्रति तेरहबीं सदीमें लिखित है। प्रति शुद्धप्राय है।

**आ० प्रति**—यह प्रति आगमोद्धारकजी श्रीसागरानन्दसूरिमहाराजसम्पादित मुद्रित प्रति है। जिसका प्रकाशन श्रीकृष्णदेवजी केशरीमलजी जैताम्बरसंस्था—रतलामकी ओरसे हुआ है। पूछ्यश्रीको इसकी कोई अच्छी प्रति न मीलनेके कारण यह बहुत अशुद्ध लगी है। फिर भी एक प्रत्यन्तरकी तोरसे हमारे संशोधनमें यह आवृत्ति काममें ही आई है।

**दा० प्रति**—यह प्रति जिनागमज्ञ पूज्य श्रीबिजयदमनसूरिमहाराजसम्पादित मुद्रित प्रति है । जो भाई हीरालालके द्वारा प्रकाशित है। इसमें भी काफी अशुद्धियाँ हैं। तथापि पूज्य सागरानन्दसूरिम० की आवृत्तिकी अपेक्षा यह कुछ अच्छी आवृत्ति है।

चूर्णिके सम्पादन और संशोधनके समय पाटन—श्रीहेमचंद्राचार्यजैनज्ञानभंदिरकी एक प्रति और श्रीलालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृत विद्यामंदिरकी प्रतिको भी सामने रखती थी। ये दोनों प्रतियाँ क्रमशः सोलहबीं और सत्रहबीं सदीमें लिखी हुई प्रतियाँ हैं और अशुद्धभरपूर प्रतियाँ हैं। तथापि शुद्ध पाढोके निर्णयमें ये भी सहायक हुई हैं।

इस चूर्णिके संशोधनमें हमारे लिये मुख्य आधारस्तम्भ जे० प्रति ही हैं, जो अतीव शुद्ध प्रति है।

### सूत्रप्रतियोकी विशेषता

**सं० डे० मो०**, ये तीन प्रतियोका प्रतिलेखनके बाद किसी विद्वानने संशोधन नहीं किया है।

जे० सं० ल० श०, ये चार प्रतियों संशोधित प्रतियों हैं। इनमें मी जे० प्रतिका संशोधन खरतस्माच्छीय गीतार्थ आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिने किया है, जिसमें आपने नन्दीसूत्रके प्रक्षिप्त पाठादिके विषयमें स्थान स्थान पर टिप्पणीयों की है, जो हमने हमारे इस प्रकाशनमें दी हैं, देखो पृ. ५ टि. १०, पृ. ८ टि. १०, पृ. १० टि. ७, पृ. ११ टि. ११, पृ. १२ टि. ५ इत्यादि।

शु० प्रति अधिकतर अंशमें खं० प्रतिसे मीलतीकुलती होने पर भी जुदा कुछको मालूम होती है। इसमें स्थविरावलिकी प्रक्षिप्त मानी जानेवाली गाथायें नहीं हैं, देखो पृ. ८ टि. १०, पृ. १० टि. ७, पृ. ११ टि. ११। छट्टे परिषसूत्रमें जो तीन गाथायें प्रक्षिप्त हैं वे भी इस प्रतिमें नहीं हैं, देखो पृ. १२ टि. ५। इसी प्रकार मनःपर्यवज्ञानके द्रव्यक्षेत्रादिविषयक सूत्रपाठमें जो सूत्रपाठ चूर्णिकार एवं हरिभद्रसूरिको अभिप्रेत है वह इस प्रतिसे पत्ता गया है, देखो पृ. २३ टि. ३। ऐसी जो जो अन्यान्य विशेषतायें इस प्रतिकी हैं उनका पादटिप्पणीयोंमें उल्लेख कर दिया है। यहां पर परीक्षण एवं अन्यासकी दृष्टिसे पाठभेदोंका तिरीक्षण करनेवाले विद्वानोंसे प्रार्थना है कि इस मुद्रणमें पृ. १० टि. ७, पृ. ११ टि. ११ आदि दो-चार स्थानोंमें P प्रतिका निर्देश किया है वह P प्रति कौनसी ? और किस भंडारकी थी ? यह मेरी सूत्रिसे चला गया है। फिर भी यहाँ इतनी सूचना कर देता हूँ कि—शु० प्रति कुछ अंशमें इस P प्रतिसे मीलतीकुलती प्रति है। अर्थात् जैसे—गोविंदाणं पि णमो० तथा तत्त्वो य भूयदिन्ने० ये दो गाथायें P प्रतिमें नहीं हैं इसी तरह शु० प्रतिमें भी उपलब्ध नहीं हैं, देखो पृ. १० टि. ७। यद्यपि प्रस्तुत मुद्रणमें इस स्थानमें P प्रतिके साथ शु० प्रतिका उल्लेख कुट गया है किन्तु भंडारमें जा कर शु० प्रतिको पुनः देखके निश्चित किया है कि गोविंदाणं पि णमो० तथा तत्त्वो य भूयदिन्ने० ये दोनों गाथायें शु० प्रतिमें सी नहीं हैं। एवं—वंद्रागि अहत्प्राप्यं० तथा वंद्रागि अज्जरक्षित्य० ये दो गाथायें शु० प्रतिमें नहीं हैं, देखो पृ. ८ टि. १०। चूर्णी एवं टीकाओंमें इन चार गाथाओंका उल्लेख या व्याख्यान नहीं है। नन्दीसूत्रकी ऐसी और भी प्रति मेरे देखनेमें आई है, जिसमें ये गाथायें नहीं हैं। फिर भी नन्दीसूत्रकी प्राचीन ताडपत्रीय प्रतियोंमें और दूसरी बहुतसी पंद्रहवीं-सोलहवीं शतीमें लिखित कागजकी प्रतियोंमें ये गाथायें अवश्य ही उपलब्ध हैं। यहां प्रश्न होता है कि—चूर्णिकार और टीकाकारोंने इन गाथाओंका स्पर्श तक क्यों नहीं किया है ?।

जे० अ० मो० प्रतिकी विशेषता यह है कि—इसमें प्रायः लुप्यज्ञानके स्थानमें अस्पष्ट यशुतिके प्रयोग न होकर केवल अ और आ की श्रुतिवाले प्रयोग ही हैं, जो पूर्ण श्रीसागरानन्दसूरिमद्भारातके मुद्रणमें नजर आते हैं। ये दो प्रतियों उस परम्पराकी हैं, जिसमें अस्पष्ट यशुतिके प्रयोग कम हैं। आदि ४ प्रयोगके स्थानमें नका प्रयोग मुख्य है। जैसे कि—नाण नाह नमंसिय नियम नंदिधोस नियम नाल निम्नल सुयनिसिय आदि।

जे० शु० प्रतियों नप्रयोगके विषयमें जे०मो० प्रतियोंके समान हैं, किन्तु इन प्रतियोंमें अस्पष्ट यशुतिके प्रयोग ही प्रयुक्त हैं।

ख० सं० प्रतियोंमें णप्रयोगकी प्रधानता है। किन्तु सं० प्रतिमें कुरत्त महन्त समन्ता आदि परसर्वके प्रयोग नजर आते हैं, इतना ख० और सं० प्रतिका भेद है। इसी तरह सं० और ख० प्रतिका अन्तर यह है कि ख० प्रतिमें चड्डलियम्बा पदीवम्बा आदि जैसे प्रयोग भी प्रयुक्त दिखाई देते हैं देखो पृ. १६ टि. ३।

उपर आठ प्रतियोंका परिचय दिया गया है, जो आज उपलब्ध प्रतियोंमें प्राचीन प्रतियों हैं। इतनी प्रतियों एकत्र करने पर भी चूर्णिकार एवं वृत्तिकारसम्मत ऐसे अनेक पाठ हैं जो इन इतनी प्रतियोंसे भी प्राप्त नहीं हुए हैं। इनका सूचन पादटिप्पणीयोंमें यथास्थान किया है।

इस नन्दीसूत्रके संशोधन, पाठ, पाठभेद, पाठोंकी कमीबेशीके निर्णयके लिये चूर्णि, हरिभद्रवृत्ति, मलयगिरिवृत्ति, श्रीचन्द्रीय

टिष्ण, इन चारोंका समग्रभावसे उपयोग किया गया है, इतना ही नहीं, किन्तु जहाँ जहाँ नन्दीसूत्रके उद्धरण, व्याख्यान आदि आये हैं ऐसे द्वादशारनव्यचक्र, समवायाङ्गसूत्र एवं भगवत्सूत्रकी अभयदेवीया वृत्ति, विशेषावश्यकमलधारीया वृत्ति, पाक्षिकसूत्रवृत्ति आदि अनेक शास्त्रोंका उपयोग भी किया है, जिसकी प्रतीति इस सम्पादनकी पादटिष्णियोंको देखनेसे होगी।

नन्दीसूत्रकी चूर्णिके संशोधनके लिये मेरा आवारस्तम्भ जैसलमेरकी प्रति ही है। अगर यह प्रति प्राप्त न होती तो इसका जो गौरवपूर्ण सम्पादन हुआ है, वह शक्य न बनता। संस्कृत टीका निर्माणके बाद चूर्णियोंका अध्ययन कम हो जानेसे प्रायः आज ज्ञानमंडारोंमें जो जो आगमिक या आगमेतर शास्त्रोंके चूर्णिग्रन्थोंकी हस्तप्रतियाँ हैं, वे सभी अशुद्धि-भाण्डागारस्वरूप हो गई हैं। इतनी बात जरूर है कि—उथों उथों प्रति प्राचीन त्यों त्यों अशुद्धियाँ कम रहती हैं। किन्तु एक ही युगकी प्रतियोंके लिये यह अनुमत नहीं है कि—अगर वह प्रति प्राचीन प्रतिकी या भिन्न प्रदेशस्थित प्रतिकी नकल न हो कर, उसी युगकी या प्रदेशकी उत्तरोत्तर नकलकी नकल हो, तब तो उत्तरोत्तर अशुद्धियोंकी वृद्धि ही होती रही है, इतना ही नहीं पंक्तियोंकी पंक्तियाँ और सन्दर्भ के सन्दर्भ गायब हो गये हैं। अस्तु, मेरोंको जैसलमेरकी प्रति मीली, यह मैं सिर्फ अपना ही नहीं, साथमें सब शास्त्रपाठी जैन गीतार्थ सुनिश्चण एवं विद्वानोंका भी सौभाग्य समझता हूँ।

अनेक आगमोंकी चूर्णि, वृत्ति आदिके अवलोकनसे प्रतीत हुआ है कि—अगर प्राचीन एवं अलग अलग कुलकी प्रतियाँ प्राप्त न हों तो मुद्रणादिमें प्रायः सैकड़ों अशुद्धियाँ पाठपरावृत्तियाँ आदि रहनेका सम्भव रहता है, इतना ही नहीं सन्दर्भके सन्दर्भ छूट जाते हैं। विद्वान् संशोधकोंके व्यानमें छानेके लिये मैं यहाँ एक बातको उद्धृत करता हूँ--

अनुयोगद्वारसूत्रकी चूर्णिका संशोधन मैंने पाटन-ज्ञानमंडारकी दो प्राचीन ताडपत्रीय हस्तप्रतियाँ और खंभातके श्रीशान्तिनाथ ज्ञानमंडारकी दो ताडपत्रीय प्रतियाँ, एवं चार प्रतियोंके आधारसे सुचारुतया कर लिया। कुछ शंकास्थान होने पर भी दिलमें विश्वास हो गया था कि—एकदर संशोधन अच्छा हो गया है। किन्तु जब जैसलमेर जानेका मोका मिला, और वहकि ज्ञानमंडारकी प्राचीन ताडपत्रीय प्रतिसे तुलना की तो कितने ही शङ्कास्थान दूर हुए, इतना ही नहीं, परन्तु अलग अलग स्थानमें हो कर दश—बारह पंक्तियाँ जितना दूसरे कुलकी प्रतियोंमें छूट गया हुआ नया पाठ प्राप्त हुआ और अनेकानेक अशुद्धियाँ भी दूर हुईं। यह प्राचीन प्राचीनतम एवं अलग अलग कुलकी प्रतियोंके उपयोगका साफल्य है।

प्रसंगवश यहाँ यह कहना भी उचित है कि—इस नन्दीसूत्रचूर्णिके संशोधन एवं सम्पादनमें साबन्त उपयोगमें लाई गई प्रतियोंके अलावा दूसरी अनेक प्रतियाँ मैंने समय-समय पर देखी हैं, इससे ज्ञात हुआ है कि—जैसलमेरकी प्रतिकी अपेक्षा इन प्रतियोंमें तदनु आदि वर्णके प्रयोग विपुल प्रभागमें नजर आये हैं।

### नन्दीसूत्रके प्रणेता

नन्दीसूत्रकारने नन्दीसूत्रमें कही भी अपने नामका निर्देश नहीं किया है, किन्तु चूर्णिकार श्रीजिनदासगणि महत्तरने अपनी चूर्णिमें सूत्रकारका नाम निर्दिष्ट किया है, जो इस प्रकार है—

“एवं कतमंगलोवयारो धेरावलिकमे य दंसिए अरिहेतु य दंसितेषु दूसगणिसीसो देववायगो साहुजण-हितद्वाए इणमाह” [पत्र १३]

इस उल्लेखद्वारा चूर्णिकारने नन्दीसूत्रप्रणेता स्थविर श्रीदेववाचक हैं—ऐसा बतलाया है। आचार्य श्रीहरिमदसूरि एवं आचार्य श्रीमल्यगिरिसूरिने भी इसी आशयका उल्लेख अपनी अपनी टीकामें किया है, किन्तु इनका मूल आधार चूर्णिकारका उल्लेख ही है। चूर्णिकारके उल्लेखसे ही ज्ञात होता है कि—नन्दीसूत्रके प्रणेता नन्दिसूत्रस्थविरावलिगत अंतिमस्थविर श्रीदुष्यगणिके शिष्य श्रीदेववाचक है।

पंचासजी श्रीकल्याणविजयजीमहाराजने अपने 'शीरनिर्वाणसंबल् और जैन कालगणना' निबन्धमें (नागरीप्रचारिणी भाग १० अंक ४) अनेकानेक प्रमाण और युक्ति द्वारा नन्दीसूत्रप्रगेता स्थविर देववाचक और जैन आगमोंकी माथुरी एवं वालुभी बाचनामोंको संवादित करनेवाले श्रीदेवदिंगणि क्षमाश्रमणको एक बतलाया है।

नन्दीकर्मग्रन्थकार आचार्य श्रीदेवेन्द्रसूरि महाराजने अपनी स्तोपञ्च इतिहासियों देवदिंगणि नामके उल्लेखपूर्वक अनेकवार नन्दीसूत्रपाठके उद्धरण दिये हैं, यह भी उन्होंने देववाचक और देवदिंगणिमाश्रमणको एक व्यक्ति मानके ही दिये हैं। यह भी श्रीकल्याणविजयजी महाराजकी मान्यताको पुष्ट करनेवाला सबूत है। तथापि नन्दीकी स्थविरावलीमें अंतिम स्थविर दुष्यगणि हैं, जिनको नन्दीचूर्णिकारने देववाचकके गुह दरशाये हैं। तब कल्पसूत्रकी वि. सं० १२४६ में लिखित प्रतिसे के कर आज पर्यन्तकी प्राचीन-आर्वाचीन ताडपत्रीय एवं कागजकी प्रतियोगीमें स्थविरावलिके पाठोंकी कमी-वेशीके कारण कोई एक स्थविरका नाम व्यवस्थितरूपसे पाया नहीं जाता है। इस कारण इन दोनों स्थविरोंको एक मानना यह कहाँ तक उचित है, यह तञ्च विद्वानोंके लिये विचारणीय है। देववाचक और देवदिंगणिमाश्रमण इन नाम और विशेषण—उपाधिमें भी अंतर है। साथमें यह भी देखना जरूरी है कि नन्दीसूत्रकी स्थविरावलीमें ब्रायगवंस, बायगपथ, बायग, इस प्रकार बायग शब्दका ही प्रयोग मिलता है, दूसरे कोई वादी, क्षमाश्रमण, दिवाकर ऐसे पदका प्रयोग नजर नहीं आता है। अगर देववाचकको क्षमाश्रमणकी भी उपाधि होती तो नन्दीचूर्णिकार जरूर लिखते ही। जैसे द्वादशारनवचकटीकोंके ग्रनेता सिद्धवादी गणि क्षमाश्रमण, विशेषावश्यककी अपूर्ण स्तोपञ्च टीकाको पूरी करनेवाल कोट्टार्यवादी गणि महत्तर, समतितर्कके ग्रनेता वादी सिद्धसेनगणी दिवाकर आदि नामोंके साथ दो विशेषण—उपाधियाँ जुड़ा हुई मिलती हैं। इसी तरह देववाचकके लिये भी दो उपाधियोंका निर्देश जरूर मिलता। अतः देववाचक और देवदिंगणिमाश्रमण, ये दोनों एक ही व्यक्ति हैं या भिन्न, यह प्रश्न अब भी विचारणीय प्रतीत होता है। कल्पसूत्रकी स्थविरावली और नन्दीसूत्रकी स्थविरावलीका मेलझोल कैसे, कितना और कहाँ तक हो सकता है, यह भी विचारार्ह है।

बाचकपदकी अपेक्षाकृत प्राचीनता होने पर भी कल्पसूत्रकी समयसमय पर परिवर्धित स्थविरावलीमें थेर और खमासमण पदका ही निर्देश नजर आता है, यह भी दोनों स्थविर और स्थविरावलीकी विशेषता एवं भिन्नताके विचारका साधन है।

यहाँ पर प्रसंगोपात् एक बात स्पष्ट करना उचित है कि—भद्रेश्वरसूरिकी कहावलीमें एक गाथा निम्नप्रकारकी नजर आती है—

वाई य खमासमणे दिवायेरे वायगे ति पगद्वा । पुञ्जगयं जस्सेसं जिणागमे तस्मिमे नामा ॥

अर्थात्—वादी, क्षमाश्रमण, दिवाकर और बाचक, ये एकार्थक—समानार्थक शब्द हैं। जिनागममें जो पूर्वगत ज्ञान है उनके शेष अर्थात् अंशोंका प्रारम्भिक ज्ञान जिनके पास है उनके लिये ये पद हैं।

इस गाथासे यह स्पष्ट है कि—इन उपाधियोंवाले आचार्योंके पास पूर्वगतज्ञानकी परंपरा थी। किन्तु आज जैन परम्परामें जो ऐसी मान्यता प्रचलित है कि—इन पदधारक आचार्योंको एक पूर्वआदिका ज्ञान था, यह मान्यता भान्त एवं गलत प्रतीत होती है। कारण यह है कि—अगर आचाराङ्गादि प्राथमिक अंगआगम शीर्णविशीर्ण हो चुके थे, इस दशामें पूर्वश्रुतके अखंड रहनेकी संभावना ही कैसे हो सकती है?।

स्थविर श्रीदेववाचककी नन्दीसूत्रके सिवा दूसरी कोई कृति उपलब्ध नहीं है।

### चूर्णिकार

नन्दीसूत्रचूर्णिके ग्रनेता आचार्य श्रीजिनदास गणि महत्तर हैं। सामान्यतया आज यह मान्यता प्रचलित है कि—जैन आगम उपरके भाष्योंके ग्रनेता श्रीजिनभद्र गणि क्षमाश्रमण और चूर्णियोंके रचयिता श्रीजिनदास गणि महत्तर

ही हैं, और ऐसे प्राचीन उल्लेख पठावली आदिमें पाये भी जाते हैं; किन्तु भाष्य-चूर्णियोंके अवगाहन बाद ये दोनों मान्यताएं गलत प्रतीत हुई हैं। यहाँ पर साध्यकारोंका विचार अप्रस्तुत है, अतः सिर्फ यहाँ पर जैन आगमोंके उपर जो प्राचीन चूर्णियाँ उपलब्ध हैं उन्हींके विषयमें ही विचार किया जाता है। आज जैन आगमोंके उपर जो चूर्णिनामक प्राकृतभाषाप्रधान व्याख्याप्रन्थ प्राप्त हैं उनके नाम क्रमशः ये हैं—

१ आचाराङ्गचूर्णि २ सूत्रकृताङ्गचूर्णि ३ भगवतीचूर्णि ४ जीवाभिगमचूर्णि ५ प्रज्ञापनासूत्रशरीरपदचूर्णि ६ जस्त्रद्वीप-  
करणचूर्णि ७ दशाकल्पचूर्णि ८ कल्पचूर्णि ९ कल्पविशेषचूर्णि १० व्यवहारसूत्रचूर्णि ११ निशीधसूत्रविशेषचूर्णि १२  
पञ्चकल्पचूर्णि, १३ जीतकल्पवृहद्वूर्णि १४ आचश्यकचूर्णि १५ दशाकालिकचूर्णि श्रीअगस्यसिंहकृता १६ क्षाकालिकचूर्णि  
वृद्धविवरणाल्या १७ उत्तराच्युतनचूर्णि १८ नन्दीसूत्रचूर्णि १९ अनुयोगद्वारचूर्णि २० पात्रिकचूर्णि ।

उपर जिन वौस चूर्णियोंके नाम दिये हैं उनका और इनके प्रणेताओंके विषयमें विचार करनेके पूर्व प्रतेद्विषयक चूर्णिग्रन्थोंके ग्रास उल्लेखोंको मैं प्रकाशात् बहुत उद्धृत कर देता हूँ, जो मध्यमें विद्वानोंके लिये काश्यमकी विचारसामग्री बनी रहे।

(१) आचाराङ्कचूष्णि । अन्तः—

से हु निरालंबणमप्तिद्वितो । शेषं तदेव ॥ इति आचारचूर्णी परिसमाप्ता ॥ नमी सुव्रदेवयाए  
मगवईए ॥ ग्रनथाप्रम् ८३०० ॥

(२) सूत्रकृताङ्गचर्णी । अन्तः—

सदहामि जघ सूत्रेति षेतव्यं सञ्चमिति ॥ नमः सर्वचिदे धीराय विगतमोहाय ॥ समाप्तं चेदं सूत्रकृताभिर्द्वितीयमङ्कमिति । मदं भवतु श्रीजिनशासनाय । सुगडांगन्तुर्णिः समाप्ता ॥ ग्रन्थाप्रम् ९५०० ॥

### (३) भगवतीचर्ण—

श्रीसरवतीचर्णः परिसमाप्तेति ॥ इति भद्रं ॥

सुअदेवयं तु यंदे जीह पसाएग सिक्खियं नाणं । विद्यं पि बतव (बैंब)देवि पसन्नवाणि पगिवयामि ॥ मंशारं ६७०७ ॥ श्री॥

(४) जीवाभिगमचर्ण—

इस चुप्पीकी प्रति अद्यावधि ज्ञात किसी भंडारमें देखनेमें नहीं आई है।

(५) प्रस्तावनाशरीरपदचर्णि । अन्तः—

जमिहं समयविरुद्धं वर्द्धं बुद्धिविकलेण होजा हि । तं जिगवयणविहन्त् खमित्कर्म मे पसोहितु ॥ १ ॥

॥ सरीरपदस्स चुणगी जिणभद्रखमासमणकित्तिया समत्ता ॥ अनुयोगद्वारचूर्णि पत्र ७४ ॥

आकिलीमहत्तरासन आचार्य श्रीहरिभद्रसुरिकृत अनुयोगदारलघुकृति पत्र ११ में भी यही उल्लेख है।

(६) जम्बूद्रीपकरणचूर्णि । अन्तः—

एवं उवरिल्लभागस्स तेरासियं पउंजियब्बं । विरुद्धेहुद्दीओ आगेशब्बाओ ॥ जंत्रुदीवपण्णत्तिकरणां चुण्णी समता ॥

### (७) दशाधूतस्कन्धचूणि । अन्तः—

जाव गया थि । जाव करणओ—सत्त्वेसि पि णथार्ण० गाधा ॥ दक्षानी चूणी समाप्ता ॥

### (c) कल्पनापी—

आउयवज्ञा उ० माहा ९९ । विथेरेण जहा विसेसात्त्वसम्भासे । ‘ समिति चेव पगडीण को केवलियं बंधइ ? खचेइ वा केत्तियं को उ० ति जहा कम्मपगडीए । पर्त पसंगेण गतं ।

अन्तः—

तओ य आराहणातो छिणसंसारी भवति संसारसंतति छेतुं मोक्षं पावतीति ॥ कल्पचूर्णी समाप्ता ॥  
ग्रन्थाग्रम्—३०० प्रत्यक्षरगणनया निर्णीतम् ॥ [ सर्वप्रथाग्रम्—१४७८४ ] ॥

(९) कल्पविशेषचूर्णी—

कल्पविशेषचूर्णी समत्तेति ॥

(१०) व्यवहारचूर्णी । अन्तः—

व्यवहारस्य मगवतः अर्थविवक्षाग्रवर्त्तते दक्षम् । विवरणमिदं समाप्तं श्रमणगणनामपृतमूलम् ॥१॥

(११) निशीशविशेषचूर्णी । आदि—

नमिऊणडरहृताणं, सिद्धाण य कम्मचक्रमुक्ताणं । सश्रणसिगेहविमुक्ताण सञ्चसाहृण भावेण ॥१॥

सविसेसायरजुतं काउ पणामं च अथदायिस्त । पञ्जुण्णस्त्रमासमणस्स चरण-करणाणुपालैस्त ॥२॥

एवं कल्पणामो पकल्पणामस्स विवरणं वले । पुञ्चायरियक्यं चिय अहं पि तं चेव उ विसेसे ॥३॥

भणिया विमुक्तिचूला अहुणाडवसरो णिसीहचूलाए । को संबंधो तिस्ता ? भणइ, हणमो जिसामेहि ॥४॥

तेरहवा उद्देशके अन्तमें—

संकरेबडमउडविमूसणस्स तण्णामसरिसणामस्स । तस्स सुतेणेस कता विसेसचुणगी णिसीहस्स ॥

पंद्रहवा उद्देशके अन्तमें—

रैविकरमभिधाणकस्त्रसत्तमवगंतव्यक्वरजुपर्ण । णामं जस्तिथीए सुतेण तिस्ते कया चुणणी ॥

सोलहवा उद्देशके अन्तमें—

देहैडो सीष धोरा य ततो जट्टा सहोयरा । कणिट्टा देउलो णणो सत्तमो य तिझजिओ ।

एतेसि मलिक्षमो जो उ मंदेवी(मंदधी) तेण विच्छिता(चिन्तिता) ॥

अन्तः—

जो गाहासुत्तथो चेवंविधपागडो फुडपदथो । रहओ परिभासाए साहृण अणुगहट्टाए ॥१॥

तिन्चउ-पण-डट्टुमवगे ति-पण-ति-तिगक्खरा ठवे तेसि । पट्टम-ततिषहिं णिट्टह सखुपहिं जामं कर्यं जस्स ॥२॥

गुरुदिण्णं च गणित्तं महत्तरत्तं च तस्स लुट्टेण । तेण कतेसा चुणी विसेसणामा णिसीहस्स ॥३॥

णमो लुयदेवयाए भगवतीए ॥ जिणदासगणिमहत्तरेण रहया णिसीहचुणी समत्ता ॥

(१२) पञ्चकल्पचूर्णी । अन्तः—

कल्पणयस्स भेडो पर्लविओ मोक्षसाहणट्टाए । जं चरिङ्ग लुविहिया करेति दुक्खक्षयं धीरा ॥

पञ्चकल्पचूर्णीः समाप्ता ॥ ग्रन्थप्रमाणं सहस्रत्रयं शतमेकं पञ्चविंशत्युत्तरम् ३१२५ ॥

(१३) जीतकल्पचूर्णी । अन्तः—

इसि जेण जीयदाणं साहृणडह्यारपंकपरिसुद्धिकरं । गाहाहिं फुडं रहयं महुरपयत्थाहिं पावणं परमहियं ॥१॥

१. इस गाथासे ज्ञात होता है कि चूर्णिकार श्रीजिनदासगणिमहत्तरके पिता का नाम नारा अथवा तो अन्द्र होगा ।

२. इस गाथाके अर्थका विचार करमें चूर्णिकार श्रीजिनदासगणि महत्तरको माताका नाम प्राकृत शोधा संस्कृत शोधा अधिक संभवित है ।

३. इस गाथामें उल्लिखित देहैड आदि, चूर्णिकार श्रीजिनदासगणि महत्तरके सहोदर भाई हैं ।

जिणभद्रखमासमणं निच्छियसुत्तद्वदायग्रामलचरणं । तमहं बंदे पयथो परमं परमोवगारकारिणं महग्नं ॥ २ ॥  
॥ लीतकेलृचूर्णः समाप्ता । सिद्धसेनकृतिरेषा ॥

(१४) आवश्यकचूर्णी । अन्तः—

करणनयो—सब्देसि पि नयाणं गाथा ॥ इति आवस्सगनिज्जुत्तिचूर्णी समाप्ता ॥ मंगलं महाश्रीः ॥

(१५) दशकालिकसूत्रअगस्त्यसिंहचूर्णी । अन्तः—

एवमेतं धम्मसमुक्तिणादिचरण-करणागेगप्रलवणागम्भं नेत्राणगमणकलावसारं भवियजणाणंदिकरं चुणिं-  
समासवयणेण दसकालियं परिसमत्तं ॥

नमः ॥ वीरवरस्स भगवतो तिथे कोडीगणे सुविपुलम्भि । गुणगणवद्वराभस्सा वैरसामिस्स साहाए ॥ १ ॥  
महारेसिसरिससमादा भावाऽभावाण मुग्निपरमत्था । रिसिगुच्चखमासमणा खमा-समार्ण निधी आसि ॥ २ ॥  
तेसि सीसेण इमा कलसभन्मईदणामधेऽज्ञेण । दसकालियस्स चुणीं प्रयाण रथणातो उवगत्था ॥ ३ ॥  
रुयिरपद-संविणियता उद्दियपुणरुत्तवित्थरपसंगा । वक्खाणमंतरेणावि सिस्समतिबोधणसमत्था ॥ ४ ॥  
ससमय-परसमयणयाण जं थ ण समाधितं पमादेण । तं खमहं पसादेह य इत्र विष्णुत्ती पवयणीण ॥ ५ ॥

॥ दसकालियचूर्णी परिसमत्ता ॥

(१६) दशकालिकसूत्रचूर्णी वृद्धविवरणाख्या । अन्तः—

अञ्जयणाणंतरं ‘काल्पाओ समाधीए’ जीवणकालो जस्स गतो समाहाए ति । जहा तेण एत्तिएण चेव .....  
आराहगा भवति ति ॥ दशवैकालिकचूर्णी सम्भता ॥ प्रथाप्रम् ७४०० ॥

(१७) उत्तराध्ययनचूर्णी । अन्तः—

वाणिजकुलसंभूतो कोडियगणितो व वज्जसाहीतो । गोवालियमहतरओ विक्खातो आसि लोगम्भि ॥ १ ॥  
ससमय-परसमयविऊ ओयससी देहिमं सुगंभीरो । सीसगणसंपरिवुडो वक्खाणरतिप्यियो आसी ॥ २ ॥  
तेसि सीसेण इमं उत्तराध्ययणाण चुणिणखंडं तु । इद्यं अणुग्रहालं सीसाणं मंदबुद्रीण ॥ ३ ॥  
जं पूर्वं उसुत्तं अयाणमाणेण विरतितं होजा । तं अणुओगवश मे अणुचितेडं समारेतु ॥ ४ ॥  
॥ षट्ट्रिशोत्तराध्ययनचूर्णी समाप्ता ॥ प्रथाप्रम् ५८५० ॥

(१८) नन्दीसूत्रचूर्णी । अन्तः—

गिरेण ग म त प ह स दा र्ज या (६) पमुपतिसंखगजट्टिताकुला ।  
कमट्टिता धीमतचित्यक्खरा कुडं कहेयंतडमिथाण कत्तुणो ॥ १ ॥  
शकराङ्गो पञ्चसु वर्षशतेषु व्यतिक्रान्तेषु अष्टनवतेषु नन्दीध्ययनचूर्णी समाप्ता इति ॥ प्रथाप्रम् १५०० ॥

(१९) अनुयोगद्वारसूत्रचूर्णी । अन्तः—

चरणमेव गुणो चरणगुणो । अहवा चरणं चारित्रम्, गुणम् खंमादिया अणेगविधा, तेसु जो जहट्टिओ साधू सो  
सञ्चयणयसमतो भवतीति ॥

॥ कृतिः श्रीशेताम्बराचार्यश्रीजिनदासगणिपद्मत्तरपूज्यपादानामनुयोगद्वाराणां चूर्णः ॥

६. इस चूर्णि पर टिप्पन रचनेवाले श्रीश्रीचंद्रसूरिजी प्रस्तुतचूर्णिका वृहद्चूर्णिके नामसे उल्लेख करते हैं ।

## (२०) पाक्षिकसूत्रचूर्णि । अन्तः—

अनुष्टुप्मेदेन छंदसां ग्रथाग्रं चत्वारि शतानि ४०० ॥ पाक्षिकप्रतिकमणचूर्णी समाप्ते ॥ शुभं भवतु सकलं संघर्ष्य । मंगलं महाश्रीः ॥

१. उपर जिन बीस चूर्णीयोंके आदि-अन्तादि अंशोंके उल्लेख दिये हैं, इनके अवशेषकनसे प्रतीत होता है कि—प्रज्ञापनासूत्रके बारहवें शरीरपदकी चूर्णि श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमण कृत है। अब इसकी कोई स्वतन्त्र हस्तप्रति ज्ञानभंडारोंमें उपलब्ध नहीं है, किन्तु श्रीजिनदासगणि महत्तर और आचार्य श्रीहरिभद्रस्त्रिने क्रमशः अपनी अनुयोगद्वारासूत्र उपरकी चूर्णि और लघुवृत्तिमें इस चूर्णिको समग्र भावसे उद्धृत कर दी है, इससे इसका पता चलता है। श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणने प्रज्ञापनासूत्र उपर सम्पूर्ण चूर्णी की हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता है। इसका कारण यह है कि—प्राचीन जैन ज्ञानभंडारोंमें प्रज्ञापनासूत्रचूर्णीकी कोई हाथपोथी प्राप्त नहीं है। दूसरा यह भी कारण है कि—आचार्य श्रीप्रलयगिरिने अपनी प्रज्ञापनावृत्तिमें सिर्फ शरीरपदको वृत्तिके सेवा और कहा भी चूर्णीपाठका उल्लेख नहीं किया है। अतः ज्ञात होता है कि श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणने सिर्फ प्रज्ञापनासूत्रके बारहवें शरीरपदपद पर ही चूर्णी की होगी। आचार्य मलयगिरिने अपनी वृत्तिमें इस चूर्णिका छ स्थान पर उल्लेख किया है।

२. नन्दीसूत्रचूर्णी, अनुयोगद्वारचूर्णी और निशीथसूत्रचूर्णीके प्रणेता श्रीजिनदासगणि महत्तर हैं। जो इन चूर्णीयोंके अन्तिम उल्लेखसे निर्विवाद रूपसे ज्ञात होता है। निशीथचूर्णिके प्रारम्भमें आपने अपने विद्यागुरुका शुभनाम श्रीप्रद्युम्न क्षमाश्रमण बतलाया है। संभव है कि आपके दीक्षागुरु भी ये ही हों। इन चूर्णीयोंकी रचना जिनभद्र गणि क्षमाश्रमणके बादकी है। इसका कारण यह है कि—नन्दीचूर्णिमें चूर्णिकारने केवलज्ञान-केवलदर्शनविषयक सुगप्तदुपयोग-एकोपयोग-कमोपयोगकी चर्चा की है एवं स्थान स्थान पर जिनभद्रगणिके विशेषावश्यक भाष्यकी गाथाओंका उल्लेख भी किया है। अनुयोगद्वारचूर्णीमें तो आपने श्रीजिनभद्रगणिकी शरीरपदचूर्णीको साधन्त उद्धृत कर दी है। अतः ये तीनों रचनायें श्रीजिनभद्रगणिके बादकी ही निर्विवाद सिद्ध हैं।

३. दशवैकालिकचूर्णीके कत्तौ श्रीअगस्त्यसिंहग्री हैं। ये आचार्य कौटिकगगार्त्तमित श्रीवज्रस्त्रामीकी शाखामें हुए श्रीऋषिगुप्त क्षमाश्रमणके शिष्य हैं। इन दोनों गुह-शिष्योंके नाम शाखान्तरवर्त्ति होनेके कारण पठावलीयोंमें पाये नहीं जाते हैं। कल्पसूत्रकी पठावलीमें जो श्रीऋषिगुप्तका नाम है वे स्थविर आर्यमुहस्तिके शिष्य होनेके कारण एवं सुद वज्रस्त्रामीसे भी पूर्ववर्त्ती होनेसे श्रीअगस्त्यसिंहगणिके गुरु ऋषिगुप्तसे मिलते हैं। कल्पसूत्रकी स्थविरावलीका उल्लेख इस प्रकार है—

येरस्स णं अज्जसुहत्थिस्स वासिद्वासगुत्सस इमे दुवालस येरा अतेवासी अहावज्ञा अभिष्णाया होत्या । तं जहा—

येरे य अज्जरोहण १ जसमदे २ मेहगणी ३ य कामिहृदी ४ ।

सुद्धिय ५ सुप्पडिबुदे ६ रक्तिखय ७ तह रोहगुते ८ य ॥ १ ॥

इसिगुते ९ सिगिते १० गगी य बंभे ११ गणी य तह सोमे १२ ।

दस दो य गणहरा खड़ एए सीसा सुहत्थिस्स ॥ २ ॥

स्थविर आर्यमुहस्ति श्रीवज्रस्त्रामीसे पूर्ववर्त्ती होनेसे ये ऋषिगुप्त स्थविर दशवैकालिकचूर्णिप्रणेता श्रीअगस्त्यसिंहके गुरु श्रीऋषिगुप्त क्षमाश्रमणसे जुदा है, यह स्पष्ट है।

आवश्यकचूर्णी, जिसके प्रणेताके नामका कोई पता नहीं है, उसमें तपसंयमके वर्णनप्रसंगमें आवश्यकचूर्णिकारने इस प्रकार दशवैकालिकचूर्णीका उल्लेख किया है—

तयो दुविहो—बज्जो अवमतरो य । जहा दसवेतालियचूणीए चाउलोदणंतं (? चालणेदाणंत) अलुद्देण  
गिरहर्वं सापुत्रु गिरियगीर्य ३ । [आवश्यकचूणी विभाग २ पत्र ११७]

आवश्यकचूणीके इस उद्धरणमें दशवैकालिकचूणीका नाम नजर आता है । दशवैकालिकसूत्रके उपर दो चूणीयों  
आज प्राप्त हैं—एक स्थविर अगस्त्यसिंहप्रणीति और दूसरी जो आगमोद्वारक श्रीसागरानन्दसूरि महाराजने रत्नामकी श्री-  
कृष्णदेवजी केरारीमलजी जैन शेताम्बर संस्थाकी ओरसे सम्पादित की है, जिसके कर्त्तकी नामका पता नहीं मीला है और  
जिसके अनेक उद्धरण याकिनीमहत्तरापुत्र आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिने अपनी दशवैकालिकसूत्रकी शिष्यहितावृत्तिमें स्थान स्थान  
पर चूद्धविवरणके नामसे दिये हैं । इन दो चूणीयोंमें से आवश्यकचूणीकारको कौनसी चूणी अभिप्रेत है ?, यह एक कठिनसी  
समस्या है । फिर भी आवश्यकचूणीके उपर उल्लिखित उद्धरणको गौरसे देखनेसे अपन निर्णयके समीप पहुंच सकते हैं । इस  
उद्धरणमें “चाउलोदणंत” यह पाठ गलत हो गया है । वास्तवमें “चाउलोदणंत” के स्थानमें मूलपाठ “चालणेदाणंत” ऐसा  
पाठ होगा । परन्तु मूलस्थानको बिना देखे ऐसे पाठोंके मूल आशयका पता न चलने पर केवल शान्तिक शुद्धि करके संख्या-  
बन्ध पाठोंको विद्वानोंने गलत बनाने के संख्याबन्ध उदाहरण मेरे सामने हैं । दशवैकालिकसूत्रकी प्राप्त दोनों चूणीयोंको मैंने  
बराबर देखी है, किन्तु “चाउलोदणंत”का कोई उल्लेख उनमें नहीं पाया है और इसका कोई सार्थक सम्बन्ध भी नहीं है । दश-  
वैकालिकसूत्रकी अगस्त्यसिंहीया चूणीमें तपके निरूपणकी समाप्तिके बाद “चालणेदाणि” [पत्र १९] ऐसा चूणीकारने लिखा  
है, जिसको आवश्यकचूणीकारने “चाउलोदणंत” बाक्यद्वारा सूचित किया है । इस पाठको बादके विद्वानोंने मूल स्थानस्थित  
पाठको बिना देखे गलत शान्तिक सुधारा कर बिगाढ़ दिया—ऐसा निश्चितरूपसे प्रतीत होता है । अतः मैं इस निर्णय पर आया  
हूं कि—आवश्यकचूणीकारनिर्दिष्ट दशवैकालिकचूणी अगस्त्यसिंहीया चूणी ही है । और इसी कारण अगस्त्यसिंहीया चूणी  
आवश्यकचूणीके पूर्वकी रचना है ।

आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिने अपनी शिष्यहितावृत्तिमें इस चूणीका खास तौरसे निर्देश नहीं किया है । सिर्फ़ इवका =  
सं० रतिवाक्या नामक दशवैकालिकसूत्रकी प्रथम चूलिकाकी व्याख्यामें [पत्र २७३—२] “अन्ये तु व्याचक्षते” ऐसा निर्देश करके  
अगस्त्यसिंहीया चूणीका मतान्तर दिया है । इसके सिवा कहीं पर भी इस चूणीके नामका उल्लेख नहीं किया है ।

इस अगस्त्यसिंहीया चूणीमें तत्कालवर्ती संख्याबन्ध वाचनान्तर—पाठभेद, अर्थभेद एवं सूत्रपाठोंकी कमी-बेशीका काफ़ी  
निर्देश है, जो अतिमहत्वके हैं ।

यहाँ पर ध्यान देने जैसी एक बात यह है कि—दोनों चूणीकारोंने अपनी चूणीमें दशवैकालिकसूत्र उपर एक प्राचीन  
चूणी या वृत्तिका समान रूपसे उल्लेख रहवाक्षाचूलिका को चूणीमें किया है । जो इस प्रकार है—

“एत्थ इमातो वृत्तिगतातो पदुद्देसमेतगाधाऽमो । जहा —

दुक्खं च दुस्समाए जीवितं जे१ लहुसगा पुणो कामा २ ।

सातिवहुला मणुस्सा ३ अचिरद्वाणं चिमं दुक्खं ४ ॥ १ ॥

ओमज्ञगम्मि य स्विसा ५ वंतं च पुणो निसेवियं भवति ६ ।

गहरोवसंपया वि य ७ दुलभो घम्मो गिहे गिहिणो ८ ॥ २ ॥

निवर्यंति परिकिळेसा ९ वंधो ११ सावज्जोग गिहिवासो १३ ।

एते तिणि वि दीसा न होति अणगास्वासम्मि १०-१२-१४ ॥ ३ ॥

साधारणा य भोगा १९ पत्तेयं पुण्ण-पावकलमेव २६ ।

नीयमवि माणवाणं कुसगाजलचंचलमणिचं १७ ॥ ४ ॥

जतिथ य अवेदयिता भोक्ष्यो कम्मस्स निर्छओ एसो १८ ।  
पदमटारसमेतं वीरव्यणसासणे भणितं ॥ ५ ॥ ”

### आगस्त्यसिंहीया चूर्णी

दूसरी मुद्रित चूर्णिमि [पत्र ३५८] “एत्य हमाओ ब्रृत्तिगावाओ । उक्तं च” ऐसा लिखकर उपर दी हुई गाञ्चायें उदृत कर दी हैं ।

इन उल्लेखोंसे यह निर्विवाद है कि—दशबैकालिकसूत्र के उपर इन दो चूर्णियोंसे पूर्ववर्ती एक प्राचीन चूर्णी भी थी, जिसका दोनों चूर्णिकारोंने ब्रृत्ति नामसे उल्लेख किया है । इससे यह भी कहा जा सकता है कि—आगमोंके उपर पव और गव्यमें व्याख्याप्रन्थ लिखनेकी प्रणालि अधिक पुराणी है । और इससे हिमवंतस्थविरावलीमें उल्लिखित निम्न उल्लेख सत्यके समीप पहुंचता है—

“तेषामार्यसिंहानां स्थविरणां मधुमित्रा-ऽर्यस्कन्दिलाचार्यनामानौ द्वौ शिष्यावभूताम् । आर्यमधुमित्राणां शिष्या आर्यगन्धहस्तिनोऽतीवनिर्दांसः प्रभावकाश्चाभवन् । तैश्च पूर्वधरस्थविरोत्तं सोमास्वातिवाचकरचित-तत्त्वाथोपरि अशीतिसहस्रालोकप्रमाणं महाभाष्यं रचितम् । एकादशाङ्गोपरि चाऽर्यस्कन्दिलस्थविरा-णामुपरीथतस्तैर्विवरणानि गच्छतानि । अतुलं लद्वित्तुऽतद्विवरणान्ते यथा —

येरस्स महुमित्तस्स सेहेहिं तिपुवनाणजुत्तेहिं । मुणिगणविवंदिएहिं ववगवरायाइदोसेहिं ॥ १ ॥

वंभद्रीचियसाहामद्वेहिं गंवद्विथविबुहेहिं । विवरणमेयं रद्यं दोसयवासेसु विकमओ ॥ २ ॥

आचाराङ्गसूत्रके इस गन्धहस्तविवरणका उल्लेख आचार्य श्रीशीलाङ्गने अपनी आचाराङ्गब्रृत्तिके उपोदधातमें भी किया है । कुछ भी हो, जैन आगमोंके उपर व्याख्या लिखनेकी प्रणाली अधिक प्राचीन है ।

४. उत्तराध्यनसूत्रचूर्णिके प्रणेता कौटिकरणीय, वज्रशास्त्रीय एवं वाणिजकुलीय स्थविर गोपालिक महत्तरके शिष्य थे । इस चूर्णिकारने चूर्णिमें अपने नामका निर्देश नहीं किया है । इनका निर्धित समयका पता लगाना मुद्रिकल है । तथापि इस चूर्णिमें विशेषाचश्यकभाष्यकी स्वोपन्न टीकाका सन्दर्भ उल्लिखित होनेके कारण इसकी रचना जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणके स्वर्गवासके बादकी है । विशेषाचश्यक भाष्यकी स्वोपन्न टीका, यह श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणकी अन्तिम रचना है । छट्ठे गणधरवाद तक इस टीकाका निर्माण होने पर आपका देहान्त हो जानेके कारण बादके समग्र प्रथकी टीकाको श्रीकोट्टर्यवादी गणी महत्तरने पूर्ण की है ।

५. जीतकल्पबृहचूर्णिके प्रणेता श्रीसिद्धसेनगणी हैं । इस चूर्णिके अन्तमें आपने सिर्फ अपने नामके अतिरिक्त और कोई उल्लेख नहीं किया है । श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणकृत प्रन्थके उपर यह चूर्णी होनेके कारण इसकी रचना श्रीजिनभद्रगणिके बादकी स्वयंसिद्ध है । इस चूर्णिको दिष्पनकार श्रीश्रीचन्द्रसूर्यो बृहचूर्णिनामसे दरशाई है—

नवा श्रीमन्महावीरं परोपकृतिहेतवे । जीतकल्पबृहचूर्णिव्याख्या काचित् प्रकाश्यते ॥ १ ॥

उपरन्दिष्ट सात चूर्णियोंके अतिरिक्त तेरह चूर्णियोंके रचयिताके नामका पता नहीं मिलता है । तथापि इन चूर्णियोंके अबलीकनसे जो हकीकत व्यानमें आई है इसका यहाँ उल्लेख कर देता हूँ ।

यद्यपि आचाराङ्गचूर्णी और सूत्रकृताङ्गचूर्णिके रचयिताके नामका पता नहीं मिला है तो भी आचाराङ्गचूर्णिमि चूर्णिकारने पंद्रह स्थान पर नागार्जुनीय वाचनाका उल्लेख किया है, उनमेंसे सात स्थान पर “भद्रतनागजुणिया” इस प्रकार बहुमानदर्शक ‘भद्रत’शब्दका प्रयोग किया है, इससे अनुमान होता है कि ये चूर्णिकार नागार्जुनसन्तानीय कोई स्थविर होने चाहिए । सूत्रकृताङ्गचूर्णिमि जहाँ जहाँ नागार्जुनीय वाचनाका उल्लेख चूर्णिकारने किया है वहाँ सामान्यतया

नागज्ञुणिया इतना ही लिखा है। अतः ये दोनों चूर्णिकार अलग अलग ज्ञात होते हैं। सूत्रकृताङ्गचूर्णमें जिनभद्रगणीके विशेषावश्यकभाष्यकी गाधायें प्रवृं स्वोपन्न टीकाके सन्दर्भ अनेक स्थान पर उद्भूत किये गये हैं, इससे इस चूर्णिकी रचना श्रीजिनभद्रगणिके बादकी है; तब आचाराङ्गचूर्णमें जिनभद्रगणिके क्रोडि ग्रन्थका उल्लेख नहीं है, इस कारण इस चूर्णिकी रचना श्रीजिनभद्रगणिके पूर्वकी होनेका सम्मव अधिक है।

भगवतीसूत्रचूर्णमें श्रीजिनभद्रगणके विशेषणवतीप्रथकी गाथाओंके उद्धरण होनेसे, और कल्यचूर्णमें साक्षात् विसेसावस्तुभासकका नाम उल्लिखित होनेसे इन दोनों चूर्णयोंकी रचना निश्चित रूपसे श्रीजिनभद्रगणके बादकी है।

दशासूत्रचूर्णीमें केवलज्ञान-केवलदर्दनविषयक युगपदुपयोगदिवादका निर्देश होनेसे यह चूर्णी भी श्रीजिनभद्रगणकि वादकी है।

आवश्यक चूर्णिके प्रणेताका नाम चूर्णिकी कोई प्रतिमें प्राप्त नहीं है। श्रीसागरानन्दसूरि महाराजने अपने सम्पादनमें इसको जिनदासगणिमहत्तरकृत बतलाई है। प्रतीत होता है कि—आपका यह निर्देश श्रीधर्मसागरोपाध्यायकृत तपागच्छीय पटावलीके उल्लेखको देख कर है, किन्तु वास्तवमें यह सत्य नहीं है। अगर इसके प्रणेता जिनदासगणि होते तो आप इस प्राप्तादभूत महती चूर्णिमें जिनभद्र गणिके नामका या विशेषावश्यकभाष्यकी भाथाओंका जरूर उल्लेख करते। मुझे तो यही प्रतीत होता है कि—इस चूर्णिकी रचना जिनभद्रगणिके पूर्वकी और नन्दीसूत्ररचनाके बादकी है।

दशवैकालिकचूर्णी (वृद्धविवरण)में और व्यवहारचूर्णीमें श्रीजिनभद्रगणिकी कोई कृतिका उद्धरण नहीं है, अतः ये चूर्णीयाँ भी जिनभद्रगणि ऋसाश्रमणके पूर्वकी होनी चाहिए।

**जम्बूद्वीपकरणचूर्णी**, यह जम्बूद्वीपप्रज्ञसिकी चूर्णी मानी जाती है, किन्तु वास्तवमें यह जम्बूद्वीपके परिवि-जीवा-धनुःपुष्ट आदि आठ प्रकारके गणितको स्पष्ट करतेवाले किसी प्रकरणकी चूर्णी है। वर्तमान इस चूर्णमें मूल प्रकरणकी गाथाभंडेके प्रतिक सात्र चूर्णिकारने दिये हैं, अतः कुछ गाथाओंका पता जिनभट्टीय वृहत्सेत्रसमासप्रकरणसे लगा है, किन्तु कितनीक गाथाओंका पता नहीं चला है। इस चूर्णमें जिनभट्टीय वृहत्सेत्रसमासकी गाथायें भी उद्धृत नजर आती हैं, अतः यह चूर्णी उनके बादकी है।

यहाँ पर चूर्णियोंके विविध उल्लेखोंको लक्ष्यमें रख कर चूर्णिकारोंके विषयमें जो कुछ निबेदन करनेका था, वह करनेके बाद अंतमें यह लिखना प्राप्त है कि—प्रकाश्यमान इस नन्दीसूत्रचूर्णिके प्रणेता श्रीजिनदासगणि महत्तर हैं, जिसका सचनासमय स्पष्टतया प्राप्त नहीं है, फिर भी आज नन्दीसूत्रचूर्णिकी जो प्रतियाँ प्राप्त हैं उनके अन्तमें संवतका उल्लेख नजर आता है, जो चूर्णिरचनाका संवत् होनेकी संभावना अधिक है। यह उल्लेख इस प्रकार है—

दाकरंजः पञ्चसु वर्षशतेषु व्यतिकान्तेषु अष्टनवतेषु नैन्द्यव्यथनचर्णी समाप्ता हति ।

अर्थात् शाके ५९८ (वि. सं. ७३३) वर्षमें नन्दव्ययनचूर्णी समाप्त हुई। इस उल्लेखको कितनेक विद्वान् प्रतिका लेखनसमय मानते हैं, किन्तु यह उल्लेख नन्दव्ययनचूर्णिका समाप्तिका अर्थात् रचनासमाप्तिका ही निर्देश करता है, लेखनकालका नहीं। अगर प्रतिका लेखनकाल होता तो 'समाप्त' ऐसा न लिख कर 'लिखित' ऐसा ही लिखा होता। इस प्रकार गद्यसन्दर्भमें रचनासंबंध लिखनेकी प्रथा प्राचीन युगमें थी ही, जिसका उदाहरण आचार्य श्रीदीलाङ्की आचाराकृतिमें प्राप्त है।

१. “श्रीवीराव १०५५ वि० ५८५ चर्षे याकिनीसनुः श्रीहरिभद्रसूरिः सर्वगभाष्टः । निशीथ-बृहत्कल्पभाष्या-३३वक्ष्यकादि-  
चूर्णिकाराः श्रीजिनवासमद्वत्तरादयः पूर्वगतसुतधरश्चीप्रत्युषनक्षमणादिशिष्यत्वेन श्रीहरिभद्रसूरितः प्राचीना एव यथा-  
कालभातविनो वोच्याः । १११५ श्रीजिनभद्रगणिर्युगप्रवानः । अयं च जिनभद्रीयम्बानशतककाराद् भिन्नः सम्भाष्यते ।’ हस्तियन  
एण्टीवेरी पृ० ११, पृ० ३५३ ॥

## सूत्र और चूर्णिकी भाषा

नन्दीसूत्र और इसकी चूर्णिकी भाषाका स्वरूप क्या है ? इस विषयमें अभी यहाँ पर अधिक कुछ मैं नहीं लिखता हूँ । सामान्यतया ज्यापकर्त्तव्यसे मेरेको इस विषयमें जो कुछ कहना था, वह मैंने अखिलभारतीयग्राच्यविद्यापरिषत्—श्रीनगरके लिये तैयार किये हुए मेरे “जैन आगमधर और प्राकृत वाङ्मय” नामक निबन्धमें कह दिया है, जो ‘श्रीहजारीमल स्मृतिग्रन्थ’में प्रसिद्ध किया गया है, उसको देखनेकी विद्वानोंको सूचना है ।

### परिशिष्टादि

चूर्णिके अन्तमें पांच परिशिष्ट और शुद्धिपत्र दिये गये हैं । पहले परिशिष्टमें मूल नन्दीसूत्रमें जो गाथाएँ हैं उनको अकारादिकममें दी गई हैं । दूसरे परिशिष्टमें नन्दीचूर्णिमें चूर्णिकारने उद्धृत किये उद्धरणोंको अकारादिकमसे दिये हैं । तीसरा परिशिष्ट चूर्णिगत पाठान्तर और मनान्तरोंका है । चौथे परिशिष्टमें नन्दीसूत्र और चूर्णिमें आनंदाले ग्रन्थ, ग्रन्थकार, स्थविर, तृप, अष्टी, नगर, पर्वत आदि विशेषनामोंका अनुक्रम है । पाँचवे परिशिष्टमें सूत्र और चूर्णिमें आनेवाले विषयवीतक पर्वं शुल्पत्ति-चोतक शब्दोंका अनुक्रम दिया गया है । इन परिशिष्टोंके बादमें शुद्धिपत्रक दिया गया है । वाचक और अध्येता विद्वानोंसे नम्र निवेदन हैं कि इस ग्रन्थको शुद्धिपत्रके अनुसार शुद्ध करके पढ़ें ।

### संशोधन और सम्पादन

इस ग्रन्थके संशोधनमें अनेक महानुभाव विद्वान् व्यक्तियोंका परिश्रम है । खास तोरसे पै. भाई अमृतलाल मोहनलाल भोजकका इस सम्पादनमें महत्वका साहाय्य है । जिसने चूर्णि और मूल सूत्रकी प्रामाणिक प्राणदुलिपि (प्रेसकोरी) तैयार की है, साथान्त प्रुफपत्र देखे हैं और इस ग्रन्थके महत्वपूर्ण परिशिष्ट भी किये हैं । भाई श्री दलसुखभाई मालवणिया—मुख्यनियामक ला. द. भारतीय संस्कृतविद्यामंदिर—अहमदाबाद तथा पंडित बेचरदासगाई दोसोने मुद्रणके बादमें साथान्त देखकर अशुद्धियोंका परिमार्जन किया है, जिसके फलस्वरूप शुद्धिपत्र दिया है । भाई श्रीदलसुख मालवणिया का आगमोंके संशोधनमें शास्त्र साहाय्य प्राप्त है, यह परम सौमान्यकी बात है ।

वसंत प्रिन्टिंग प्रेसके संचालक श्री जयंति दलाल और मेनेजर श्रो शांतिलाल शाह ग्रन्थपत्रके सर्व भाईओंका प्रस्तुत मुद्रणकार्यमें आंतरिक सहयोग भी हमारे लिए चिरस्मरणीय है ।

चूर्णिभृत नन्दीसूत्रके संशोधनमें मात्र ग्रन्थकी प्रतियोंका ही आधार रखा गया है, ऐसा नहीं है, किन्तु मूलसूत्र एवं चूर्णिके उद्धरण प्राचीन व्याख्याग्रन्थोंमें जहाँ जहाँ भी देखनेमें आये उनसे भी तुलना की गई है । इस प्रकार प्राचीन प्रतियों, प्राचीन उद्धरणोंके साथ तुलना एवं अनेक विद्वानोंके वौद्धिक परिश्रमके द्वारा इस नन्दीसूत्र एवं चूर्णिका संशोधन और सम्पादन किया गया है । मैं तो सिर्फ इस संशोधन एवं सम्पादनमें साक्षीभूत ही रहा, हूँ । अतः इस ग्रन्थके महत्वपूर्ण संशोधन एवं सम्पादन का यश हम सभीको एकसमान है ।

अन्तमें गीतार्थी मुनिप्रवर एवं विद्वानोंसे मेरी नम्र प्रार्थना है कि—मेरे इस संशोधनमें जो भी छोटी मोटी क्षति प्रतीत हो, इसकी सुझे सूचना दी जायगी तो जरूर अतिरिक्त शुद्धिपत्रकी तोरसे उसको आदर दिया जायगा ।

सं. २०२२ माघ शुक्ल पूर्णिमा  
अहमदाबाद

मुनि पुण्यविजय

## चूर्णियुक्त नन्दीसूत्रका विषयानुक्रम

---

संख्या	विषय	पृष्ठ	संख्या	विषय	पृष्ठ
	<b>चूर्णिकारका उपक्रम—प्रारम्भ</b>		१	प्रत्यक्षज्ञानके इन्द्रियप्रत्यक्ष] नोइन्द्रियप्रत्यक्ष	
१	गाथा १३ मङ्गलसूत्र—गाथा २-३	१	दो मेद		१८
	महावीरपरमात्माकी स्तुति	२	इन्द्रियप्रत्यक्षके पाँच मेद		१९
२	गाथा ४-१३ सहस्रस्तुतिसूत्र—श्रीसंघकी रथ, चक्र, नगर, पद्म, चन्द्र, सूर्य, समुद्र और मन्दरगिरिके रूपको द्वारा स्तुति	३-६	११ नोइन्द्रियप्रत्यक्षके तीन मेद		१५
३	गाथा १४-१५ जिनावलीसूत्र— चोकीस जिलोंको नमस्कार	६	१२ अवधिप्रत्यक्षके दो मेद— क्षायोपज्ञामिक और सबप्रत्ययिक		१५
४	गाथा २०-२१ गणधरवलीसूत्र— भगवान् महावीरके ११ गणवरोंकी स्तुति	७	१३ क्षायोपज्ञामिक तथा गुणप्रत्ययिक अवधि- ज्ञानका स्वरूप		१५
५	गाथा २२-४२ स्थविरावलीसूत्र— श्रुतस्थविरोंकी स्तुति	७-१२	१४ अवधिज्ञानके आनुगामिकादि छ मेद		१५
	गा. २२ सुधर्मा, जम्बूस्वामि, ग्रभवस्त्रामि, शश्यम्भव, गा. २३ यशोभद्र, सम्मुताय, मद्रवाहु, स्थूलभद्र, गा. २४ महागिरि, सुदस्ती, यहुल, गा. २५ स्वाति, दयामार्य, शाण्डिल्य, जीवधर, गा. २६ आर्यसमुद्र, गा. २७ आर्यमङ्गु, गा. २८ आर्यनन्दिल, गा. २९ वाचक आर्यनागहस्ती, गा. ३० रेवतिनक्षत्र वाचक, गा. ३१ सिंहवाचक, गा. ३२ स्फन्दिलवाचाय, 'गा. ३३ द्विमवन्त, गा. ३४-३५ नागर्जुन वाचक, गा. ३६-३८ भूतदिक्षावाचाय, गा. ३९ लौहित्य, ४०-४१ दुष्यगणि, गा. ४२ सामान्यरूपसे सर्व स्थविरोंकी स्तुति		१५-२१ १ आनुगामिक अवधिज्ञानका स्वरूप, उसके अन्तर्गत और अव्यगत मेद तथा पुरतो अन्तर्गत, सांगतो अन्तर्गत, पार्श्वतोऽ;अन्त- गतादि प्रमेदों का स्वरूप, उन में प्रतिविशेष वाचिका निरूपण		१६
	गा. ४३ एर्षत्सूत्र— श्रुतशानके—शास्त्रके अधिकारि—अमधिकारी शिष्यों की परीक्षाके लिये शैलघन, कुट, चालनी, परिपूणक, हंस आदिके लाक्षणिक उदाहरण और ज्ञापनैदू अज्ञापनैदू एवं दुर्विदम्भपनैदू	१२	२३ २ अनानुगामिक अवधिज्ञान		१७
६	शानसूत्र— पाँच ज्ञानके नाम मत्यादि पाँच ज्ञानकी व्युत्पत्ति, क्रम आदिका निरूपण	१३	२४ ३ वर्षमानक अवधिज्ञान, गाथा ४४-४५ अवधिज्ञानका जघन्य और उत्कृष्ट अवधि- क्षेत्र, गा. ४६-४९ द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावकी अपेक्षाओं अवधिज्ञानकी दृष्टिका स्वरूप, गा. ५० द्रव्य-क्षेत्र काल-भावका पारस्परिक दृष्टिका स्वरूप, गा. ५१ क्षेत्र-कालकी सूक्ष्मताका निरूपण		१७-१८
७	मत्यादिज्ञानोंका प्रत्यक्ष परोक्ष रूपमें विभाजन	१४	४ हीयमान अवधिज्ञान		१९
			५ प्रतिपाति अवधिज्ञान		१९
			६ अप्रतिपाति अवधिज्ञान		१९
			२७ द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री अवधिज्ञानका स्वरूप		१९
			२८ गा. ५२ अवधिज्ञानका उपसंहार		२०
			२९ मनःपर्यवज्ञानका अधिकारी		२०
			३० मनःपर्यवज्ञानके ऋजुमति विपुलमति दो मेद		२२
			३१-३२ द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री ऋजुमति- विपुलमतिमनःपर्यवज्ञानका स्वरूप और गा. ५३ मनःपर्यवज्ञानका उपसंहार		२३
			चूर्णिमें— अष्ट इच्छादेश और उप- रिम-अधस्तन भुज्जकप्रतरका स्वरूप		२४

## चूणियुक्त नन्दीसूत्रका विषयानुक्रम

१६

संख्या	विषय	पृष्ठ	संख्या	विषय	पृष्ठ
३३	केवलज्ञानके भवस्थ और सिद्धकेवलज्ञान दो भेद	२५	५३	अपायके भेद और एकाधिक शब्द	३५
३४-३६	भवस्थकेवलज्ञानके भेद और स्वरूप	२५	५३	धारणाके भेद और एकाधिक शब्द	३६
३७	सिद्धकेवलज्ञानके अनन्तरसिद्ध परम्परसिद्ध दो भेद	२६	५४-५६	२८ प्रकारके मतिज्ञानका और व्यज्ञनाव-प्रहका प्रतिबोधक और मङ्गक दृष्टान्त द्वारा स्वरूपनिरूपण	३७-३९
३८	अनन्तरसिद्धके तीर्थसिद्ध, अतीर्थसिद्ध आदि पंद्रह भेद		५७	इत्यक्षेत्र काल भाव आश्री आभिनिवोधिक ज्ञानका स्वरूप	४२
	चूणिमें-प्रह भेदोंका विस्तृत स्वरूप	२६	५८	गा. ४०-४५ आभिनिवोधिक ज्ञानके भेद, अर्थ, कालमान, वाच्दथवणका स्वरूप, एकाधिक शब्द और उपसंहार	४३
३९	परम्परसिद्धकेवलज्ञान	२७	५९	श्रुतज्ञानके चौदह भेद	४४
४०	इत्य क्षेत्र काल भाव आश्री केवलज्ञानका स्वरूप	२८	६०-६३	१ अक्षरश्रुतके संश्लेषण, व्यज्ञनाधर और लक्ष्यक्षर, तीन भेद और स्वरूप	४५
	चूणिमें-केवलज्ञान-केवलदर्शनविषयक युग-पदुपयोग-एकोपयोग-क्रमोपयोगयादकी चर्चा	२८-३५	६४	२ गा. ७६ अनक्षरश्रुत	४५
४१	गा. ५४-५५ केवलज्ञानका उपसंहार	३०	६५-६८	३ संश्लिष्टुतके कालिक्युपदेश, हेतुपदेश और हष्टिष्वादोपदेश तीन प्रकार, स्वरूप और ४ असंज्ञिश्रुत	४५-४७
४२	परीक्षज्ञानके आभिनिवोधिक श्रुतज्ञान दो भेद	३१		चूणिमें—ईहा, अपोह, पार्णा, गवेषणा, चिन्ता, विमर्श हन शब्दोंके अर्थका स्पष्टीकरण	
४३	आभिनिवोधिक ज्ञानके श्रुतनिश्चित अश्रुत-निधित दो भेद	३१	६९	५ सम्यक्श्रुत-द्वादशाहीके नाम	४८
४४	अश्रुतनिश्चित आभिनिवोधिकज्ञानके भेद, स्वरूप और उदाहरण	३२	७०	६ मिथ्याश्रुत-भारत, रामायण हमी मस्तुरुक्ष आदि प्राचीन अनेक जैनेतर ज्ञात्वोंके नाम और सम्यक्श्रुत-मिथ्याश्रुतका लात्तिक विवेक	
४५	गा. ५६ अश्रुतनिश्चित आभिनिवोधिकके औपत्तिकी आदि चार भेद गा. ५७-६० औपत्तिकी मतिका स्वरूप और उदाहरण गा. ६१-६३ वैनियकी मतिका स्वरूप और उदाहरण, गा. ६४-६५ कमेजा मतिका स्वरूप और उदाहरण, गा. ६६-६९ पारिणामिक मतिका स्वरूप और उदाहरण	३२	७१-७३	७-८ सादि+अवादि ९-१० सपर्यवसित अपर्यवसित श्रुतज्ञान, और उनका इत्य क्षेत्र काल भाव आश्री स्वरूप	४९-५०
४६	श्रुतनिश्चित मतिज्ञानके अवग्रह, ईहा आदि चार भेद	३३	७४-७५	८० पर्यावाग्राक्षरका निरूपण और अतिगाढ़-कमश्रुत दशामें भी जीवकी अक्षरके अन्तमें भाग जितने ज्ञानका शाश्वतिक संद्राव चूणिमें-अक्षरपटलका विस्तृत निरूपण	५१
४७	अवग्रहके अर्थविग्रह व्यज्ञनावग्रह दो भेद	३४	७६	९१-९३ गमिक अगमिक श्रुतज्ञान	५२
४८	व्यज्ञनावग्रहके भेद और स्वरूप	३५	७७	९४-९५ अक्षप्रविष्ट और अक्षवात्यश्रुत	५६
४९	अर्थविग्रहके भेद और एकाधिक शब्द	३५	७८	अक्षवात्यश्रुतके आवद्यक और आवद्यक-व्यतिरिक्त दो प्रकार	५७
५०	ईहाके भेद और एकाधिक शब्द	३५	७९	आवद्यकश्रुत	५७

सूत्र	विषय	पृष्ठ	सूत्र	विषय	पृष्ठ
८१	उत्कालिकश्रुत के २९ नाम	५७	१०८-१०	अनुयोगहस्तिवादके मूलप्रथमानुयोग और गंडिकानुयोग दो प्रकार तथा इनका स्वरूप	७६
	<b>चूर्णिमें—२९ उत्कालिकश्रुतके नामोंका स्थुतस्त्यर्थविवरण</b>			<b>चूर्णिमें—सिद्धगण्डिकाका वर्णन</b>	७७
८२	कालिकश्रुतके २९ नाम	५८	१११	चूलका हस्तिवाद	७९
	<b>चूर्णिमें—कालिक श्रुतके नामोंका स्थुतस्त्यर्थविवरण। दिष्पणीमें नामोंकी कमी—बेशीका निर्देश</b>		११२-१३	हस्तिवादका परिमाण और विषय	८०
८३	आवद्यकव्यातिरिक्तश्रुतका उपसंहार	६०	११४	द्वादशाङ्कीके विराखकोंको हानि	८०
८४	अङ्गप्रविष्टश्रुतके १२ नाम	६१	११५	द्वादशाङ्कीके आराधकोंको लाभ	८१
८५	१ आचाराङ्गसूत्रका स्वरूप	६१	११६	द्वादशाङ्कीकी शाश्वतिकता	८१
८६	२ सूत्रकृताङ्गसूत्रका स्वरूप	६२	११७	इत्य क्षेत्र काल भाव आश्री श्रुतज्ञानका स्वरूप	८२
८७	३ स्थानाङ्गसूत्रका स्वरूप	६३	११८	गा. ८१ श्रुतज्ञानके चौदहमेद, गा. ८२ श्रुतज्ञानका लाभ, गा. ८३ शुद्धिके आठ शुण, गा. ८४ सूत्राधीशवणविधि, गा. ८५ सूत्रध्याख्यानविधि और उपसंहार-नन्दी-सूत्रकी समाप्ति	८२
८८	४ समवायाङ्गसूत्रका स्वरूप	६४		<b>प्रथम परिशिष्ट—नन्दीसूत्रगत गाथाओंका अकारादिक्रम</b>	८५
८९	५ विवाहप्रज्ञसिअङ्गसूत्रका स्वरूप	६५		<b>द्वितीय परिशिष्ट—नन्दीचूर्णिगत उद्धरणोंका अकारादिक्रम</b>	८५
९०	६ ज्ञातिधर्मकथाङ्गसूत्रका स्वरूप	६६		<b>तृतीय परिशिष्ट—नन्दीचूर्णिगत पाठान्तर और भतान्तरोंका निर्देश</b>	८६
९१	७ उपासकदशाङ्गसूत्रका स्वरूप	६६		<b>चतुर्थ परिशिष्ट—नन्दीसूत्र और चूर्णिगत प्रथ्य, अन्थकार, स्थविर, चृप, थेष्टी, नगर आदि के निशेषनामोंका अकारादिक्रम</b>	८६
९२	८ अन्तकृताङ्गसूत्रका स्वरूप	६७		<b>पञ्चम परिशिष्ट—नन्दीसूत्र और चूर्णिगत विषयविभाग और ब्युत्पत्तिदर्शक शब्दोंका अकारादिक्रम</b>	९१
९३	९ अनुत्तरौपपातिकदशाङ्गसूत्रका स्वरूप	६८			
९४	१० प्रश्नव्याकरणदशाङ्गसूत्रका स्वरूप	६९			
९५	११ त्रिग्राकसूत्रके हुखविषाक सुखविषाक दो प्रकार, उनका वर्णन और स्वरूप	७०			
९६	१२ हस्तिवाद अंगके पांच भेद	७१			
९७-१०५	परिकर्महस्तिवादके सात प्रकार और इनके भेद	७१			
१०६	सूत्रहस्तिवादके २२ प्रकार	७३			
१०७	पूर्वगतहस्तिवाद-चौदह पूर्व	७५			



मुमुक्षुतम् अथ विद्याम् इति या। डॉ विजया प्रभा ने दीर्घ समय में ग्रन्थ का अध्ययन किया है।

स्यात्तद्विषयाद्यत्तमेस्याद्यत्तम्  
यद्यथा विद्वाहरहोमसंवृत्तम्  
त्रिवारथ्यमत्तमासात्तमव्यादित्यज्ञ

याप्तिनदेसीलगपडाय एवं यत्विग्रहित्विद्विज्ञानाद्वारा त्वं सम्मिलितम् आयुरुनोटि  
यासम्भावित्वात्तर्क्षयात्त्राद्विविधिः प्रथमद्विविधिः अस्ति यस्मात्  
एतिनम्यात्तर्क्षाः तस्मात्त्राज्ञापास्त्रियत्विद्विज्ञानाद्वारा त्वं सम्मिलितम् आयुरुनोटि

२५

દુર્ગાસ્તુતિના પણ કાંઈ હશે

नानिवर्यम् मूलका । तिरु । सत्त्वकश्चिद्देहे प्रथम पत्रका और अंतिम ( तीसरे ) पत्रकी श्रुतियां उच्चि ।

॥ णमो तथु एं समणस्स भगवत्त्रो महै-महावीर-वद्माणसामिस्स ॥

णमो अणुओगधराणं थेराणं ।

सिरिदेवतायगचिरङ्गं

## नंदीसुत्तं ।

सिरिजिणदासगणिमहत्तरविरह्याए चुण्णीए संजुयं ।



॥ नमो भगवते वद्मानाय ॥

सब्बसुतकर्खेभगादीणं मंगलाधिकारे णंदि त्ति बत्तव्वा । णंदणं णंदी, णंदंति वा ऐणयेति णंदी, णंदंति वा णंदी, पमोदो हरिसो कंदप्पो इत्यर्थः । तस्स य चतुष्विहो निकखेबो । गैतासु णाम-द्वयासु द्वयणांदी जाणगो अणुचउत्तो । अहवा जाणग-भवियसरीरवतिरित्तो बारसविधो तूरसंघातो इमो—

संखा १ चक्षुंद २ चक्षु ३ कडंब ४ शलरि ५ हुड्क ६ कंसाला ७ ।

काढल ८ तलिमा ९ वंसो १० पणवो ११ संखो १२ य बारसमो ॥१॥

[ ]

भावणांदी णंदिसहोवयुत्तमावो । अहवा इमं पंचविहणाणयरूपगं णंदि त्ति अज्ञायणं, तं च सुतंसेण सब्बसुत-  
भंतरभूतं । तं च सब्बसुतारंभेसु विष्वोवसमणत्थमादीए मंगलं पयुज्जति । तस्स य मंगलद्वयावसरपत्तस्स  
गुरवो विणेयस्स अत्थ-सुतगोरव्यादणत्थं अनिच्छेदसंताणागतयुतप्पदरिसणत्थं च इमं थेरावैलि कहेता ततो से १०  
अत्थं केहयंति । सब्बसुतत्था य जतो तित्थगरण्यभवा, अतो भन्तीए पैणवग-सावग-पद्मग-चित्तगा य पद्मताए  
णमोकारं करेता भण्णति—

[ सुतं १ ]

जयइ जगजीवजोणीवियाणओ जगगुरु जगाणंदो ।

जगणाहो जगबंधू जयइ जगपियामहो भयवं ॥ १ ॥

15

जयति० गहा । सोर्तिदियादिविसय-कसाय-परीसहोवसेग-चउयातिकम्म-डहुप्पगारं छा परणवादिणो य  
जिणमाणो जितेयु वा जयति त्ति भण्णति । जगं ति-खेत्तेलोगो तम्मि जे जीवा तेसि जाओ जोणाओ—सच्चित्त-सीत-  
संबुडादियाओ चउरासीतिलक्खविहाणा वा विविहपगारेहि जाणमाणो वियाणओ । अहवा जो जहा जेहिं कम्मेहिं  
जाए जोणीए उववज्जति तं तहा जाणति त्ति विसिङ्गो जाणगो वियाणगो । अहवा जगगहणातो धम्मा-उधम्मा-  
उग्गास-पुण्यलग्नाहणं, जीव त्ति सब्बजीवभग्नाहणं, जोणि त्ति-जीवा-जीवुप्पत्तिठाणं, जहा य जं उप्पज्जति विग- 20  
च्छति धुवं वा तं तहा सब्बं जाणइ त्ति वियाणगो । अनेन वचनेन केवलनाणसामत्थतो सब्बभावे सब्बहा जाणति

१ “क्खंधतादीणं आ० दा० ॥ २ अणाप त्ति आ० । अणेण त्ति दा० ॥ ३ गयाओ णाम-द्वयणाओ । इत्यं  
आ० दा० ॥ ४ “मादीय मंगलहुं एयु० आ० ॥ ५ “वलियं कहेता आ० दा० ॥ ६ कथयंति आ० दा० ॥ ७ पण्णावगं  
आ० दा० ॥ ८ जिणवसभो सललियवसभविक्मगती महावीरो इत्युत्तरार्थगठमेदश्चूणौ । नायं पाठमेहः कस्मिक्षिदपि  
स्त्रादशेऽउपलभ्यते ॥ ९ “सम्यावघाति० आ० । “सम्युवघाति० दा० ॥ १० खेत्तभावो तम्मि आ० दा० ॥

चि रुयापितं भवति । ‘जगगुरु’ चि जगं ति—सब्बसणिलोगो, तस्य भगवानेव गुरुः । कथम् ? उच्यते—  
 [जे० १८६ प्र०] शृणाति शास्त्रार्थमिति गुरुः, ब्रवीतीत्यर्थः, तिरिय-भणुये-देवा-इमुराए परिसाए धम्ममकर्खाति ।  
 जो वा जं शुच्छति तं सब्बं कहयति चि तेषा गुरु, अनेन वचनेन परोपकारित्वं प्रदर्शितं भवति । जगा-सत्ता ताण  
 ५ आणंदकारी जगाणंदो । कहं ? उच्यते—सब्बेसिं सत्ताणं अव्वाचादणोवदेसकरण्णातो । जतो भणितं—“सब्बे सत्ता ण  
 हंतञ्चा ण परियावेतञ्चा ण परिवेतञ्चा ण अज्ञावेतञ्च” [आचा० श्रु.१ अ.४ उ.२ सू.३] चि । विसेसतो सणीणं  
 १० धम्मकहण्णातो आणंदकारी, ततो वि विसेसतो भव्वसत्ताणं ति । अनेन वचनेन हितोपदेशकर्तृत्वं दर्शितं भवति ।  
 जगा-सत्ता ते अणोहिं परिभविज्जमाणे रक्खइ चि जगणाहो । कहं ? उच्यते—मणो-न्यण-कापहिं कत-कारिता-इणुमतेहिं  
 १५ रक्खतो जगणाहो भवति । अनेन वचनेन सब्बपाणीणं सणाइता दंसिता भवति । ‘जगबंधु’ चि जगा-सत्ता तेसि  
 बंधु जगबंधु । कहं ? उच्यते—जो अप्पणो परस्स वा आवरीए वि ण परिच्छयति सो बंधु, भगवं च मुद्दु वि  
 २० परीसहोवसम्मादिसु वाहिज्जमाणो वि सत्तेसु बंधुत्तं अपरिच्छयंतो ण विराहेति चि अतो जगबंधु, अनेन वचनेन  
 सब्बसत्तेसु सबंधुता दंसिता भवति । पितामहो चि जो पितुपिता स पितामहो, सो य भगवं चेव । सब्बसत्ताणं  
 २५ पितामहो कहं ? उच्यते—सब्बसत्ताणं अहिसादिलकरणो धम्मो पिता रक्खण्णातो, सो य धम्मो भगवता पणीतो  
 अतो भगवं धम्मपिता, एवं च सब्बसत्ताणं भगवं पितामहो चि । अनेन वचनेन धम्मं पहुच आदिपुरिसत्तं रुयापितं  
 भवति । एतीए गाहाए पच्छद्दस्स पाढंतरं इमं—“जिणवसभो सललियवसभविकम [जे० १८६ द्वि०] गती महावीरो ।” जिण  
 ३० एव वसभो जिणवसभो । वसभो चि संजमभारुव्वहणे । चंकमतो सुभा गायसंचालणक्रिया सललितं भण्णति ।  
 वाम-दाहिणाणं वा युरिम-पञ्चिमचलणाणं जं कमुकखेवकरणं स विकमो भण्णति, दुष्पदस्स पुण एगचलणुकरेवो  
 चेव विकमो । सेसं कंठं ॥ १ ॥ किंच—

जयइ सुयाणं पभवो तित्येयराणं अपच्छिमो जयइ ।

जयइ गुरु लोगाणं जयइ महापा महावीरो ॥ २ ॥

२० जयति सुताणं० गाहा । राग-दोसादिअरी जिणतो जितेसु वा ज्यथति चि । [‘सुताण’] सब्बसुताणं ति,  
 सुताणाणत्यो भगवंतातो पमनो । ‘पभवो’ चि पसूती । अणिट्रवयणपरिहारातो पच्छिमो वि अपच्छिमो भण्णति,  
 अहवा पच्छाणुपुञ्चीए अपच्छिमो, रिसभो पच्छिमो । अविसिङ्गीवलोगस्स विसिङ्गाणिजीवलोगस्स वा, अहवा  
 २५ सम्महिट्रिमादिसंजता-इसंजतलोगस्स गुरु । महं आता जस्स सो य अकम्मवीरियसामत्थतो महात्मा, केवलादि-  
 विसिङ्गलद्विसामत्थतो वा महात्मा ॥ २ ॥ किंच—

२५ भद्रं सब्बजगुज्जोयगस्स भद्रं जिणस्स वीरस्स ।

भद्रं सुरा-इसुरणमंसियस्स भद्रं धुयरयस्स ॥ ३ ॥

‘भद्रं सब्ब० गाहा । भायते भाति वा भद्रम्, तं भगवतो भवतु चि । सब्बजगं ति—लोगो । अहविहो वि  
 लोगनिवेदेवो भाणितञ्चो [आव० नि० गा० १०५७] । सेसं कंठं ॥ ३ ॥ इमं संघस्स रहरुवगं—

१ ‘य-सवेवा’ जे० दा० ॥ २ ‘य एवमक्खा’ जे० ॥ ३ “सब्बे पाणा सब्बे भूया सब्बे जीवा सब्बे संता ण हंतञ्चा ण  
 अज्ञावेयञ्चा ण परियावेयञ्चा ण परिवेतञ्चा ण उहवेयञ्चा” इतिरूपं सूत्रमाचाराङ्गे ॥ ४ विसंधेइ आ० ॥ ५ ‘महो भवति ।  
 अनेन आ० ॥ ६ ‘त्थगरा’ स० ॥ ७ ‘णाणत्थाणे भग’ आ० ॥ ८ ‘दिछमो शीरो, रिसभो आ० ॥

[ सुक्तं २ ]

भद्रं सीलपडागूसियस्स तव-णियमतुरगञ्जुत्तस्स ।  
संघरस्सम् भगवत्तो मज्जागम्मुण्डिघोसस्स ॥ ४ ॥

भद्रं सील० गाहा । रहो सामण्णतो पंचमहवत्तमङ्गो । उस्सितो चि तस्सद्वारससीलंगसहस्रसिता  
जतपैडागा । बारसविद्वो तवोऽङ्गिधियन्नोऽङ्गिधियो य णियमो एते अस्सा । सज्जायसदो णंदिघोसो । सेसं कंठं ॥ ४ ॥ ५  
संघस्सेव इमं चक्ररूपगं—

संजम-तवतुंबा-अयस्स णमो सम्मतपास्यिल्लस्स ।  
अप्पडिचक्कस्स जओ होउ सया संघचक्कस्स ॥ ५ ॥

संजम० गाहा । विशुद्धमाक्कक्कस्स सत्तरसविधो संजमो तुंबं । तस्स बारसविहत्तेवोमता अरगा । पारियलं  
ति-जा वाहिरपुद्गुप्तस्स वाहिरव्यभी, सा से सम्मतं कर्त, जम्हा अणेहिं चरगादिएहिं जेहु [ जे० १८७ ग्र० ] १०  
सक्ति तम्हा एवं जयति, अप्पडिचक्कं च एतं । णमो पुरिसस्स [ संघ ] चक्रस्तेति ॥ ५ ॥ इमं संघस्सेव जगररूपगं—

गुणभवणगहण ! सुयरयणभरिय ! दंसणविसुद्धरच्छागा ! ।  
संघणगर ! भद्रं ते अंकसंडचरितपागारा ! ॥ ६ ॥

गुणभवणगहण० गाहा । तम्मि गुरिसंघणगरे इमे गुणा—पिण्डविमुद्धि-समिति-गुत्ति-दब्बादिथभिग्गह-  
मासादिपडिमानोयरे य चरगादिया, एमादिउत्तरगुणा तम्मि संघणगरे भवणा करा, भवण चि घरा, तेहिं १५  
गहणं ति-निरंतरं संठिता घणा । तं च संघपुरिसणगरं अंगा-अणंगादिविचित्तसुतरयणभरितं । खयोवसमितादि-  
सम्मतमइयरच्छाओ य, मिच्छनादिक्यारवजिततणतो विशुद्धाओ । गूलगुणचरितं च से पागारो, सो य अखंडो  
ति-अविराधितो निरेतिचार इत्यर्थः । सेसं कंठं ॥ ६ ॥ इमं पि संघस्सेव पट्टुंमरूपगं—

कम्मरयजलोहविणिग्गयस्स सुयरयणदीहणालस्स ।

पंचमहवयथिरकणियस्स गुणकेसरालस्स ॥ ७ ॥

सावगंजणमहुयैरिपरिखुडस्स जिणसूरतेयबुद्धस्स ।

संघपउमस्स भद्रं समणगणसहस्रपत्तस्स ॥ ८ ॥ [ जुम्मं ]

कम्मरय० गाहा । कम्म एव रयो कम्मरयो । अहवा जं पुञ्चबद्धं तं कम्मं, बज्जमाणं रयो, तं सञ्चं पि

१ भद्रं सील० इति संजमतव० इति गुणभवण० इति च सूत्रगाथात्रिकं श्रीहरिभद्रसुरिवृत्तौ श्रीमल्यगिरिपादवृत्तौ च  
पश्चत्तुपूर्व्या व्याख्यातमस्ति ॥ २ हरिवृत्तौ मल्यवृत्तौ च 'सुणेमिघोसस्स' इति पाठमेदो निर्दिष्टोऽस्ति । अंगविजायाखेऽपि-  
"तथ सरसंपर्के हिरज-गोष-तुंदुभि-वसभ-गय-सीह-सद्वूल-भवर-रघुणेमिणिःषेस-सारस-कोकिल-ठकोष-कोच-चकाक-हंस-कुरर-वरिहिण-  
ततीतर-गीत-नाइत-तलतालघोस-उवकुद्ध-छेलित-फोडित-किकिणिमहुरघोसणादुव्भावे रारसंपण्ण वृया ।" इत्यत्र गोमिणिगघोस इति पदं वर्तते ॥  
३ 'पदाता आ० ॥ ४ 'ख० मो० वादश्वयोः केनापि विदुषा 'बारयस्स स्थाने 'बारस्स इति संशोधितं वर्तते । एतत्पाठानुसार्येव  
मल्यगिरिपादव्याख्यानं वर्तते ॥ ५ 'तवो मदाभरगा जे० दा० ॥ ६ 'अखंडचारित्त' सु० ॥ ७ 'च्छाया य आ० दा० ॥  
८ 'कतवर' आ० दा० ॥ ९ 'णिरइचार' आ० ॥ १० 'पउम' आ० दा० ॥ ११ 'यरपरि' डे० ल० ॥

जलोहमिव कल्प्यते । अहवा पुब्वबद्धं कम्मं पंको, बङ्गमाणं जलोहो, ततो विणिमतो संघेदुमो । तस्स णालो, सुत एव रथणं सुतरतणं तं से णालो कतो । पंचमहवता य से थिर चि-हृदा ते कण्णिय चि-बाहिरपता कता । गुण-मूलत्तरगुणा य से अणेगविदा [ केसरा ] तेहि गुणेहि आलस्स चि-अधिकयोगगुक्तस्य गुणकेसरालस्स मूलादिगुणकेसरगुक्तस्य इत्यर्थः ॥ ७ ॥

५ वित्तियगाहाए-परिखुड चि-पैरिवारितं, जिणदूरस्स धम्मकहणक्खाणतेयेण प्रबोधितं । अणेगसमण-  
सदस्सा य से अब्मंतरपता कता । परिसस्स संघपदुमस्स भद्रं भवतु ॥ ८ ॥ इमं चंद्रसंघरूपवगं—

तव-संजममयलंछण ! अकिरियराहुमुहदुद्वरिस ! णिचं ।  
जय संघचंद ! णिम्मलसम्मतविसुद्धजुंण्हागा ! ॥ ९ ॥

तवसंजम० गाहा । संघचंदस्स मिँयो तव-संजमा, तेहि लंछितो । अकिरिय चि-णत्तियचादी ते राहुमुहं,  
१० तेहि दुआधरिसो चि-ण सक्ते जेतुं । 'णिचं' ति सञ्चकालं । संकादिविसुद्धसम्मतं से जोण्डा । सेसं कंठं ॥ ९ ॥  
सूरसंघरूपवगं इमं—

परतित्तियगहपहणासगस्स तवतेयदित्तलेसस्स ।  
णाणुज्जोयस्स जए महं दमसंघसूरस्स ॥ १० ॥

८८ तित्तियवादा । हृदय-हित्तण-स्त्रोहक-वरण-तावसाद्यो परतित्तिया गहा, तेसि णाणतेयप्पभं  
१५ सुतादिणाणप्पभाते णासेति । [ जि० १८७ द्वि० ] तव-णियमकरणातो य अतीवदित्तिमंतलेस्सो । लेस्स चि-रसीयो ।  
सुतादिणाणुज्जोतसंपणस्स य इमम्मि जए संघसूरस्स भदं भवतु । सेसं कंठं ॥ १० ॥ इमं संघसमुद्धरूपवगं—

महं धिईवेलापैरिखुडस्स सज्जायजोगमगरस्स ।  
अक्खोभस्स भगवओ संघसमुद्धस्स रुंदस्स ॥ ११ ॥

८९ भदं धिति० गाहा । अंल-वेदियंतरे जं रमणं सा वेला, सा य मेरा वि भण्णति, एवं संघसमुद्धस्स धिती  
२० वेला, ताए परिखुडो चि-वेष्टितो । वायणादिसज्जायजोगकरणं मगरो । परप्रवादोपसगांदिभिर्न छुम्यते । रुदो  
महंतो । सेसं कंठं ॥ ११ ॥

इमं संघस्स मेरूरूपवगं—तस्स य पञ्चतस्स इमे रूपगा, तस्स य पञ्चतस्स इमे अवयवा-पेढं मेहला उस्सयो  
सिला, मेहलासुे कुडा, मेहलाए वणं गुहा, गुहासु य मैंदा सुवण्णादिवातवो, नौणार्विधशीरियोसहिपञ्जलितो,  
णिज्ञरा य सलिलजुता, कुहरा य से मयूरादिपकिक्कुडसोभिता, अणुकण्णातिविज्जुल्तोवसोभितो य सो, कण्णा-  
२५ दिरुखतुवसोभितो य, अंतरंतरेमु य वेरुलितादिरतणसोभितो । एतेसि पदाणं पडिरुवेण इमाहि छहि गाहाहि  
उवसंहौरो—

१ 'पथुमो आ० । पउमो दा० ॥ २ गुणेहि अध्महितस्स चि अधिक॑ आ० ॥ ३ परिकरियस्स जिण॑ आ० ॥  
४ इमं संघस्स चंद्ररूपवगं आ० ॥ ५ 'ओण्हागा चु० । जुन्हागा डे० ॥ ६ मियो णाम तघ॑ आ० ॥ ७ संघस्स  
सूररूपवगं तिमं आ० ॥ ८ धीवेला॑ से० डे० ल० ॥ ९ 'परिगयस्स सर्वाहु युवप्रतिषु । हरिभद्रधूरि-मल्यगिरिसूरि-  
म्यामेतत्पाठानुसारेणव व्याख्यातमस्ति । चूणिकृत्सम्मनस्तु पाठः कुञ्चायादर्शे नोपलभ्यते ॥ १० जलबहि (? इदियं)॑ आ० ॥  
११ 'सुक्खाहा जे० दा० ॥ १२ मिंगिदा आ० ॥ १३ णाणादिविधवित्तोसहि॑ आ० ॥ १४ 'संथा(घा)रो आ० ॥

सम्मदं सेणवहरददरुदगाढावगाढपेदस्स ।  
धम्मवरयणमंडियचापीयरमेहलंगस्स ॥ १२ ॥  
णियमूसियकण्यसिलायंलुज्जलजलंतचित्कृदस्स ।  
णंदणवणमणहरसुरभिसीलगंधुञ्जायस्स ॥ ३३ ॥  
जीवदयासुंदरकंदरुदस्यिमुणिवरमेइंद्रिणस्स ।  
द्वेउसयथाउपगलंतरत्तदित्तोसहिगुहस्स ॥ १४ ॥  
संवरखरजलपगलियउज्जरपविरायमाणहारस्स ।  
सावगजणपउररवंतमोरणचंतकुहरस्स ॥ १५ ॥  
विणयमयपवरमुणिवरफुरंतविजुज्जलंतसिहरस्स ।  
विविहेकुलकणरुक्खगणयभरकुसुमियकुलवणस्स ॥ १६ ॥  
णाणवरयणदिप्पंतकंतवेरुलियविमलचूलस्स ।  
वंदामि विणयपणओ संघमहामंदरगिरिस्स ॥ १७ ॥<sup>१०</sup> [ छहिं कुलयं ]

सम्मदंसण० गाहा । णियमू० गाहा । जीवदया० गाहा । संवर० गाहा । विणय० गाहा ।  
ऐोगदर० गाहा । संयपव्वतस्स सम्मदंसेणी चेव वझरं । तं च संकादिसल्लरहित्तणयो दहं ति<sup>११</sup> रुहं ति-वडिहतं,  
कहं ? विसुज्जमाणत्तणयो । गाहं ति-अतीव, अवगाहं ति-ओगाहं, सद्दाणत्तणतो जीवादिपदत्थेषु अतीवओगाहं १५  
ति बुत्तं भवति । एतं पेहं । श्रम्मो दुविहो मूलुत्तणेषु । सो य दुविहो वि वरो चि-पधाणो । तत्थुत्तरणुणधम्मो  
रयणा, तेहिं मंडिता जे मूलगुणा ते चामीकरं ति, तं च सुवर्णं, तम्मयी मेहला, तया जुत्तस्स मेहलागस्स ॥ १२ ॥

नियमो चि ईदियणोइंदिएषु अणेगविधो, सो य णियमो मिलातआ तेहिं चेव उस्सितो, असुभज्जवसाण-  
विरहित्तणतो कम्मविसुज्जमाणत्तणतो चा उज्जलसुत्त-इत्थाणुसरणत्तणतो यैं जलति चित्तं, चितिज्जइ जेण तं चित्तं,  
तं चेव कूडं ति चित्तकूडं तस्स । [जे० १८८ प्र०] णंदंति जेण वणयर-जोतिस-भवण-वेमाणिया विजाहर-मणुया य २०  
तेण णंदणं, वणं ति-नणसंहं । तं च लता-यलि-चित्तोणाणेगोसहिसतेहिं गहण, पत्त-पलुव-पुण्फ-फलोवैवेतेहिं मण-

१ "सणवरधरददरुद" डे० शु० ल० मु० । "सणओयरहरुद" स० ॥ २ "हपीढ" स० ॥ ३ "लायस्स" स० ॥  
४ "बलज्ज" शु० ॥ ५ "गंधुदमा" गर्वास्वणि सूत्रप्रतिषु । "गंधदमा" हरि० बृत्ती ॥ ६ "मयंदरंधस्स" डे० । "मंदरंधस्स" ल० ॥  
७ "तरयणदित्तो" मो० मु० । "तरित्थदित्तो" डे० ॥ ८ विणयणयपवर० सप्तप्र० । चूर्णिङ्कुत्तमतः सूत्रपाठः कुत्राप्यादर्शे  
नोपलभ्यते ॥ ९ चिचिहुगुणकप्पहवणगफलभरकुसुमाउलवणस्स सप्तप्र० । चूर्णिङ्कुत्तमतः सूत्रपाठः कुत्राप्यादर्शे नोपलभ्यते ॥

१० सपदशगाथानन्तरे चूर्णिङ्कुदाविभिरव्याख्यातं गाथायुगलमिदमधिके सर्वास्वपि सूत्रप्रतिशूलभ्यते—

गुणरयणुज्जलकडथं सीलसुयंधत्वमंडिउदेसं । सुथवारसंगसिहरं संघमहामंदरं वंदे ॥ १ ॥

नमर रह चक्क पउमे चंदे खुरे समुद्र मेरुभिम । जो उवमिज्जइ सयणं तं संव गुणावरं वंदे ॥ २ ॥

अत्रार्थं जेसु० आदर्शे इयं टिष्णी वस्ते— "गुणेत्यादि गाथा २ वृत्ताव्याख्यातम्" ॥

११ गाणावरण० गाहा जे० दा० । अग्नुद्वोडयं पाठमेदः ॥ १२ "हंसणं से वहरं जे० ॥ १३ "ति चिरवद्वितं आ० ॥

१४ य उज्जल-दित्तिमं चितिज्जइ तेण दित्तं, तं चेव आ० । असहतोऽग्नुद्वधायं पाठः ॥ १५ "विताणणेगसंठाणसंडि-  
सेहिं गहणं जे० दा० ॥ १६ "लोचतेहिं आ० ॥

हारित्तणतो मणहरं, गंधतो सुरभिगंधं । सीलवणसंडे वि जम्हा साधवो णंदंति प्रमोदंति रमंतीत्यर्थः । विविलदि-  
विसेसतो य मणहरं सीलवणं, विचुद्भावत्तणतो य शुगंधं, जहा दब्बवणसंडं गंधेण उद्गुमातं ति—व्यासं तहा  
सीलगंधेण संघस्स गंधुद्गुमायस्से ॥ १३ ॥ किंच—

जं पञ्चतासण्णं सिलाश्कवगहर्ण तं कंदरं ति । भावे जीवेसु दयाकरणसुंदरं जं तं कंदरं ति । तथ्य य  
५ उ—प्पावल्ले, दरितो च्चि—दप्पितो, जीवदयाकरणदप्पितो च्चि बुत्तं भवति । को य सो? मुणिगणो । सो चेव मुणिगणो  
मइंदो परप्पवादिसासणसंघमयाण इंदो । कहं? सितवादउत्तमभावत्तणतो । हेतु च्चि—पञ्चकथम्मो कारणं वा, से  
सत्तणसो सुने संभवति । ते य हेतवो धात्, ते य पगलंति परुवणगुहाए । सा य परुवणगुहा णाणादिर-  
तणादिष्ठि दित्ता, खेलोसहिमादिओसहीहि वा दित्ता ॥ १४ ॥

एवं दित्तोसहिगुहस्स संघस्स संवरो च्चि—पञ्चकवाणं, तं चेव सलिलं, किंचि पञ्चतम्मातो ओसरितं उज्जरं,  
१० इहावि खाइगभावातो खयोवसमियं उज्जरं, ततो पलंविता खतोवसमितसंवरदगधारा, स चेव धारा हारो, तेण  
विरायते—सोभति च्चि । सावगजणो पउरो च्चि—बैहू प्रचुरः सो य गीतद्वणीए रवति च्चि—रडती, से चेव भोरा  
णाडगादीहि य णचंति । जं पञ्चतस्स अङ्गे समप्पदेसं रुक्खाकुलं [जे० १८८ द्वि०] च तं कुइरं । एवं संघपञ्चतस्स  
र्घनणमंडनादी कुइरं ति ॥ १५ ॥

विणयकरणत्तातो विणयेमतो मुणी । सो य विणयकरणत्तेण फुरते, तं चेव फुरितं विज्ञुतं ति—चकोरितं,  
१५ तं च उज्जलं ति—निम्मलं, तेण उज्जलसेण संघसिहरं जलितमिव लकिवज्जति । संघसिहरं च पावयणिपुरिसा  
दद्वच्चा । तथ्य य विविहुलुप्पणा साहवो कप्परुक्खा, खीरासवादिलद्विफलेहि यैं णयभरा, लद्विहेतुट्टिता साहवो  
कुमुमितो कुलवण च्चि दद्वच्चा ॥ १६ ॥

मति-सुतादिनाणा वर च्चि—पहाणा, ते चेव णाणावेरुलियादिरतणा इव कंता, कंता इति—कंतिजुता ।  
कंतिजुत्तत्तणतो चेव सविसतेण जीवादिपदत्थसरुवोवलंभतो दिष्पंति । नाणस्स य मलो णाणावरणं, तविगमातो  
२० य विगतमलं । चूलामणिरिव सिहरोवरि चूला, सौ य णाणातिसयगुणेहि जुता, जुगप्पहाणो पुरिसो चूला इति ।  
एवं संघपञ्चतस्स पेढादिचूलपञ्जवसाणकप्पियस्स वंदामि विणयपणतो च्चि छण्ह वि गाहणं एतं क्रियापदं ति ॥ १७ ॥

एवं चरमतित्थगरस्स संघस्स यैं पणामे कते इमा अवसेष्यता आवली भण्णति—सा तिविहा तित्थकर १  
गणहर २ थेरावली ३ य । तथ्य तित्थगरावलिदंसणत्थं इमं भण्णति—

### [ सुतं ३ ]

वंदे उसर्भं अजिअं संभवमभिण्दणं सुमति सुप्पम सुप्पासं ।  
ससि पुफ्दंत सीयल सिज्जंसं वासुपुज्जं च ॥ १८ ॥

१ 'स्स किया । जं आ० ॥ २ उत— प्रावल्ये इत्यर्थः ॥ ३ 'उस्तिम्' आ० ॥ ४ इधावि आ० ॥ ५ बहुः  
आ० ॥ ६ 'गीतज्ञुणीप' आ० ॥ ७ अद्वे आ० ॥ ८ 'णहाण' आ० ॥ ९ 'यणतो आ० दा० ॥ १० य फलभरा आ०  
दा० ॥ ११ 'ता गुणवण ति आ० ॥ १२ 'कंतादिलुख' आ० ॥ १३ सो य णाणातिसयत्थसरुवोवलंभगुणोहजुया  
जुगप्पहाणा पुरिसा चूला आ० ॥ १४ त आ० ॥ १५ 'सरापणा आ० आ० ॥ १६ सेज्जंसं स० शु० । सेयंसं ख० ॥

तित्थयर-गणहर-थेरावलीओ ]

सिरिदेववायगविरह्यं गंदीमुत्तं ।

६

विमलमण्ठेऽधम्मं संति कुञ्चुं अरं च मर्लिं च ।

मुणिसुन्वय णमि णेमी पासं तह वच्छमाणं च ॥ १९ ॥ [ जुम्म ]

वंदे उसभ० गाहा । [ विमल० गाहा य ] कंठा ॥२०॥१९॥ चरमतित्थगरस्स इमा गणहरावली—

[ सुत्तं ४ ]

पैदमेत्य इंदभूती वितिए पुण होति अग्निभूति ति ।

ततिए य वाउभूती तंतो वितते सुहम्मे य ॥ २० ॥

मंडिय-मोरियपुत्ते अकंपिते चेव अयलभाता य ।

ऐतज्जे य पथारे य गणहरा होंति वीरस्स ॥ २१ ॥ [ जुम्म ]

एत्थ गणहरावली ॥२०॥२१॥ तो सुधम्मातो येरावली पवता, जतो [ जे० १८९ प्र० ] भण्णति—

[ सुत्तं ५ ]

सुहम्मं अग्निवेसाणं जंबुणामं च कासवं ।

पभवं कच्चायणं वंदे वच्छं सेज्जंभवं तहा ॥ २२ ॥

सुहम्मं अग्निवेसाणं० सिलोगो । समणस्स ण० महावीरस्स कासवगीत्तस्स सुधम्मे अंतेवासी अग्निवेसायण-  
सगोत्ते । सुहम्मस्स अंतेवासी जंबुणामे कासवे गोत्तेण । जंबुणामस्स अंतेवासी पमवे कच्चायणसगोत्ते । पमवस्स  
अंतेवासी सेज्जंभवे वच्छसगोत्ते ॥ २२ ॥

जसभदं तुंगियं वंदे संभूयं चेव मादरं ।

भद्राहुं च पाइणं थूलभदं च गोयमं ॥ २३ ॥

जसभद० गाहा । सेज्जंभवस्स अंतेवासी जसभदे तुंगियायणे काघावच्चसगोत्ते । जसभदस्स अंतेवासी इमे दो  
येरा- भद्राहू पौर्णायग्निसगोत्ते, संभूतविजय य मादरसगोत्ते । संभूतविजयस्स अंतेवासी थूलभदे गोत्तमसगोत्ते ॥ २३ ॥

एलावैचसगोत्तं॑ वंदामि महागिरि सुहर्त्य च ।

ततो कौसवगोत्तं बहुलस्स सरिव्ययं वंदे ॥ २४ ॥

१५

२०

१ °मणंतय डे० ल० मु० ॥ २ षेमि खं० जे० मु० ॥ ३ इदं गाथायुगल चूर्णिकृता चूर्णी॑ स्वयमेदेत्यमुलिंगितमस्ति ।  
पदमित्य इंदभूई शोष पुण शोइ अग्निभूर ति । लाप य वाउभूई तथो वियते सुहम्मे य ॥ मंडिय-मोरियपुत्ते  
अकंपिष्य चेव अयलभाया य । मेयज्जे य सं० डे० शु० मो० ॥ ४ वायभूई डे० ल० ॥ ५ तहा मो० ॥

६ एकविशलि-द्वादशितिगायथोरन्तराले चूर्णिकृताऽव्याख्याताऽपि श्रीहरिभद्रसूरि-श्रीमलयगिरिपादाभ्यां स्वस्वत्तौ व्याख्याता  
जिनशासनस्तुतिरूपा इमेका गाथाऽधिका सर्वेष्वपि सूक्षादर्थेषु वर्तते—

येवुरपहसासणयं जयै सथा सव्वभावदेसप्रयं । कुसमयमयणासणयं जिर्णिद्वरवीरसासणयं ॥

जयति शु० । जयउ डे० ल० । जिर्णद० ल० ॥

७ जंबुणामं सं० ॥ ८ सिज्जंभवं ल० मो० ॥ ९ पायझं डे० ल० ॥ १० वाईणतिसगोत्ते आ० ॥ ११ 'वच्छस'  
सं० डे० ल० । 'वत्सस' शु० ॥ १२ 'गुत्तं शु० ल० ॥ १३ कोसियगोत्तं समूप० । श्रीहरिभद्र-मलयगिरिपादाभ्यामेतरपाठानु-  
सारेणैव व्याख्यातमस्ति । चूर्णिकृतसम्मतः सूक्षपाठो नोपलभ्यते कुवाच्यादर्थे ॥

एलावच० गाहा । थूलभद्रस्स अंतेवासी इमे दो थेरा—महागिरी एलावच्चसगोत्ते, त्रुहत्थी य वासिद्वसगोत्ते । सुहथिस्स मुद्रित-सुपडिकुद्धाद्यो आवलीते जहा दसासु [अ० ८ सूत्रं २१०] तद्वा भाणितव्वा, इहैं तेहिं अदिगारो णत्थि, महागिरिस्स आवलीए अधिकारो । महागिरिस्स अंतेवासी बहुलो बलिस्सहो य दो जमलभातरो कासवस-गोत्ता । तत्थ बलिस्सहो पावयणी जातो, तस्स पुतिकरणे भैण्टि—“बहुलस्स सरिव्वयं वंदे” । ‘सरिव्वयं’ ति सरिसवयो, वयो य जम्मकालं पहुच जा जा सरीरपरिवाद्विद्ववत्था सा सा वतो भण्टि ॥ २४ ॥

हारियंगोत्तं साइं च वंदिमो हारियं च सामज्जं ।

वंदे कोसियगोत्तं संडिलं अज्जजीयधरं ॥ २५ ॥

हारिय० गाहा । बलिस्सहस्स अंतेवासी साती हारियसगोत्तो । सातिस्स अंतेवासी सामजो-हारितसगोत्तो चेव । सामज्जस्स अंतेवासी संडिलो कोसियसगोत्तो, सो य अज्जजीतधरो ति अज्जं ति—आर्य आद्यं वा जीतं ति—सुत्तं धरति, सुत्तत्थस्स अक्षिक्षुतिधरणत्तातो, वंदे ति वक्तसेसं । पाढतरं वा “जीवधरं” ति, आर्यत्वात् जीवं धरेति—रक्षती- १० त्यर्थः । अणे पुण भण्टि—संडिलस्स अंतेवासी जीवधरो अणगारो, सो य अज्जसगोत्तो ॥ २५ ॥ संडिलस्स सीसो—

तिसमुद्दर्शायकिति दीवं-समुद्देसु गहियपेयालं ।

वंदे अज्जसमुद्दं अक्षुभियसमुद्गंभीरं ॥ २६ ॥

तिसमुद्द० गाहा । पुञ्च-दक्षिणा-उपरा ततो समुद्दा, उत्तरतो वेतड्डो, एतंतरे खातकिती । सेसं कंठं ॥ २६ ॥ तस्स सीसो [जे० १८९ दि०] इमो—

भणगं करगं ज्ञरगं पभावगं णाण-दंसणगुणाणं ।

वंदामि अज्जमंगुं सुयसागरपारगं धीरं ॥ २७ ॥”

भणगं० गाधा । कालियपुञ्चसुत्तत्थं भणतीति भणको । चरण-करणक्रियां करोतीति कारकः । सुत्तत्थे य भणसा ज्ञायतो ज्ञरको । परपवादिजयेण पत्रयणप्यभावको । नाण-दंसण-चरणगुणाणं च यभावको आधारो य । सेसं कंठं ॥ २७ ॥ तस्स सीसो—

णाणमिदंसणमिदं य तव विणए णिक्ककालमुज्जुत्तं ।

अज्जोणंदिलखमणं सिरसा वंदे पसण्णमणं ॥ २८ ॥

१ अत्र चूर्णिकृता हरिभद्रपारैश्च सुहस्ती भगवान्-दशाथुतस्कर्षाष्माध्ययतस्थविरामलव्यामित्र व्यासिष्ठगोत्रीयः ख्यापितः, किय भलयगिरिस्सुरिचरणैरयं सूनगाथानुलोभ्याद् पेलापत्थसगोत्रीयः ख्यापितः, तद्व तज्जा एव प्रमाणम् ॥ २ कोसियगोत्तादा० ॥ ३ भणिये आ० ॥ ४ “यगुत्तं सायं च दे० शु० ल० ॥ ५ “जीवधर इति चूणौ पाठान्तरम् ॥ ६ “तेषां शाणिडख्या-चार्याणां आर्यजीतधर-आर्यसमुद्राद्यौ छौं शिष्यावभूताम् । आर्यसमुद्रस्याऽर्यमकुन्नामानः प्रभावकः शिष्याः जाताः” इति द्विमवन्तस्थविरामल्याम् पत्र ९ ॥ ७ “खाइकित्ति ल० ॥ ८ परथंतरे आ० ॥ ९ अज्जमंगू ल० ॥ १० अष्टाविंशतिम-गाथानन्तरं शु० प्रति विहाय सर्वासु खत्रप्रतिषु गाथायुपलमिदमधिकमुपलभ्यते—

वंदामि अज्जधमं वंदे तत्तो य भद्रगुत्तं च । तत्तो य अज्जबहुरं तव-नियमगुणेहि वयरसमं ॥

वंदामि अज्जरकिखयखमणे रकिखयचरित्तस्थस्से । रयणकरंडगभूओ अणुओगो रकिखओ जेहि ॥

एतद्वायुगलविष्ये जेसू० प्रताविष्य टिप्पणी—“वंदामि अज्जधमं० “एतदपि गाथाद्वयं न चृत्तौ विवृतम्, आवलिकान्तर-सम्बन्धित्वादिति सम्भाव्यते ।” ११ अज्जानंदिलं लं० ॥

ज्ञाणमिम दं० गाहा । कंठा ॥२८॥ तस्स सीसो—

वङ्गद्व वायगवंसो जसवंसो अज्जणागहत्यीण ।

वागरण-करण-भेंगी-कम्पपयडीपहाणाण ॥ २९ ॥

वङ्गद्वतु० गाहा । 'वङ्गद्व' चि दृढ़ि यातु । को य सो ? 'वायगवंसो' वायेति सिसाणं कालिय-पुच्छसुतं ति वातगा-आचार्या इत्यर्थः, गुरुसणिहाणे वा सिसभावेण वादतं मृतं जेहिं ते वायगा, वंसो चि-पुरिसप्त्व- 5 परंपरेण दितो वंसो भण्णति । सो चेष जसोवज्जनतो संजमोवज्जनतो वा जसवंसो भण्णति, सो य अणागतवंसो इत्यर्थः । कस्स सो एरेसो वंसो ? भण्णति, अज्जणागहत्यीण ति । केरिसाणं ? ति पुच्छा, भण्णति-जीवादिपदत्थ-पुच्छासु वाकरणे सहगाहुडे वा पहाणाण, एवं चरणकरणे कालकरणेमु वा सञ्चभेंगनिकप्पणासु य तप्परूपणे य तदा कम्पपयडियरूपणाए पधाणाणं पुरिसाणं वङ्गद्वतु वायगवंसो ॥२९॥ तस्स सीसो—

जच्चंजणधाउसमप्पहाण मुद्रीय-कुवलयनिहाण ।

वङ्गद्व वायगवंसो रेवैद्वणक्खत्तणामाण ॥ ३० ॥

जच्चंजण० गाहा । जच्चंजणम्भाहाणं कित्तिमबुदासत्थं, सरीरक्षणेण तन्निमो । तदा सरसन्पक्षमुद्रियफलसणिभोय । कुच्छितो उवलो कुवलयो, सो य कण्ठकायो, कुवलयं वा-णीलुष्टलं, कुवलयं वा-स्थणविसेसो । रेवतिवायगो चि । सेसं कंठं ॥३०॥ तस्स सीसो—

अयलपुरा णिक्खंते कालियसुयआणुओगिए धीरे ।

बंभद्वीवग सीहे वायगपयमुत्तमं पत्ते ॥ ३१ ॥

अयलपुरा० गाहा । बंभद्वीवगसाहीण आयरियाणं समीवे निक्खंतो सीहवायको, उत्तमवायकत्तणं च तका-लसुतसंभवं पडुच । सेसं कंठं ॥ ३१ ॥ तस्स सीसो—

'जेसि इपो अणुओगो पयरइ अज्जावि अङ्गद्वभरहम्मि ।

बहुनगर्जनिग्गयजसे ते वंदे खंदिलायरिए ॥ ३२ ॥

जेसि हमो० गाहा । कहं पुण तेसि अणुओगो ? उच्यते-वारसरंवच्छरिए महंते दुष्मिकखकाले भत्तद्वा अण्णणतो फिडिताणं गहण-गुणणा-उणुपेहाभावातो मुते विष्णव्वे पुणो सुभिकखकाले जाते मधुराए महंते साहु-समुदए खंदिलायरियप्पमुहसंवेण 'जो जं संभरति' चि एवं संघडितं [जे० १९० प्र०] कालियसुतं । जम्हा य एतं मधुराए करं तम्हा माधुरा वायणा भण्णति । सा य खंदिलायरियसम्मय चि कातुं तस्संतियो अणुओगो भण्णति । सेसं कंठं । अणो भण्णति जहा-सुतं ण णद्व, तम्मि दुष्मिकखकाले जे अणो पहाणा अणुओगधरा ते 25 विणद्वा, एगे खंदिलायरिए संधरे, तेण मधुराए अणुओगो पुणीं साधूणं पवत्तितो चि माधुरा वायणा भण्णति, तस्संतियो य अणियोगो भण्णति ॥ ३२ ॥

१ 'भंगिय-कम्म' ख० मो० यिना । हारि० शृङ्गी अयमेव पाठ आदतोऽस्ति ॥ २ 'सणिष्वे वा आ० ॥ ३ 'रेवयण' दे० ल० ॥ ४ कुच्छितओ बलयो कुवलयो आ० ॥ ५ जेसि तिमो ल० ॥ ६ अणुओगो दा० ॥

ततो हिमवंतमहंतविकमे विइपरकममहंते ।  
सज्जायमणंतधरे हिमवंते वंदिमो सिरसा ॥ ३३ ॥

ततो हिम० गाहा । हिमवंतपञ्चतेण महंतचणं तुलं जस्स सो हिमवंतमहंतो, इह भरहे णत्थि अणो  
तजुल्लो चि, एस युतिवादो । उचरतो वा हिमवंतेण सेसदिसामु य समुद्रेण निवारितो जसो, हिमवंतनिवारणो  
५ जैसो महंतो चि अतो हिमवंतमहंतो । महंतविकमो कहे ? उच्यते—सामत्थतो, महंते वि कुलगण-संघष्योयणे  
तरति चि, परप्यवादिजप्त्य वा विसेसलद्विसंप्यन्तणतो वा महंतविकमो । अहवा परीसहोवसगे तवविसेसे वा  
धितिवलेण परकमंतो महंतो । अणंतगम-पञ्जवन्तचणंतो अणंतधरो तं, महंतं हिमवंतणामं वंदे । सेसं कंठं ॥ ३३ ॥

किंच—

कालियसुयअणुओगस्स धारए धारए य पुब्वाणं ।  
हिमवंतखमासणे वंदे णागज्जुणायरिए ॥ ३४ ॥

१०

कालिय० गाहा । हिमवंतो चेव हिमवंतखमासमणो । तस्स सीसो णागज्जुणायरितो ॥ ३४ ॥

तस्स इमा गुणकित्तणा—

मिदु-मद्वसंपणे अणुपुव्विं वायगत्तणं पते ।  
ओहसुयसमायारे णागज्जुणवायए वंदे ॥ ३५ ॥<sup>१</sup>

१५

मिदु-मद्व० गाहा । ‘अणुपुव्वी’ सामादियादिसृतगहणेण, कालतो य पुरिमपरियायत्तणेण पुरिसाणु-  
पुव्वितो य वायगत्तणं पत्तो, ओहसुतं च उस्सगो, तं च आयरति । सेसं कंठं ॥ ३५ ॥

णागज्जुणवायगस्स सीसो भूतदिणो आयरितो । तस्मिमा गुणकित्तणा तिर्हि गाहाहि—

तंवियवरकणग-चंपय-विमउलवरकमलगभैसरिवणे ।  
भवियजणहिययदइए दयागुणविसारए धीरे ॥ ३६ ॥

२०

अहूढभरहप्यहाणे बहुविहसज्जायसुमुणियपहाणे ।  
अणुओगियवरवसहे णाइलकुलवंसणंदिकरे ॥ ३७ ॥

१ ‘मणंते ख० स० ल० । जेस० प्रतो ‘महंते’ इति पाठस्योपरि टिप्पणी यथा— “मणंते” श्रृंति वृत्तौ व्याख्यातम् ।” इति ॥

२ सुतिवादो आ० ॥ ३ जसो हिमवंतो च्छि, असो हिमवंते महंतविकमो, कहे ? आ० ॥ ४ ‘णंते अणंतं वा सुतं, महंतं वा० ॥  
५ ‘णुओग’ स० ॥ ६ मिय-म० इ० ॥ ७ पञ्चत्रिंशत्तमगाथानन्तरे P प्रति विहाय सर्वास्त्वपि सूत्रप्रतिष्ठूपलभ्यत इदं गाथायुगलमविकम्—

गोविंदाणं पि णमो अणुओगे विडलधारर्णिदाणं । तित्तचं खंसि-दयाणं परुदणे दुङ्गभिवाणं ॥

ततो य भूयदिघ्नं निशं तव-संजमे अनिविवनं । पंडियज्ञासामन्नं चंदामी संजमविहन्त् ॥

८ एतद्वाधायुगलविषये “इदमपि गाथाद्वयं न धृत्तौ कुव्वित्” इति जेस० प्रतो टिप्पणी ॥ ८ पुरिमपरि० आ० । पूरपरि० जे० ॥

९ सर्वास्त्वपि सूत्रप्रतिष्ठू घरकणगतवियचंपय० इति पाठ उपलभ्यते । भगवता हस्तिभद्राचार्येण “घरकणग० गाहा” इति प्रतीक-  
क्षेपण० एव पाठः स्वीकृतोऽस्ति । चूर्णौ पुनः “तविय० गाहा” इति प्रतीकदर्शनात् चूर्णिकृता तवियवरकणगचंपय० इति पाठ  
आदतः सम्भाव्यते । थीमलयगिरिपादेस्तु “घरतवियेत्यादि गाथात्रयम्” इति प्रतीकनिष्ठूनेन घरतवियकणगचंपय० इति  
पाठोऽस्तु वर्तते । त खल्वेतच्चूर्णिकृद-मलयगिरिपादनिर्दिष्ट पाठमेदयुगल सूत्रादशेषु वृश्यते ॥ १० ‘ब्भसिरिव० स० । ‘ब्भसमव०

११ ‘णुओगिय० ख० । ‘णुओइय० श० । श्रीहरिभद्र-मलयगिरिम्यामयमेव पाठः स्वस्ववृत्तौ स्वीकृतोऽस्ति ॥

**भूयहिययप्पगब्मे वंदे हं भूयदिण्णमायरिए ।  
भवभयवोच्छेयकरे सीसे णागज्जुणरिसीणं ॥ ३८ ॥ [ विसेसथं ]**

तेविय० गाहा । गब्मो चि-पोमकेसरा । सेसं कंठं ॥ ३६ ॥

अङ्गदभरह० गाहा । बहुविहो सज्जायो चि-अंगपविद्वो वारसविधो, अणंगपविद्वो य कालिय-उक्कालितो अणेगविहो । सो य पधाणो चि, सुगुणितन्नणेण निस्संको चि कातुं । सेसं कंठं ॥ ३७ ॥

भूतहितय० गाहा । भूतहितं ति अहिसा । [ जे० १९० द्वि० ] पगब्मं ति-धारिहुं । अहिसाभावे पाग-बमता, अतीवअप्पमत्तताए अहिसाभावपरिणता इत्यर्थः । सेसं कंठं ॥ ३८ ॥

मूर्तादण्णसस सीसो लोहिचो । तस्स इमा धुती—

**सुमुणियणिच्चा-इणिच्चं सुमुणियसुत्त-इत्थधारयं णिच्चं ।  
वंदे हं लोहिच्चं सब्भाबुभावणातच्चं ॥ ३९ ॥**

10

सुमुणित० गाहा । सुट्ठु मुणितं सुमुणितं । किं तं ? भण्णति-जीवो जीवत्तणेण निचो, गतिमादिएहि अणिचो । परमाणु अजीवत्तणेण मुक्तत्तेण य निचो, दुष्प्रेसादिएहि वणादिपज्जवेहि य अणिचो । सुट्ठु त मुणितं सुत्त-इत्थं धरेति । णिच्चकालं पि स्वे भावे ठितो सब्भावो, सै-सोभणो वा भावो सब्भावो, सै-विज्ञमाणो वा भावो सब्भावो, तं उब्भासए तत्त्वत्तेण, तथ्यत्वेन इत्यर्थः । तं च लोहिच्चणाम आयरियं वंदे । सेसं कंठं ॥ ३९ ॥

तस्स लोभिच्चसस सीसो दूसगणी । तस्स इमा धुती—

**अत्थ-महत्थकस्वाणि सुसमणवक्खाणकहणणेव्वाणि ।  
पयतीए महुख्वाणि पयओ पणमामि दूसगंणि ॥ ४० ॥**<sup>११</sup>  
**सुकुमाल-कोमलतले तेसि पणमामि लक्खणपस्त्ये ।  
पादे पावयणीणं पाँडिच्छगसएहि पणिवद्दए ॥ ४१ ॥**

अत्थ-महत्थ० गाहा । खाणि चि-आगरो । सा य अत्थसस खाणी । किंचिस्तुसस ? महत्थसस । महत्थो य २० अणेगपज्जायभेदभिष्णो । अहवा भासगरूपो अत्थो, विभासग-सब्बपञ्जबवत्तीकरो य महत्थो । एरिससस अत्थसस खाणी । का सा ? ‘वाणि’ चि संबज्जति । मुभो समण(णो) सुस्समण(णो), तस्स सुस्समणसस वक्खा[णकह]ण ति-अत्थकहणं, तम्मि अत्थकहणे सोताराण करेति वाणी णेव्वाणी । अहवा वक्खाणं ति-अणुयोगपरूपणं,

१ वरकणग० गाहा आ० । वरकणगतविय० गाहा दा० ॥ २ धारेयव्वं । अहिसा० आ० । धारेव्वं भो० ॥  
३ ‘धारयं वंदे । सब्भाबुभावणया, तत्थं लोहिच्चनामणं ॥ इति मु० पाठः । नायं पाठञ्चूणि-बृहित्तां सम्मतः, नायि च सञ्चप्रतिशूलभ्यते ॥ ४ सन्-शोभनो वा भावः सद्ग्रावः, सन्-विद्यमानो वा भावः सद्ग्राव इत्यर्थः ॥ ५ संवेज्जमाणो आ० ॥  
६ ‘कस्ताणी डे० ल० ॥ ७ सुस्सवणं चूणीं पाठान्तरम् ॥ ८ ‘व्वाणी डे० ल० ॥ ९ ‘व्वाणी डे० ल० ॥ १० ‘गणी डे० ल० ॥ ११ चत्वारिंशत्तमगाथानन्तरे P प्रति विहाय सर्वासु सूत्रप्रतिषु गथेयमधिकोपलभ्यते—

तव-नियम-सञ्च-सञ्चम-षिणय-इज्जच-स्वेति-महत्थवाणं । सीलगुणगद्वियाणं अणुओगज्जुगपद्वाणाणं ॥  
अत्र “गद्वियाणं” इति ‘गद्वितानो’ ख्यातानाम्” इति आवश्यकदीपिकाकृता व्याख्यातमस्ति । एतद्वाथाविषये जेसू० प्रती “एषाऽपि गाथा न इत्तौ कुत्थित्” इति विष्णी वर्तते ॥ १२ पड्डि० मु० ॥ १३ खाणी, दूसगणि चि संष्टि० आ० ॥

कद्यन् ति—अबखेवभादियादि कहाहि धम्मकहणं । तत्थ कुछाण वि आगताणं तस्य वाणी ऐव्वार्णि जणेति, किमंग पुण धम्मस्सवणद्वागताणं ? । अहवा पढो—“सुसवण” ति तत्थ सवण ति—कणा, तेसु युहं जणेइ ति सुसवणा, एवं हकारलोवातो भण्णति । अहवा सुसवणा सुहस्रवा इत्यर्थः । सेसं कंठं ॥ ४० ॥ इमा वि दुर्सगणिणो चेव चल्याथुती—

५ सुकुमाल० गाहा । पत्रयणं—दुवालसंगं गणिपिडगं जस्य अतिथि सो पावयणी, गुरवो ति कातुं बहुवयणं भाणेत । सेसं कंठ ॥ ४१ ॥ एस णमोकारो आयरिययुगभ्यहाणपुरिसाणं विसेसम्भवणातो कतो । इमा पुण [ जे० १९१ प्र० ] रामण्णतो मुतविसिद्धाण केज्जइ—

जे अण्णे भगवंते कालियसुयआणुओगिए धीरे ।  
ते पैणमित्तुण सिस्ता णाणस्स पैरुवणं वोञ्चु ॥ ४२ ॥

१०

॥ थेरावलिया सम्भत्ता ॥

जे अण्ण० गाहा । कंठा ॥ ४२ ॥

एतं च नाणपरुवणज्ञयणं अरिहस्स देज्जति, णो अणरिहस्स देज्जइ । जतो भणितं—

[ सुत्तं ६ ]

सेलघण १ कुडग २ चालणि ३ परिपूणग ४ हंस ५ महिस ६ मेसे ७ य ।

१५

मसग ८ जल्दग ९ विराली १० जाहग ११ गो १२ भेरि १३ आभीरे ॥ ४३ ॥

सा समासओ तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—जाणिया १ अजाणिया २ दुवियहृढा ३ ।

६. सेलघण० गाहा । एत्थ अरिहा इमे कुडेसु—अणसत्यकम्मसारिच्छा, पसत्यभावितेसु य अदम्मसारिच्छा । तदा हंस-मेस-जल्दग-जाहगसारिच्छा अरिहा, गो-भेरी-आभीरेसु य पसत्योवणतोवणीता अरिहा । सेसा अणअरिहा ॥ ४३ ॥

२०

इमस्स य नाणपरुवणज्ञयणस्स परुवणे परिसा जाणिगाइ तिविहा जाणितव्वा । तत्थ जाणिया—

गुण-दोसविसेसण्णु अणभिम्महिताय कुस्तुइ-मतेसु । सा खलु नाणगपरिसा गुणतच्छा अगुणवज्जा ॥ १ ॥

[ कल्पभा. गा. ३६५ ]

१ किज्जइ दा० ॥ २ वंदिङ्गण सं० । वंदितूण P ॥ ३ परुवण० ख० ॥ ४ आभीरी सर्वाङ्गपि सूश्रपतिषु । एष एव पाठः श्रीहरिभद्र-मलथगिरिभ्यां व्याख्यातोऽस्ति ॥ ५ एतस्त्रानन्तरे जे० द्वे० मो० शुसं० मु० प्रतिषु चूणि-वृत्तिकृद्विरव्याख्यातोऽधिकोऽयं ग्रहितः सत्राभासः पाठ उपलभ्यते—

जाणिया जहा—

स्त्रीरमिव जहा हंसा जे युद्धति इह गुरुगुणसमिद्धा । दोसे य विवजंती तं जाणसु जाणियं परिसं ॥  
अजाणिया जहा—

जा होइ पग्गमदुरा मियछावयसीहू-कुकुडगभूया । रयणमिव असंठविया अजाणिया सा भवे परिसा ॥  
तुवियहृढा जहा—

८ य कस्थइ निम्माओ न य पुच्छइ परिभवस्स दोसेण । वत्थ व्य वायपुणो युद्धइ गामेल्लथवियहृढो ॥  
एतत्पाठविषये जेस० प्रतावियं दिव्यणी केनापि विदुवा विष्णिता हृथये— “ जाणियेत्यारभ्य एतद् गाथात्रयं वृत्ती न व्याख्यातम्, अतोऽन्यकर्तृकं सम्भाव्यते । ” इति ॥ ६ आभीरीसु आ० ॥

इमा अजाणिया—

पगतीमुद्दमजाणिय मियछावय-सीद-कुकुरगमूत्रा । रथणभिक्ष असंठवेता सुहसणाप्या गुणसमिद्धा ॥ २ ॥

[ कल्पभा. गा. ३६७ ]

इमा दुविष्टह्या—

किञ्चिम्मत्तग्नाही पल्लवग्नाही य तंरियग्नाही य । दुवितिद्विह्या उ एसा भणिता निविहा भवे परिसा ॥ ३ ॥ ५

[ कल्पभा. गा. ३६९ ]

एत्थ जाणिया अजाणिया य अस्त्रिहा ॥ एवं कलमंगलोन्यारी वेरावश्चिकमे य दंसिए अरिहेसु य दंसितेसु दुस्सगणितीसो देववायगो साहुजणदितद्वाए इणमाह —

### ७. णाणं पंचविहं पण्णत्तं, तं जहा-आभिणिबोहियणाणं १ सुयणाणं २ ओहिणाणं ३ मणपञ्जवणाणं ४ केवलणाणं ५ ।

10

७. नाणं पंचविहं० इत्यादि । अस्य व्याख्या-नाती णाणं-अवबोहमेत्तं, भावसाधणो । अहवा णज्जइ अणेणेति नाणं, खयोवसमिय-खाइण वा भावेण जीवादिपदत्था णज्जंति इति णाणं, करणसाधणो । अहवा णज्जति एतमिह चि णाणं, नाणभावे जीवो चि, अधिकरणसाहणो । पंच इति संख्या । विधिरिति भेदो । पण्णत्तं पण्णवितं प्रलपितमित्यनर्थान्तरम्, अत्थतो तित्थकरेहि, सुन्ततो गणधरेहि । अहवा पण्णा-बुद्धी, पदाणपणोण अवासं पण्णत्तं, सैम्महिद्विणा लद्वित्यर्थः । अहवा पदाणपणातो अवासं पण्णत्तं, तित्थकरसमीवातो गणधरेहि 15 लद्वं ति बुत्तं भवति । अहवा पण्णा-बुद्धी, तीए अवासं पण्णत्तं, तित्थकर-गणधरा-ऽऽयरिष्टहिं कदिज्जंतं [जे० १९१ दि०] बुद्धीए पण्णत्तमिति । तंदित्तणेण अधिकतत्त्वं नाणं संबज्जति । जे पुञ्चमुञ्चणत्था पंच णाणभेदा तेषां प्रतिपद-मभ्युपगमे जहासदो । अत्थाभिमुहो णियतो बोधो अभिनिवोधः, स एव स्वार्थिकप्रत्ययोषादानादाभिनिबोधिकम् । अहवा अभिनिवोधे भवेत्, तेण निवृत्तं, तम्मतं तप्तयोयणं वाऽभिणिबोधिकं । अहवा आता तदभिनिबुज्ज्ञए, तेण वाऽभिणिबुज्ज्ञते, तम्हा वा[ऽभिणि]बुज्ज्ञते, तम्हि वाऽभिनिबुज्ज्ञए इंततो आभिनिवोधिकः । स एवाऽभि- 20 णिवोधिकोपयोगातो अनन्यवादाभिनिवोधिकम् १ । तदा तच्छृणोति, तेण वा गुणेति, तम्हा वा सुणेति, तम्हि वा सुणेतीति सुतं । आत्मैव वा श्रुतोपयोगपरिणामादनन्यत्वाच्छृणोतीति श्रुतम् २ । अवधीयते इति अवधिः, तेण वाऽवधीयते, तम्हि वाऽवधीयते, अवधाणं वा अवधिः, मर्यादेत्यर्थः । ताए परंपरोपणिबंधणातो दब्बादतो अवधीय(यं)त इति अवधी ३ । परि-सब्कतोभावेण गमणं पञ्जवणं पञ्जवृ, मणसि मणसो वा पञ्जवो मणपञ्जवो, स एव नाणं मणपञ्जवनाणं । तदा पञ्जयणं पञ्जयः, मणसि मणसो वा पञ्जयः मनःपर्ययः, स 25 एव नाणं मणपञ्जयणाणं । तदा आयो पावणं लाभो इत्यनर्थान्तरम्, सञ्चतो आतो पञ्जातो, मणसि मणसो वा पञ्जायो मणपञ्जायो, स एव नाणं मणपञ्जय(पञ्जाय)णाणं । अहवा मणसि मणसो वा पञ्जवा मणपञ्जवा, तेसि तेसु वा नाणं मणपञ्जवनाणं । तदा मणसि मणसो वा पञ्जया [मणपञ्जया], तेसि तेसु वा नाणं मणपञ्जवनाणं । गमणपरावत्तेगो लाभो भेदा य बहुपरावत्ता । मणपञ्जवमिम नाणे णिरुत्तवयणऽत्थ धंचेते ॥ १ ॥ ४ ।

[ 30 ]

१ जे होंति पगयमुखा मिगै इति कल्पभाष्ये ॥ २ तुरियै आ० दा० ॥ ३ सतविद्विणा आ० ॥ ४ तदित्यनेन अधिकृतार्थम् इत्यर्थः । “तं जहा” इति सूत्रांशे विद्यमाने ‘तद्’ इति पदमनुलक्ष्येदं वचनम् ॥ ५ इत्यतः इत्यर्थः ॥

“केवलमेगं सुद्धं सकलमसाधारणं अणांतं च ।” [ विशेषा. गा० ८४ ] इत्यर्थः ५ । नाणसदो य सब्बत्थाऽऽभिनिबोधिकादीण समाणाधिकरणो [ जे० १९२ ग्र० ] द्वृष्ट्वा, तं जहा—आभिनिबोधिकं च तं नाणं च आभिनिबोधिकनाणं । एवं सच्चेसु देहव्वं । पुच्छा य—किमेस मतिनाणादियो कमो ? एत्थ उत्तरं भण्णति—एस सकारणो उवण्णासो । इमे य ते कारणा—तुल्याभित्तिणां सम्बद्धात् इत्येद्वितीयात् इंदिया-अणिदियणिमित्त-५ त्तणां तुल्यव्वतोवसमकारणत्तणां सम्बद्धादिविसयसामण्णत्तणां पश्चवसामन्नत्तणां य तद्भावे य सेसणाण-संभवातो अतो आदीए मति-सुतां त्तं कतां । तेसु वि य “मतिपुञ्चतं सुतं” [ सुतं ४३ ] ति पुञ्चं मतिणाणं कतं, तस्स य पिद्वतो सुतं ति । अहवा इंदिया-अणिदियनिमित्तणमविसिद्धे वि मति-सुतेसु परोवदेसत्तणमेत्तभेदातो अरिहंतव्यणकारणत्तणां य मतिविसेसत्तणां य सुतस्स मतिअणांतरं सुतं ति । मति-सुयसमाणकालत्तणां मित्त-१० देसणपरिग्रहत्तणां तव्यवज्जयसाहमन्नत्तणां सामिसाहमन्नत्तणां य कथइ कालेगलाभत्तणां य मति-सुताणांतरं अवधि ति भणितो । ततो य छउमत्थसामिसामण्णत्तणां य पुग्गलविसयसामण्णत्तणां य खयोवसमभावसाम-१५ णत्तणां य पच्चकखभावसामण्णत्तणां य अवदिसमणांतरं मणपञ्जकनाणं ति । सब्बनाणुत्तमन्नत्तणां सब्बविसुद्धत्तणां य विरतसामिसामण्णत्तणां य सब्बावसाणलाभत्तणां य सब्बुत्तमलद्वित्तणां य तदंते केवलं भणितं ॥

#### ८. तं समासओ दुविहं पण्णतं, तं जहा—पच्चकखं च परोक्खं च ।

८. सब्बं पेतं समासतो दुविधं—पच्चकखं च परोक्खं च० इत्यादि । इह अप्पत्तत्त्वत्तणां पुञ्चं पच्चकखं २० पणविज्ञति । इह जीवो अकखो । कहं ? उत्त्यते—“अशू व्यासो” इति, णाणप्पणताए अत्थे असइ ति इच्चेवं जीवो अकखो, णाणभावेण वावेति ति भणितं भवति । अहवा “अशू भोजने” इच्चेतस्य वा सब्बत्थे असइ ति अकखो, पालयति भुद्गते चेत्यर्थः । अकखं पति वदति ति पच्चकखं, अणिदियं ति तुत्तं भवति । चसदाओ य से अवधिमादि-भेदा द्वृष्ट्वा । अकखातो [ जे० १९२ द्वि० ] परेसु जं णाणं उप्पज्ञति तं पैरोक्खं सभेदं चसदाओ इंदिय-मणो-२५ निमित्तं द्वृष्ट्वमिति ।

९. से किं तं पच्चकखं ? पच्चकखं दुविहं पण्णतं, तं जहा—इंदियपच्चकखं च णोइं-३० दियपच्चकखं च ।

१०. से किं तं इंदियपच्चकखं ? इंदियपच्चकखं पंचविहं पण्णतं, तं जहा—सोइंदिय-३५ पच्चकखं चैकिंखदियपच्चकखं घाणिदियपच्चकखं रसणेदियपच्चकखं फासिंदियपच्चकखं । से तं इंदियपच्चकखं ।

११. से किं तं पच्चकखं ? पुच्छा । ‘से’ ति स पच्चकखनाणभेदो । ‘किं तं’ ति परिपण्हे, कतिभेदं ति तुत्तं भवति । तं च किसरूवं ? ति आयरियो पभेदमुवण्णासितुं तस्सरूवकहणेण पच्चकखसरूवं कहितुकामो आह—पच्चकखं दुविहं पण्णतं ति ।

१२. इंदियं ति—पुग्गलेहि संठाणणिच्चचिरूवं दव्यिदियं, सोइंदियमादिइंदियाणं सब्बातप्पदेसेहि स्वावरणकखतोवसमातो जा लङ्घी तं भाविंदियं, तस्स पच्चकखं ति इंदियपच्चकखं । तं पंचविहं । पर आह—णु

१ चत्तव्वं मो० ॥ २ “द्वितीय” आ० ॥ ३ “त्तत्तेण अविसिद्धे वि सति सुते वि परो” आ० ॥ ४ “णतो सम्मता-एकाळे” आ० ॥ ५ वेत्यर्थः आ० ॥ ६ परोक्खं, तं चेवं, चसं आ० ॥ ७ चक्षुतुष्टियं सं० ॥ ८ जिंभिदिय मो० मु० ॥

आणुगामियं अगाणुगामियं च ओहिणाणं । सिरिदेववायगविरह्यं णंदीसुत्तं ।

१५

दन्विदियावत्थियपदेसमेत्तमहृष्टतो सेसप्पदेसेषु अणुवलद्वी खयोवसमनिरत्यता वा भवति । आयरिय आद-३ एवं, पदीवदिङ्गतसामत्थतो, जहा चतुसालभवणेगदेसजाल्लितो पदीत्रो सब्बं भवणमुज्जोवेति तहा दन्विदियमेत्तप-देसविसयपडिबोधओ सब्बातप्यदेसोवयोगत्थपरिच्छेययो खयोपसमकाफल्लया य भवति त्ति ण दोसो । भाविंदियो-वयारपचक्षत्तणतो एतं पचक्षं, परमत्थओ पुण चित्तमाणं एतं परोक्षं । कम्हा ? जम्हा परा दन्विदिया, भाविंदियस्स य तदायत्तप्यणतो ॥

११. से कि तं णोइंदियपचक्षं ? णोइंदियपचक्षं तिविहं पण्णत्तं, तं जहा-ओहि-  
णाणपचक्षं १ मणपञ्जवणाणपचक्षं २ केवलणाणपचक्षं ३ ।

१२. से कि तं ओहिणाणपचक्षं ? ओहिणाणपचक्षं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-  
भवपचतियं च खयोवसमियं च । दोन्हं भवपचतियं, तं जहा-देवाणं च णेरतियाणं च ।  
दोन्हं खयोवसमियं, तं जहा-मणुस्साणं च पंचेदियतिरिक्खजोणियाणं च ।

१०

११-१२. णोइंदियपचक्षं ति इंदियातिरितं । तं तिविहं ओहिमादी । अवहि त्ति-मज्जाया, सा य रुविदच्चेषु त्ति, “रुविससऽवधे” [तत्त्वा. अ. १ स. २८] त्ति चयणातो, तेषु णाणं ओहिनाणं । ‘भवपचइतो’ त्ति भणिते भण्णति—णणु ओधी खयोक्तसमिते भावे, णरगादिभवो से उदइए भावे, कहं भवपचइतो भण्णति ? त्ति, उच्चरो लो वि खयोक्तसमितो चेव, किंगु सो चेव खयोवसमो णरग-देवभवेषु अवसं भवति त्ति, दिङ्गतो पक्खीणं आगासगमणं व, एवं भवपचइतो भण्णति । खयोवसमियं पुण णर-तिरियाणं, तेषु णावसं उप्पज्ञति १५ त्ति खयोवसमवेक्षति ॥ खयोवसमसर्वं च सुत्तेणेव [जे० १९३ प्र०] भणितं—

१३. को हेऊ खायोवसमियं ? खायोवसमियं तयावरणिज्जाणं कम्माणं उदिणाणं  
खएणं अणुदिणाणं उवसमेणं ओहिणाणं समुपज्ञति । अहवा गुणपडिवण्णस्स  
अणगारस्स ओहिणाणं समुपज्ञति ।

१३. को हेतु त्ति इच्चादि । सो य खयोवसमो गुणमंतरेण गुणपडिवत्तितो वा भवति । गुणमंतरेण जहा २० गमणबभज्जात्तिते अहापवत्तितो छिद्रेण दिणकरकिरण व्व विणिसिता दब्बमुज्जोवंति तहाऽवधिआवरण-  
खयोवसमे अवधिलंभो अध्रापवत्तितो विष्णेतो । गुणपडिवत्तितो—गुणपडिवण्ण० इत्यादि । उत्तरुन्नर-  
चरणगुणविसुज्जमाणमवेक्षतातो अवधिणाण-दंसणावरणाण खयोवसमो भवति । तक्खयोवसमे य अवधी  
उप्पज्ञति ॥

१४. तं समासओ छन्विहं पण्णत्तं, तं जहा-आणुगामियं १ अणाणुगामियं २ २५  
वहृदमाणयं ३ हायमाणयं ४ पडिवाति ५ अपडिवाति ६ ।

१४. आणुगामियं ति । अणुगमणसीलो अणुगामितो; तदावरणखयोवसमाऽत्तपदेसविसुद्धगमणतातो  
लोयणं व ॥

१ सत्रमिदं प्रश्न-निर्वचनात्मकमयि उपलभ्यते—से कि तं भवपचइयं ? २ दुण्हं, तं जहा-ऐवाण य विरह्याण य । से कि तं खयोवसमियं ? ३ दुण्हं, तं जहा-मणुस्साण य पंचेदियतिरिक्खजोणियाण य । वे० मो० डे० सु० । किंव-  
चूणि-हृतिक्तां नेव पश्चोत्तरात्मक सूत्रं सम्मतम् ॥ ४ ‘रथं’ ति आ० दा० ॥ ५ ‘दियाणं वं० ॥

१५. से कि तं आणुगामियं ओहिणाणं ? आणुगामियं ओहिणाणं दुविहं पण्णतं, तं जहा-अंतगयं च मञ्जगयं च ।

१६. अंतगयं ति । जहा जलंतं वणंतं पञ्चतंतं, अविसिद्धो अंतसहो । एवं ओरालियसरीरंते ठिं गतं ति एगढं, तं च आतप्पदेसफङ्गावहि, एगदिसोवलंभाथो य अंतगतमीधिष्णाणं भण्णति । अहवा सञ्चातप्पदेसविसुद्धेसु वि ५ ओरालियसरीरेगंतेण एगदिसिपासणगतं ति अंतगतं भण्णति । अहका फुडतरमत्थो भण्णति—एगदिसावधिउवलद्ध-खेनातो सो अवधिपुरिसो अंतगतो चि जम्हा तम्हा अंतगतं भण्णति । मञ्जगतं पुण ओरालियसरीरमञ्जे फङ्गविसुद्धीतो सञ्चातप्पदेसविसुद्धीतो वा सञ्चदिसोवलंभत्तणतो मञ्जगतो चि भण्णति । अहवाऽवधिउवल-द्धखेनस्य वा अवधिपुरिसो मञ्जगतो चि अतो वा मञ्जगतो भण्णति ॥

१७. से कि तं अंतगयं ? अंतगयं तिविहं पण्णतं, तं जहा-पुरओ अंतगयं १  
१० मग्गओ अंतगयं २ पासतो अंतगयं ३ ।

१८. से कि तं पुरतो अंतगयं ? पुरतो अंतगयं से जहानामए केइ पुरिसे उकं वा चुडलिअं वा अलायं वा मणि वा जोइं वा पदीवं वा पुरओ काउं पणोल्लेमाणे पणोल्लेमाणे गच्छेज्जा । से तं पुरओ अंतगयं ।

१९. से कि तं मग्गओ अंतगयं ? मग्गओ अंतगयं से जहाणामए केइ पुरिसे १५ उकं वा चुडलियं वा अलायं वा मणि वा जोइं वा पईवं वा मग्गओ काउं अणुकइटेमाणे अणुकइटेमाणे गच्छेज्जा । से तं मग्गओ अंतगयं २ ।

२०. से कि तं पासओ अंतगयं ? पासओ अंतगयं से जहाणामए केइ पुरिसे उकं वा चुडलियं वा अलायं वा मणि वा जोइं वा पईवं वा पासओ काउं परिकइटेमाणे परिकइटेमाणे गच्छेज्जा । से तं पासओ अंतगयं ३ । से तं अंतगयं ।

२१. से कि तं मञ्जगयं ? से जहानामए केइ पुरिसे उकं वा चुडलियं वा अलायं वा मणि वा जोइं वा पईवं वा मत्थए काउं गच्छेज्जा । से तं मञ्जगयं ।

२२-२०. उकं स्ति-दीविया । चुडलि चि-तणपिडी अग्गे पञ्जलिता । अलातं ति-दारुयं जलंतं । मणि वा जलंतं । जोइ चि-मछगादिठिं अगणि जलंतं । पदीवो चि-दीवती । ‘पुरतो’ चि अग्गतो ‘पणोल्लुण’ ति

१ सु० प्रती १६-१९ सूत्रेषु सर्वत्र अन्तगयं इति परस्वर्णान्वितः पाठो दृश्यते ॥ २ १७-१९ सूत्रेषु चुडलिअं इति पाठः जे० मो० ॥ ३ अत्र १७-१९ खंत्रेषु चुडलिअव्या अलायम्बा पदीवम्बा मणिम्बा जोतिम्बा इकिह्यः पाठः ख० प्रती वत्तेते ॥ ४ १७-१९ सूत्रेषु अलायं वा पदीवं वा मणि वा जोति वा पुरतो इति पाठः सर्वात्मिपि सूत्रप्रतिषु दृश्यते । न खलु चूणि-बृंशिकृतसम्मतः पाठः कुत्राप्यादशै उपलभ्यते तथापि व्याख्याकृन्मतालुसारेणास्माभिः परावृत्य मूले पाठ उद्भूतोऽस्ति । अलायं वा मणि वा पदीवं धा जोति वा पुरओ इति श० पाठस्तु नास्मत्समीपस्थेषु आदर्शेषु इश्यते ॥ ५ काउं समुद्वहमाणे समुद्वहमाणे गच्छेज्जा जे० मो० सु० ॥

अणाणुगामियं वद्धमाणयं च ओहिणाणं ] सिरिदेववायगविरद्यं पंदीमुत्तं ।

१७

“एव भेरणे” इत्थगाहितस्स दंडगाहितस्स वा परंपरेण नयनमित्यर्थः । ‘भगतो’ चि पिंतो ‘अणुकङ्गाणं’ ति इत्थगाहितस्स दंडगाहितस्स वा अणु-पच्छयो कद्गद्यं ति । ‘पापतो’ चि दाहिणे वामे वा पासे सा(दी)पासयजे ॥ १९३ द्वि० ] जमलद्वितं । परिकङ्गाणं ति—इत्थ-दंडगाहितं वा परि-पापतो द्वितस्स कद्गद्यं परिकङ्गाणं ॥

सीसो चुच्छति—

२१. अंतगयस्स मज्जगयस्स य को पद्विसेसो ? पुरओ अंतगएण ओहिनाणेण ५ पुरओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि जाणइ पासइ, मैरगओ अंतगएण ओहिनाणेण मरगओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि जाणइ पासइ, पासओ अंतगएण ओहिणाणेण पासओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ पासइ, मज्जगएण ओहिणाणेण सब्बओ समंता संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ पासइ । से तं आणुगामियं ओहिणाणं । १०

२२. अंतगतस्स० इच्चादि । आयरियाऽऽह-पुरतो० इच्चादि । ‘सब्बतो’ चि सब्बासु वि दिसि-विदिसासु ‘समंता’ इति संब्बातप्पदेसेमु सब्बेमु वा विचुद्रफहेमु । अहवा ‘सब्बतो’ चिसब्बासु दिसि-विदिसासु सब्बातप्पदेसफहेमु य । ‘से’ इति निदेसे अवधिपुरिसस्स, ‘मंता’ इति णाता । अहवा “समंता” इति समं-दब्बादयो तुष्टा अता इति-प्राप्ता इत्यर्थः ॥

२३. से किं तं अणाणुगामियं ओहिणाणं ? अणाणुगामियं ओहिणाणं से जहा- १५ णामए केइ पुरिसे एगं महंतं जीइद्वाणं काउं तस्सेव जोइद्वाणस्स परिपेरंतेहि परिपेरंतेहि परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तमेव जोइद्वाणं पासइ, अण्णत्य गए ण पासइ, ऐंवमेव अणाणुगामियं ओहिणाणं जत्थेव समुपज्जाइ तथेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा जोयणाइ जाणइ पासइ, अण्णत्य गए ण पासइ । से तं अणाणुगामियं ओहिणाणं । २०

२४. णो गच्छंतमणुगच्छति चि अणाणुगामिकं, संकल्पापडिवद्वद्वितप्पदीत्रो व्व, तस्स य् खेत्तावेक्षेष्यो-वसमलाभत्तणतो अणाणुगामित्तं । पेरंतं ति-समंततो अगणिमासणं, तस्स य जोइस्स सब्बतो दिसि-विदिसासु समंता परिघोलणं ति-पुणो पुणो इतो इतो परिसकणं ॥

२५. से किं तं वद्धमाणयं ओहिणाणं ? वद्धमाणयं ओहिणाणं पंसत्थेसु अज्ज-

१ गसे दोखु वा सयं जमं आ० दा० ॥ २ मरगओ अंतगएण० इत्यादिस्त्रांशः पासओ अंतगएण० इत्यादिगूत्रांशश्च खं० सं० प्रथोः पूर्वापरकमव्यत्यासेन वर्तते ॥ ३ समस्ता इति पाठमेदक्ष्याणौ निर्दिष्टोऽस्ति ॥ ४ “सब्बावप्पामेसु इत्यादौ नृतीयायै समसी” इति नन्दिचृत्तो श्रीमलयगिरियादरेत्तायोद्दणे व्यामल्यातप्यस्ति पत्र ४५-२ ॥ ५-६-११ ओहिणाणं डे० ल० ॥ ७-८ अगणिद्वा० खं० सं० ल० शु० ॥ ९ सवाणु सूत्रप्रतियु अत्र जोहद्वाणं इत्थेव पाठो वर्तते ॥ १० पद्मामेव शु० ॥ १२ अगणिपासेण, तस्स आ० । अगणियासणं, तस्स दा० ॥ १३ पलत्थेहि अज्जवसाणद्वाणेहि खं० मो० ॥

वसाँणद्वाणेसु वद्वमाणस्स वैद्वमाणचरित्स्स विसुज्ज्ञमाणस्स विसुज्ज्ञमाणचरित्स्स  
सब्बओ समंता ओही वद्वइ ।

जावतिया तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स ।

ओगाहणा जहन्ना ओहीखेत्तं जहन्नं तु ॥ ४४ ॥

५ सब्बबहुअगणिजीवा णिरंतरं जत्तियं भरेज्जांसु ।

खेत्तं सब्बदिसागं परमोही खेत्तनिहिडो ॥ ४५ ॥

अंगुलमावलियाणं भागमसंखेज्ज दोसु संखेज्जा ।

अंगुलमावलियंतो आवालिया अंगुलपुहसे ॥ ४६ ॥

१० हत्यम्मि मुहुत्तंतो दिवसंतो गाउयम्मि बोछब्बो ।

जोयण दिवसपुहत्तं पक्संतो पण्णवीसाँओ ॥ ४७ ॥

भरहम्मि अज्जमासो जंबुदीवम्मि साहिओ मासो ।

वासं च मणुयलोए वासपुहत्तं च रुयगम्मि ॥ ४८ ॥

१५ संखेज्जम्मि उ काले दीव-समुद्दा वि होंति संखेज्जा ।

कालम्मि असंखेज्जे दीव-समुद्दा उ भइयब्बा ॥ ४९ ॥

काले चउण्ह बुङ्गी कालो भइयब्बु खेत्तबुङ्गीए ।

बुङ्गीए दब्ब-पञ्जाव भइयब्बा खेत्त-काला उ ॥ ५० ॥

२० सुहुमो य होइ कालो ततो सुहुमयरयं हवड खेत्तं ।

अंगुलसेढीमेने ओसप्पिणिओ असंखेज्जा ॥ ५१ ॥

से तं वद्वमाणयं ओहिणाँणं ।

२३. वर्धनं वड्डी, पुञ्चात्रत्थातो उदरुवरि वद्वमाणं ति, तं च उस्सणं चरणगुणविसुद्धिमपेक्षेव, ततो पसत्थज्जवसाणद्वाणा तेआदिपसत्थलेसाणुगता भवंति, पसत्थदब्बलेसाडि अणुरंजितं चित्तं पसत्थज्जवसाणो भण्णति, पसत्थज्जवसाणातो य चरणा-इतविसुद्धी, चरणा-इतविसुद्धीतो य चरणयचतलद्दीणं वड्डी भवति ।

इमाओ य जहणुकोस-विमज्जिमोधिवड्डदंसणगाहाओ जहा पेहियाँण ॥ ४४-५१ ॥

१ 'सायहा' स० ॥ २ 'वद्वमाण' ल० ॥ ३ 'यीतं तु ल० । 'बोलेतो ल० ॥ ४ वि शु० । य मो० ॥ ५ 'णाणयं स० ॥ ६ 'क्षत्तणतो पसत्थ' आ० दा० ॥ ७ आनश्यकनियुक्तिपीठिकायां गाथाः ३०-३७ ॥

२४. से किं तं हायमाणयं ओहिणाणं ? हायमाणयं ओहिणाणं अप्सत्येहि अज्ञवसायद्वाणेहि बद्धमाणस्स बद्धमाणचरित्स्स संकिलिस्समाणस्स संकिलिस्समाणच-रित्स्स सब्बओ समंता ओही परिहायति । से तं हायमाणयं ओहिणाणं ।

२५. हाणि चि-हस्समाणं, पुन्नावत्थातो अधोऽधो हस्समाणं । तं च बद्धमाणविष्वक्षतो भाष्टित्वं । अप्सत्येहेत्सोवरंजितं चित्तं अगेजामुभत्थचित्तणपरं चित्तं संकिलिद्वं भण्टति ॥ ५

२५. से किं तं पदिवाति ओहिणाणं ? पदिवाति ओहिणाणं जणं जहणेण अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं वा संखेज्जतिभागं वा वालग्गं वा वालग्गपुहत्तं वा लिक्खं वा लिक्खपुहत्तं वा जूयं वा जूयपुहत्तं वा जवं वा जवपुहत्तं वा अंगुलं वा अंगुलपुहत्तं वा पायं वा पायपुहत्तं वा वियंत्थि वा वियत्थिपुहत्तं वा रथणि वा रथणिपुहत्तं वा कुच्छि वा कुच्छिपुहत्तं वा धर्णुयं वा धणुयपुहत्तं वा गाउयं वा गाउयपुहत्तं वा जोयणं वा जोयणपुहत्तं वा जोयणसयं वा जोयणसय- १० पुहत्तं वा जोयणसहस्रं वा जोयणसहस्रपुहत्तं वा जोयेयसतसहस्रं वा जोयणसरासहस्रपुहत्तं वा जोयणकोडि वा जोयणकोडिपुहत्तं वा → जोयणकोडाकोडि वा जोयणकोडाकोडिपुहत्तं वा ← उकोसेण लोगं वा पासित्ता णं पदिवएज्जा । से तं पदिवाति ओहिणाणं ।

२६. उप्पणोहिनाणस्स पुणो पत्तो चि पदिवाती, नाशेत्यर्थः । तं च खेत्तविसेसोवलंभेण भण्टति । ते य इमे—असंखेयंगुलभागादिया । दुष्प्रभिति जाव एव चि अंगुलगुहत्तं भण्टति । दो इत्था कुच्छी । पदिवातिणो १५ जाव उकोसो लोगभेत्ते एव ॥

२६. से किं तं अपदिवाति ओहिणाणं ? अपदिवाति ओहिणाणं जेणं अलोगस्स एगमवि आगासपेदेसं पासेज्जा तेण परं अपदिवाति ओहिणाणं । से तं अपदिवाति ओहिणाणं ।

२७. अपदिवाति चि, सो वि खेत्तविसेसोवलंभातो चेव णज्जति, अतो भण्टति अलोगस्स एगमवि चि । २० ‘अैवि’ पदत्थसंभावणे, किमुत दुष्पदेसादिउपलंभे ? इत्यर्थः । [बै० १९४ प्र०] ॥

२७. तं समासओ चउच्चिहं पण्णत्तं, तं जहा-दब्बओ खेतओ कालओ भावओ । तेत्थ दब्बओ णं ओहिणाणी जहणेण अणंताणि रुविदब्बाइं जाणइ पासइ, उकोसेण

१ अप्सत्येसुं अज्ञवसायद्वाणेसुं स० ॥ २ ओही द्वायति ल० स० ज० म० ॥ ३ ‘गासुतत्थ’ ज० ॥  
४-५ ‘ज्ञयभा’ ज० म० ॥ ६ पुहुत्तं पुहुत्तं शब्दाः रवीसंवि सूत्रप्रतिषु कमगरिहारेण आश्रित्या दृश्यन्ते ॥ ७ चिह्नित्थ  
वा चिह्नित्थि म० म० स० ॥ ८ धर्णुयं वा धणुपुयं ज० म० म० स० ॥ ९ जोयणलक्ष्मं वा जोयणलक्ष्मपुहत्तं ज० म० म० स० ॥  
१० → ← एतच्छिह्नमवगतः पाठः ल० स० नास्ति ॥ ११ ‘मेत्तए वा आ० दा० ॥ १२ स० विनाऽन्यत्र—‘पदेसं पासति  
तेण ल० श० ॥ ‘पदेसं जाणइ पासइ तेण ज० ड० ल० म० ॥ १३ अविपदत्थो संभा’ आ० दा० ॥ १४ तत्थ इति  
स० स० ल० श० नास्ति ॥

सब्बाइ रुविदब्बाइ जाणइ पासइ १ ।      खेतओ णं ओहिणाणी जहणोणं अंगुलस्स  
असंखेज्जतिभागं जाणइ पासइ, उकोसेण असंखेज्जाइ अलोए लोयमेत्ताइ खंडाइ जाणइ  
पासइ २ ।      कालओ णं ओहिणाणी जहणोणं आवलियाए असंखेज्जतिभागं  
जाणइ पासइ, उकोसेण असंखेज्जाओ उस्सपिणीओ अवसपिणीओ अतीतं च अणागतं  
च कालं जाणइ पासइ ३ ।      भावओ णं ओहिणाणी जहणोणं अणंते भावे जाणइ  
पासइ, उकोसेण वि अणंते भावे जाणइ पासइ, सब्बभावाणमणंतभागं जाणइ पासइ ४ ।

२७. वित्थरेण खयोकसमविसेसतो असंखेज्जविधमोधिणाणं, ओधिमोदिगतिषज्जवसाणं वा, चतुर्दशविध-  
वित्थरो, ते पद्मच इमं चतुर्विहं समासतो भणति दब्बादि । दब्बमो ओधिणाणी जहणोणं तेयाभासंतरे अणंते  
दब्बे उबलभति, उकोसतो सब्बरुविदब्बाइ । जाणइ त्ति नाणं, तं च जं विसेसम्माहणं तं णाणं, सागारमित्यर्थः ।  
२८. पासति त्ति दंसणं, तं च जं सामण्माहणं तं दंसणं, अणागारमित्यर्थः । खेत-कालतो य मुत्तसिद्धं । भावतो  
ओधिणाणी जहणोणं अणंते भावे उबलभति, उकोसतो वि अणंते, जहणपदातो उकोसपदं अणंतमुणं । उकोसपदे  
वि जे भावा ते सब्बभावाण अणंतभागे बद्धति ॥

२९. ओही भवपञ्चतिओ, गुणपञ्चतिओ य वेणिणओ एसो ।

तंस्स य बहू वियप्पा, दब्बे खेते य काले य ॥ ५२ ॥

१५      से तं ओहिणोणं ।

२८. ओधी भव० गाधा । दब्बतो बहू विगप्पा परमाणुमादिदब्बविसेसातो । खेततो वि अंगुलअसं-  
खेयभागविकल्पादिया । कालतो वि आवलियअसंखेज्जभागादिया । भावतो वि चणपञ्जज्जवादिया ॥ ५२ ॥

मणपञ्जनवनाणमिदाणि । तस्स सर्वं वणितमादीए [पत्रम् १३] । इदाणि सामी विसेमिज्जट् पुंच्छुतरेहिं—

२९. [१] से कि तं मणपञ्जवणाणं ? मणपञ्जवणोणे णं भंते ! कि मणुस्साणं  
२० उप्पञ्जइ अमणुस्साणं ? गोयमा ! मणुस्साणं, णो अमणुस्साणं ।      [२] जइ मणु-  
स्साणं कि सम्मुच्छिममणुस्साणं गब्भवकंतियमणुस्साणं ? गोयमा !, णो सम्मुच्छिम-  
मणुस्साणं, गब्भवकंतियमणुस्साणं ।      [३] जइ गब्भवकंतियमणुस्साणं कि कैम्मभूम-

१ लोयप्पमाणमेत्ताइ खं० सं० विना ॥ २ ओसपिणीओ उस्सपिणीओ खं० सं० ॥ ३ लेण पि अणंते खं० ॥  
४ “मागो खं० । चूणिकतां हरिभद्रपादानां चायमेव पाठः सम्मतः ॥ ५ “ओही खेत परिभाणे” इत्याद्यावश्यकनिर्युक्ति२७-२८-  
गाथायुगलोकानि चतुर्वेद छाराष्ट्रवेदोदब्बानि ॥ ६ वणिणओ दुविहो इति वृक्षिक्षुर्घाण निर्दिष्टः पाठमेदः ॥ ७ तस्सेव सं० ॥  
८ द्वापशाशतमगाथानन्तरे सर्वेषामि सद्गादर्शेषु हरिभद्रसूरिपाद-मलयगिरिचरणव्याख्याता एका गाथाऽधिका उपलभ्यते—

वेरतिय-देव-तित्यंकरा य ओहिस्सउवादिरा होति । पासति सब्बओ खलु सेसा देसेण पासति ॥

९ सम्मसे ओहि० खं० ॥ १० णाणपञ्चकलं सु० ॥ ११ पुब्बसुत्तेहिं आ० ॥ १२ णाणं भंते ! खं० मो० ॥ १३ मणूस्साणं  
सं० । एवमेऽपि अस्मिन् सूत्रे (२९) सर्वत्र इत्यम् ॥ १४ उप्पञ्जइ इति खं० सं० नास्ति ॥ १५ कम्मभूमिथ० मो० गु० ।  
एवमेऽपि सर्वत्र अस्मिन् सूत्रे (२९) इत्यम् ॥

१ जन्म सं० । जदि सं० ॥

ममभूमगगब्भवकंतियमणुस्साणं । [१] जइ अपमत्तसंजयसम्महिड्हिपज्जत्तगसंखे-  
ज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवकंतियमणुस्साणं किं इड्हिपत्तअपमत्तसंजयसम्महिड्हिपज्जत्तग-  
संखेज्जवासासाउयकम्मभूमगगब्भवकंतियमणुस्साणं अणिड्हिपत्तअपमत्तसंजयसम्महिड्हि-  
पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवकंतियमणुस्साणं ? गोयमा ! इड्हिपत्तअपमत्तसंजय-  
५ सम्महिड्हिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवकंतियमणुस्साणं, णो अणिड्हिपत्तअपम-  
त्तसंजयसम्महिड्हिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवकंतियमणुस्साणं पणपज्जवणाणं  
ममुणज्जइ ।

२९. किं मणुस्साऽ इत्यादि । सम्मुच्छिममणुस्सा गब्भवकंतियमणुस्साणं चेव बंत-पित्तादिसु संभवंति ।  
कम्मभूमगा पंचसु भरहेसु पंचसु एस्वदेसु पंचसु महाविदेहेसु य । हेमवतादिसु मिथुणा ते अकर्मभूमगा । तिणि  
१० जोयणशते लवणजलंमोगादिता चुल्हिमवंतरिहरिपादपतिट्ठिता एगूरुगादि छप्पणं अंतरदीवरा । किं पञ्जत्ताणं  
अपञ्जत्ताणं ? ति । पञ्जत्ती शाम—सत्ती सामत्थं । सौ य पुगलदब्बोवचया उप्पज्जति । ताओ य छ पञ्जत्तीतो—  
आहार-सरीर-ईदिय-आणापाणु-भासा-मणपञ्जत्ती चेति । तत्थ एगिंदियाणं चउरो, विगलिंदियाणं पंच, अस्सणीणं  
संववहारतो पंच चेव, सणीणं च छ । तत्थ आहारपञ्जत्ती नाम खल-रसपरिणामणसत्ती आहारपञ्जत्ती । सत्तधारुतया  
परिणामणसत्ती सरीरपञ्जत्ती । पंचष्ट्रिंदियाणं [जे० १९४ दि०] जोगा पोगलै चियित्तु अणाभोगनिवृत्तित-  
१५ विरियकरणेण तेब्मावणयणसत्ती इंदियपञ्जत्ती । [उस्सास]पोगलजोगाणापाणुण गहण-णिसिरणसत्ती आणा-  
पाणुपञ्जत्ती । वडजोगो पोगले घेचूण भासत्ताए परिणामेत्ता वडजोगत्ताए निसिरणसत्ती भासापञ्जत्ती । मण-  
जोगो पोगले घेचूणं मणत्ताए परिणामेत्ता मणजोगत्ताए निसिरणसत्ती मणपञ्जत्ती । एताओ पञ्जत्तीओ पञ्ज-  
त्थणामकम्मोदणं णिवृत्तिज्जंति, ता जेसि अतिथ ते पञ्जत्तया । अपञ्जत्तयणामकम्मोदणं अणिवृत्तातो  
जेसि ते अपञ्जत्तया । अप्पमत्तसंजता जिणकृपिया परिहारवियुद्रिया अडालंदिया पडिमापडिवणगा य, एते  
२० सततोवयोगोवउत्तत्तणतो अप्पमत्ता । गच्छवासिणो पुण पमत्ता, कणहुइ अशुवयोगसंभवतातो । अहवा गच्छवासी  
णिगता य पमत्ता वि अप्पमत्ता वि भवंति परिणामवसओ । ‘इड्हिपप्पत्तस्से’ति आयोसहिमादिवणतरइड्हिपत्तस्स  
मणपञ्जवनाणं उप्पज्जइ त्ति । अहवा ‘ओहिनाणिणो मणपञ्जवनाणं उप्पज्जति’ त्ति अणे नियमं भणंति ॥

३०. तं च दुविहं उप्पज्जइ, तं जहा-उज्जुमती य विउलमती र्य ।

३०. रिजू मती उज्जुमई, सामण्णगाहिणि त्ति भणितं होति । एस मणोपज्जायविसेसो त्ति । ओसणं  
२५ विसेसविमुहं उवलभति, णातीवचहुविसेसविसिद्धं अत्थं उवलभइ त्ति भणितं होति, घडो णेण चितिओ त्ति  
जाणति । विमुला मती विमुलमती, वहुविसेसगाहिणि त्ति भणितं भवति । मणोपज्जायविसेसे जाणति, दिढंतो  
जहा-णेण घडो चितितो, तं च देस-काळादिवणेगपञ्जायविसेसविसिद्धं जाणति ॥ अहवा रिजू-विमुलमतीणं इमं  
दब्बादीहिं विसेससरूपं भणति—

१ सामत्थतो य आ० ॥ २ ‘ला विचिणिसु अणा’ आ० ॥ ३ सम्भवापायण० आ० दा० ॥ ४ अणिड्हिता  
ता जेसि आ० ॥ ५ तं च दुविहं उप्पज्जइ इति सं० सं० नास्ति ॥ ६ उप्पज्जइ इति शु० नास्ति ॥ ७ विमुलमती खं ॥

३१. तं समासओ चउब्बिहं पण्णतं, तं जहा-देव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । तैत्थ देव्वओ णं उज्जुमती अणंते अणंतपदेसिए खंधे जाणइ पासइ, ते चेव विउलमती अंब्भहियतराए जाणति पासति । खेत्तओ णं उज्जुमती अहे जाव इंमीसे खण्णपभाए पुढीए उवरिमहेडिलाइ खुड्हागपयराइ उड्हुं जाव जोतिसस्स उवरिमत्तें तिरियं जाव अंतोमणु-ससखिते अड्हाइज्जेसु दीव-र्मणुहेसु ताणारीणं पंचेदिपाणं उज्जलगाणं मणोगते भावे जाणइ ५ पासइ, तं चेव विउलमती अड्हाइज्जेहि अंगुलेहि अंब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं ६ खेत्तं जाणति पासति । कालओ णं उज्जुमती जहण्णेणं पलिओ-धमस्स असंखेज्जतिभागं उकोसेणं पि पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं अतीयमणोगये वाँ कालं जाणति पासति, तं चेव विउलमती अंब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं विति-मिरतरागं जाणइ पासइ । ७ भावओ णं उज्जुमती अणंते भावे जाणइ पासइ सब्बमा-वाणं अणंतभागं जाणइ पासइ, तं चेव विउलमती अंब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धत-रागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ ।

३२. मणपञ्जवणाणं पुण जणमणपरिचित्यत्थपायडर्ण ।

माणुसखेत्तणिवद्धं गुणपच्छये चरित्वओ ॥ ५३ ॥

से तं मणपञ्जवणाणं ।

१ दृष्ट्वाऽमुः । दृष्ट्वाऽमुः ८० ॥ २ तत्थ इति ख० स० ल० नास्ति ॥ ३ अंब्भहियतराप विउलतराप विसुद्धतराप वितिमिरतराप जाणति ज० ढ० भ० ल० ॥ ४ अंब्भहियतराप विसुद्धतराप वितिमिरतराप जाणति ख० स० ॥ एतयोः पाठमेदयोः प्रथमः सूत्रपाठमेदः श्रीमलयगिरिपादः सद्वृत्तावाहतोऽस्ति । द्वितीयः पुनः पाठमेदो समवत्ता श्रीअभयदेवसूरिणा भगवत्यामष्मशतकद्वितीयोदेशके मनःपर्यवज्ञानविषयकसूत्रव्याख्यानावस्त्रे जहा नंदीए इति सूत्रनिर्दिष्टनन्दिसूत्रपाठोद्धरणे तदृष्ट्वाख्याने वाहतोऽस्ति । चूर्ण-हारेभद्रवृत्तसम्मतस्तु सूत्रपाठः श० आदर्श एव उपलभ्यते ॥ ५ उज्जुमती जटधेणं अंगुलस्स थसंखेज्जभागं उकोसेणं अहे जाव मु० । नोपलभ्यते कस्मिश्चिदप्यादर्शेऽयं पाठः नापि चूर्णिकृता वृत्तिरुद्धयां वाऽयं पाठः स्वीकृतो व्याख्यातो वा वर्तते । अपि च श्रीअभयदेवाचार्येणापि सगवत्यां अष्मशतकद्वितीयोदेशके नन्दीपाठोद्धरणे नायं पाठ उलिखितो व्याख्यातो वाऽस्ति । नापि विशेषावहस्यकादौ तद्विकादिपु वा मनःपर्यवज्ञानक्षेत्रवर्णनाधिकारे जघन्योत्कृष्टस्थाननिमा इत्यतः ॥ ६ इमीप ल० ॥ ७ उवरिमहेडिलेसु खुड्हागपयरेसु उड्ह० ख० स० ॥ ८ उवरिमहेडिले खुड्हागपयरेउड्ह० ख० स० विना मलयगिरिचृत्तौ च ॥ ९ तलो ख० स० श० ॥ १० समुद्देसु पण्णरससु कम्मभूमीसु तीसाम अकम्मभूमीसु छपण्णाप अंतरदीवरेसु सण्णीणं ढ० श० स० भ० मु० ॥ श्रीमद्भिरभयदेवाचार्येभगवत्यामष्मशतकद्वितीयोदेशके नन्दीसूत्रपाठोद्धरणे एव एव सूत्रपाठ आहतोऽस्ति ॥ ११ जेहिमंगुः स० भ० मु० ॥ १२ अंब्भहियतरं विउलतरं विसुद्धतरं वितिमिरतरं खेत्तं इति हरिभद्र-मलयगिरिचृत्तिसम्मतः सूत्रपाठः ज० भ० मु० ॥ १३ खेत्तं इति ज० स० ढ० श० नास्ति । भगवत्यामभयदेवाचार्योद्धते नन्दीपाठेऽपि नास्ति ॥ १४ अंब्भहियतरागं विउलतरागं इति पदद्वयं ख० स० ल० स० नास्ति । भगवत्यामपि नन्दीपाठोद्धरणे एतत् पदद्वयं नास्ति ॥ १५ अब्र अंब्भहियतरागं विउलतरागं वितिमिरतरागं इति पदद्वयं ख० स० ल० भगवत्यामनन्दीसूत्रपाठोद्धरणे च नास्ति, केवल विसुद्धतरागं इत्येकमेव पदं वर्तते ॥

३१-३२. सणिणा मणत्तेण मणिते मणोखंधे अणन्ते अणन्तपदेसिए दब्बद्वताए तमाते य वणादिए भावे  
मणपञ्जवनाणेण पञ्चकर्खं पेक्खमाणो जाणाति चिभणितं। मणितमत्थं पुण पञ्चकर्खं ण पेक्खति, जेण मणालंबणं  
सुचमसुतं चा, सो य छदुमत्थो तं अणुमाणतो [जे० १९५ प्र०] पेक्खति चिअतो पासणता भणिता। अहवा  
छदुमत्थस्स एगविद्वलयोवसमलंभे वि विविधोपयोगसंभवो भवति, जहेत्थेव रिजु-विषुलमतीणं उवयोगो, अतो  
५ विसेस-सामाणात्थेषु उक्तज्ञतो जगति वालाइ चिभणितं, ण दोसो। विषुलमती पुण दब्बद्वताए वणादिएहि य  
अधिगतरं जाणतीत्यर्थः। उवरिमहेडिलाहं खुड्डागपतराहं ति इमस्स भावणत्थं इमं पणविज्जति-तिरिय-  
लोगस्स उड्डाऽद्वारसजोयणसइयस्स वहुमज्जे एत्थ असंखेयंगुलभागमेत्ता लोगागासप्यरा अलोगेण संवद्विता  
सब्बखुड्डलतरा खुड्डागपतर चिभणिता, ते य सब्बतो रज्जुप्पमाणा। तेसि जे वहुमज्जे दो खुड्डागपतरा तेसि चि  
वहुमज्जे जेबुदीवे रतणप्पभपुढविवहुसमभूमिभागे मंदरस्स वहुमज्जे एत्थ अटुप्पदेसो रुयगो,—जन्तो दिसि-विदि-  
१० सिविभागो पवत्तो,—एतं तिरियलोगमज्जातो। एतातो तिरियलोगमज्जातो रज्जुप्पमाणखुड्डागपतरेहितो उवरि  
तिरियं असंखेयंगुलभागभसंखेयंगुलभागवही, उवरिहुत्तो वि अंगुलभसंखेयभागरोहो चेव, एवं तिरियमुवरिं च  
अंगुलभसंखेयभागवहीष ताव लोगवड्डीणेतवा जाव उड्डलोगमज्जां, तातो पुणो तेणेव कमेणं संवद्वो कातव्वो  
उवरिलोगांतो रज्जुप्पमाणो। ततो य उड्डलोगमज्जातो उवरिं हेढा य कमेण खुड्डागपतरा भाणितव्वा जाव  
जाव रज्जुप्पमाणा खुड्डागपतर चि। तिरियलोगमज्जारज्जुप्पमाणखुड्डागपतरेहितो चि हेढा अंगुलभसंखेयभागवहीष  
१५ तिरियं, अहोनगाहेण वि अंगुलस्सभसंखभागो चेव, एवं अहेलोगो वद्वेतव्वो जाव अहेलोगांतो सत्त रज्जूओ।  
सत्तरज्जुप्पयरेहितो उपरुपरि कमेण खुड्डागपतरा भाणितव्वा जाव तिरियलोगमज्जारज्जुप्पमाणा खुड्डागपतर चि।  
एवं खुड्डागपरुपणे कते इमं भणिति-उवरिमं ति-तिरियलोगमज्जातो [जे० १९५ दि०] अहो जाव णव जोयण-  
सता ताव इमीष रयणप्पभपुढवीष उवरिमखुड्डागपतर चिभणिति। तदहो अहेलोगे जाव अहेलोइयगामवत्तिणो  
ते हेडिमखुड्डागपतर चिभणिति, रिजुमती अधो ताव पश्यतीत्यर्थः। अहवा अहेलोगस्स उवरिमा खुड्डागपतरा  
२० तिरियलोगस्स य हेडिमा खुड्डागपतरा ते जाव पश्यतीत्यर्थः।

अणे भणिति— उवरिम चि— अधेलोगोपरिद्विता जे ते उवरिमा। के य ते? उच्यते— सब्बतिरियलोग-  
वत्तिणो तिरियलोगस्स चा अहो णवजोतणसत्तवत्तिणो ताण चेव जे हेडिमा ते जाव पश्यतीत्यर्थः, इमं ण घडति,  
अहेलोइयगाममणपञ्जवणाणसंभैत्रपाहणात्तमतो। उक्तं च—

इदाधोलीकिका श्रामा न तिर्यग्लोकवर्त्तिनः। मनोगतास्त्वसौ भावान् वेत्ति तद्वर्त्तिनामपि ॥१॥

२५

[ ]

अड्डातियंगुलगहणं उस्सेहंगुलमाणतो। कहं णज्जति? उच्यते— “उस्सेहप्पमाणतो मिणे देहं” [वृहसप्रहणी  
ग. ३३५] ति वयणातो। अंगुलादिया य जे पमाणा ते सब्बे देहनिष्पणा इति, याणविसयत्तणतो य णी....स्स।  
रिजुमतिखेत्तोवलंभप्पमाणतो विषुलमती अवभतियतरागं खेत्त उवलभइ चि। एगदिसि चि अवभतियसंभवो भवति  
चि समंततो जम्हा अवभइयं ति तम्हा विषुलतरागं भणिति। अहवा जहा घडो घडातो जलाहारत्तणतो अवभतितो  
३० सो पुण नियमा घडागासखेत्तेण विउलतरो भवति एवं विउलमती अवभतियतरागं मणोलद्विजीवदब्बाधारं खेत्त  
जाणति, तं च नियमा विषुलतरं इत्यर्थः। अहवा आयाम-विकर्खंभेण अवभइयतरागं चाहलेण विउलतरं खेत्त

१ अंगेलोगोपरिद्वितो जे जे० ॥ २ ‘संभववाहल्लत्तणतो आ० दा० हरिभद्रशृतौ च ॥ ३ ण दोसो। रिजु० दा०  
मल्यगिरिशृतौ च। ण दो सा० रिजु० आ० ॥ ४ आ० दा० आश्वत्योः एकसूत्रचूर्णौ सर्वत्र अवभतिय स्थाने अवभद्रिय इति वर्त्तते ॥

उपलभत इत्यर्थः। अहवा दो वि पदा एगद्वा । विसिद्धिविसुद्धिविसेसदंसगो तरसदो त्ति, यथा शुक्लः शुक्लतर इति। किंच-जहा पगासगदब्बविसेसातो खेतविसुद्धि(द्वी) विसेसेषऽकिखज्जति तदा मणपञ्जवनाण-चरणविसेसातो रिजुमणपञ्जवणाणिसमी[जे० १९६ ग्र०] वातो चिपुलमणपञ्जवणाणी विसुद्धतराणं जाणति, मणपञ्जवनाणाव-रणवयोवसमुत्तमलंभत्तणतो वा वितिमिरतराणं ति भण्णति । अहवा पुब्बबद्धमणपञ्जवनाणावरणस्योवसमुत्तमलंभ-त्तणतो विसुद्धं ति भणितं तस्सेवाऽपरणवज्ञमाणस्सऽभावत्तणतो पुब्बबद्धस्य अणुदयत्तणतो वितिमिरतराणं-ति ५ भण्णति । अहवा दो वि एते एगट्टिया पदा । मणपञ्जवनाणस्स सेसं कंठं ॥ इदाणि केवलनाणं भण्णति, मण-पञ्जवनाणाणंतरं मुत्तकमुद्दित्तणतो विसुद्धिलाभुत्तमयो य केवलं भण्णति—

३३. से किं तं केवलणाणं ? केवलणाणं दुविहं पण्णतं, तं जहा-भवत्यकेवलणाणं च सिद्धकेवलणाणं च

३३. से किं तं केवलेत्यादि सूत्रम् । केवलनाणमभेदे विभेदो भव-सिद्धात्वत्थादिएहि अणेगत्वा इमो १० कञ्जिति-मणुस्सभवद्वितस्स जं केवलनाणं तं भवत्थकेवलनाणं । चसद्वी उस्साणं भेददंसणे । सब्बकम्मविष्पमुक्तो सिद्धो, तस्स जं णाणं तं सिद्धकेवलनाणं ॥

३४. से कि तं भवत्यकेवलणाणं ? भवत्यकेवलणाणं दुषिहं पण्णतं, तं जहा—सजो-  
गिभवत्यकेवलणाणं च अजोगिभवत्यकेवलनाणं च ।

३४. मणादितो जोगो, सो य जहासंभवतो, तेण सह जोगेण सजोगी, तस्स जे नाणं तं सजोगिभवत्थ- 15  
केवलणाणं । अजोगी—सञ्चजोगनिरुद्धो सइलेगभावद्वितो, तस्स जे णाणं तं अयोगिभवत्थकेवलनाणं ॥

३५. से किं तं सजोगिभवत्थकेवलणाणं ? सजोगिभवत्थकेवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-पद्मसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च अपद्मसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च, अहवा चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च । से तं सजोगिभवत्थकेवलणाणं ।

३६. से कि तं अजोगिभवत्थकेवलणाणं ? अजोगिभवत्थकेवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-पठमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च अपठमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च, अहवा चरिमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च अचरिमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च । से तं अजोगिभवत्थकेवलणाणं ।

३५-३६. पठमसमयो—केवलणाणुप्पत्तिसमयो चेव, अपठमो वितियादिसमयो—जाव सजोगित्तस्स चरमसम्- 25 एत्यर्थः । अहवा एसेवउत्थो समयविकल्पेण अणहा दंसिज्जति—सजोगिकालचरिमसमए चरिमो चि—षच्छिमो, ततो परं अयोगी भविष्यतीत्यर्थः । अचरिमो चि—चरिमो न भवति, चरिमस्स आदिसमयातो आरब्म ओमस्थगं जाव पठमसमयो ताव अचरमसमया भण्णन्ति, प्रतेसु जं णाणं तं अचरमसमयभवत्यकेवलनाणं । सेसं कंठं ॥

१ °विसुद्धिविसेसो लक्ष्मि° आ० दा० ॥ ३ °त्तरमयो आ० दा० ॥

३७. से तं कि सिद्धकेवलणाणं ? सिद्धकेवलणाणं दुविहं पण्ठं, तं जहा-अणंतरसिद्ध-  
केवलणाणं च परंपरसिद्धकेवलणाणं च ।

३७. से कि तं सिद्धकेवलनाणेत्यादि सूत्रम् । तत्थ सिद्धकेवलणाणं दुविहं-अणंतरं परंपरं । तत्थ अणंतरं  
णो समयंतरं परं, सिद्धत्वप्रथमसमयवर्तिन इत्यर्थः ॥

५ ३८. से कि तं अणंतरसिद्धकेवलणाणं ? अणंतरसिद्धकेवलणाणं पण्णरसविहं पण्ठं,  
तं जहा-तित्थसिद्धा १ अतित्थसिद्धा २ तित्थगरसिद्धा ३ अतित्थगरसिद्धा ४ सयंबुद्ध-  
सिद्धा ५ पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ बुद्धबोहियसिद्धा ७ इत्थलिंगसिद्धा ८ पुरिसलिंगसिद्धा ९  
णपुंसगलिंगसिद्धा १० सलिंगसिद्धा ११ अणलिंगसिद्धा १२ गिहलिंगसिद्धा १३ एगसिद्धा  
१४ अणेगसिद्धा १५ । से तं अणंतरसिद्धकेवलणाणं ।

१० ३८. ते पंचदसविधा तित्थसिद्धाऽथा । ‘तित्थसिद्धा’ इति जे तित्थे सिद्धा ते तित्थसिद्धा, तित्थं च-  
चातुरणो समणसंघो पदमादिगणधरा वा, भणितं च आरिसे—“तित्थं भंते ! तित्थं ? [जे० १९६ द्रि०] अरहादि तित्थं ?  
गोतमा ! अरहा ताव तित्थंकरे, तित्थं पुण चातुरणो समणसंघो” [भग. श. २० उ० ८ सू. ६८२] तम्मि  
तित्थकालभावे उप्यणे ततो वा तित्थकालभावातो जे सिद्धा ते तित्थसिद्धा १ । अतित्थं-चातुरणसंघस्स अभावो  
तित्थकालभावस्तु वा अभावो । तम्मि अतित्थकालभावे अतित्थकालभावातो वा जे सिद्धा ते अतित्थसिद्धा । तं च  
१५ अतित्थं तित्थंतरे तित्थे वा अणुप्यणे जहा मरुदेविसाभिषिष्यभितयो २ । रिसभादयो तित्थकरा, ते जम्हा तित्थकर-  
णामकम्मुदयभावे द्विता तित्थकरभावातो वा सिद्धा तम्हा ते तित्थकरसिद्धा ३ । अतित्थकरा सामणकेवलिणो  
गोतमादि, तम्मि अतित्थकरभावे द्विता अतित्थकरभावातो वा सिद्धा अतित्थकरसिद्धा ४ । स्वयमेव बुद्धा स्वयं-  
बुद्धा, सतं अप्यणिज्जं वा जाइसरणादि कारणं पद्मन बुद्धा सतंबुद्धा । स्फुटतरम्मुच्यते—वाशप्रत्ययमन्तरेण ये प्रतिबु-  
द्धास्ते स्वयंबुद्धा । ते य दुविहा-तित्थगरा तित्थगरवतिरिता वा । इह बडिरितेहि अधिकारो । किंच-स्वयंबुद्धस्स  
२० चारसविहो वि उवही भवति, पुञ्चाधीतं से सुतं भवति वा ण वा । जति से नत्थि तो लिंगं नियमा गुरुसण्णिहे  
पडिवज्जइ, गच्छे य विहरति । अह पुञ्चाधीतसुतसंभवो अतिथ तो से लिंगं देवता पयच्छति, गुरुसण्णिहे वा  
पडिवज्जति । जह य ऐगविहारविहरणजोग्यो, इच्छा व से तां एको चेव विहरति, अणहा गच्छे विहरतीत्यर्थः ।  
एतम्मि भावे द्विता सिद्धा एतातो वा भावातो सिद्धा सयंबुद्धसिद्धा ५ । ‘पत्तेयबुद्धा’ पत्तेयं-वाशं वृपभादि कारणम-  
भिसमीक्ष्य बुद्धाः प्रत्येकबुद्धाः । वहिःप्रत्ययप्रतिबुद्धानां च पत्तेयं नियमा विधारो जम्हा तम्हा य ते पत्तेयबुद्धा,  
२५ जहा करकंडुमादयो । किंच-पत्तेयबुद्धाणं जहणोण दुविहो उकोसेणं यवविधो उवही नियमा पाउरणवज्जो भवति ।  
किंच-पत्तेयबुद्धाणं पुञ्चाधीतं सुतं णियमा भवति, जहणोणं एकारसंगा, उकोसेणं भिण्डसपुञ्चा । लिंगं च से  
देवता पयच्छति, लिंगवज्जितो वा भवति । जतो [जे० १९७ प्र०] भणितं—“रूपं पत्तेयबुद्धा” [आव. गा. ११३९]  
इति । एतम्मि भावे एतातो वा सिद्धा पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ । बुद्धबोधिता-जे सतंबुद्धेहि तित्थकरादिष्हिं बोहिता,  
पत्तेयबुद्धेहि वा कविलादिष्हिं बोधिता ते बुद्धबोधिता । अहवा बुद्धबोधिष्हिं बोधिता बुद्धबोधिता, एवं सुहम्मा-  
३० दिष्हिं जंबुणामादयो भवति । अहवा बुद्ध इति-प्रतिबुद्धा, तेहि प्रतिबोधिता बुद्धबोधिता, प्रभवादिभिराचार्यैः ।

१ अप्पणा जे वा जाह्न आ० दा० ॥ २ णियमा गो० ॥ ३ ऐगविहारविहरणजोग्यो आ० ॥ ४ विहारः इत्यर्थः ॥

एतमावे द्विता एतातो वा सिद्धा बुद्धबोधितसिद्धा ७ । ‘सर्लिङ्गसिद्धा’ दब्बलिंगं मति रजोहरण-मुहूर्मोत्ति-यडिमाह-धारणं सर्लिंगं, एतम्मि दब्बलिंगे द्विता एतातो वा सिद्धा सर्लिङ्गसिद्धा ८ । ‘अणलिंगसिद्धा’ तावस-परिवाय-गादिवकल-कासायमादिदब्बलिंगद्विता सिद्धा अणलिंगसिद्धा ९ । एवं गिहिलिंगे वि-केसादिअलंकरणादिए दब्बलिंगे द्विता सिद्धा गिहिलिंगसिद्धा १० । इतिथलिंगं ति-इत्थीए लिंगं इतिथलिंगं, इत्थीए उवलकरणं ति बुज्जं भवति । तं तिविहं-वेदो सरीरनिवृत्ती षेवच्छं च, इह सरीरनिवृत्तीए अथिकारो, ण वेद-षेवच्छेहि । तत्थ वेदे ५ कारणं-जम्हा खीणवेदो जहणेणं अंतोमुहुत्तातो उक्तोसेण देशूणपुञ्चकोडीतो सिज्जाति, षेवच्छस्स य अणियत-त्तण्तो, तम्हा ण तेहि अहिकारो । सरीराकारणिवृत्ती युण णियमा वेदुदयातो णामकम्मुदयाओ य भवति तम्मि सरीरनिवृत्तिलिंगे द्विता सिद्धा तातो वा सिद्धा इतिथलिंगसिद्धा ११ । एवं पुरिस-णपुंसकलिंगा वि भाणितव्वा १२-१३ । एकसिद्धं चिः-एकम्मि समए एको चेव सिद्धो १४ । अणेगसिद्धं चिः-एकम्मि समए अणेगे सिद्धा, १० दुगादि जाव अद्वसतं ति । भाणितं च—

बत्तीसा अड्याला सट्टी बावत्तरी य बोधव्वा । चुलसीती छण्णउती दुरहित अद्वत्तरसतं च ॥१॥१५॥

[ बृहत्स. गा. ३३३ ]

चोदक आह-णणु एते पण्णरस भेदो छभेदद्विताअणोणनिरवेक्षा ण भवंति कहं पंचदसभेद ति पण्णता ? आचार्य आह-णणु तित्थाऽतित्थपुरिसवि । जे० १९७ द्वि० [भागुपणा-उणोणकालभेदतो वा दो भेदा परोप्प-रविरुद्धा १, तहा तित्थगरणामकम्मुदयातो अभावतो य दो भेदा परोप्परविरुद्धा २, तहा लिंगादिया दब्बलिंग-१५ पडिवत्तिभेदा परोप्परविरुद्धा ३, तहा मोहुत्तरपगदिवेदभेदोदयतो तिथमादिसरीरलिंगणिवृत्ती परोप्परविरुद्धा ४, एगा-उणेगा वि एककालसहचरिता-उचरितत्तणतो मिणा ५, सयंबुद्धादयो वि णाणावरणकखओवसमविसेसपडि-बोधविसेसत्तणतो प्रतिविसिद्धा ६, एवं तित्थादियाण अणोणलक्षणसभावद्विताणं पंचदस भेदा पण्णता, किंच-जहा मतिणाणे गैचादियाण चरिमपज्जवसाणाणं अणोणाणुवेभत्तणे वि भेदो इहं पि जह तहा तो को दोसो ?, किंच-नाणाणयाभिष्पायत्तणतो सुत्तस्स य अणेगाम-पज्जायत्तणतो अभिधाणभेदत्तणतो य पंचदसभेदकरणं ति ण २० दोसो ॥ इदाणि तं चेव सिद्धकेवलणाणं समतभेदतो अणेगथा विसेसिज्जति—

३९. से किं तं परंपरसिद्धकेवलणाणं ? परंपरसिद्धकेवलणाणं अणेगविहं पण्णतं, तं जहा-अपदमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाव दससमयसिद्धा संखेज्जसमयसिद्धा असंखेज्जसमयसिद्धा अणंतसमयसिद्धा, से तं परंपरसिद्धकेवलणाणं । से तं सिद्धकेवलणाणं ।

३९. पढमसमयसिद्धसस जो वितियसमयसिद्धो सो परो, तस्स वि य अणो, एवं परंपरसिद्धकेवलणाणं भाणितव्वं । तं च ‘अपदमसमय’ इत्यादि । नास्य प्रथमः समयो विद्यत इत्यपथमः, द्वितीयसमयसिद्ध इत्यर्थः, स च परंपरसिद्धविसेसणस्स प्रथमः, तस्स परतो वितियादिसमया भाणितव्वा ॥

१ भेदा विभेदं आ० दा० । अत्रदमवेयम्-थ्रीमद्विर्द्विरिभद्रपादैः . मल्यभिरिचरणेष्व स्वस्ववृत्तौ तीर्थसिद्धा-उतीर्थसिद्धरूपभेदयान्तः पश्चदशभेदान्तर्भावे सद्गृह्येव चालमा-प्रत्यवस्थाने उपन्यस्ते स्तः तदनुसारी पाठभेदोऽपि शूच्यर्ददर्शेषु दद्यते । किंच-चूर्णी-सत्क्षणाचीनतमे आदर्शे षडभेदान्तः पश्चदशभेदान्तर्भाववेदकः छब्दभेदद्विता० इत्यादिः पाठो वरीकृत्यते, आचार्यप्रतिविधानमपि षडिवमाग-वेदकमेव विद्यते इत्यसमाभिः छब्दभेदद्विता० इति पाठ एव मूले आदतोऽस्ति । अत्रार्थं तद्विद एव प्रमाणमिति ॥ २ गत्यादिकानां चरमपर्यवसानानाम् “गइ इदिए य०” तथा “भासग परित्त०” इति आशद्यकनियुक्तिगमथा १४-१५ निर्दिष्टानां द्वाराणाम् इत्यर्थः ॥ ३ ‘णुवेक्षताण वि आ० दा० ॥ ४-५-६-७ “सिद्धकेवलणाणं ल० ॥ ८ ‘समयो तम्मि सिद्धो आ० दा०॥

४०. तं समासओ चउब्बिहं पण्णत्तं, तं जहा-देव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ ।  
तैत्थ देव्वओ णं केवलणाणी सब्बदव्वैइं जाणइ पासइ । खेत्तओ णं केवलणाणी  
सब्बं खेत्तं जाणइ पासइ । कालओ णं केवलणाणी सब्बं कालं जाणइ पासइ ।  
भावओ णं केवलणाणी संब्बे भावे जाणइ पासइ ।

५ ४०. तै दब्बं दि यदुविधिं दृष्टादियं । 'सब्बदब्ब' ति धम्मा-ऽधम्मा-ऽग्रासातयो, तेहिंतो जीवदब्बा  
अणंतरणा, तेहिंतो वि पुण्यलदब्बा अणंतरणा, एते सब्बे सरूपतो जाणति । खेत्तं पि लोगा-ऽलोगभेदभिष्णम-  
णंतं सरूपतो जाणति । कालं पि समया-ऽऽवलियादियं तीयमणागतसब्बदं वा सरूपतो सब्बं जाणति । भावा  
वि दुविधा भावा—जीवभावा अजीवभावा य । तत्थ जीवभावा कम्मुदयसततपरिणामितलक्खणा गति-कसाया-  
दिया कम्मुदयलक्खणा अणेगविधा, उत्तरसम[ जे० १९८ प्र० ]-खय-खयोवसमनीयसततलक्खणा अणेगविधा,  
१० पारिणामिता य जीव-भव्वा-ऽभव्वत्तादिया, अजीवाऽमुन्तदब्बेसु धम्मा-ऽधम्मा-ऽग्रासा गति-ट्रिति-अवगाहलक्खणा,  
अगुरुलहुगा य अणंता, पुण्यलदब्बा य सुहुम-बादर-विस्मयसापरिणता अब्बिदधणुमादिया अणेगविधा । परमाणु-  
मादीण य वण्णादिपञ्चवा एगादिया अणंता । एते दृष्टादिया सब्बे सब्बधा सब्बत्थ सब्बकालं उत्त्रयुक्तो सागारा-  
ऽणाग्रासलक्खणेहिं णाण-दंसणेहिं जाणति पासति य । एत्थ केवलणाण-दंसणोवयोगेहिं बहुधा समयसब्बभावं  
आयबुद्धीए पक्ष्येता इमं भणंति—

१५ केयी भणंति जुगबं जाणइ पासति य केवली नियमा ।  
अणो एगंतरियं इच्छेति सुतोवदेसेणं ॥ १ ॥  
अणो ण चेव वीसुं दंसणमिच्छेति जिणवार्दिस्स ।  
जं चिय केवलनाणं तं चिय से दंसणं चेति ॥ २ ॥ [ विशेषण. गा. १५३-५४ ]

तत्थ जे ते भणंति 'जुगनं जाणति पासति य' ते इमं उत्तरति उत्तरिसंति—

२० जं केवलाहं सादी-अपज्ञवसिताहं दो वि भणिताहं ।  
तो चेति केह जुगबं जाणति पासति य सब्बण्णू ॥ ३ ॥

किंच—

२५ इहरा-ऽयी-णिहणत्तं मिच्छाऽऽवरणक्षवयो स्ति व जिणस्स ।  
इतरेतरावरणया अहवा णिक्कारणावरणं ॥ ४ ॥  
तह य असब्बण्णुत्तं असब्बदरिसित्तणप्पसंगो य ।  
एगंतरोवयोगे जिणस्स दोसा बहुविधीता ॥ ५ ॥ [ विशेषण. गा. १९३-१९५ ]

एवं परेण बहुधा भणिते आगमवादी उत्तरं इमं आह—

भणंति, भिण्णमुक्त्तोवयोगकाले वि तो तिनाणिस्स ।  
मिच्छा त्रावद्वी सागरोवमाहं खयोवसमो ॥ ६ ॥ [ विशेषण. गा. २०२ ]

१ दृष्टव्वो ४ । दृष्टव्वो ल० ॥ २ तत्थ इति ख० सं० ल० श० नासि ॥ ३ 'वाति जा' श० ॥ ४ खब्बमावे  
ख० ॥ ५ 'णु-कुभणुगादीण आ० दा० ॥

जहा उत्तमत्यस्स मति-सुता-उवधिणाणेसु अंतमुहुत्तकालोवयोगसंभवे उवयोगा-उणुवयोगेष य छावडिसागरा से ठितिकालो दिष्टो, तहा जति जिणस्स णाण-दंसणा सादिअपज्जवसाणा उवयोगा-उणुवयोगेष भवन्ति तो को दोसो ? । जति एतं ते णाणुमतं तो इमं ते कहे अणुमतं भविस्सइ ?—

अह ण वि एतं तो सुण, जहेव खीणंतराइओ अरहा ।

संते वि अंतरायकखयम्मि पंचप्पगारम्मि ॥ ७ ॥

सततं ण देइ [ जे० १९८ दि० ] लभइ व भुंजइ उवभुंजई य सब्बण् ।

कम्मि देह लभइ व भुंजइ व तहेव इहयं पि ॥ ८ ॥

5

किंच—

दिंतस्स लभंतस्स व भुंजंतस्स व जिणस्स एस गुणो ।

खीणंतराइयन्ते जं से विग्रं ण संभवति ॥ ९ ॥

10

उवउत्तस्सेमेव य णाणम्मि व दंसणम्मि व जिणस्स ।

खीणावरणगुणोऽथं, जं कसिणं मुणइ पासति वा ॥ १० ॥ [ विशेषण. गा. २०३-६ ]

एणो पर आह—

पासंतो वि न जाणइ, जाणं व ण पासती जति जिर्णिदो ।

एवं ण कदाइ वि सो सब्बण् सब्बदरिसी य ॥ ११ ॥

15

उत्तरं आचार्य आह—

जुगवमजाणंतो वि हु चतुर्हि वि नाणेहि जह चतुण्णाणी ।

भण्णइ, तहेव अरहा सब्बण् सब्बदरिसी य ॥ १२ ॥

पर एवाऽह—

तुल्ये उभयावरणकखयम्मि ऐवयरमुवभवो कस्स ।

दुवियुवयोगाभावे जिणस्स जुगवं ? ति लोदेति ॥ १३ ॥

20

उत्तरं आचार्य आह—

भण्णति, ण एस नियमो जुगवुप्पणेसु जुगवमेवेह ।

होयन्वं उवभोगेण, एत्थ सुण ताव दिष्टंतं ॥ १४ ॥

जह जुगवुप्पत्तीय वि सुसे सम्मता-मति-सुतादीणं ।

णत्य जुगवोवयोगो सव्वेसु तहेव केवलिणो ॥ १५ ॥

25

किंच—

भण्णितं पि य पण्णती-पण्णवादीसु जह जिणो समयं ।

जं जाणती ण पासति तं अणुरतण्णप्पभादीणि ॥ १६ ॥ [ विशेषण. गा. २१५-२० ]

१ पुल्वं समुद्रभवो आ० दा० ॥

जे भण्टि केवलणाण-दंसणाण एगात्तं ते इमं हेतुजुत्ति भण्टि—

जह किर खीणावरणे देसन्नाणाण संभवो ण जिषे ।

उभयावरणातीते तह केवलदंसणस्सावि ॥ १७ ॥

एस ते हेतुजुत्ती जहा अथसाथणं ण संसइइ तहा उत्तर(र) हेतुजुत्तीए चेव भण्टि—

देसणाणोवरमे जह केवलनाणसंभवो भणितो ।

देसदंसणविगमे तह केवलदंसणं होतु ॥ १८ ॥

अह देसनाण-दंसणविगमे तव केवलं मतं नाणं ।

ण मतं केवलदंसणमिच्छामेसं णणु तवेदं ॥ १९ ॥ [ विशेषण. गा. १९५-१९७ ]

किंच—

भण्णनि जहोहिणाणी जाणति पासति य भासितं सुत्ते ।

ण य णाम ओहिदंसण-नाणेगत्तं तह इमं पि ॥ २० ॥ [ विशेषण. गा. १७८ ]

एवं पराभिष्याये पडिसिद्धे एगंतरोवयोगता सिद्धा तह चिमं भण्टि—

जह पासतु तह पासतु, पासति सो जेण दंसणं तं से ।

जाणइ य जेण अरहा तं से णाणं ति घेत्ताच्च ॥ २१ ॥ [ विशेषण. गा. १९२ ]

१५

किंच-सिद्धशिकारे एगंतरो[जे० १९९ प्र०] वयोगदंसिगा इमा फुडा गाहा—

नाणमिमि दंसणमिमि य एत्तो एगतरयमिमि उचउत्ता ।

सब्बस्स केवलिस्सा जुगचं दो णस्त्यु उवयोगा ॥ २२ ॥ [ विशेषण. गा. २२९ ]

किंच भगवतीए—

उवयोगो एगतरो पणुबीसतिमे सते सिणायस्स ।

२०

भणितो विगडत्थो चिय छहुडेसे विसेसेतुं ॥ २३ ॥ [ विशेषण. गा. २३२ ]

किंच—

कस्स व णणुमतमिणं जिणस्स जति होज दो यि उवयोगा ।

णूणं ण होनि जुगचं जनो णिसिद्धा सुते बहुसो ॥ २४ ॥ [ विशेषण. गा. २४६ ]

४१. अह सब्बदब्बपरिणामभावविण्णत्तिकारणमण्टं ।

२५

सासयमप्पडिवाती एगविहं केवलं णाणं ॥ ५४ ॥

केवलणाणेणत्थे णाउं जे तत्थ एण्णवणजोग्गे ।

ते भासइ तिथयरो, वैइजोग तयं हैवइ सेसं ॥ ५५ ॥

से तं केवलणाणं । से<sup>३</sup> तं पचकखणाणं ।

१ वैइजोग सुयं हैवइ तेसि इत्यथं पाठः वृत्तिकृद्धर्थां पाठान्तरविन निदिष्टोऽस्ति । तथाहि—“अन्ये त्वेवं पठन्ति—‘वैइजोग सुयं हैवइ तेसि’ स वामयोगः श्रुतं भवति ‘तेषां’ श्रोतृणाम् ।” इति हारिं बृत्ती । “अन्ये त्वेवं पठन्ति—‘वैइजोग सुयं हैवइ तेसि’ तत्रायमर्थः—‘तेषां’ श्रोतृणां भावश्रुतकारणत्वात् स वामयोगः श्रुतं भवति, श्रुतमिति व्यवहृथते इत्यर्थः ।” इति मल्यगिरयः ॥ २ अद्ये शु० ॥ ३ अन्नैच्छृणि-वृत्तिकृतां से तं पचकखं इत्येव पाठः सम्पतः । नोपलब्धोऽयं कस्याचिदपि प्रतौ ॥

४१. अह सच्चदन्वः गाहा । केवलनाणेणः गाहा । एताओ जहा पेहियाए ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ सेसं  
कठं ॥ इदाणि कमागतं बहुवच्चवं पारोक्खं भण्णति —

४२. से' कि तं परोक्खणाणं ? परोक्खणाणं दुविहं पण्णतं, तं जहा-आभिणिवोहि-  
यणाणपरोक्खं च सुयणाणपरोक्खं च ।

४३. अबस्स इंदियमणा परा, तेसु जं णाणं तं परोक्खं । मति-श्रुते परोक्खमात्मनः, परनिमित्ततात्, ५  
अनुभानवत् । णणु सुते इंदियपञ्चक्षं भण्णतं ? उच्यते — सच्चमिणं, एत्थं जं इंदियमणेहिं वहिलिगपञ्चयमुप्पज्जति  
तमेगंतेषेव इंदियाण अत्तणो य परोक्खं, अणुमाणत्तणतो, धूमाओ अभिणाणं च । जं षुण सक्खा इंदियमणो-  
निमित्तं तं तेसि चेव पञ्चक्षं, अलिंगत्तणतो, अत्तणो अवधिमादि व्व, अत्तणो तु तं एगंतेषेव परोक्खं । इंदियाणं  
पि तं संववहारतो यञ्चक्षं, ण परमत्थतो । कम्हा ? जम्हा दर्भिदिया अचेतणा इति । तं दुविहं — मतिणाणं  
सुतनाणं च । इद मति-सुताणमुत्तणासक्मे कारणं पुञ्चुतं दद्वच्चं ॥ मति-सुताण य अभेदसाभिणिरूपणत्थं इमं सुतं— १०

४४. जत्थाऽभिणिवोहियणाणं तत्थ सुयणाणं, जत्थ सुयणाणं तत्थाऽभिणिवोहिय-  
णाणं । दो वि एयाइं अण्णमण्णमणुगयाइं तह वि पुण एत्थाऽयस्त्रिया णाणतं पैण्णवेति—  
अभिणिबुज्ज्ञाइ त्ति आभिणिवोहियं, सुणतीति सुतं ।

“ मतिपुञ्चयं सुयं, ण मती सुयपुञ्चिया । ”

४५. जत्थ मतिनाणेत्यादि । ‘जत्थ’ त्ति पुरिसे जत्थ व इंदिय-नोइंदियख्योवसमे मतिणाणमत्थि १५  
तत्थेव सुतनाणं पि । अहवा जत्थाभिनिवोहियसरूपं तत्थेव सुतं पि नियमा, अणोण्णाणुगता भवते । आह—  
मति-सुताणं अणोण्णाणुगत्तणतो सामि-काल-कारण[ जे० १९९ दि० ]-ख्योवसमतुलुत्तणतो य एगतं पावति,  
णो दुगपस्तिक्षणं पि, अत्रोन्यते, मति-सुताणं अणोण्णाणुगताण वि आयस्त्रिया भेदमाह दिद्वंतसामत्थतो, जहा  
आगासपइट्टिताणं थम्मा-उधम्माण अणोण्णाणुगताणं लक्खणभेदा भेदो दिद्वो तहा मति-सुताण वि सामि-काला-  
दिअभेदे वि भेदो भण्णति— अभिणिबुज्ज्ञतीत्यादि । एवं लक्खणो-उभिधाणभेदा भेदो तेसि । अहवा इमो २०  
मति-सुतविसेसो—“ मतिपुञ्चयं सुतं, ण मती सुतपुञ्चिया ” इति, जतो सुतस्स मतिरेव पुञ्चं कारणं । कहं ?  
उच्यते—मतीए सुतं पाविज्जति, ण मतिमंतरेण प्रापयितुं शक्यते, गद्वितं च मतीए पालिज्जति, परिवत्तयतो णो  
पणस्सइ त्ति” जतो, मतिरेव सुतपुञ्चा ण भवति । णणु सुतं पि सोतुं मती भवति ? उच्यते—तं दव्वसुतं, न  
मावश्चुतादित्यर्थः । अहवा मति-सुताण भेदकतो विसेसो, मतिणाणं अद्वावीसइभेदभिण्णं, सुतणाणं पुण अंगा-१

१ चूर्ण-वृत्तिक्तां से कि तं परोक्खं ? परोक्खं दुविहं इति पाठेऽथ सम्मतः परोक्षज्ञानोपसंहारेऽपि तः से लं परोक्खं  
स्त्वयेव पाठः स्वीकृतोऽस्ति; किंव सर्वेषामि रुत्रादर्थोपु उभयत्रापि परोक्खणाणं इत्येव पाठ उपलभ्यते ॥ २ चूर्ण-वृत्तिकृद्धिः किल जत्थ  
मतिनाणं तत्थ सुतनाणं, जत्थ सुतनाणं तत्थ मतिनाणं इतिरूपं सूत्रं भौलभावेनाङ्गीकृतमस्ति । किंव-श्रीचूर्णिरुद्वादिभिः  
भौलभावेनाङ्गीकृतमेदद जत्थ मतिनाणं इत्यादि सूत्रं माघतनिष्ठादर्थोपु नोपलभ्यते । अपि च चूर्णवलोकनेनेतदपि ज्ञायते यत् चूर्ण-  
कृत्समयभाविष्यादर्थोपु पाठमेदयुगलभप्यासीदिति ॥ ३ तत्थ आभि० ख० स० ॥ ४ इत्थ आय० मो० सु० ॥ ५ पण्णवंति श० ।  
पण्णविंश्चिं ठ० ल० । पण्णवयंति मो० सु० ॥ ६ अभिणिवोज्ज्ञतीति ख० । अभिणिबुज्ज्ञतीति स० श० । अभिणिबुज्ज्ञईइ  
ल० ॥ ७ °हियं णाणं, सु० ख० ल० विना ॥ ८ सुणेइ त्ति मो० सु० ॥ ९ °पुञ्चं जेण सुयं ख० डे० । चूर्णौ वृत्योश्च जेण  
इति पदं नास्ति । पुञ्चं सुयं ख० डे० विना ॥ १० °ण-विधाणं दा० ॥ ११ सि, जतो मतिमेव सुतं पवण्णो भवति आ० ॥

णगाइभेदभिणं अणेगहा । अहवा मति-सुताणे इंदियोवलदिविभागतो भेदो इमो-सोतिंदियोवलद्वी ॥ गाहा [ विशेषा. गा. १२२ ] पूर्ववद् व्याख्येया । अहवा मति-सुतभेदं भण्टति—तुल्दीदिद्वे ॥ गाहा ॥ [ विशेषा. गा. १२८ ] एतीए गाहाए अत्थो मति-सुतविसेसो य जहा विसेसावस्तगे तहा भाणितव्वो । अणे वागसमं मतिणाणं सुंवसमं च सुतणाणं भण्टति तं च ण घडति, जम्हा वाग-मुंबदिद्वंतेण मङ्नाणसेव सुतं परिणामो दंसिजति, तेम्हा तं पा ५ जुजते इत्यर्थः । अहवाणो मतिसुतभेदो—अक्खराणुगतं सुतं, अणक्खरं मतिनाणं ति । अहवाऽत्मप्रत्यायकं मतिणाणं, स्व-प्रपत्यायकं सुतनाणं । अहवा मति-सुताण आत्मभेदातो [ जे० २०० ग्र० ] भेदो दिद्वे । तक्खतो-वसमविसेसातो चेव मति-सुताण भेदो भवति ॥ भणितो मति-सुतविसेसो । इदाणि जहा मति-सुतणाणाण कज्ज-कारणभेदेहि भेदो दिद्वे तहा मतीए सुतस्त य सम्म-मिळ्ठविसेसो दंसणपरिग्रहातो भवइ त्ति अतो सुतं भणति—

**४४. अविसेसिया मती मतिणाणं च मतिअणाणं च । विसेसियौ मती सम्महिद्विस्स १० मती मतिणाणं, मिळ्ठादिद्विस्स मती मतिअणाणं । अविसेसियं सुयं सुयणाणं च सुय-अणाणं च । विसेसियं सुयं सम्महिद्विस्स सुयं सुयणाणं, मिळ्ठहिद्विस्स सुयं सुयअणाणं ।**

४४. अविसेसिता मतीत्यादि । सामिणा अविसेसिता मती इमं वत्तव्वा—आभिणिवोधिकेत्यादि । चसदो समुच्चये । विसेसिता मतीत्यादि । जता पुण इमेण सामिणा विसेसिता मती भवति तदा इमं वत्तव्वा—सम्महिद्विस्स मतीत्यादि सूत्रसिद्धं । अविसेसितं सुतमित्यादि एतं वि उक्तज्ञितुं एवं चेव वत्तव्वं । अहवा जाव १५ विसेसणेण अविसेसिता मती ताव मती चेव वत्तव्वा । सचेव मती णाण-उणाणसदविसेसणातो इमं वत्तव्वा—आभिनिवोधिकेत्यादि सूत्रसिद्धं । णाण-उणाणसदविसेसणं कहं? भण्टति—सम्मत-मिळ्ठमामिगुणत्तणतो सम्महिद्विस्स मतीत्यादि सुत्तसिद्धं । युते वि एवं चेव वत्तव्वं । पर आह—तुल्खयोवसमत्तणतो घडाइवत्थूण य सम्मयरिच्छेदत्तणतो सदादिविसयाण य समुच्चलंभातो कहं मिळ्ठहिद्विस्स मति-सुता अणाणं ति भणिता? उच्यते—

सदसदविसेसणातो भवदेतु जतिन्डितोदलंभातो । नाणफलाभावातो भिळ्ठहिद्विस्स अणाणं ॥१॥

२० मतिपुञ्चं सुतं ति कातुं मतिणाणं चेव पुञ्चं भणामि—

**४५. से किं तं आभिणिवोहियणाणं? आभिणिवोहियणाणं दुविहं पण्णतं, तं जहा—सुयणिस्मियं च असुयणिस्मियं च ।**

४५. से किं तं आभिनिवोधिकेत्यादि युतं । तत्थ ‘सुतनिस्तिं’ ति सुतं ति-सुतं, तं च सामादियादि बिदुसारपञ्चवसाणं । एतं दव्वसुतं गहितं । तं अणुसरतो जं मतिणाणयुग्मज्जति तं सुतणिस्ताए उणाणं ति सुतातो २५ वा णिसुतं तं सुतणिस्तिं भण्टति । तं च उग्हाइहा-उच्चाय-धारणाठितं चतुब्भेदं । ‘अस्मुतनिस्तिं च’ त्ति जं पुण दव्व-भावसुतणिरचेक्खं आभिणिवोधिकमुपज्जति तं असुयभावातो समुप्पणं ति असुतनिस्तिं भण्टति । तं च उण्णतियादिबुद्धिचउक्तं ॥ इमं—

१ जम्हा जे० दा० ॥ २ ‘विसेसादंसण’ आ० दा० ॥ ३ अयं मूळे स्थापितः सूत्रपाठः सं० मो० विशेषावदथकमलधारीयबृत्ती १९५ पत्र नन्दीसूत्रपाठोदरणे उपलब्धते । श्रीहरिभद्रसूरिणापि स्वबृत्तावेयमेव सूत्रपाठो व्याख्यालोऽस्ति । विसेसिया सम्महिद्विस्स मती मतिणाणं, मिळ्ठादिद्विस्स मती मतिअणाणं । एवं अविसेसियं सुयं सुयणाणं च सुयअणाणं च । विसेसियं सम्महिद्विस्स सुयं सुयणाणं, मिळ्ठहिद्विस्स सुयं सुयअणाणं । जे० दे० ल० शु० । अयमेव सूत्रपाठः श्रीभता मलय-मिरिणा स्वीकृतो व्याख्यातश्चाप्यस्ति । विसेसिया मती सम्महिद्विस्स मतिणाणं, मिळ्ठहिद्विस्स मतिअणाणं । अविसेसियं सुयं सुयणाणं सुयअणाणं च । विसेसियं सुयं सम्महिद्विस्स सुयणाणं, मिळ्ठहिद्विस्स सुयअणाणं । खं० ॥

४६. से कि तं असुयणिसियं ? असुयणिसियं चउविहं पण्ठं, तं जहा—

उप्तिया १ वेणिया २ कम्मया ३ पारिणामिया ४ ।

बुद्धी चउविहा बुत्ता पंचमा नोबलब्भइ ॥ ५६ ॥

पुब्वं अदिङ्गमसुयमवैइयतक्षणविसुद्धगहियत्था ।

अव्वाहयफलजोगा बुद्धी उप्तिया णाम ॥ ५७ ॥

भरहसिल १ पणिय २ रुक्खे ३ खुङ्ग ४ पड ५ सरड ६ काय ७ उच्चारे ८ ।

गय ९ घयण १० गोल ११ खंभे १२

खुङ्ग १३ मणि १४ त्थि १५ पंति १६ पुत्ते १७ ॥ ५८ ॥

भरह सिल १ मिंद २ कुँकुड ३ वालुय ४ हत्थी ५ [य] अगड ६ बणसंडे ७ ।

पौयस ८ अइया ९ पत्ते १० खाडहिला ११ पंच पियरे १२ य ॥ ५९ ॥

महुसित्थ १८ मुहि १९ यंके २० य णाणए २१ भिक्खु २२ चेडगणिहाणे २३ ।

सिक्खा २४ य अथसत्थे २५ इच्छा य महं २६ सतसहस्रे २७ ॥ ६० ॥ १ ।

भरणित्थरणसमत्था तिवग्गसुत्तत्थगहियपेयाला ।

उभयोलोगफलवती विणयसमुत्था हवति बुद्धी ॥ ६१ ॥

णिमित्ते १ अथसत्थे २ य लेहे ३ गणिए ४ य कूव ५ अस्से ६ य ।

गद्भ ७ लक्खण ८ गंठी ९ अंगए १० रहिए य गणिया य ११ ॥ ६२ ॥

सीया साडी दीहं च तणं अवसव्यं च कुंचस्स १२ ।

निवोदरै १३ य गोणे घोडग पडणं च रुक्खाओ १४ ॥ ६३ ॥ २ ।

उवओगदिङ्गसारा कम्मयसंगपरिघोलणविसाला ।

साहुकारफलवती कम्मसमुत्था हवति बुद्धी ॥ ६४ ॥

हेरणिए १ करिसए २ कोलिय ३ डोए ४ य मुत्ति ५ घय ६ पवए ७ ।

तुण्णग ८ चड्हती ९ पूतिए १० य घड ११ चित्तकारे १२ य ॥ ६५ ॥ ३ ।

१ वेणयिया खं० शु० । वेणतिया चं० ॥ २ ५८-५९ गाथे खं० शु० डे० ल० प्रतिषु पूर्वाग्रव्यत्यासेन वर्तते ॥  
३ गंडग खं० ॥ ४ पय ल० ॥ ५ कुकड ६ तिल ७ वालुय ८ हत्थि ९ अगड १० इतिलः सूत्रशाठः सूर्वस्तिष्ठ-  
प्रभ्यते । आवश्यकनिर्युक्त्यादावपीत्यम्भूत एव पाठ उपलभ्यते, तथेव चक्रं सर्वैरपि चूर्ण-चृत्तिकृदादिभिः व्याख्यातोऽस्ति । किञाच-  
एतत्सूत्रचूर्णयादिवव्याख्याताद् मलयगिरिपादवृत्त्युत्त्युत्त्यारी पाठी मूले आहोऽस्ति ॥ ६ पाथस ८ पत्ते ९ अहया १० इति  
पाठानुसारेण मलयगिरिपाद व्याख्यातमस्ति, न चोपलभ्यतेऽयं पाठः कुत्रायादर्थं ॥ ७ २० पणिप २१ भिक्खु २२ य चेडग  
प्रथन्तरे ॥ ८ आसे ल० ॥ ९ अगय १० गणिया य रद्धिप य ११ सर्वस्तिष्ठि सूत्रप्रतिषु । आवश्यकनिर्युक्त्यादौ तद्वृत्त्यादौ च  
मूलगत एव पाठ उपलभ्यते ॥ १० निवोदपण १३ गोणे शु० ॥ ११ डोबे मो० सु० ॥

अणुमाण-हेउ-दिङ्गंतसाहिया वयविवेगपरिणामा ।  
 हिय-णीसेसफलवती बुद्धी परिणामिया णाम ॥ ६६ ॥

अभए १ सेद्धि २ कुमारे ३ देवी (?वे) ४ उदिओदए हवति राया ५ ।  
 साहू य णंदिसेणे ६ धणदत्ते ७ साव(?वि)ग ८ अमचे ९ ॥ ६७ ॥

खैमए १० अमचपुत्ते ११ चाणके १२ चेव थूलभद्रे १३ य ।  
 णासिकसुंदरीनंदे १४ वडरे १५ परिणामिया बुद्धी ॥ ६८ ॥

चलणाहण १६ आमंडे १७ मणी १८ य सप्पे १९ य खण्डि २० थूमि २१ दे २२ ।  
 परिणामियबुद्धीए एवमादी उदाहरणा ॥ ६९ ॥ ४ ।

से तं असुयनिस्सियं ।

४६. पुञ्चं० गाहा । [भरहसिल० गाहा]। भरह० गाहा । मधु० गाहा ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥  
 उप्पचिया गता १ । इमा वेणतिया—

भरणि० गाहा । निमित्ते० गाहा । सीता० गाहा ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ विण[जे० २०० द्वि०]यस-  
 मुत्था गता २ । इमा कम्मइया—

उवओग० गाहा । हेरणि० गाहा ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ कम्मइया गता ३ । इमा पारिणामिया—

४५ अणु० गाहा । अभए० गाहा । खैमए० गाहा । चलणा० गाहा । एताओ सब्बाओ जहा पमोकरे (आव० नि० गा०  
 १३८-११) तहा द्वद्वाओ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ४ । इदाणि सुतणिस्सितं उम्महाइयं सवित्थरं भण्णति—

४७. से किं तं सुयणिस्सियं मतिणाणं ? सुयणिस्सियं मतिणाणं चउविवहं पण्णत्तं,  
 तं जहा-उग्गहे १ ईहा २ अवाए ३ धारणा ४ ।

४७. इह सामण्णस्स रुद्धादिअत्थस्स य विसेसनिरवेक्खस्स अणिइसस्स अवग्रहणमवग्रहः । तस्सेवऽत्थस्स  
 २० विचारणैविसेसणेसणमीहा । तस्स विसेसणविसिद्धस्सऽत्थस्सं व्यवसातोऽवायः, तविसेसावर्गतमित्यर्थः । तविसेसाकागतऽत्थस्स धरणं-अविजुती धारणा इत्यर्थः ॥ तथ—

४८. से किं तं उग्गहे ? उग्गहे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-अत्थोग्गहे य वंजणोग्गहे य ।

४८. ओग्गहो दुविहो—अत्थोग्गहो वंजणओग्गहो य ॥ एत्थ वंजणोग्गहस्स पच्छाणुपुवितो ‘अत्थोग्गहातो चा पुञ्चं वंजणओग्गहो भवइ’ त्ति वंजणोग्गहेव पुञ्चं भणामि—

१ °विवक्षपरि° खं० सं० दे० ल० शु० ॥ २ °णिसेसौ° शु० मो० सु० ॥ ३ खबरो मो० ॥ ४ °णामबुद्धीए ल० सु० ॥  
 ५ रुद्धादिअसेसविसेसनिर° आ० दा० । श्रीमलयगिरिपादेस्तु आवश्यकवृत्तौ नन्दिवृत्तौ वार्यं चूर्णिपाठ एवंलग उद्दृतोऽस्ति—  
 “यदाह चूर्णिकृत्—“सामग्रस्स रुद्धादिविसेसणरहियस्स अनिइसस्स अवग्रहणमवग्रह” इति ।” [ आय० दीक्षा पत्र २२-२ नन्दिवृत्ति  
 पत्र १६८-१ ] ॥ ६ °णविसेसेणेहणमीहा आ० दा० ॥ ७ °स्स अवसातो आ० दा० ॥ ८ °गम इत्यर्थः ।  
 तविसेसावर्गमस्स धरणं आ० दा० ॥

४९. से किं तं वंजणोग्गहे ? वंजणोग्गहे चउन्निहे पण्ठते, तं जहा—सोर्तिदियवंजणोग्गहे १ घाणेदियवंजणोग्गहे २ जिब्भिदियवंजणोग्गहे ३ फासेदियवंजणोग्गहे ४ । से तं वंजणोग्गहे ।

५०. वंजणाणं अवग्गहो वंजणाकम्माहो, एत्थ वंजणग्गहणेण सदाइपरिणता दब्बा वेत्तव्वा । वंजणे अवग्गहो वंजणाकग्गहो, एत्थ वंजणग्गहणेण दर्शिदियं वेत्तव्वं । एतेसि दोऽह वि समासाणं इमो अत्थो—जेण करणभूतेण ५ अत्थो वंजिज्जइ तं वंजणं, जहा पदीवेण घडो । एवं सदादिपरिणतेहि दृष्टेहि उवकरणिदियपत्तेहि चित्तेहि संबद्धेहि संपसत्तेहि जम्हा अत्थो वंजिज्जइ त्ति तम्हा ते दब्बा वंजणाकग्गहो भण्णति । एस वंजणाकग्गहो सुच्चसिद्धो चतुर्विहो ॥

५०. [१] से किं तं अत्थोग्गहे ? अत्थोग्गहे छविहे पण्ठते, तं जहा—सोइंदिय-अत्थोग्गहे १ चैक्षिखदियअत्थोग्गहे २ घाणिदियअत्थोग्गहे ३ जिब्भिदियअत्थोग्गहे ४ फासिदियअत्थोग्गहे ५ णोइंदियअत्थोग्गहे ६ । [२] तस्स णं इमे एगद्विया णाणा-<sup>१०</sup> घोसा णाणावंजणा पंच णामधेया भवंति, तं जहा—ओगिण्हणया १ उवधारणया २ सवणता ३ अवलंबणता ४ मेहा ५ । से तं उग्गहे ।

५०. [१] से किं तं अत्थोग्गहेत्यादि सूत्रम् । अत्थसस ओग्गहोः अत्थोग्गहो । सो य वंजणाकग्गहातो चरिमसमयाणंतरं एकसमयं अंविसिद्धिदियविस्तयं गेष्ठतो अत्थाकग्गहो भवति । चैक्षिखदियस्स मणसो य वंजणाभावे पढमं चेव जं अविसिद्धमत्थग्गहणं कालयो एगसमयं सो अत्थोग्गहो माणितव्वो । सव्वो वेस विभागेण छविहो १५ दंसिज्जति, ण गुण तस्सोग्गहस्स काले सदादिविसेसबुद्धी अत्थि । णोइंदियो त्ति—मणो । सो य दब्बमणो भावमणो य । तत्थ मणपञ्जत्तिणामकम्मुदयातो जीग्गे मणोदब्बे घेत्तुं मणजोग्ग(?)ग)परिणामिता दब्बा दब्बमणो भण्णति । जीवो गुण मणपरिणामक्रियावणो भावमणो । एस उभयरूपो मणदब्बालंबणो जीवस्स नाणवावारो भावमणो भण्णति । तस्स जो उवकरणिदियदुवारनिरवेक्षो घडाइअत्थसरूपर्चितणपरो बोधो उप्पज्जति सो णोइंदिय-त्थाकग्गहो भवति ।

[२] घोस त्ति—उद्भादिया सरविसेसा [जे० २०१ ग्र०] घोसा भण्णति । वंजणं ति—अभिलाक्षकरा । ते इमे एगद्विया पंच—ओगिण्हणता इत्यादि । एते ओग्गहसामणतो पंच वि णियमा एगद्विता । उग्गह-विभागे गुण कज्जमाणे उग्गहविभागंसेण भिण्णत्था भवंति । सो य उग्गहो तिविहो—वंजणोग्गहो सामण्णत्थाकग्गहो विसेससामण्णत्थाकग्गहो य । एगद्वियाण इमो भिण्णत्थो—वंजणोग्गहस्स पढमसमयपर्चिद्विपोग्गलाण गहणता ओगिण्हणता भण्णति, ‘उ—प्पावल्ले’ त्ति कातुं १ । वितियादिसमयादिसु जाव वंजणोग्गहो ताव उवधारणता २५ भण्णति २ । एगसामद्वियसामण्णत्थाकग्गहकाले सवणता भण्णति ३ । विसेससामण्णत्थाकग्गहकाले अवलंबणता

१ चक्कुदि० ख० स० ॥ २ घेज्जा गो० मु० ॥ ३ ओग्गह० गो० मु० ॥ ४ अश्वघा० जे० ॥ ५ अवि सर्विदिय० आ० । अविसिद्धसर्विदिय० दा० ॥ ६ बुद्धिमत्ति० जे० ॥ ७ विसेसावग्गहो सामण्ण० आ० दा० । हारि० बृह्मौ “त्रिविश्वथावग्गहः—सामान्यावग्गहः विशेषावग्गहः विशेषसामान्यावग्गहः” इति आ० दा० प्रतिगतचूर्णिपाठभेदानुसारि भेदनामन्त्रयं दद्यते । किय ज्ञेसलमेहदुर्गास्थप्रानीनतमे ताढपत्रीयादर्शे विसेसावग्गहो इति स्थावे वंजणोग्गहो इति पाठो वर्तते । मलयगिरिपार्दरपि नन्दिवृक्षो व्यञ्जनावग्गह इति जे० प्रथनुसारि नाम निष्ठद्वितमस्ति । तथाहि—“इहावग्गहविभासा तथा—व्यञ्जनावग्गहः सामान्यावग्गहः विशेषसामान्यावग्गहः” पव १७४-२ ॥ ८ भण्णति, आपल्ले आ० दा० ॥

भण्णति ४ । उत्तरविसेससामण्णत्वावगाहेमु जाव मेरथा धावइ ताव मेथा भण्णइ ५ । जत्थ वंजणाक्षगहो नत्थ त्वथ सवणादिया तिण्ण एगद्विता भवंति । आह—णु भिण्णत्थेदंसणे एगद्वित त्ति विरुद्धं? उच्यते, ण विरुद्ध, जतो सञ्चविक्षेपेमु उग्गहसेव सरुवं दंसिज्जति ॥ इदाणि उग्गहसमण्णतरं ईहा—

५१. [१] से किं तं ईहा? ईहा छन्विहा पण्णत्ता, तं जहा—सोतेंदियईहा १ चैक्षिक-  
दियईहा २ घाणेंदियईहा ३ जिभिभिदियईहा ४ फासेंदियईहा ५ णोइंदियईहा ६ ।

[२] तीसे णं इमे एगद्विया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामधेयाँ भवंति, तं जहा—  
आभोगणया १ मग्गणया २ गवेसणया ३ चिता ४ वीमंसा ५ । से तं ईहा ।

५२. [१] सा छन्विहा सुत्तसिद्धा ।

[३] इमे तस्सेगद्विया, ते वि ईहासामण्णतो एगद्विता चेव, अत्थविकषणातो पुण भिण्णत्था । इमेण  
१० विधिणा—आभोगणता इत्यादि । ओग्गहसमयाण्णतरं सब्भूतविसेसत्थाभिमुहमालोयणं आभोगणता  
भण्णति १ । तस्सेव विसेसत्थस्स अण्णय-वडेगक्षमसमालोयणं मग्गणा भण्णति २ । तस्सेवऽत्थस्स वडेगाधम्म-  
परिच्चाओ अण्णयधम्मसमालोयणं च गवेसणता भण्णति ३ । तस्सेव तद्भाष्माणुगतत्थस्स पुणो पुणो समालोयणतेण  
चिता भण्णति ४ । तमेवत्थं णिच्चा-उणिच्चादिएहि दब्ब-भावेहि विमरिसतो वीमंसा भण्णति ५ । एवं बहुवा  
अत्थमालोयंतस्स उक्तोसतो अंतमुहुत्तकालं सञ्चा ईहा भवति ॥ ईहाण्णतरं अवातो—

५३. [१] से किं तं अवाए? अवाए छन्विहे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियावाए १  
चैक्षिकदियावाए २ घाणेंदियावाए ३ जिभिभिदियावाए ४ फासेंदियावाए ५ णोइंदियावाए ।

[२] तस्स णं इमे एगद्विया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामधेयाँ भवंति, तं जहा—  
आउट्टणया १ पच्चाउट्टणया २ अवाए ३ बुद्धी ४ विण्णैणे ५ । से तं अवाए ।

५४. [१] सो छन्विहो सुत्तसिद्धो ।

[२] तस्सेगद्विता इमे पंच, ते य अवायसामण्णत्वणतो णियमा एगद्विता चेव, अभिधाणभिण्णत्वणतो पुण  
भिण्णत्था । [जे० २०१, डि०] इमेण विधिणा—आउट्टणता इत्यादि । ईहणभावनियत्तस्स अत्थसरूपपडिच्चोध-  
बुद्धस्स य परिच्छेदमुप्पादेतस्स आउट्टणता भण्णति १ । ईहणभावनियड्स्स वि तमत्थमुलोयंतस्स पुणो पुणो  
णियहृणं पच्चाउट्टणं भण्णति २ । सञ्चहा ईहाए अवणयणं कातुं अवधासणावधारितत्थस्स अवधारयतो अवातो त्ति  
भण्णइ ३ । पुणो पुणो तमत्थावधारणावधारितं बुज्जतो बुद्धी भवइ ४ । तम्म चेवावधारितमत्थे विसेसे पेक्खतो  
२५ अवधारयतो य विण्णाणे त्ति भण्णति ५ ॥ अवायाण्णतरं धारणा—

१ 'त्थत्ताओ एग' आ० ॥ २ 'विचिक' जे० ॥ ३ 'चकखुंदि' सं० ॥ ४ 'घेजा मो० मु०' ॥ ५ 'एहि दंदभावेहि'  
जे० । "विमर्शेण विमर्श, क्षयोपशमविशेषादेवोध्यं स्पष्टतरावबोधतः सद्भूतार्थविशेषाभिमुखमेव व्यतिरेकधम्परित्यागतोऽन्वयधमलोचनं विमर्शः,  
गित्या-उभित्यादिद्रव्य-भावालोचनमित्यन्ते ।" इति हारि० बृत्ती । "तत ऋद्धं क्षयोपशमविशेषात् स्पष्टतरं सद्भूतार्थविशेषाभिमुखमेव  
व्यतिरेकधम्परित्यागतोऽन्वयधमपरित्यागतोऽन्वयधमविमर्शनं विमर्शः" इति मलयगिरिबृत्ती ॥ ६ 'यअवाए डे० ॥ ७ 'चकखुंदिय'  
सं० ॥ ८-९-१०-११-१२ 'यअवाए डे० ॥ १३ 'धिजा मो० मु०' ॥ १४ आउट्टणया पच्चाउट्टणया ख० श० हारि० मलय०  
तृत्योक्त । आउट्टणया पच्चाउट्टणया स० ल० ॥ १५ विण्णाणे ख० स० ॥

५३. [१] से कि तं धारणा ? धारणा छविहा पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियधारणा १  
चक्रिखदियधारणा २ घार्णिंदियधारणा ३ जिब्बेदियधारणा ४ फासेंदियधारणा ५ णोइंदिय-  
धारणा ६ । [२] तीसे णं इमे एगद्विया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामघेया  
भवंति, तं जहा—धरणा १ धारणा २ ठवणा ३ पतिङ्गा ४ कोड्वे ५ । से तं धारणा ।

५३. [१] सा य छविहा सुत्तसिद्धा ।

[२] तस्सेगद्विता पंच । ते य साधणाधारणं यद्वच णियना एगद्विया, धारणत्थ चिकप्पणताए भिणत्था । इमेण विधिणा—धरणा इत्यादि । अवायार्णतरं तमत्थं अविज्ञुतीए जहणुक्कोसेण अंतमुहुत्ते धरेतस्स धरणा भण्णति १ । तमेव अत्थं अणुवयोगत्तणतो विज्ञुतं जहणणेण अंतमुहुत्तातो परतो दिवसादिकालविभागेमु संभरतो य धारणा भण्णति २ । ‘ठवण’ चि ठावणा, सा य अवायावधारियमत्थं पुञ्चावरमाळोइयं हितयम्मि ठावयंतस्स ठवणा भण्णति, पूर्णवटस्यापनावत् ३ । ‘पतिङ्ग’ चि सो चित अवधारितत्थो हितयम्मि श्वेदेन पइद्वातमाणो १० पतिङ्गा भण्णति, जले उपलप्पेष्यपतिङ्गावत् ४ । ‘कोड्वे’ चि जहा कोड्वे सालिमादिवीया पक्षिवत्ता अविणद्वा धारिज्जंति तहा अवातावधारितमत्थं गुरुरदिङ्गं मुत्तमत्थं वा अविणहुं धारयतो धारणा कोड्वगसम् चि कातुं कोड्वे चि वत्तव्वा ५ ॥

५४. इच्छेतस्स अद्वावीसतिविहस्स आभिणिबोहियणाणस्स वंजणोग्गहस्स परुवणं करि-  
स्सामि पदिवोहगदिद्वंतेण मल्लगदिद्वंतेण य ।

५४. इच्छेतस्सेत्यादि सुत्तं । ‘इति’ उपप्रदर्शने । ‘एतस्स’ चि जं अतिकंतं अद्वावीसतिभेदं । ते य के अद्वावीसं भेदा ? उच्यते—चउविहो वंजणावग्गहो, छविहो अत्यावग्गहो, छविहो अवायो, छविधा धारणा, एते सब्बे अद्वावीसं । ऐत्य अद्वावीसइविहस्स मज्जातो जो वंजणावग्गहो चउविहो तस्स दिद्वंतदुर्गेण परुवणा ॥

५५. से कि तं पदिवोहगदिद्वंतेण ? पदिवोहगदिद्वंतेण से॒ जहाणामए केई पुरिसे २० कंचि पुरिसं सुत्तं पदिवोहेज्जा ‘अमुगा ! अमुग !’ चि, तत्थ य चोयगे पन्नवगं एवं वयासी—  
कि एगसमयपविङ्गा पोगला गहणमागच्छंति ? दुसमयपविङ्गा पोगला गहणमागच्छंति ? जाव  
दससमयपविङ्गा पोगला गहणमागच्छंति ? संखेज्जसमयपविङ्गा पोगला गहणमागच्छंति ?  
असंखेज्जसमयपविङ्गा पोगला गहणमागच्छंति ? । एवं वदंतं चोर्यगं पण्णवगे एवं वया-  
सी—णो एगसमयपविङ्गा पोगला गहणमागच्छंति, णो दुसमयपविङ्गा पोगला गहणमा- २५

१ विज्ञा मो० मु० ॥ २ त्रिपद्वाशत्तमगूत्रानन्तरं थीहरिभद्र-थीमलयगिरिभां व्याख्यातं सर्वेष्वपि सूत्रादशेषु एके सूत्र-  
मधिके वर्तते । तर्चित्तम्—उग्गहे एकसामद्य, अंतोमुहुत्तिया ईहा, अंतोमुहुत्तिय अवाप, धारणा संखेज्जं वा कालं  
असंखेज्जं वा कालं । एवं अद्वा॑ सं॒ ई॒ मो॒ मु॒ ॥ उग्गहे एकं समयं, ईहा-उवाया सुहुत्तमदं ति, धारणा संखेज्जं  
वा कालं असंखेज्जं वा कालं । एवं अद्वा॑ ल॒ ॥ उग्गहे एकं समयं, ईहा-उवाया सुहुत्तमेत्तं तु । कालमसंखं संखं  
च धारणा होति णायव्वा ॥ २ ॥ एवं अद्वा॑ ल॒ ॥ ३ एवं अद्वा॑ सर्वामु सूत्रप्रतिषु वृत्त्योश्च ॥ ४ पयस्स अद्वा॑ आ॒  
दा॒ ॥ ५ से॒ णं जहा॒ मो॒ ॥ ६ केयि॒ मु॒ ॥ ७ एवं॒ इति॒ ख॒ सं॒ नास्ति॒ ॥ ८ चोद्वगं॒ सं॒ ॥ ९ वदासी॒ ख॒ ॥

गच्छति, जाव णो दससमयपविद्वा पोगला गहणमागच्छति, णो संखेज्जसमयपविद्वा पोगला गहणमागच्छति, असंखेज्जसमयपविद्वा पोगला गहणमागच्छति । से तं पडिबोहगदिङ्गतेण ।

५५. से जहाणामयेत्यादि । ‘से’ ति पडिबोधकस्स णिहेसे । ‘जहाणामये’ ति जहाणा [जे० २०२ ग्र०]म, संभवतः आत्मामिश्रायक्रतादित्यर्थः । सब्बण्णुपमणीयमत्थं तदणुसारि सुन्तं वा अप्पुद्धिविष्णाण-त्तणयो अणवगच्छमाणी सीसो पुच्छाचोदणातो चोदको, अहवा तमेव सुन्तमत्थं वा ‘अघडमाण’ ति मणमाणो तदोसचोदयो य चोदगो भण्णति । पवयणमविरुद्धं निहोसं सुन्तमत्थं पण्णवेतो पण्णकगो, विरुद्ध-पुणरुत्तसुन्तं वा अत्थतो अविरुद्धं दसिसेतो पण्णवेति जो सो वा पण्णवगो भण्णति, यथावत् संशयच्छेदीत्यर्थः । चोदको संसय-माकणो पण्णकगं पुच्छति—‘किं एगसमयादिपविद्वा’ इत्यादि कंठं । एवं चोदकं पुच्छामिष्यायेण वदतं पण्ण-कणाऽह—‘णो एगसमयपविद्वा’ इत्यादि । जो एस पडिसेहो कतो एस सदाइफुडविष्णाणजणगतेण ति णो गहणमागच्छति, इहरा पोगला गहणमागच्छत्येत्यर्थः । एवं एगादिसमयपविद्वपोगल्पविसदेहु इमा अणुणा—‘असंखेज्जसमयपविद्वा पोगला गहणमागच्छति’ ति । इमस्स अणुयोगत्यो अणुयोगत्यो य । तत्थ अणु-योगो इमो—जहा पवासी सगिहमेतो अद्वाणं पंचाहेण दसाहेण वा वीतीवतिता सगिहं पविद्वो ति, एवं असंखे-जेहिं समयेहिं आगता पविद्वा कणविलेहु पोगला गेहति ति, एवं अणुयोगत्यो भवति । इमो अणुयोगत्यो—१५ पदमसमयादारब्धं पतिसमयं पविसमाणेहु असंखेज्जइमे समए जे पविद्वा ते गहणमागच्छति, ते य सदादिवि-ष्णाणजणग ति कातुं, अतो तेसि गहणसुविद्विहं । सो य असंखेज्जइसमयो किंपमाणे असंखेज्जए भवति ? उच्यते—जहणेणां आवलियाए असंखेज्जभागमेतेहु समयेहु गतेहु ति, उक्तोसेण [जे० २०२ द्व०] संखेज्जाहु आवलियास्तु आणापाणुकालपुहते वा, उभयधा वि अविरुद्धं ॥ गतो पडिबोधकदिङ्गतो । इदाणि औवागदिङ्गतो—

५६. [१] से किं तं मलगदिङ्गतेण ? मलगदिङ्गतेण से जहाणामए केहु पुरिसे आवाग-२० सीसाओ मलगं गहाय तत्थेगं उदगविद्वं पक्खिवेज्जा से णहु, अण्णे पक्खिवत्ते से वि णहु, एवं पक्खिप्पमाणेहु पक्खिप्पमाणेहु होही<sup>१</sup> से उदगविद्वं जे णं तं मलगं रावेहिति, होही<sup>२</sup> से उदगविद्वं जे णं तंसि मलगंसि ठाहिति, होही<sup>३</sup> से उदगविद्वं जे<sup>४</sup> णं तं मलगं भैरेहिति, होही से उदगविद्वं जे<sup>५</sup> णं तं मलगं पवाहेहिति, एवामेव<sup>६</sup> पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं अणतेहिं पोगलोहें जाहे तं वंजणं पूरितं होति ताहे ‘हुं’<sup>७</sup> ति करेति णो<sup>८</sup> चेव

१ गहत्यमा<sup>१</sup> जे० ॥ २ ‘आवागदिङ्गतो’ इति मङ्गकटशान्तस्य नामान्तरम् ॥ ३ ‘तेण’ जहा को दिङ्गतो ? से जहा<sup>२</sup> ख० ॥ ४ केयि शु० ॥ ५ अण्णे वि प० ख० दिना ॥ ६ ‘माणे पक्खिप्पमाणे होही डे० ॥ ७-९-११ होहिति ख० शु० ॥ होहिह ल० डे० ॥ ८ रावेहिह स० ल० शु० । रवेहिह जे० ॥ १० मलगे ल० स० ॥ १२-१४ जो णं ख० । जणणं शारिवत्तौ ॥ १३ भैरेहिति इत्यनन्तरं विवेषावश्यकमहाभाष्यमलधारीयटीकायां १४८ पवे नन्दीपाठेदत्ते होही से उदगविद्वं जे णं तंसि मलगंसि न हुहिहिति इत्यविकं ‘न ठाहिहिति’सूत्रमुपलभ्यते, नोपलभ्यते इवं सूत्रं सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु ॥ १५ पवेव शु० ॥ १६ ‘मेव पक्खिप्पमाणेहिं अणतेहिं पोगा<sup>१</sup> ल० विआमलदृती १४८ पवे नन्दीसूत्रपाठेदरणे । ‘मेव पक्खिप्पमाणेहिं पोगा<sup>२</sup> ल० । ‘मेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं पोगा<sup>३</sup> स० ॥ १७ ‘हों’ ति ख० ॥ १८ ण उण जा<sup>४</sup> ख० ॥

एं जाणति के वेसं सद्वाइ ?, तओ ईं पविसति तओ जाणइ अमुगे एस संद्वाइ ?, तैओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ एं धारणं पविसइ तओ एं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ।

[३] से जहाणामए केईं पुरिसे अब्बत्तं सहं सुँणेज्जा तेणं सहे चि उगहिए, णो  
चेव णं जाणइ के वेस सहे चि, तओ ईहं अणुपविसइ ततो जाणति अमुगे एस सहे, ततो  
णं अवायं पैचिसइ ततो से उवगयं हवति, ततो धारणं पैचिसइ तओ णं धारेइ संखेज्जं वा  
कालं असंखेज्जं वा कालं । → एवं अब्बत्तं रुवं, अब्बत्तं गंधं, अब्बत्तं रसं, अब्बत्तं फासं  
पडिसंवेदेज्जा ← ।

[३] से जहाणामए केइँ पुरिसे अब्बत्तं सुमिणं पंडिसंवेदेज्जा, तेणं सुंमिणे त्ति उग्गहिएँ ण पुण जाणति के<sup>१०</sup> वेस सुमिणे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणति अमुगे<sup>१०</sup> एस सुमिणे त्ति, ततो अवायं पविसइ ततो से उवगयं हवइ, ततो धारणं पंविसइ तओ णं धारेइ संखेज्जां वा कालं असंखेज्जां वा कालं । से तं मलगदिङुंतेणं ।

१ के विषय समोऽसु० ॥ २ सहैत्ति ख० । सहैत्ति सं० ॥ ३ तओ उवयाणं गच्छति, तओ से उवरगदो  
हृचर ख० ॥ ४ गच्छति ख० सं० शु० ल० ॥ ५ संखेजकालं असंखेजकालं ल० ॥ ६ केयि शु० ॥ ७ सुणेइ  
तेण डे० ल० ॥ ८ सहैत्ति ख० शु० । सहाैत्ति जे० डे० ल० सो० ॥ ९ सहाहै, तओ ईहं पविसद् सर्वात्मा सुश्रपतिषु हारि०  
मलय० वृत्त्योश्च ॥ १० गच्छति ख० सं० शु० ल० ॥ ११ पदिषज्जेति संखेज्जं ख० सं० ॥

१३ → ←—एतच्छिह्मभ्यवर्त्तिसुश्रस्याने जे० भो० मु० प्रतिषु रूप-गन्ध-रस-सर्वशिष्याणि चत्वारि सुश्राण्युपलभ्यन्ते । तानि चेमानि—

से जहानामण केर्ह पुरिसे अवश्यं रुवं पासिज्जा, तेण रुवे ति उग्गद्विग, नो लेव णं जाणइ के बेस रुवे ति, तओ हैँडं पविसइ तओ जाणइ अमुगे पस रुवे ति, तओ अवार्यं पविसइ तओ से उवगर्यं द्ववइ, तओ धारणं पविसइ तओ णं धारेह संखिज्जं धा कालं असंखिज्जं धा कालं ।

से जहानामप केर्हे पुरिसे अवत्तं गंधं अग्राइजा, तेणं गंधे स्ति उभगहिप् नो चेब णं जाणइ के वेल गंधे स्ति, तथो ईहूं पविसह तओ जाणइ अमुगे एस गंधे, तथो अवायं पविसह तथो से उबगयं हशह, तथो धारणं पविसह तओ णं धारेह सौखिज्जं था काले असौखिज्जं था काले ।

से जहानामण केर्ह पुरिसे अवस्तु रसी आसाइजा, तेण रसे त्ति उभद्विष, नो खेदर्ण जाणह के ब्रेस रसे त्ति, तओ हैंदे पविसइ तओ जाणह अमुगे पस रसे, तओ अवायं पविसइ तओ से उकगयं दबइ, तओ धारणं पविसइ तओ पं धारेह संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा काले ।

से जहानाभए केहै पुरिसे अवधतं फासं पडिसंबेहजा, लेण फासे ति उगगहिय, नो चेव णं जाणइ के बेस  
फासे ति, तओ ईहं पविसह तओ जाणइ अमुरो पस फासे, तओ अबायं पविसह तओ से उवगयं हवइ, तओ  
धारणं पविसेह तओ ० धारेह संखिजं वा कालं असंखिजं वा कालं ॥

१३ केयि शु० ॥ १४ पासिज्ञा मो० ल० शु० ॥ १५ सुमिणो ति डे० ल० । सुविणो ति मलयगिरिकायाम् ॥  
१६ 'प नो चेब पं जा० मो० मु० ॥ १७ के वि शु० डे० ल० ॥ १८ गच्छति सं० सं० शु० ल० ॥ १९ पडिवज्जति  
सं० सं० ॥

५६.[१] तत्य आवागसीसगं ति[आ]पागद्वाषमेव, अहवा आपागद्वाषस्स आसण्णं समंता परिपेरंतं, अहवा आयाणमुत्तारियाण जं ठाणं तं आपागसीसयं भण्णति। ‘अण्णतेहि’ ति प्रथमसमयादारभ्य प्रतिसमयं अण्णता प्रविशंतीत्यतो अण्णता। ‘जाहे तं वंजणं पूरितं भवति’ ति, एत्य वंजणगहणेण सदाइपुगलदब्बा दव्विदियं वा उभयसंबंधो वा वेतच्चं, तिधा वि ण विरोधो। वंजणं पूरियं ति कहं ? उच्यते—जदा पुगलदब्बा वंजणं तदा पूरियं ति पभूता ते ५ पोगलदब्बा जाता, स्वं प्रमाणमागता सविसयपडिबोधसमत्था जाता इत्यर्थः १। जदा पुण दव्विदियं वंजणं तदा पूरियं ति कहं ? उच्यते—जाहे तेहि पोगलेहि तं दव्विदियं आँखतं भरितं वाचितं तदा पूरियं ति भण्णति २। जदा तु उभयसंबंधो वंजणं तया पूरियं ति कहं ? उच्यते—दव्विदियस्स पुगला अंगीभावमागता, पुगला य दव्विदिए अगुणतत्त्वा, एव उन्नयनार्थो, एतम्मि उभयभावे पुगलेहि इंदियं पूरितं, इंदिएण वि सविसयपडिबोधकप्पमाणा पुगला गहिता, एवं उभयसामत्थतो विष्णाणभावो भवतीत्यर्थः ३। ‘हुं ति करेहि’ ति वंजणे पूरिते तं अत्थं गेहड़ १० ति बुचं भवति। एस एकसमयिओ अत्थावग्नाहो। तं पुण किंपारं गेहति ? उच्यते—‘नो चेव णं जाणति के वि एस सदादी’ तकाले सामण्णमणिदेसं, सदादिविसेसं ण जाणइ ति बुचं भवति। किंच—सर्व-णाम-जाति-गुण-किरिया-विकप्पविमुहं अनाख्येयं गृहणातीत्यर्थः। एत्य पडिबोधकालातो [जे० २०३ प्र०] पुञ्चं वंजणोग्नाहो से भवति। एसा एवं वंजणोग्नाहस्स परव्याका कला। वंजणोग्येहस्स परतो ‘हुं ति करेति’ ति एतम्मि पडिबोधकाले एग-समझ्यो अत्थावग्नाहो से भवति, ततो से कमेण ईद्वा-ज्ञाय-धारणाओ ति। एत्य पडिबोह-मछगदिहंतेहि वंजणो-१५ ग्नाहस्स अत्थोग्नाहस्स य भिष्णकालता फुडं दंसिता। पर आह—साधु मे पडिबोध-मछगदिहंतेहि वंजण-इत्थावग्न-हाण भेदो दंसितो, जागरओ पुण सदाइअत्थे पदुष्णाणे णःवंजणोग्नाहो लक्खिवज्जति, जतो पुच्छामेव सदाइअत्थ-विष्णाणमुप्पज्जते, भणितं च सुचे ‘से जहाणामये केयि पुरिसे’त्यादि। अहवा इमस्स सुत्तस्स इमो संबंधो—पर आह—यदुक्तं भवता सर्व-णाम-जाति-गुण-किरियाविकल्यविमुखं अनाख्येयं गृहणातीत्येतद् विरुद्ध्यते, कुतः ? यतः सूत्रेऽभिहितं—से जहाणामतेत्यादि। अहवा इमो संबंधो—प्रसुप्तपतिबोधक-मछगदिहंतेहि वंजण-इत्थावग्नाहाण भेदो २० दंसितो, इह पुण सुचे मछगदिहंतेण वंजण-इत्थावग्नाहाण भेदो दंसिज्जति—

[२] ‘से जहाणामते’त्यादि। युत्तुचारणसवणाणंतरमेव पर आह—एत्य सुचे वंजण-इत्थावग्नहेण लक्खिव-ज्जंति, जतो ‘अच्चतं सदं सुणोइ’ ति भणितं, सदमेतेऽन्नधारिते पहमतो अचाय एव लक्खिवज्जति ति। आघस्ति आह—ण तुमं सुत्ताभिष्णायं जाणसि, णणु अववत्तसदसवणातो अत्थावग्नाहाणं कतं, जतो अववत्तमणिदेसं सामण्णं विकप्पसहियं ति भण्णति, तस्स य पुञ्चं वंजणावग्नहेण भवितव्यं, जतो एतम्माहिणो सोतादिहंदियस्स अत्थोग्नाहो वंजणोग्नाहमंतरेण २५ ण भवति ति नियमेसो, सी य कालसुहुमत्यतो उप्पलसतपत्तेज्जदिहंततो ण लक्खिवज्जति। चोदक आह—जति एवं तो जं सुचे भणितं “तेणं सदे ति ओग्नाहिते” तं कहं ? उच्यते—इहतं “तेणं सदे ति ओग्नाहिते” ति वक्खा-द्वन्द्वकारोऽभिधत्ते इति करणनिदेसातो सव्वविसेसविमुहं शब्दभात्रमुक्तं [जे० २०३ द्वि०] भवति, णो चेव णं जाणति के वेस सदे ? ति, ण तु शब्दोऽयमित्येवं बुद्ध्यते, कम्हा ? उच्यते—एकलमयत्तातो अत्थावग्नाहस्स, किंच पण्णवेतो य पण्णवगो संववहाराभिप्रायतो “तेणं सदे ति ओग्नाहिते” ति ब्रूते, ण दोसो। जति वा “सदोऽय” ३० भिति बुद्धी भवे तो अचातो चेव भवे, तच्च न, कहं ? उच्यते—णो जतो अत्थावग्नाहसमयमेते काले “सद” इति

१ पुण उवगरण्णिदिये मल्य-नन्दिशृष्टौ चूर्णिपाठोद्धरणे ॥ २ आपुण्णं भरितं आ०। “आभूतं” इति हारिऽ बुज्जी ॥  
३ अभिष्णका: इत्यर्थः, तदा पूरियं ति भण्णाह इति मल्य-नन्दिशृष्टौ चूर्णिपाठोद्धरणे ॥ ४ ‘पतारं आ०॥ ५ ‘जाति-किरिया’  
जे० ॥ ६ जतो पत्तम्माहिणो जे० दा० ॥

विसेसणाणमत्थि, अह तम्मि वि समए सदोऽथमिति बुद्धी हवेज्ज तो फुडं अन्नाय एव भवेज्ज, णो य तकाले अवातो इच्छिज्ञति, जतो अत्थपरिच्छेदो असंखेज्जसमयकालिओ भवड त्ति । अणो पुण आयरिया एतं सुत्तं → विसेसत्थाव-गाहे भणांति—‘अन्वत्तं सदं सुणेज्ज’ त्ति एस ← विसेसत्थावग्गाहो, ‘तेण सदे ति उग्गहिते’ त्ति, एतं सुत्तरहं सामणे-सदत्थावग्गहदंसंग, कहं ? उच्यते—जतो भणाति “णो चेव णं जाणति के वि एस सदे” त्ति संख-संग-णालि-करय-लादिको त्ति, एसो वि अविरुद्धो सुत्तत्थो । ‘ततो’ अत्थावग्गाहसमयाणंतरं पदमसमयादिसु ‘ईहं अणुपविसति’ ५  
‘ईहं’ त्ति केह संसयं मणांते, ते ण भवति, संसयस्स अणाणभावत्तणतो, मतिणाणंसो य ईह त्ति । आह—को पुण संसयेहाण विसेसो ? उच्यते—इह जं थाणु-पुरिसादिअत्थेष्वै पेहितं चित्तं तदत्थपडिबोहत्तेण पडिहतं सुत्त इव चेतो संसयो भणाति, तं च अणाणं, जं पुण हेतूवशत्तिसाधणेहि सबभूतमत्थस्स विसेसधम्माभिसुहालोयणं तस्सेकउत्थ-स्स अधम्मविसुहं असम्मोहमविफलमत्थपरिच्छेदकं चित्तं जं तं ईहा भणाति । अणु त्ति—अवग्गहातो पञ्चभावे असं-खेज्जसमइयं परिमाणतो ईहोवयोगं अविच्छेयत्तणतो अंतमुहुत्तकालं ईहति, ततो विसिद्धमतिनाणखयोवसमभाव- 10  
त्तणतो अंतमुहुत्तकालभंतर एव जाणति ‘अमुते एस सदे’ संख-संगादिए त्ति । दुरववोधत्तणतो पुण अत्थस्स अवि-सिद्धमइणाणखयोवसमत्तणतो वा ईहोवयोगअंतमुहुत्तकुतो अणवगतत्थो पुणो वि अणं अंतमुहुत्तं ईहति, [ जे० २०४ प्र० ] [ एवं ] ईहोवयोगविच्छेदसंताणतो बहुए वि अंतमुहुत्ते ईहेज्जा, ण दोसो । ततो ईहाणंतरं अवातो । सो य सदाइअत्थपहुण्णास्स जे परधम्मा तेसु चिसुहस्स सधम्मे य अवधारयतो ‘ण एस संगसदो, णिद्ध-मधुर-गंभीरत्तणतो संखसदोऽयमित्येवमवगतत्थो [ जहणतो ] असंखेज्जसमयितो उकोसतो णियमा एगंतमुहुत्तिओ जो 15  
अवबोधो अत्थपरिच्छेदो सो अवातो भवति । ततो अवायाणंतरं धारणं पविसइ त्ति । सा य धारणा जहणतो असंखेज्जसमते अविच्छुतीए तमत्थं धरेति, उकोसतो अंतमुहुत्तं, अणुवयोगतो पुण तमत्थं विस्मृतं पुणो वि संभरइ त्ति धारणा । एवं सा संखेज्जवासाउयाणं मुहुत्त-दिवसादिकालसंखाए संखेज्जं कालं भवेज्ज, असंखेज्जवासाउयाणं पुण असंखेज्जं कालं ।

एवं चकित्वंदिए वि रुवं भाणितव्यं, वंजणोग्गहवज्जं । घाणन-स-फासिदिएसु वि जहा सोइंदिते तहा सब्बं 20  
भाणितव्यं । ‘संवेदेज्ज’ त्ति एते सदादिइंदियत्ये पहुण्णणे इंदियं स्वं स्वं इंदियत्थं आयखयोवसममणुरुवं सुभम-  
सुभं वा वेदेज्जो त्ति । अहवा फरिसिद्यवज्जं सेसिंदिएहि पत्तमिंदियत्थं प्रायसो इद्वमणिष्वं वा स्वं आत्मानुगतं  
वेदनं वेदते, न शरीरेण अनुपैलक्षं वा वेदयतीत्यर्थः । फासिंदियमत्थं पुण स्वं अनुगतं शरीरानुगतं च दुहा वि  
फुडं वेदइ त्ति संवेदेज्ज त्ति अतो भणितं ।

एवं मणसो वि मुविणे सदादिविसएसु अवग्गहादयो णेया, अणत्थ वा इंदियवावारभावे मणेमाणस्स 25  
त्ति । इह सुत्तेण निदरिसणं मणे—

[३] से जहाणामतेत्यादि सुत्तं । कंठं । सुविणो मे दिद्वो त्ति सुविणदिद्वं अन्वत्तं सुमरइ । तच्च प्रतिवो-  
धप्रथमसमये सुविणमिति रामरतो अत्थावग्गहो, तंस्य पथमावस्थायां व्यञ्जनावग्रहः, परतो ईहादि । सेसं पूर्ववत् ।  
जगतो अणिंदियत्थवावारे वि मणसो जुज्जते वंजणावग्गहो, उवयोगस्स असंखेज्जसमयत्तणयो, [ जे० २०४ द्वि० ]  
उवयोगद्वाए य प्रतिसमयमणोदव्वग्गहणतो, मणोदव्वाणं च वंजणववदेसतो समए य असंखेज्जतिमे मनसो णियमा- 30

१. → ← एतचिङ्गान्तर्कर्त्ती पाठः जे० नास्ति ॥ २. ‘णसस्त्था’ आ० दा० ॥ ३. ‘णादिकर’ आ० दा० ॥ ४. ‘सु-  
पविहुं चित्तं आ० ॥ ५. वेदेज्ज त्ति । एते सदाई चक्खुरंदियवज्जं सेसिंदिएहि आ० दा० ॥ ६. ‘सुपलंभं वा आ० दा० ॥  
७. तस्य पूर्वमवस्था’ जे० दा० ॥

र्थग्रहणं भवेत् । तस्य च प्रथमसप्तयार्थप्रतिबोधकाले उर्ध्वादग्रहः, तस्य पूर्वमसंख्येयसभ्येषु व्यञ्जनावग्रहः । शेषसी-  
हादि पूर्ववत् । सीसो पुच्छति-उग्राहादीणं उ क्रमातिकमे एगतरअभावे वा कि सदादिवत्थुपरिच्छेदो ण भवति ?  
आचार्याह—आमं, ण भवति, अत एव च क्रमे नियमः, जम्हा णो अग्नितं ईहति तम्हा पुच्छं उग्राहो, जम्हा य  
अणीहितं णो अवगच्छति ईदणितरं तम्हा अवायो, जम्हा य अणावातं ण धारिज्जति वस्थुं अवायाणितरं तम्हा  
५ धारणा । जम्हा य एस क्रमनियमो तम्हा सब्दो आभिषिबोधियनाणग्रन्थमो नियमा एवं भवति, अत एव च  
कारणम् सब्दे अवग्रहादयो मतिनाणभेदा भवतीत्यर्थः ॥

५७. तं समासओ चउन्निहं पण्णतं, तं जहा—देव्वओ खेतओ कालओ भावओ ।  
 तत्थ दव्वओ णं आभिणबोहियणाणी आएसेणं सब्बदव्वाइं जाणति ण पासति १ ।  
 खेतओ णं आभिणबोहियणाणी आएसेणं सब्बं खेतं जाणइ ण पासइ २ । कालओ णं  
 १० आभिणबोहियणाणी आएसेणं सब्बं कालं जाणइ न पासइ ३ । भावओ णं आभिण-  
 बोहियणाणी आएसेणं सब्बे भावे जाणइ ण पासइ ४ ।

५७. तं समासतो चतुर्विहेत्यादि सुन्तं । 'तं च' मतिनाणं स्वयोवसमरूपतो एव विहं पि होतुं जेयभेद-  
क्षणतो नाणाभेदा दब्बादिया से भवन्ति । 'दब्बतो णं' ति दब्बतो बत्तब्बे 'णं' ति वयणालंकारे, देसीवयणतो वा  
‘णं’ अहवा, अपादानान्ते पञ्चमी विभक्तिः, तत्थ पायतवयणसेलीतो दब्बतो णं एवं आभिनिबोधियनाणी लभति—  
15 'आदेसेण'मित्यादि, इहाऽऽदेसो नाम—पकारो । सो य सामण्णतो विसेसतो य । तत्थ दब्बजातिसामण्णादेसेण  
सब्बदब्बाणि धर्मत्थिकायादियाणि जाणति, विसेसदब्बे चि जहा धर्मत्थिकाये धर्मत्थिकायस्स देसे धर्मत्थि-  
कायस्स यदेसेत्यादि केयी जाणति, सब्बे ण याणति, जहा सुहुमयरिणता अंविसतत्था अण्णणवणादिया य । 'ण  
पससइ' ति सब्बे सामण्ण-विसेसादेसद्विते धर्मादिए, चक्रवृ-अचक्रक्षुदंसणेण रूप-सद्वाइते केयिं पासति ति बत्तब्बं ।  
अहवाऽऽदेसो—सुन्तं, तस्सादेसतो सब्बदब्बे जाणतीत्यादि । चोदक आह—जति सुन्तं कहं मतिनाणं ? ति, उच्यते—  
20 सुतोवलद्दमत्थेसु अणुसरतो तब्बावणदुद्धिसामत्थतो [जे० २०९ प्र०] सुतोवयोगणिरवेक्षवा चि मती पवत्तइ  
ति ण सुलादेसो विरुद्धते । खेलं पि सामण्ण-विसेसादेसतो । तत्थ सामण्णतो खेलमागासं, तं चेगं सब्बग-

१ द्वव्याओऽस्ते । द्वव्याथोऽस्ते ॥ २ तत्था इति परं खं० सं० डें० ल० नास्ति, जे० शु० मो० मु० विआमलवृत्ती नन्द्यदरणे  
२३० पत्रे पुनर्बर्तते ॥ इ-४-५-६ अत्र द्रव्य-स्वेच्छ-काल-भागविषयकेषु चतुर्थवि सूचांशेषु जाणति पास्ति इति पाठो जाणति ए  
पास्ति इति पाठमेदेन सह भगवत्यां अष्टमशतकाद्वितीयोद्देशके ३५६-२ पत्रे वर्तते । अज्ञाभयदेवगूरेष्टीका—“द्वव्याण” ति द्रव्यमा-  
थित्य आभिनिवौधिकविषयद्रव्यं वाऽऽश्रित्य यद् आभिनिवौधिकज्ञानं तत्र ‘आदेशं’ ति आदेशः-प्रकारः सामान्य-विशेषरूपः तत्र च ‘आदे-  
शेन’ ओघतो द्रव्यमात्रतया, न तु राज्ञतस्वर्विशेषापेक्षयेति भावः, अथवा ‘आदेशेन’ श्रुतपरिकर्मिततया ‘सर्वद्रव्याणि’ धर्मास्तिकायादीनि  
‘जानाति’ अवाय-धारणापेक्षयाऽवद्यते, ज्ञानस्यावाय-धारणारूपत्वात्, ‘पास्त॒’ ति पद्यति अवग्रहेहापेक्षयाऽवद्यते, अवग्रहेहयोर्दर्शनत्वात् ।  
.....‘खित्तओ’ ति क्षेत्रमाथित्य आभिनिवौधिकज्ञानविषयं क्षेत्रं वाऽऽश्रित्य यद् आभिनिवौधिकज्ञानं तत्र ‘आदेशेन’ ति अंघतः  
श्रुतपरिकर्मणया वा ‘सर्वं खेलं’ ति लोका-ऽलोकरूपम् । एवं कालतो भावतभवति ।.....इते च रूपे नन्द्यां इहैत च वाचनान्तरे  
‘न पास्त॒’ ति पाठान्तरेणाधीतम् । एवं च नन्दिटीकाकृता [हरिभद्रसूरिणा] व्याख्यातम्—“आदेशः-प्रकारः, स च सामान्यतो  
विशेषतत्त्वं । तत्र द्रव्यजातिसामान्यादीन ‘सर्वद्रव्याणि’ धर्मास्तिकायादीनि जानाति, विशेषतोऽपि यथा धर्मास्तिकायो धर्मास्तिकायस्य देश  
इत्यादि, ‘न एद्यति’ सर्वान् धर्मास्तिकायादीन, शब्दादीस्तु थोर्यदेशात्रस्थितान् पश्यत्यगीति ।” ३५८ पत्रे ॥ ७ अचि सत्था  
उप्पणवण्णादिया आ० दा० । अविशदार्थी अप्रश्नापनादिका दृथ्यर्थः ॥ ८ सेसा दसविहे धर्मादिप आ० दा० ॥

तमस्तुं अवगाहलक्खणं सब्वं जाणति । विसेसतो वि लोगा-इत्तोगुड्ड-इतिरियादिविसेसखेते जाणति, ए जाणइ  
य केयी, क्षेत्रं न पश्यत्येव २ । काले वि आदेसो सामण्ण-विसेसतो । तत्थ सामण्णतो इमं भण्णति, ए य दर्सणतो,  
णिच्चमणिच्चं वा मुच्चमस्तुं वा कलासमूहं सब्वदब्वाणि वा कलेऽति कलणं वा कालो, तमेवंविहं सामण्णतो सब्व-  
कालं जाणति । विसेसादेसो-समया-इत्तत्तिगादि उस्पिणीमादि वा विसेसकाले केयि जाणति, ए जाणति केयि,  
कालं ए पश्यत्येव ३ । भाव इति भवनं भूतिर्वा भावः, एवं सब्वभावे भावजातिमेत्तसामण्णतो जाणति । विसेसादेसतो ५  
जीवा-जीवभावे । तत्थ नाण-कसायादिया जीवे, अजीवे व्यष्टयज्ञवादिए अगेगहा वीसस-पयोग्यरिणते, एत्थ मति-  
णाणविसयत्थे जे ते जाणति, सेसे ए याणति, सब्वभावे ए पासः ति, मतिणाणस्स असब्वणेवविसयत्तणयो ॥

### ५८. उग्रह ईहाऽवाओ य धारणा एव होति चत्तारि ।

आभिणिबोहियणाणस्स भेषवत्थू समासेण ॥ ७० ॥

अत्थाणं उग्रहणं तु उग्रहो, तह वियालणं ईहं ।

ववसायं तु अवायं, धरणं पुण धारणं विति ॥ ७१ ॥

उग्रह एकं समयं, ईहा-अवाया मुहुत्तमद्धं तु ।

कालमसंखं संखं च धारणा होति णायव्वा ॥ ७२ ॥

पुद्धं सुणेति सद्दं, रूपं पुण पासती अपुद्धं तु ।

गंधं रसं च फासं च बद्ध-पुद्धं वियागरे ॥ ७३ ॥

भासासमसेढीओ सद्दं जं सुणइ मीर्सयं सुणइ ।

वीसेढी पुण सद्दं सुणेति णियमा पराघाए ॥ ७४ ॥

ईहा अपोह वोमंसा मग्णा य गवेसणा ।

संणा सती मती पणा सब्वं आभिणिबोहियं ॥ ७५ ॥

से तं आभिणिबोहियणाणपरोक्खं ।

10

15

20

१ ईह अवायो सं० शु० ल० मो० ॥ २ अत्थाणं उग्रहणमिम उग्रहो तह वियालणे ईहा । ववसायमिम अवाओ,  
धरणं पुण धारणं विति ॥ मो० डे० ल० मु० । इरिभद्रसूरि-मलयगिरिकृत्योः निर्दिष्टोऽयं पाठमेदः निर्दिष्टो व्याख्यातश्चापि वर्तते ॥  
३ चत्तमंतं तु हरिभद्रसूरि-मलयगिरिकृत्योः निर्दिष्टोऽयं पाठमेदः ॥ ध मीसियं डे० मो० मु० ॥ ५ ख० स० शु० मो० प्रतिषु से तं  
आभिणिबोहियणाणपरोक्खं इति एकमेव निगमनवाक्यम्, जे० डे० ल० मु० प्रतिषु पुनः से तं आभिणिबोहियणाणपरोक्खं,  
से तं मतिणाणं इति निगमनवाक्यद्वयं दद्यते । किंव हरिभद्रसूरि-मलयगिरिकृत्योः प्रथमं निगमनवाक्यं व्याख्यातमस्ति, चूर्णिकृता  
द्वितीयं निगमनवाक्यं व्याख्यातं वर्तते इति शृति-चूर्णिकृतमेकतरदेव निगमनवाक्यमाभ्यामतम् । अपि च चूर्णिकृता चूणैः—“से किं तं  
मतिणाणं ?” ति एस आदीए जा पुच्छा तस्य सब्वहा सर्वते वर्णिते इमं परिसमतिदेसमं णिगमणवाक्यम्—“से तं मतिणाणं ति” इत्यादि  
[पत्रं ४४ पं० ४] यन्मिगमनवाक्यव्याख्यानावसरे निष्ठकृतमस्ति तत्रैतत् किल निर्गत्यमस्ति यत्-चूर्णितिपि से किं तं आभिणिबोधिकेत्पादि  
स्तुते [ सुते ४५ पत्रं ३२ ] इति आदिवाक्यमुपक्षिणं वर्तते तत् किमिति चूणैः निगमनवाक्यव्याख्यानावसरे “से किं तं मतिणाणं” सि  
एस आदीए जा पुच्छा ” इत्यादि चूर्णिकृता निरदेशि ? इत्यग्राथं तद्विद एव प्रमाणमिति ॥

६८. उग्रह ईहा० गाहा॑। अत्थाण॑० गाहा॑। उग्रह एकं० गाहा॑। पुद्धं सुणेह० गाहा॑। आसा॑  
सम० गाहा॑। ईहा० गाहा॑। एताओ गाहाओ जहा पेडियाए [ आब० नि० गा० २—६ तथा गा० १२ ] तहा भाणितव्वा॑  
इति ॥७०॥७१॥७२॥७३॥७४॥७५॥

“से किं तं मतिणाणं ?” [ सुत्तं ४५ ] ति एस आदीए जा पुच्छा तस्स सब्बहा सर्ववे वणिते इमं परिसमाचि-  
दंसगं णिगमणवाक्यम्—“से तं मतिणाणं” ति । अहवा सीसो पुच्छति—जो एस वणियसर्ववेण ठितो णाणविसेसो  
सो किंचत्तव्वो ? आचार्य आह—‘से’ इति निदेसे, ‘तं’ ति पुच्छपणामस्सिणे, तं एतद् ‘मतिणाणं’ ति स्वनामाख्यान-  
मित्यर्थः । अहवा ‘से’ ति अस्य व्यञ्जनलोपे कृते एतं मतिणाणं ति भवति, एतावद् मतिज्ञानमित्यर्थः ॥

इदाणि सब्बवरण-करणक्रियाधारं जधुद्धिं कमण्टतं सुतणाणं भण्णति—

५९. से किं तं सुयणाणपरोक्षं ? सुयणाणपरोक्षं चोहसविहं पण्णतं, तं जहा—  
१० अक्षरसुतं १ अणक्षरसुतं २ सणिणसुयं ३ असणिणसुयं ४ सम्मसुयं ५ मिच्छसुयं ६ सादीयं ७  
अणादीयं ८ सपज्जवसियं ९ अपज्जवसियं १० गमियं ११ अगमियं १२ अंगपविद्वं १३  
अणंगपविद्वं १४ ।

६०. से किं [ जे० २०४ द्वि० ] तं सुतनाणेत्यादि । तं च सुतावरणखयोवसमत्तणतो एगविहं पि तं  
अक्षरादिभावे पहुच जाव अंगवाहिरं ति चोहसविधं भण्णति । तत्थ अंक्षरं तिविहं—नाणक्षरं अभिलावक्षरं  
१५ वणक्षरं च । तत्थ नाणक्षरं “क्षर संचरणे” न क्षरतीत्यक्षरम्, न प्रच्यवते अनुपयोगेऽपीत्यर्थः, आतभावत्तणतो,  
तं च थाणं अविसेसतो चेतनेत्यर्थः । आह—एवं सब्बमविसेसतो णाणमक्षरं कम्हा सुतं अक्षरमिति भण्णति ?  
उच्यते—रुद्धिविसेसतो १ । अभिलाववणा अक्षरं भणिता, पङ्कजवत्, एवं ताव अभिलावहेतुग्रहणतो सुतविष्णा-  
णस्स अक्षरता भणिता २ । इदाणि वणक्षरं—वणिज्जति अणेणाभिहेतो अत्थो इति वण्णो, स चार्थस्य, कुडये  
चित्रवर्णकवत्, अहवा द्रव्ये गुणविशेषवर्णकवत् । वर्ण्यते—अभिलप्यतेऽनेनेति वर्णाक्षरम् ३ ॥ एत्थ सुतं—

६०. से किं तं अक्षरसुतं ? अक्षरसुतं तिविहं पण्णनं, तं जहा—सण्णक्षरं १ वंजण-  
क्षरं २ लघ्दिअक्षरं ३ ।

६०. से किं तं अक्षरसुतं इत्यादि । अक्षरसदं सुणतो भासतो वा अक्षरसुतं । तत्थऽक्षरलभो  
अभिलावो वा दब्बसुतं, खयोवसमलदी भावसुतं । तच्च वणाक्षरं विविधं सण्णक्षरादि ॥ तत्थ—

६१. से किं तं सण्णक्षरं ? सण्णक्षरं अक्षरस्स संठाणा-ऽस्गिंती । से तं सण्णक्षरं ।

६१. ‘सण्णक्षरं’ अक्षरागारविसेसो । सो य ऋदिलिविविधाणो अणेगविधो आगारो । तेसु आ(अ)-  
कारादिअगारेसु जम्हा अकारे अकारसणा एव भवति, एवं सेसेसु वि, तम्हा ते सण्णक्षरा भणिता, जहा वहूं  
घडागारं दट्टुं ठकारसणा उपज्जतीत्यर्थः १ ॥

१ चउद्दस् मो० ॥ २ अक्षरं ति दुविहं—नाणक्षरं अभिलाववणाक्षरं च । तत्थ नाणे “क्षर जे० ॥  
३ “लावणा अक्षरं आ० ॥ ४ ‘ती सण्णक्षरं । से तं ख० स० दे० ल० श० ॥

६२. से किं तं वंजणक्खरं ? वंजणक्खरं अक्षरस्स वंजणाभिलोको । से तं वंजणक्खरं ।

६२. व्यक्तीकरणं वंजणं, व्यञ्जयते अनेनार्थं इति वा व्यञ्जनम्, यथा प्रदीपेन घटः, व्यञ्जनं च तदक्षरं चेति व्यञ्जनाक्षरम्, तच्चेह सर्वमेव भाष्यमाणं अकारादि हकारान्तम्, अर्थाभिव्यञ्जकत्वाच्छब्दस्य । तमेवं अक्षरं अत्थाभिव्यञ्जकं वंजणक्खरं भवति, जहा घटः पटः इत्यादि २ ॥

६३. से किं तं लद्धिअक्खरं ? लद्धिअक्खरं अक्षरलद्धियस्स लद्धिअक्खरं समुपज्जइ, ५ तं जहा—सोइंदियलद्धिअक्खरं १ चक्षेदियलद्धिअक्खरं २ धाणेदियलद्धिअक्खरं ३ रसणिदियलद्धिअक्खरं ४ फासेदियलद्धिअक्खरं ५ णोइंदियलद्धिअक्खरं ६ । से तं लद्धिअक्खरं । से तं अक्षरसुयं १ ।

६३. ‘लद्धिअक्खरं’ ति अक्षरलद्धी जस्तत्वं तस्स इंदिय-मणोभयविष्णाणतो इह जो अक्षरलाभो उपज्ञति तं लद्धिअक्खरं । तं च पंचविहं सोइंदियादि । जहा सोइंदियलद्धिभो सर्वं सोतुं संख इति अक्षरदुयलाभो १० भ[जे० २०६ प्र०] वति, एवं सञ्चत्थ लद्धिअक्खरं भागितव्यं ३ । इह सणा-वंजणक्खरे दो वि दब्सुतं गदितं, सुतविष्णाणकारणतातो, लद्धिअक्खरं भावसुतं, लद्धीए विष्णाणमयत्तणतो भयणा वा १ ॥ इदार्णि अणक्खरसुतं—

६४. से किं तं अणक्खरसुयं ? अणक्खरसुयं अणेगविहं पण्णतं, तं जहा—

ऊससियं पीससियं णिच्छूढं खासियं च छीयं च ।

णिस्सधियमणुसारं अणक्खरं छेलियादीयं ॥ ७६ ॥

से तं अणक्खरसुयं २ ।

15

६४. अणक्खरसहस्राण्यतो करतो [? वा] अणक्खरसुतं भवति । तं च अणेगविहं इमं—

ऊससितं० गाहा । पूर्ववत् कंठा [आव० नि० गा० २०] ॥७६॥ २ । इदार्णि सणिमसणिसुतं—

६५. से किं तं सणिसुतं ? सणिसुतं तिविहं पण्णतं, तं जहा—कालिओवएसेणं १

20

हेऊवएसेणं २ दिट्ठिवादोवदेसेणं ३ ।

६५. सणिस्स सुतं सणिसुतं । असणिस्स सुतं असणिसुतं । तत्र संज्ञाऽस्याऽस्तीति संज्ञी । सो य सणी तिविहो—‘कालिओवदेसेण’ इत्यादि । चोदक आह—जइ सणासंबंधयो सणी तो सब्बे जीवा सणी, जतो एगिदियाण वि दस आहारादिसणातो पदिजंति ? आचार्याह—इहोहसणा थोवत्तणतो णाधिक्रियते, जहा णो कैरिसावणेण धणवं भवै त्ति, सेसआहारादिसणाओ वि भूयिष्टता वि णाधिक्रियते, अणिद्रुत्तणतो, जहेह हुंड-संठितो ण मुक्तित्तणतो रुववं भण्णति । एते अधिकतसणाए अणुवण्यदिहंता । इमे उवण्यदिहंता—जहा वहूधणो २५ धणवं, पसत्थणिव्यत्ति-देहमुक्तित्तणतो य रुववं भण्णति, तहेव महती सुभा य संज्ञाऽधिक्रियते । सा य संज्ञानं संज्ञा-मनोविज्ञानम्, तत्सम्बन्धात् सम्भीत्यर्थः ॥ उक्तः प्रसङ्गः । प्रकृतमुच्यते—

१ लावो वंजणक्खरं । से तं ख० स० ल० श० ॥ २ असिन् सूत्रे सर्वत्र लद्धियक्खरं इति स० श० म० ॥

३ ‘णतो कारणतो वा आ० दा० । अनक्षरशब्दश्रवणतः ‘कुवेतो वा’ भाषत इत्यर्थः ॥ भै कार्षीपयेन ॥

६६. से कि तं कालिओबएसेण ? कालिओबएसेण जस्मै णं अत्यि ईहा अंपोहो ममणा गवेसणा चिता वीमंसा से णं सैणि ति लब्भइ, जस्मै णं णत्यि ईहा अंपोहो ममणा गवेसणा चिता वीमंसा से णं असण्णीति लब्भइ । से तं कालिओबएसेण १ ।

६७. 'कालितोबदेसेण' ति इहाऽऽदिपदलोबो दुष्ट्यो, तसुचरणे 'दीहकालितोबदेसेण' ति बत्तव्वं । दीहं—६ आयते, कालितो ति विसेसणं । करसै उच्यते—उबदेसस्स, जहा जिणभवणे मुहुत्कालितोदीहकालितो वा पूयामंडबो कतो तहा दीहकालितोबदेसेण ति भाणितव्वो । उबदेसणमुबदेसो, उपदेसो ति वा आदेसो ति वा पण्णवण ति वा पल्लवण ति वा एगङ्गा । दीहकालिभो उबदेसो दीहकालिओबदेसो, तेण दीहकालितोबदेसेण जस्त सण्णा भवति सो आदिपदलोबातो कालिओबदेसेण सण्णीत्यर्थः । अहवा कालियं—आयारादि सुत्तं तदुबदेसेण सण्णी भाणति । सो य इमेरिसो—जो य अतीतकाले सुदीहे वि [ जे० २०६ द्वि० ] इदं तदिति कृतमणुभूतं वा सुमरति, बद्धमाणे य इंदिय-१० णोइंदिएण वा अण्णतरं सदाइअत्थमुवलद्धं अण्णत-वद्वरेगव्यमेहि ईहइ ति ईहा । तसेव परथम्परस्त्रियागे सधम्माणु-गतावधारणे य 'अबोहो' ति अवातो । विसेसधम्मणेसणा ममणा, जहा मधुर-गंभीरत्तणतो एस संससद इति । वीसस-प्योगुवभवणिच्छमणिच्च चेत्यादि गवेसणा । जो यऽणागते य चित्यति 'कहं वा तं तत्थ कातव्वं ?' इति अणोण्णालंबणाणुगतं चित्तं चिता । आंत-पर-इह-परत्थयहिता-उहितविमरिसो वीमंसा । अहवा 'किमेयं ?' ति ईहा । गिर्च्छयावधारितो अत्थो अबोधो । अभिलसियत्थस्स मणो-वयण-काएहि जायणा ममणा । अभिलसितत्थे चेव १५ अपर्द्यप्यजमाणे गवेसणा । अणेगहा संकप्यकरणं चिता । द्रन्दमर्थेषु वीमंसा, जहा णिच्छमणिच्च हितमाहितं शुरं कृशं थोवं बहुं इत्यादि । अहवा संकप्यतो चेव विविधा आमरिसणा वीमंसा । अहवा 'अबोहो' ति अवातो । सेसा ईहापगद्धिया । जसेवं अण्णयरविकप्येण मणोदब्बमणुगतं चित्तं धावति एस कालिओबदेसेण सण्णि ति । सो य अणंते मणोजोगे खंधे वेत्तुं मणेति, एतलद्विसंपणो मणविणाणाणावरणस्योवसमंजुतत्तणतो य जहा चक्खुमतो पदीवादिष्णासेण फुडा रुबोबलद्धी भवति तहा मणखयोवसमलद्विमतो मणोदब्बपगासेण मणोछद्वेहि इंदिएहि २० फुडमत्थं उबलभतीत्यर्थः । कालितोबदेससण्णीविवकखे असण्णी, जहेह अविसुद्धचक्खुमतो मंदमंदप्यगोसे रुबोबलद्धी असुद्धा एवं सम्मुच्छिमपंचेदियअसण्णिस्स, उकोसखयोवसमे वि अप्यमणोदब्बगहणसामत्थे मंदपरिणामत्तणतो य असण्णिषो अविसुद्धमण्णा य अथोपलब्धीत्यर्थः । ततो वि अविसुद्धा चतुर्सिद्धियाणं, ततो तेइंदियाणं, ततो वि अविसुद्धा वेइंदियाणं अत्थुबलद्धी । जस्स य जह इंदिया स तहा तेसु अवगाहादिसु पवत्तते । विगलिंदियाण वि आदेसंतरतो मणोदब्ब [ जे० २०७ प्र० ] ग्राहणं असुद्धमण्णतो य भाणितव्वं । सो य मणो तेसि अमणो चेव २५ दुष्ट्यो, असुद्धत्तणतो, असीलबद् ऐज्ञानबद्धा । तयो वेइंदियेहितो वि सभीवातो अब्बत्ततरं त्रिष्णाणं एगिंदियाण, जहा मत्त-मुच्छिय-विसभावितस्स य तहा एगिंदियाण सब्बधा मणाभावे त्रिष्णाणं सब्बजहण्णं । कालितोबदेससण्णिषो एते सम्मुच्छिमाद्यो सब्बे असणी भवतीत्यर्थः २ ॥ इदाणि—

६८. से कि तं हेऊबएसेण ? हेऊबएसेण जैसम णं अत्यि अभिसंधारणपुविया

१ °स्सउत्त्य खं० सं० ल० शु० ॥ २ अबोहो जे० मो० सु० ॥ ३ सण्णीति जे० मो० सु० ॥ ४ °स्स णत्यिथ खं० सं० शु० ल० ॥ ५ अबोहो जे० मो० सु० ॥ ६ °ण्णी ल० खं० सं० दे० ल० शु० ॥ ७ आत्म-परेह-परत्रजहिता-उहितविमषे इत्यर्थः ॥ ८ °हुण्णणमाणे दा० ॥ ९ °त्तं वा वत्तति एस जे० आ० दा० ॥ धावति इति पाठस्तु मो० चूर्णादिशंगतो हेयः ॥ १० °महेतुत्तणतो आ० दा० ॥ ११ °गासा रुबो आ० ॥ १२ अघनबद्धा आ० ॥ १३ जस्सउत्त्य खं० सं० ल० शु० ॥

करणसत्ती से णं संण्णीति लब्धमइ, जस्स णं णत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती से णं असण्णि ति लब्धमइ । से चं हेतुवएसेणं ३ ।

६७. 'हेतुवदेसेण' ति हेतुः कारण निमित्तमित्यनवीनतम्, 'उवदेसेण' ति पूर्ववत् । हेतुतो सौण्णा भवति ति जेण तेण सो हेतुउवदेसेण सण्णी भवति । 'जस्स' ति जीवस्स, 'ण' वाक्यालंकारे देसीवयणओ वा आत्म-स्वरूपप्रदर्शनवचनोपन्यासे वा, अव्यक्तेन विज्ञानेन अभिसन्धार्य पूर्व ततः विज्ञानस्यैव 'करणशक्तिः' करणं-क्रिया ५ शक्तिः-सामर्थ्यं, अथवा करणे शक्तिः करणशक्तिः, अथवा करण एव शक्तिः करणशक्तिः । तच्च अभिसंधारण संचित्य संचित्य इष्टेषु विसयवत्यूमु आहारादिसु प्रवर्त्तते, अणिष्टेषु य पियत्तते । एवं सदेहपरियाल्यहेतु पवर्तति । ते य पायं पद्मपृष्ठकाले, ण तीता-उणागतकालावलंबिणो भवति, उसमणमेव, केयिं तु तीता-उणागतकालावलंबिणो वि भवति, ते पुण ण दीहकालाणुसारिणो । किंच—तेषु वि आगतो मुहुमो संताणचोदको अविस्मरणहेतु दट्टव्यो । एवं ते विकल्पेदिया सम्मुच्छिमपंचेदिया या(य) हेतुवायसण्णी भणिता, ते पद्मव असण्णी जे णिचेद्वा १० इडा-अणिहनिस्य[४] विषिण्यादावारा एत्तु मुच्छिय-विसोवयुत्तादिसारिच्छचेतणद्विता पुढवादिएर्गिदिया इत्यर्थः २ ॥

इदाणि—

६८. से किं तं दिद्विवाओवएसेण ? दिद्विवाओवएसेण सण्णिसुयस्स खओवसमेणं सण्णी लब्धमति, असण्णिसुयस्स खओवसमेणं असण्णी लब्धमति । से चं दिद्विवाओवएसेणं ३ । से चं सण्णिसुतं ३ । से चं असण्णिसुतं ४ ।

१५

६८. दिद्विवाओवदेसेण ति दृष्टिः—दर्शनम्, वदनं वादः, उपदेशनमुपदेश इति, अनेन दृष्टिवादोपदेशेन संज्ञीत्यभिधीयते । सो य सम्मदिद्वी सण्णी, तस्स सम्मदिद्विणो सण्णिस्स जं सुतं तं सण्णिसुतं, तेण सण्णिसुत-खयोवसमभावेण जुत्तत्तणतो दिद्विवातसण्णी लब्धमति । अहवा दिद्विवायसण्णि ति मिच्छत्तस्स [ जे० २०७ दि० ] सुतावरणस्स य खयोवसमेण कतेणं सण्णिसुतस्स लंभो भवति, एवं सो दिद्विवातसण्णी लब्धमति, तस्स सुतं दिद्विवातसण्णिसुतमित्यर्थः । तं खयोवसमभावत्यं समदिद्विं सण्णि पदुच्च मिच्छदिद्वी असण्णी भणितो । सो य मिच्छ-२० चस्मुदयतो अस्सण्णी भवति, तस्स सुतं असण्णिसुतं । तं च सुतभ्यणाणावरणखयोवसमेण लब्धमति, एवं दिद्विवातभ-सण्णीत्यर्थः, तस्स सुतं दिद्विवातभसण्णिसुतं । एवं दिद्विवाते सण्णि-असण्णिसु सुतखयोवसमभावो(वा) सुतं वेतन्वं इति । पर आह-खयोवसमभावद्वित(तो) सण्णितणतो लक्षिवज्जति खाइगभावद्वितो केवली किण्ण सण्णि ? त्ति, उच्यते—अतीतभावसरणत्तणतो पद्मपृष्ठभावाण य बुज्जणतो अणागतभावचित्तणतो य सण्णि त्ति, तं तहा जिणे अणुसरणं णत्थि, जेण सो सञ्चदा सञ्चधा सञ्चत्थ सञ्चभावे जाणतीत्यर्थः, तम्हा केवली णोसण्णीणोअसण्णी भवति । २५ पुनरप्याह परः—इह मिच्छदिद्विणो वि केयिं हिता-उहितनाणवायारसणासंजुता दीसंति किं ते असण्णिणो भणिता ? उच्यते—तस्स जा सण्णा सा जतो कुच्छिता, जहेह कुच्छितवयणमवयणं कुच्छितसीलमसीलं वा, तहा तस्स सण्णा कुच्छितत्तणतो असंवैव दट्टव्या, अण्णं च तस्स मिच्छत्तपरिग्रहातो नाणमनाणमेव दट्टव्यं । भणितं च—

१ सण्णि त्ति ल० द० शु० । सण्णी ल० ख० स० जे० ॥ २ असण्णी ल० ख० स० द० ल० शु० ॥ ३ 'हेतुवाभोवदेसेण' आ० दा० ॥ ४ सण्णी भवति आ० दा० ॥ ५ एवं तेति विकल्पेदियाणं सम्मुच्छिमपंचेदियाण या हेतुवायसण्णा भणिता आ० दा० ॥ ६-७ 'वादीव' ख० । 'वातोव' स० ॥ ८ 'सुययतो जे० ॥ ९ 'भावसुतं आ० दा० ॥

“सदसदविसेसणातो” [विशेषा० गा० ११९] गाहा । कंठा । एवं पि ते असणी । आह—एर्गिदिवाणं ओह-  
सणी चेव अतो ते असणी चेव, तेद्दितो वेंदियाइ जाव सम्मुच्छिमपंचेदी एते विसिद्धतरसणीए हेतुवायसणी  
भणिता, कालितोवदेसं पुण पहुच ते वि असणी, विणाणविसिद्धतरसणीए, दिद्विवातोवदेसं पुण पहुच कालि-  
कोपदेसा वि असणी अविसिद्धतरणतो चेव, अतो णजाति दिद्विवातसणी सञ्चुत्तमो, मुत्ते य उवरि ठवितो, जुन-  
५ मेतं, कालिय-हेतुसणीएं पुण लक्ष्यकरणं कहा ? हज्यते—हृष्टत्थ मुत्ते सणिमाहणं जं कतं तं कालितोवदेस-  
सणिस्स, अतः सर्वत्र तत्संब्यवहारज्ञापनार्थे आदौ कालि [जे० २०८ प्र०] क्रग्रहणं कृतमित्यर्थः । किंच—सणि-  
असणीएं समनस्का-अमनस्का इति क्रमश्च दर्शितो भवति, अत्र विकलेन्द्रिया अमनस्का इति अल्पमनोद्रव्यग्रहण-  
सामर्थ्यम्, प्रतिविद्यते पुनर्मनस्तेषाम् । यस्मादुक्तम्—

कुमि-कीट-पतझाद्याः समनस्का जङ्माश्वतुभैदाः । अमनस्काः पञ्चविद्या पृथिवीकायाद्यो जीवाः ॥ १ ॥

१०

[

] इति ॥

भणितं सणि-असणिसुतं ३ । ४ । इदाणि सम्म-मिच्छायुतं । तत्थ मुत्तं —

६९. [१] से किं तं सम्मसुतं ? सम्मसुतं जं इमं अरहंतेहि भगवंतेहि उप्पणणाण-  
दंसणधरेहि तेलोकैचहित-महिय-पूइएहि तीय-पँचुप्पण-मणागयजाणएहि सब्बण्णूहि सब्ब-  
दरिसीहि पणीर्यं दुवालसंगं गणिपिडगं, तं जहा—आयारो १ सूयगडो २ ठाणं ३ समवाओ  
१५ ४ विवाहपण्णती ५ णायाधमकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरो-  
ववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइ १० विवागसुतं ११ दिद्विवाओ १२ ।

[२] इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं चोहंसपुविस्स सम्मसुतं, अभिणदसपुविस्स  
सम्मसुतं, तेण परं भिण्णोसु भयणा । से तं सम्मसुतं ५ ।

७०. [१] से किं तं सम्मसुतेत्यादि । ‘जं’ इति अणिदिद्विस्स गहण, ‘इमे’ ति पञ्चक्षयभावे । वंदण-  
नमंसण-पूयणादि अरहंतीति अरहंता, अरिणो वा हंता अरिहंता । तेसि गुणसंपदाए विसेसण—‘भगवंतेहि’ धम्म-  
जस-अत्थ-लच्छी-पयत्त-किमत्ता एते छ पदत्था भगसणा, ते जेसि अत्थ ते भगवंतो । केवलनाण-दंसणाण आव-  
रणक्षते केवलणाण-दंसणा उपजंति, ते य जुगवमुप्पणे सब्बमणागतदं जयुप्पणसलवे॒ णिरावरणे सब्बदब्ब-  
गुण-पञ्चय-विसेस-सामणीविसए वि जुगवपवत्ते णाण-दंसणधरे ते तेहि नाण-दंसणेहि तीयद्वाए सब्बदब्ब-गुण-  
भावे जाणंति, तहा पहुप्पणे अणागते य जाणंति, तिकालजे दब्ब-भावे य पहुप्पणे काळे जाणंतीत्यर्थः । दिशब्दो  
२५ सर्ववचनेषु करणार्थे बहुवचनमतियादकः । तेलोकै ति—तिणि लोगा तेलोकै, ते य ऊर्ध्वा-उधस्तिर्यक्, अत्र तन्नि-  
वासिग्रहणम् । भवनवासिनो अहेलोगनिवासी, वणयर-जोति-तिरियंच-मणुस्ता तिरियलोकनिवासी, ऊर्ध्वं वैमानिका ।

१. \*णा, लदप्पत्तातो ते असणी आ० दा० ॥ २. एतेसि दूरतरसणीए हेतुवा० आ० ॥ ३. अवरि जे० ॥  
४. \*रख्यापनार्थे आ० ॥ ५. तत्थ सम्मसुतं आ० दा० ॥ ६. \*कनिरिकिलत-महित-पूइणहि सर्वासु सत्रप्रतिषु हरिमद-  
मलयगिरसूरित्तयोथ । चूर्णिकृत्समतः सूत्रपाठो नोपलभ्यते कुम्भाप्यादर्शे । केवले अनुयोगद्वारेषूपलभ्यते चूर्णिकृत्समतः सूत्रपाठः [पत्रं ३०-१] ॥  
७. \*पञ्चुप्पे॑ मो॒ सु॒ ॥ ८. \*दंसीहि से॒ ॥ ९. चबद्दस॑ ल॒ ॥ १०. \*णे भ॑ ख॒ से॒ वे॒ ल॒ ॥ ११. \*णाभणि-  
शिसए जे० ॥

एवं प्रायोदृत्या अहेलोइयप्रामसंभवाद् वाच्यम् । ‘चहितं’ ति चाहितं प्रेक्षितं निरीक्षितं दृष्टमित्यनर्थान्तरम्, त्रैलोक्येन [जे० २०८ दि०] चहिता-मनोरथदृष्टिष्ठा, अथवा गोशीष्वचन्द्रनादिना चर्चिता । त्रैलोक्यस्य मनोहिता महिता, अथवा महिमाकरणेन महिता, सा च महिमा महाजनसमुदयेन गीत-नृत्य-नाटकाद्यनेकप्रेक्षणकरणविधानैः । अणलिय-मणवज्ज-सब्भूतत्थ-विसारयवयणेहि थुता पूर्वा । अथवा अन्योन्यविष्यप्रसिद्धा हेते एकार्थवचना । ‘पणीतं’ ति तिसरतिसदुपयादिभते अभूतत्थरूपे बज्जेऽज्ञ इमं जहर्थं दुचालसंगं पणीतं, अहं पणीतं ५ दाहियातो, भूतत्थेण वा जुतं प्रकरिसेण पणीतं प्रणीतं । ‘दुचालसंगं’ इत्यादि कंठं ।

इहंगगतं आयारादि, वर्णंगगतं च आवस्तगादि । एतं सब्वं दवद्वित्ययमतेण सामिणा असंबद्धं पंचतिथकाया इव णिच्चं सम्ममुतं भण्णति । अहवा एतं चेव दुचालसंगादि सामिणा संबद्धं भयणिज्ञं सम्ममुतं मिच्छसुतं वा उच्यते—सम्मदिहिस्स सम्ममुतं, मिच्छदिहिस्स मिच्छमुतं । इमं चेव सुतपरिमाणतो णियमिज्ञति—

[२] जो चोदसपुच्ची तस्स सामादियादि विदुसारपञ्जवसाणं सब्वं नियमा सम्ममुतं, ततो ओमत्थगप- १० रिहाणीए जाव अभिणदसपुच्ची एताण वि सामाइयादि सब्वं सम्ममुतं सम्मगुणत्तणतो चेव भवति । मिच्छदिही पुण मिच्छणुभावत्तणतो अभिष्वदसपुच्चे ण पावति, दिङ्गंतो जहा अभव्यो अभव्याणुभावत्तणतो ण सिज्जतीत्यर्थः । ‘तेण परं’ ति अभिणदसपुच्चे हिंतो हेट्टा ओमत्थगपरिहाणीए जाव सामादितं ताव सब्वे गुतद्वाणा सामिसम्मगुणत्तणतो सम्ममुतं भवति, ते चेव सुतद्वाणा सामिमिच्छगुणत्तणतो मिच्छमुतं भवति ५ ॥ इदाणि मिच्छमुतं—

७०. [१] से किं तं मिच्छसुतं ? मिच्छमुतं जं इमं अणणाणिएहि मिच्छदिहिपुहि १५ सच्छंदवुद्धि-मतिवियष्यियं, तं जहा-भारहं रामायणं हंभीमासुरक्खं कोडलयं संगभद्वियाओ खोडंसुहं कपासियं नौमसुहुमं केणगसत्तरी वैइसेसियं बुद्धवयणं “वेसितं केविलं लोग्नायतं सद्वितंतं मादरं पुराणं वाँगरणं णाडगादी, अहवा वावत्तरिकलाओ चत्तारि य वेदा संगोवंगा ।

१ वा । कहं तं चेव सम्ममुतं मिच्छसुये वा ? उच्यते आ० दा० । धा । कहं ? उच्यते वे० ॥ २-३ मिच्छासुयं वे० ल० मो० सु० ॥ ४ इत आरभ्य चत्तारि य वेवा संगोवंगापर्यन्त सूत्रमिदं समप्रमपि अनुयोगद्वारेषु वर्तते [गृ० ४१] ॥ ५ मिच्छदिहीहि जे० मो० सु० विना ॥ ६ “विगच्चिप” जे० मो० सु० ॥ ७ हंभीमासुरक्खं ख० वे० सु० । दंभीमासुरक्खं मो० । सीमासुरक्खं जे० सु० । “भंभीयमासुरक्खे मादर कोडिलदंडनीतिशु ।” अस्य व्यवहारभाष्यगाथाधीस्य मलयगिरिज्ञता व्याख्या—“भमभ्याप् आसुरक्खे, मादरे नीतिशाखे कौटिल्यप्रणीताम् च दण्डनीतिशु ये कुशला इति गम्यते ।” [व्यवहार० भाग ३ पत्र १३२], अत्र प्राचीनाम् व्यवहारभाष्यप्रतिषु “हंभीयमासुरक्खं” इनि पाठो वर्तते । “आभीयमासुरक्खं भारह-रामायणादिचत्वप्सा । तुच्छा असाहणीया सुयअण्णणं ति ण वेति ॥ ३०३ ॥ [संस्कृतज्ञाया-] आभीतमासुरक्खं भारत-रामायणायुपदेशाः । तुच्छा असाधनीयाः श्रुताज्ञानमिति इदं श्रुतन्ति ॥ ३०३ ॥ [भाषाधी-] चौरशाख, तथा द्विसाशाख, भारत, रामायण आदिके परमार्थशूल्य अत एव अनादरणीय उपरेकोको मिव्याश्रुतज्ञान कहते हैं ।” [गेमटसार-जीवकाण्ड पत्र ११७] । “निर्धणे निगमे पुराणे इतिहासे वेदे व्याकरणे निरुक्ते शिक्षायां छन्दस्त्विन्यां चक्रकल्पे ज्योतिषे सांख्ये योगे कियाकल्पे चक्रिके वैशेषिके अर्थविद्यायां वाहसत्ये आमिभये आसुयें मृगप्रक्रिये हेतुविद्यायाम्” इत्यादि [लितविस्तरे परि० १२, १३ पद्यानन्तरम्, पत्र १०८] ॥ ८ कोडिलयं मो० सु० ॥ ९ सद्यम् वे० ल० । सद्यम् शु० । सद्यम् सु० । अनुयोगद्वारेषु संगभद्वियाओ सत्तवद्वियाओ इत्येते नामान्तरे अपि प्रत्यन्तरेषु दस्येते ॥ १० घोडमुहं शु० । ख० स० प्रत्योरेतज्ञामन नास्ति । अनुयोगद्वारेषु मुनः घोडगमुहं, घोडयसुहं, घोडयसहं, घोडयसुयं इति नामान्तराप्यपि प्रत्यन्तरेषु दस्यन्ते ॥ ११ नागसुहुमं जे० सु० अनु० ॥ १२ कणगसत्तरी नामान्तरं रयणाचली इत्यधिकं नाम शु० ॥ १३ वतिसे० शु० ॥ १४ तेसिअं ख० स० जे० वे० मो० । तेरासिश्चे गु० ॥ १५ काविलियं वे० ल० मो० सु० । काविले अनु० ॥ १६ णागायते स० ॥ १७ पोराणं वे० ॥ १८ वागरणं इति नामान्तरं भागवतं पायंजली पुस्सदेवयं लेहं गणियं इत्यधिकः पाठः वे० वे० सु०, नायं पाठोऽनुयोगद्वारेष्वपि ॥

[२] इचेताइं सम्भिद्विस्स सम्भत्परिग्निहियाइं सम्भसुयं । इचेयाइं मिच्छिद्विस्स  
मिच्छत्परिग्निहियाइं मिच्छसुतं ।

[३] अहवा मिच्छिद्विस्स वि एयाइं चेव सम्भसुयं, कम्हा ? सम्भत्हेउत्तणओ, जम्हा  
ते मिच्छिद्विणो तेहिं चेव सैमएहिं चोद्या समाणा केइ सपकखदिड्डीओ वैमेति । से तं  
५ मिच्छसुयं ६ ।

७०. [१] से किं तं मिच्छसुतं इत्यादि । अणाणं इतेहिं [जे० २०९ प्र०] अणाणितेहिं । अणाणं—अबोधो  
विवरीयत्थबोधो वा तेण इतो—अणुगतेत्यर्थः । मिच्छादिद्विं इतेहिं मिच्छादिद्वितेहिं, मिच्छ चि—अनुतं, दिद्वि चि—  
दरिसणं, मिच्छादिद्विणा अणुगतेहिं ति भणितं भवति । स—इत्यात्मनिर्देशः, छन्दः—अभिशायः, तेल्यमतत्येण वा  
अत्यस्स जो बोद्धो स बुद्धिः—अबग्रहमात्रम्, उत्तरत्र इहादिविकण्या सब्बे मती । अहवा नाणावरणवयोक्तममावो  
१० बुद्धी, सो चेव जदा मणोदब्धणुसारतो पवक्तइ तदा मती भण्णति । एवं आत्माभिशायबुद्धिभूतिभिः यच्छ्रुतं  
विविधकल्पनाविकल्पितमिति रचितं, तत्र भारवादि जाव चत्तारि य वेदा संगोर्वगा, सब्बेते लोगसिद्धा, लोगतो  
बेवेतेसिं सर्वं जाणितव्यं । एतं सब्बं मिच्छभावद्वितं ति कातुं मिच्छसुतं भाणितव्यं । एतमि सम्भ-मिच्छसुत-  
विकल्पे चतुरो विकण्या भाणितव्या इमेण विधिणा—

[२] सम्भसुतं सम्भदिद्विणो सम्भसुतं चेव १, सम्भसुतं मिच्छदिद्विणो मिच्छसुतं २, मिच्छसुतं सम्भदिद्विणो  
१५ सम्भसुतं ३, मिच्छसुतं मिच्छदिद्विणो मिच्छसुतं चेव ४ । ‘इचेताइं सम्भदिद्विस्स सम्भत्परिग्निहिताइं सम्भसुतं’  
एत्य सुते पदम-तद्यविकण्या दद्वन्वा । ‘इचेयाइं’ ति सम्भ-मिच्छसुताइं, अहवा मिच्छसुताइं चेव । से सं कंठं ।  
‘मिच्छदिद्विस्स’ इचादियुते वितिय-चतुर्थविकण्या दद्वन्वा । तत्थ पदमविकल्पे सम्भसुतं सम्भत्त्वाणेण सम्भं  
परिणामयतो सम्भसुतं चेव भवति १ वितियविकल्पे वि जहा खंडसंजुतं खीरं पित्तजरोदयतो ण सम्भं भवइ तहा  
२० मिच्छचुदयतो सम्भसुते मिच्छाभिणवेसतो मिच्छसुतं भवति २ ततियविकल्पे तिफलादिमणिङ्गुं पि उत्तरं उवका-  
रकारित्तणतो सम्भं भवति तहा मिच्छसुते मिच्छभावोवर्णभातो सम्भसुते दद्वतरभाबुप्यायकरणत्तणतो तं से  
सम्भसुतं भवति ३ चरिमविकल्पे मिच्छसुतं, तं चेव मिच्छाभिणवेसतो मिच्छसुतं चेव भवति ४ ।

[३] तस्स वा मिच्छदिद्विणो तं चेव मिच्छसुतं सम्भसुतं भवति । कम्हा एवं भण्णति ? उच्यते—परिणाम-  
विसेसतो, जम्हा ते मिच्छदिद्विणो ‘तेहिं [जे० २०९ दि०] चेव’ पुञ्चावरविरुद्धेहिं मिच्छसुतभणितेहिं ‘चोदिता’  
भणिता ‘समाणा’ इति सन्तः, चोदणाणंतरं आत्मेकालावस्थायां सन्त इत्यर्थः । पुञ्चं जं सासणं पडिवण्णो “तं से  
२५ सपकखो, तम्म जा दिड्डी तं ‘धमेति’ परिच्यति, छडेति चि बुतं भवति । जम्हा एवं तम्हा तं पुञ्चमिच्छसुतं  
सम्भसुतं से भवति । पर आह—तत्त्वावगमसंमावसामणे सम्भत्त-सुताणं को पतिविसेसो जेण भण्णति ‘सम्भत्त-  
परिग्निहिताइं सम्भसुतं’ ? उच्यते—जहा णाण-दंसणाणं अब्बोधसामणे भेदो तहा सम्भ-सुताणं पि भविस्सति ।

१ गथाणि चेव सम्भं सर्वाणि सूत्रप्रतिषु । शृतिक्रांतौरयमेव सूत्रपाठं सम्मतोऽस्ति ॥ २ पथ्याइं मिच्छं सर्वाणि सूत्रप्रतिषु ।  
शृतिक्रांतोरयमेव सूत्रपाठः सम्मतः ॥ ३ ‘क्षुद्विद्विपरि’ खं० ॥ ४ मिच्छालुयं ढे० मो० सु० । अपि च-सम्यक्श्रुत-मित्याश्रुतविवेचकोऽयं  
सूत्राण्यः सर्वाणि सूत्रप्रतिषु शृत्योरपि च क्रमव्यत्यासेन यत्तेन ॥ ५ पथ्याइं चेव इति खं० सं० जे० ढे० ल० शु० नास्ति । श्रीहरिमात्राचार्यैरपि  
नास्त्ययं पाठः स्वीकृतः ॥ ६ ‘द्विया तेहिं ढे० ल० विना ॥ ७ ससमणिहि जे० ॥ ८ धर्थंति जे० मो० । श्रीमलयगिरिपादैरे  
तत्पाठानुसारेणव व्याख्यातमस्ति ॥ ९ मिच्छालुयं ढे० मो० सु० ॥ १० तत्थ आत्मधेष वा अत्यस्स आ० दा० ॥  
११ ‘त्मकलाथस्थायाः सं आ० ॥ १२ तस्सेल पक्खो जे० ॥ १३ ‘सम्भावं आ० दा० ॥

कहं ? उच्यते—जहा विसेसोर्ण वीधमवात्-धारणे नाणं, अवग्रहेहावोधे च दंसणे तहा इमं । तते जा रुती तं सम्मतं, तत्थेव जं रोचकं तं सुतं । एवं मिच्छत्तपरिम्बाहे वि वत्तव्यं ६ ॥ इदाणि सादि-सप्तज्ञवसाणे—

७१. से किं तं सादीयं सप्तज्ञवसियं ? अणादीयं अपज्ञवसियं च ? इच्चेयं दुवालसंगं  
गणिपिडगं विउच्छित्तिणयद्वयाए सादीयं सप्तज्ञवसियं, अविउच्छित्तिणयद्वयाए अणादीयं  
अपज्ञवसियं ।

७२. से किं तं सादीयं इत्यादि । इह पञ्चात्तितो बोच्छित्तिणतो, तस्य मतेण दुवालसंगं पि सादि  
सप्तज्ञवसाणं । कहं ? जहा णरणादिभवमवेक्खातो जीवो व्व । दब्बटितो पुण अव्वोच्छित्तिणतो, तस्य मयेण दुवा-  
लसंगं पि ‘अणादि अपज्ञवसाणं च’ चिकालवत्थायी, जहा पंचतिथिकाय व्व ॥ एसेवत्थो दब्बादिचतुकं पद्मच  
चितिज्जति । तथ—

७२. तं समासओ चउन्निहं पण्णत्तं, तं जहा-दब्बओ खेतओ कालओ भावओ । <sup>10</sup>  
तैत्थ दब्बओ णं सम्मसुयं एगं पुरिसं पद्मच सादीयं सप्तज्ञवसियं, वहवे पुरिसे पद्मच अणादीयं  
अपज्ञवसियं १ । खेतओ णं पंच भरहाइं पंच एखयाइं पद्मच सादीयं सप्तज्ञवसियं, पंच  
महाविदेहाइं पद्मच अणादीयं अपज्ञवसियं २ । कालओ णं ओसपिणि उस्सपिणि च  
पद्मच सादीयं सप्तज्ञवसियं, णोउस्सपिणि णोओसपिणि च पद्मच अणादीयं अपज्ञवसियं  
३ । भावओ णं जे जया जिणपण्णता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परविज्जंति <sup>15</sup>  
दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ते” तहा पद्मच सादीयं सप्तज्ञवसियं, खाओवस-  
मियं पुण भावं पद्मच अणादीयं अपज्ञवसियं ४ ।

७२. दब्बतो सम्मसुतं एगपुरिसे सादि जं पद्मताए पढति; सप्तज्ञवसाणं देवलोगगमणातो, गेलणातो  
वा णडे, पमादेण वा, केवलणाणुप्तितो वा, मिच्छादंसणगमणातो वा सप्तज्ञवसाणं, अहवा एगपुरिसस्सेव  
सादिसप्तज्ञवसाणत्तणतो । दब्बतो चेव वहवे पुरिसे पद्मच अणादि अपज्ञवसाणं, अणोणटितसंताणाविच्छेयत्तणतो, <sup>20</sup>  
मणुयत्तणं व जहा । खेततो भरहेरवएयु तित्थगर-धम्म-संवातियाण उप्याद-बोच्छेदत्तणतो सृष्टादि सप्तज्ञवसाणं,  
महाविदेहेयु अवुच्छेदत्तणतो [अणादि अपज्ञवसाणं] । कालतो ओसपिणीए [जे० २१० प्र०] तिसु, उस्स-  
पिणीए दोसु साधंतं, णोओसपिणिणोउस्सपिणिततियं महाविदेहकालपलिभागं पद्मच तिसु वि कालेसु अव-  
डितत्तणतो अणादि अपज्ञवसाणं । इदाणि भावतः—‘जे’ इति अणिहिद्वस्स पिहेसो । ‘जदा’ इति काले पुव्वणहे  
अवरणहे वा, दिया रातो वा पुव्विं जिणेहि पण्णता भावा, पच्छा त एव गौतमादिभिः ‘आघविज्जंती’त्यादि, <sup>25</sup>

१ स्त्राणं अष्टोधिअवातकरणे णाणं आ० मो० ॥ २ इच्चेयं भो० मु० ॥ ३ बुच्छिल्लं भो० मु० ॥ ४ अयुच्छिल्लं भो०  
मु० ॥ ५ तत्थ इति पदं खं० सं० डे० ल० शु० नास्ति ॥ ६ एराथं लं० शु० ॥ ७ पंच विदेहाहूँ ल० ॥ ८ णं उस्सपिणि  
ओसपिणि च जे० मो० मु० । नार्य पाठक्षुर्णि-कृत्तिकृतां सम्मतः ॥ ९ णोओसपिणि णोउस्सपिणि च ल० । हारिनृत्तौ  
एतदनुसारेणैव व्याख्यातमस्ति ॥ १० ते तया भावे पद्मच जे० डे० मो० । ते भावे पद्मच ल० । कृत्तिकृता से तशा पद्मच  
इति पाठान्तरनिर्देशेन सह से तहा पद्मच इति पाठ आव्वोडस्ति । वृत्तिकृदया पुनः ते तया पद्मच इत्येव पाठोऽनीकृतोऽस्ति ॥

‘आघेविज्ञति’ आख्यायन्ते सामण्णतो [ विसेसतो ] विसेससामण्णतो वा, पण्णविज्ञति भेदप्रभेदेहि, तेसि भेदप्रभेदाणं सरुवमक्षयाणं परुवणा, दंसिज्ञति उक्षमामेत्येण जहा गो तहा गवय इति, णिंदंसणं हेतु-दिद्वंतेहि, उवदंसणा उवणयोवसंघारेहि सञ्चणएहि वा । अहवा एगद्विता एते । ‘ते’ इति पण्णवणिज्ञाण णिदेसो । ‘तहा’ इति पण्णवगं पण्णवणिज्ञे वा पडुच्च सादि सपज्जवसाणं भवति । तत्थ पण्णवगं पडुच्च उवयोगतो सरविसेसतो पयत्ययो आसण-  
५ विसेसतो य सादि सपज्जवसाणं । पण्णवणिज्ञे पडुच्च गतीतो ठाणतो दुपदेसादिभेदतो तहेगपदेसादिभवगाहतो एगसमथादिभवत्थाणतो वण्णादिपज्जवे य आसज्ज सादि सपज्जवसाणं । पाढंतरं वा “ते तदा पडुच्च” ‘तया’ इति काळं अनाधर्यत्वसितम् । भावतः श्रुतज्ञानं लायोपशमिके भावे नित्यं वर्तते स्थामित्वसम्बन्ध इति ।

### ७३. अहवा भवसिद्धीयस्स सुयं साईयं सपज्जवसियं, अभवसिद्धीयस्स सुयं अणादीयं अपज्जवसियं ।

१० ७३. अहवा सादि सपज्जवसाणं सपडिपक्खपदेसु भंगचतुके पढमभंगे सम्मसहितमुतभावो चितेयब्बो, अणेगविहं वा खयोवसमभावं पडुच्च दब्बादित्तवयोगं वा पडुच्च पढमभंगो भवति । चितियभंगो सुष्ठो, अहवा अभव्वाणं अणादितद्वंसंजोगेण मुतभावो भाणितब्बो । चरिम-ततियभंगेसु अविसिद्वमुतभावो अभव्व-भव्वे पडुच्च जोएतब्बो । अभवसिद्धीयस्स इत्यादि मुतसिद्वं । इह चरिम-ततियभंगेसु अणादिमुतभावो दिद्वो मुताधिकारतो, इधरा मतिभावो वि दब्बब्बो, मति-मुताण अणोणाणुगतत्तणतो । सो य अणादिणाणभावो जहणो  
१५ अजहणण[ जे० २१० द्वि० ]मणुकोसो वा हवेज्ज, उकोसो ण भवति, कम्हा ? जम्हा उकोसनाणभावो केवलिणो भवति ॥ तस्य य मुत्ते इमं प्रमाणं पदिज्ञति—

### ७४. सञ्चागासपदेसग्गं सञ्चागासपदेसेहि अणंतगुणियं पज्जवैग्गक्खरं णिष्पज्जाइ ।

७४. सञ्चागासपदेस इत्यादि सूत्रं । सञ्चमिति—अपरिसेससञ्चग्गं अधिकिच्चेवं भण्णति, सञ्च आकासं सञ्चाकासं, सञ्चागासपदेसा सञ्चागासपदेसा, जं एतेसि अग्गं-जं परिमाणं ति बुत्तं भवति, एतं सञ्चागासप-  
२० देसरासियग्गं अणंतेण रासिणा अणेण गुणितं ताहे जं रासिपमाणं लब्धति तं सञ्चपज्जवाण अग्गं भवति । पज्जाया णाम—एकेकसाऽऽगासपदेसस्स जावंतो अगरुलहुयादी पज्जवा ते पण्णाए सञ्चे संपिण्डिता, तेसि संपिण्डिताणं जं अग्गं एतप्पमाणं अकर्तरं लब्धति ।

### [ अ क्खर प ड लं ]

इह अक्खरं ति दुविहं-णाणं अकारादिदब्बमुतव्वरं च । तत्थ नाणमव्वरं ति अविसेसतो सञ्चनाणमक्खरं,  
२५ जम्हा तं जीवातो उप्पणं अणणभावत्तणतो णो कव्वरति चि, इह गुण सञ्चयज्जायतुलत्तणतो केवलणाणं चेत्तच्चर्वं, जम्हा केवलं सञ्चदब्बपज्जायविष्णचिसमत्थं भवति । तं च केवलं णेये पवच्चइ, तस्स वि परिमाणं इमेण  
चेव विधिणा भाणितब्बं—‘सञ्चागासपदेसग्गं’ इत्यादि पूर्ववत् । ते य सञ्चदब्बपज्जाया समासतो तीसं इमेण  
विधिणा—गुरु लहू गुरुलहू अगुरुलहू एते चतुरो, पंच चण्णा, दो गंशा, पंच रसा, अहृ फारा, अणित्थत्थ-  
संठाणसहिता छ संठाणा, एते मुत्तदब्बे सञ्चे संभवंति । अमुत्तदब्बेसु अगुरुलहू चेव एको पज्जायो संभवइ ।

१ “आघविज्ञति” ति प्राकृतशैल्या आख्यायन्ते, सामान्य-विशेषाभ्यां कथ्यन्ते इत्यर्थः” इति हारिंभन्दिवृत्तौ । “अघविज्ञति” ति प्राकृतवाद् आख्यायन्ते, सामान्यहपतया विशेषस्यतया वा कथ्यन्ते इत्यर्थः” इति मलयंभन्दिवृत्तौ ॥ २ सायि सप० ख० । साई सप० ल० ॥ ३ पज्जवक्खरं जे० मो० मु० विआमलहृतौ २६८ पत्रे नन्दिद्युत्रपाठोदरणे । नायं पाठशूणि-वृत्तिशुल्तां सम्भतः ॥

एत्थ य एकोके भेदे अणंता भेदा संभवंति । किंच मुत्तदव्वेसु णतविसेसतो आणियोगधरा अहुवीसं मूलयज्ञाए भणंति । कहं ? उत्तरे-ते चेष्ट तीसं सब्बगुरुस्त्रहुपज्ञापृहि पिहृणा । जतो भणितं—

निच्छयतो सब्बगुरुं सब्बलहुं वा ण विजाते दब्बं ।

बवहारतो तु जुज्जति बादरखंधेसु णउणेसु ॥ १ ॥ [ कल्पमा. गा. ६५ ]

णिच्छयण्यमतेण सब्बधा गुरुं लहुं वा नत्थ दब्बं । जदि हवेज तो तस्स पठमाणस्स ण विरोधो केणइ ५ हवेज, सब्बलहुस्स वा उप्यमाणस्स, जतो य णिच्छपडणं उप्यणं वा ण विज्जति तम्हा [जे० २११ प्र०] सब्बधा गुरुं लहुं वा दब्बं नत्थ । बवहारण्यादेसेणं पुण दो वि अत्थ, जहा-सब्बगुरु कोडिसिला वज्जं वा, सब्बलहुं च धूम-उल्लगपत्तादी । एवं बवहारण्यादेसतो बादरपरिणामपरिणतेसु संवेसु गुरुमावो लहुभावो य भवति । ‘णउणेसु’ चि ण सुहुमपरिणामेसु चि तुतं भवति ॥

के पुण सुहुमपरिणता दब्बा ? के वा बादरपरिणता ? उच्यते—परमाणूतो आरद्दं एगुत्तरवद्विद्वेसु ठाणेसु १० जाव सुहुमो अणंतपदेसिओ खंधो, एतेसु ठाणेसु सुहुमपरिणता दब्बा लब्बंति, एतेसि च आगरुलहुपज्ञाया भवंति । बादरो पुण परमाणूतो आरब्म जाव असंखेजपदेसितो खंधो ताव ण लब्बति, परतो बादरपरिणामो खंधो लब्बति, सो य जहणो वि अणंतपदेसिओ नियमा भवति, तातो एगुत्तरवद्विद्वया अणंता अणंतद्वाणावडिया बादरा खंधा । ते य ओराल-विउच्चा-४५हार-तेयवग्नाम्बु भवंति, णियमा य ते गुरुलहुपज्ञाई भवंति । सीसो पुच्छति—जे रुविगुरुलहु दब्बा अगुरुलहु य तेसि के थोवा वहु वा ? उच्यते—थोवाणि गुरुलहुदब्बाणि, तेहितो १५ रुवीअगरुलहुयदब्बा अणंतगुणा । कहं पुण ते अणंतगुणा भवंति ? उच्यते—यूराणं अणंतपदेसिताणं खंधाणं सद्वाणे अणंतातो वग्नातो, सुहुमाणं पि अणंतातो वग्नातो, धूरवग्नाठाणेहितो उत्तरि भासादिवग्नाठाणेसु एकोके अणंतातो वग्नातो, हेद्वतो वि धूरवग्नाठाणाणं परमाणूणं एका वग्नाणा, एवं जाव दसपदेसियाणं संखेजपदेसियाणं संखेजातो वग्नातो, असंखेजपदेसिताणं असंखेजाओ वग्नाओ, एतेण कारणेण गुरुलहुदब्बेहितो रुवीअगरुलहुदब्बाणि अणंतगुणाणि भवंति । बादेस्तरेण वा बादरठाणेसु वि सुहुमपरिणामो अविरुद्धो चि २० भाणितव्वो । उक्तं च—

गुरुलहुदब्बेहितो आगरुलहुपज्ञाया अणंतगुणा ।

उभयपद्विसेहिता पुण अणंतकप्पा [जे० २११ दि०] बहुविकप्पा ॥ २ ॥ [ कल्पमा. गा. ६७ ]

गुरुलहुपज्ञायजुता जे दब्बा तेसि चेव जे गुरुलहुपज्ञाया तेहितो रुविअगरुलहुयदब्बाण जे आगरुलहुयपज्ञाया ते आधारअणंतगुणतातो अणंतगुणा एवं भवंतीत्यर्थः । ‘उभयपद्विसेधिता णाम’ आगरुलहुया । २५ ‘पुण’ विसेसणे । किं विसेसेति ? उच्यते—अरुविदब्बाधारा इत्यर्थः । अहवा ‘उभयपद्विसेधिता णाम’ बादर-सुहुमभाववज्जिता जे दब्बा, औरुविण इत्यर्थः । तेसु ‘अणंतकप्पा णाम’ अणंतप्रकारा । कहं ? उच्यते—आकासत्थिकाए देस-पदेसपरिकप्पणाए, एवं धम्मादिसु वि । ‘बहुविकप्प’ चि तेसि अणंतकप्पाणं एकोको अणंतप्रकारो । कहं पुण ? उच्यते—जम्हा एकोके आगासपदेसे अणंता आगरुलहुयपज्ञाया भवंति तम्हा ते बहुविकप्प चि । ते य सब्बण्णुवग्नातो सद्वेया इति ॥

१ ‘पञ्चाया भवंति आ० दा० ॥ २ अस्या गाथाया एतदुत्तरार्द्दमेव कल्पमात्ये वर्तते ॥ ३ अविरुद्धिण जे० १ अवरुद्धिण दा० ॥ ४ णाम’ एकोका अणंत आ० दा० ॥

स्विनि-अरुविदव्याण य पज्जायअप्पवहुत्तं इमं भण्णति—स्विदव्याणं जे य अग्रलहुपज्जाया ते पण्णाछेदेण पिंडिता, एतेहितो एकस्स सेव अमुत्तदव्याणस जे अग्रलहुपज्जाया ते अण्णतगुणा भवंतीत्यर्थः । एत्थ सीसो भण्णति—केवतितेहिं पुण मागेहिं मुत्तदव्याणं पिंडितपज्जाएहितो अमुत्तदव्याणं अग्रलहुपज्जाया अण्णतगुणा भवंति ? उच्यते—नास्त्यत्र परिमाणं, बहुवा वि अण्णतएण गुणिज्जमाणे अमुत्तदव्यपज्जाएमु नत्यि परिमाणं ॥

५ एत्रंते परिमाणार्थे इमं भण्णति—

केण हवेज्ज निरोधो अग्रलहुपज्जाया तु अमुते ? ।

अचंतमसंजोगो जहितं पुण तच्चिक्रवखस्स ॥ ३ ॥ [ कल्पभा. गा. ६९ ]

जतो अमुत्तदव्याणं बहुवा चि अण्णतएण गुणिज्जमाणे पेज्जायाणं ण भवति । ततो ‘केनेति’ केनान्येन प्रकारेण ‘हवेज्ज’ ति भवे ‘णिरोहो णाम’ परिमाणं ? परिच्छेदेत्यर्थः, किं मुत्तदव्येहितो अमुत्तदव्याणं अग्रलहुपज्जायपरिमाणं भविस्सति ? त्ति, नेत्युच्यते, ‘अचंतमसंजोगो’ ‘अचंतं’ अतीव अयुज्जमाणो जम्हा संजोगो । [ जे० २१२ प्र० ] ‘जहियं’ ति शब्द । ‘पुण’ द्विरोहगे । किं दिसेसवति ? स्विदव्ये । तदित्यभैन अमुत्तदव्यपक्खो, तस्स विक्रखो—मुत्तदव्यपगारो, तेमु पज्जायथोवत्तणतो अमुत्तदव्यवेसु य पज्जायाण अतीवबहुयत्तणतो, अतो मुत्तदव्येहितो अमुत्तदव्यपज्जायाण परिमाणकरणसंजोगो एगंतेणेव ण जुज्जते, ण घटतेत्यर्थः ॥

एतं तु अण्णतेहिं अग्रलहुपज्जाएहि संजुतं ।

१५ दोति अमुत्तं दव्यं अरुविकायाण तु चतुण्डं ॥ ४ ॥ [ कल्पभा. गा. ७० ]

‘एवमिति’ यथेदमुक्तं । सेसं कंठं । णवरि ‘अरुविकायाण तु चतुण्डं’ ति धम्मा-उधम्मा-उज्जास-जीवाणं ति एतेसि चतुण्ड वि नियमा पत्तेयं अण्णता अग्रलहुयपज्जाया भवंति । कहं ? उच्यते—जम्हा एतेसि एकेको पदेसो अण्णतेहिं अग्रलहुयपज्जाएहि संजुतो तम्हा धम्मा-उधम्मेगजीवस्स य असंखेज्जपदेसत्तणतो असंखेज्जमण्णता पत्तेयं भवंति । आगासपदेसअपरिमाणत्तणतो पुण तस्स नत्यि परिमाणं, तदा वि संत्रवद्वारतो अण्णता उक्ता इत्यर्थः ॥

२० एवं ताव झेयमनंतमुक्तम् । अथेदानीं तत् केवलज्ञानं यथाऽनन्तं तथेदमुच्यते—

उवलद्धी० गाहा । [ कल्पभा. गा. ७१ ] सब्बे स्विदव्या-उस्विदव्याण य जावतिया गुरुलहुपज्जाता सब्बे अरुविदव्याण य जे अग्रलहुपज्जाया एते सब्बे जुगवं जाणति पासति य जतो, एवमण्णतं केवलनाणमक्खरं ति सप्रसंगमभिहितम् ।

इदाणि ‘अकारादिदव्यमुत्तमक्खरं’ ति जति अविसेसतो णाणमक्खरमुक्तं णेयं वा तहा वि स्विदिवसतो जहा २५ पंकयं तहा सरक्खरं वंजणक्खरं वण्णक्खरं वा भण्णति । तत्थ ‘सरक्खरं’ अक्खरं अक्खरं सरंति—गच्छति सरंति वा इत्यतो सरक्खरं अकारादि, वंजणस्स वा फुडमभिधाणं सरंति, ण वा सरक्खरमंतरेण अत्थो संभरिज्जइ त्ति सरक्खरं । ककारादि वंजणक्खरा, व्यज्यते तेनार्थं इति प्रदीपेन धटादिवद् व्यंजनाक्षरम् । तेहि चेव सर-वंजणक्खरेहिं जदा अत्थो वण्णिज्जति अभिलप्यते वा तदा ते वण्णक्खरं भण्णति । इह एकेकस्स अकारादिकारांतैमक्खरस्स स-परप-ज्जायमेदा इमे—अकारस्स य पज्जाया जहा दीह-इस्व-प्लुतात्मयः, तत्थ दीहो [ जे० २१२ द्वि० ] उदाच्चा-उनुदात्त-स्व-३० रित्तभेदः, एवं इस्व-प्लुतात्मयि, पुनरप्येकैको सानुनासिको निरनुनासिकश्च, इत्येवं अष्टादशभेदः । एवं सेसक्खरराण वि जहासंभवं भेदा भावितव्या । अहवा सरविसेसतो एकेकमक्खरस्स अण्णता सपज्जया । एत्थ अकारस्स

१ पज्जायगं जे० दा० ॥ २ अपुज्जमाणो आ० ॥ ३ ‘तसरक्खरस्स आ० दा० ॥ ४ तल्लिभेदः, जे० दा० ॥

अकारजातीसामण्ठो सप्तज्ञाया अद्वारस, सेसा परप्ज्ञाया, एवं संखेज्ञा पञ्ज्ञाया । अहवा अकारादिसरा कक्षारादिवंजणा केवला अप्पसाहिता वा जं अभिलाखं लभे स तस्स सप्तज्ञायो, सेसा तस्स परप्ज्ञाया, ते य सच्चे वि अण्ठता । जतो सुते भणितं—“अण्ठता गमा अण्ठता पञ्ज्ञया” । [सू० ८५ तः १४ आदि] भणितं च—

पणवणिज्ञा० गाहा [कल्पभा. गा. ९६४] । अक्खरलंभेण० गाहा [विशेषा. गा. १४३] । अणभिलप्पाण  
अभिलप्पा अणतभागो, तेसि पि अणतभागो मुतनिवद्धो इति । अहवा अकारादिअक्खराण पञ्जाया सब्बदब्ब-  
पञ्जायरासिप्पमाणमेत्ता भवंति । कहं ? उच्यते—जे अभिलावतो संजुन्ना-इसंजुन्नेहि अक्खरेहि उद्दत्ता-उणुदत्तेहि य  
सरेहि जावतिए अभिलावे अभिलप्पे य लभति ते सब्बे तस्स सपञ्जया, सेसा लब्बे तस्सेव परपञ्जया ।  
आकासं मोत्तुं सब्बस्स सपञ्जएहितो परपञ्जया अणतगुणा । आकासस्स सपञ्जएहितो परपञ्जया अणतभागे । पर  
आह—कहं तस्सेव परपञ्जया य ? णण् विस्तुं, उच्यते—सब्बक्षुतण घडाइवत्थुणो वा दुविहा पञ्जया चिंतिज्जंति—  
संबद्धा असंबद्धा य । तत्थ अकारस्य अकारपञ्जया अकारभावत्तणतो अतिथितेण संबद्धा, घडागारावस्थायां १०  
घटपर्यायवत्; ते चेव णतिथितेण असंबद्धा, नतिथितस्स अभावत्तणतो, जहा घटाकारावस्थायां मृत्पर्यायवत् ।  
अकारे इकारादिपर्याया णतिथितेण संबद्धा, अकारे णतिथितभावत्तणतो, जहा मृदवस्थायां पिंडाकारपर्यायवत्;  
ते चेव अतिथितेण असंबद्धा, अतिथितअभावत्तणतो, घटाद्यनस्थायां पटपर्यायवत् । एवं अक्खरेसु घडाइपञ्जाया  
वि चिंतणिज्ञा, घडादिसु य अका(?) क्खरपञ्जाया, इस्त्वेवं एकेकमक्खरं सब्बपञ्जौयम् ॥ [जे० २१३ प्र०]

एवं सर्वात्मकाः सर्वपर्यायाः, अतो भण्णति-सञ्चागासपदेसम्गं अण्णतगुणितं पञ्जबम् अक्खरं निष्फज्जति ॥ १५  
एवं नाणकखरं अकारादिअक्खरं पोयअक्खरं च तिष्ण वि अण्णताऽभिहिता । एत्थ नाणकखरं जै तं जीवस्स  
संसारत्थस्त ण कताइ ण भवति च्छ । जतो भणितं —

७५. सैवजीवाणं पि य णं अक्खरस्स अण्टभागो णिन्हुग्धाडियओ, जेति पुण सी  
वि आवरिज्जा तेण जीवो अजीर्वत्तं पावेझ्जा ।

सुदृढु वि मेहममुदाए होति पभा चंद-सूराणं ।

से तं सांदीयं सप्तज्जवसियं । से तं अणादीतं अप्तज्जवसितं ७ । ८ । ९ । १० ।

७६. सन्दर्भजीवाणं पि य णं इत्यादि सुन्ति । सब्वजीवग्रहणे वि सति 'अवि' पदत्थसंभावणे, किं संभावयति ? इमं-सिद्धे मोऽनुं, चसद्वतो य भवत्थकेवली मोऽनुं । 'णं'कारो वाक्यालंकारे । अकर्वरं द्वि-माणं, तस्स अणं-

१ 'रेसु णतिथ्तमावत्तणतो घडादपउजाया आ० दा० । 'रेसु घडेसु घड इव पउजाया मो० ॥ २ 'जायमयै ।  
एवं आ० दा० । "जायमयं । एवं सर्वशक्ताः सर्वं" मो० ॥ ३ द्वादशारनयनक्रृतौ इदं सूत्रमिथ्ये वर्तते—सव्यजीवाणं पि य  
णं अष्टखरस्स अण्टततमो भागो पित्त्वाग्वादितथो ।

तं पि जदि आवरिज्जित्त सेण जीवा अजीवतं पावे । सुदृढु वि मेहसमुदये होइ पभा चंद-सूराणं ॥१॥  
 अत्रैव च नयनकप्रत्यग्नतरे अणंतभागो इति जीवो अजीवते इति च पाठमेदोऽल्पुपलम्ब्यते ॥ ४ उद्धिओ सं० चूर्णि च विना ॥  
 ५ अत्र चूर्णिकृता चूर्णि जति पुण सो वि वरिज्जेज्ज इत्यादि गाथैयोक्तिखिताऽस्ति, नयनको स्वरणेऽपि पाठमेदेन गाथव दृश्यते,  
 अस्मत्स्वीकृतसूत्रप्रतिषु ये विविधाः पाठमेदा वर्तन्ते, यच्च पाठस्य स्वरूपमीक्षयते, एतत्सर्वविचारणेन सम्भाव्यते यदत्र सूत्रे गाथैव भ्रष्टता  
 आप्ताऽस्ति । वृत्तिकृतोराचार्ययोः पुनरञ्ज किं गयं गाथा वा मान्याऽस्ति ? इति न सम्यगवगम्यते, तथापि वृत्तिस्वरूपावलोकनेन गाथैव तेषां  
 सम्भाव्यते ॥ ६ सो वि वरिज्जेज्जा सं० शु० । सो वाऽवरिज्जेज्ज खं० ॥ ७ सेणं जे० मो० मु० ॥ ८ अजीवतं  
 ल० ॥ ९ पावेज्ज सं० ॥ १० सादि सप० सं० शु० । सआदि सप० ल० ॥

तभागो निचुम्याडियतो, सो केवलस्स न संभवति, केवलस्स अधिभागसंपुण्णताणतो य; ओर्धीए वि ण संभवति, अण्टभागस्स अभावत्तचणतो, अवधेः असंख्येयप्रकृतिसंभवादित्यर्थः; मण्यजवनाणे वि रिजु-विपुलदुभेदसंभवतो अण्टभागो ण भवति, किञ्च अवधि-मण्यपञ्जवाणं पिचुम्याडअभावत्तचणतो इह अणधिकारो; परिसिद्धे मति-मुते त्ति 'अक्खरस्स अण्टभागो निचुम्याडिययो' अधिकत्तसुतस्स वा अक्खरस्स अण्टभागो निचुम्याडियतो । जत्थ  
५ सुतं तत्थ मतिणाणं पि वेत्तव्यं । 'णिव्य' ति सञ्चकालं । 'उम्याडिततो' ति णाऽऽवरिज्जति । सो य अण्टभागो  
शुद्धादिएगिंदियाण वि पंचष्ठं निचुम्याडो, अहवा सञ्चजहणो अण्टभागो निचुम्याडो पुढिकाइए, चैतन्यमात्र-  
मात्मनः । तं च उक्तोसथीणिदिसहितनाण-दंसणावरणोदए वि णो आवरिज्जति ।

जति पुण सो वि वरिज्जते तेण जीवो अजीवयं पावे । सुदृढु वि मेहसमुदए होति पहा चंद-सूरणं ॥१॥

[ कल्पभाष्ये गा. ७४ ]

१० जम्हा सो णाऽऽवरिज्जति तम्हा जीवो जीवतं ण परिच्छयति । सो य कम्हा णाऽऽवरिज्जति? उच्यते-दब्ब-  
सभावसख्तचणतो । इह विद्वंतो जहा—युद्ध वि मेहन्तादिए णमे चंद-सूरणहा मेहपैडले भेत्तुं दब्बे ओभासति, तहा  
अणंतेहिं णाण-दंसणावरणकम्मपुणलेहिं एकेको आतप्पदेसो आवेदियपरिवेहितो ते कम्मावरणफडले भेत्तुं नाणस्स  
अणंतभागो उच्चरति, [जे० २१३ द्वि०] ततो य से अब्बतं नाणमक्खरं सञ्चजहणं भवति । ततो पुढिकाइ-  
तेहितो आउकातियाण अणंतभागेण विसुद्धतरं नाणमक्खरं, एवं कमेण तेउ-वाउ-णाससति-चेद्दिय-तेइंदिय-चहुर्दि-  
१५ दिय-असणिंपचेदिय-सणिंपचेदियाण य विसुद्धतरं भवतीत्यर्थः । ७ । ८ । ९ । १० ॥ भणितं सादि सपज्जवसितं  
अणादि अपज्जवसितं च । एत्येव प्रसंगतो अक्खरपडलं भणितं ।

एवं बहुवत्तव्यं अक्खरपडलं समासतोऽभिहितं । वित्यरतो से अत्थं जिण-चोहसपुष्पिया कहए ॥१॥

[ ॥ अक्खरपडलं सम्मतं ॥ ]

इदाणि गमिया-ऽगमियं—

२० ७६. से किं तं गमियं? गमियं दिट्ठिवाओ । अगमियं कालितं सुयं । से तं गमियं ।  
से तं अगमियं १३ । १२ ।

७६. गमबहुलत्तचणतो गमियं । तस्स लक्खणं—आदि-भज्ज-उक्तसाणे वा किञ्चिविसौसजुतं सुतं दुगादिस-  
तम्गसो तमेव पटिजमाणं गमियं भण्णति, तं च एवंविद्मुस्सणं दिट्ठिवातो । अणोणक्खराभिधाणहितं जं  
पटिजति तं अगमियं, तं च मायसो आयाशादि कालियसुतं ११ । १२ ॥

२५ ७७. उक्तं गमिया-ऽगमियं । इदाणि अंगा-अणंग-पविद्वं—तं च गमिया-ऽगमियं चेव समासतो अंगा-अणंगपविद्वं  
भण्णति । कहं? उच्यते—सञ्चसुतस्स तञ्चभावत्तगत्तचणतो ।

७७. अहवा तं समासओ दुविहं पण्णतं, तं जहा-अंगपविद्वं अंगचाहिरं च ।

७८. अहवा अरिहत्तमगोवद्वाणुसारि सुतं जं तं समासतो दुविहं इत्यादि सुतं ।

१ 'पडले आ० दा० ॥ २ अत्थं बहु० आ० दा० ॥ ३ अहवा इति ख० स० ल० शु० नास्ति ॥ ४ 'हुं च अंग०  
जे० ॥ ५ अणंगपविद्वं च ख० स० श० ल० शु० ॥

गमियाऽगमियं गच्छा हिरुक्कल्याद्युयणाणे । सिरिदेववायगविरह्यं जंदीसुतं ।

५७

पायदुर्गं जंदोर्लं गातदुगदं तु दो य बाहूयो । गीवा सिरं च पुरिसो बारसर्वगो सुतविसिद्धो ॥ १ ॥

[ ]

इच्चेष्टस्तु सुतपुरिसस्तु जं सुतं अंगभावभागद्वितं तं अंगपविहं भण्णति । जं पुण एतस्सेव सुतपुरिसस्तु नडे-  
गद्वितं तं अंगबाहिरं ति भण्णति । अहवा—

गणहरकतमंगगतं जं कत थेरेहि बाहिरं तं च । णियतं वंगपविहं अणियत सुत बाहिरं भणितं ॥ २ ॥

[ ]

७८. से किं तं अंगबाहिरं ? अंगबाहिरं दुविहं पण्णतं, तं जहा-आवस्सगं च आव-  
स्सगवइरितं च ।

७९. से किं तं आवस्सगं ? आवस्सगं छविहं पण्णतं, तं जहा-सामायियं १ चउ-  
वीसत्यओ २ वंदैण्यं ३ पदिक्कमणं ४ काउस्सगो ५ पञ्चक्खाणं ६ । से चं आवस्सयं ।

७८-७९. से किं तं अंगबाहिरमिल्यादि । कंठं ॥

८०. से किं तं आवस्सयवइरितं ? आवस्सयवइरितं दुविहं पण्णतं, तं जहा-कालियं  
च उकालियं च ।

८०. आवस्सगवतिरितं दुविहं—कालियं उकालियं च । तत्वं ‘कालियं’ जं दिण-रातीणं पदम-  
चरिमपोरिसीमु पढिज्जति । जं पुण कालवेलवजं पढिज्जति तं उकालियं ॥ तत्व—

१५

८१. से किं तं उकालियं ? उकालियं अणेगविहं पण्णतं, तं जहा-दसवेयालियं १  
कणियाकणियं २ चुल्कप्पसुतं ३ महाकप्पसुतं ४ ओवाइयं ५ रायपसेणियं ६ जीवाभिगमो  
७ पण्णवणा ८ महापण्णवणा ९ पमायप्पमादं १० नंदी ११ अणुओगदाराइ १२ देविदत्थओ  
१३ तंदुलवेयालियं १४ चंदावेज्जयं १५ सूरपण्णती १६ पोरिसिमंडलं १७ मंडलप्पवेसो १८  
विज्ञाचरणविणिच्छओ १९ गणविज्ञा २० झाणविभत्ती २१ मरणविभत्ती २२ आयवि-  
सोही २३ वीयरायसुतं २४ संलेहणसुतं २५ विहारकपो २६ चरणविही २७ आउरपञ्चक्खाणं  
२८ महापञ्चक्खाणं २९ । से चं उकालियं ।

८१. उकालियं अणेगविहं दसवेयालियादि । कप्पमकप्पं च जत्थ सुते वण्णज्जति तं कणियाकणियं  
२ । कप्पं जत्थ सुते वण्णितं तं कप्पसुतं, अणेगविहचरणकप्पगाकप्पयं [जे० २११ प्र०] च कप्पसुतं । तं  
दुविहं—चुल्हं महंतं च । चुल्हं ति—लहुतरं अवित्थरत्थं अप्पगंयं च चुल्कप्पसुतं ३ । महत्थं महागंयं च महा-

१-२ अप्पगपविहं सं० से डे० ल० शु० ॥ ३ वंदणं खं० सं० डे० ल० शु० ॥ ४ काओसेसगो खं० ॥ ५ “ओवाइयं” ति  
प्राकृतत्वाद् वर्णलोपे औपातिकम्” इति पाक्षिकसूत्रवृत्तो । उववाइयं शु० सु० ॥ ६ रायपसेणियं खं० । रायपसेणियं डे०  
ल० शु० ॥ ७ “क्खाणं २९ पवमाद् । से ज्ञं जे० मो० मु० । पवमाद् इति सूत्रपदं चूर्णि-शूत्तिलिङ्गिनस्ति व्याख्यातम् । अपि  
च जेत्सु० प्रतौ अन्नार्थे “टीकायाभिदं न हरयते” इति विष्णवकमयि वर्तते ॥

शु० ८

कप्पसुतं ४ । एमेव [ पेणवणा ] पणवणत्थो सवित्थरो ८ । अणो य सवित्थरत्था जत्थ भणिता सा महा-  
पणवणा ९ । मज्जादियो पंचविहो पमान्तो, तेसु चेव आभोगपुनिया उवरती अप्पमातो, एते जत्थ सवित्थरत्था  
दंसिज्जंति तमज्जयणं पमादप्पमादं १० । सूरचरितं पणविज्ञते जत्थ सा सूरपणस्ती १६ । पुरिसो च्च-संकृ  
पुरिससरीरं वा, ततो पुरिसातो निष्कणा पोरिसी, एवं सञ्चस्त्र वत्युणो जदा स्वप्रमाणा च्छाया भवति तदा  
५ पोरिसी भवति, एतं पोरिसिप्रमाणं उत्तरायणस्त्र अंते दक्खिणायणस्त्र य आदीए एकं दिणं भवति, अतो परं अद्व  
एकसद्विभागा अंगुलस्त्र दक्खिणायणे बहुदंति, उत्तरायणे य इसंति, एवं मंडले मंडले अणोणा पोरिसी जत्थ  
अज्जयणे दंसिज्जति तमज्जयणं पोरिसिमंडलं १७ । चंदस्त्र सूरस्त्र य दाहिणुतरेमु मंडलेमु जहा मंडलातो मंडले  
पवेसो तहा वणिज्जति जत्थउज्जयणे तमज्जयणं मंडलप्पवेसो १८ । चिज्ज च्च-नाणं, चरणं-चारितं, विविधो  
विसिद्धो वा णिच्छयो-सञ्चावो स्वरूपमित्यर्थः, फलं वा निच्छयो, तं जत्थउज्जयणे वणिज्जति तमज्जयणं विज्ञा-  
१० चरणविधिच्छयो १९ । सबाल-बुद्धाडलो गच्छो गणो, सो जस्त्र अस्थि सो गणी, विज्ज च्च-णाणं, तं च  
जोइसनिमित्तमतं णातुं पसत्थेमु इमे कज्जे करेति, तं जहा-पव्वावणा १ सामाइयारोवणं २ उवद्वावणा ३ सुतस्त्र  
उद्देस-समुद्देसा-उणुणातो ४ गणारोवणं ५ दिसापुण्णा ६ खेत्तेमु य णिग्गम-पवेसा ७, एमाइया कज्जा जेसु तिहि-  
करण-णकखत्त-मुहुत्त-जोगेमु य जे जत्थ करणिज्जा [ जे० २१४ द्वि० ] ते जत्थउज्जयणे वणिज्जति तमज्जयणं  
गणिविज्जा २० । शिरमज्जवसाणं झाणं, विभयणं विभत्ती, सभेदं झाणं जत्थ वणिज्जति अज्जयणे तमज्जयणं  
१५ झाणविभत्ती २१ । मरणं-पाणपरिचागो, विभयणं-विभत्ती, पसत्थमपसत्थाणि सभेदाणि मरणाणि जत्थ  
वणिज्जति अज्जयणे तमज्जयणं मरणविभत्ती २२ । आत च्च-आत्मा, तस्त्र चिसोही तवेण चरणगुणेहि य  
आलोच्यणाविहाणेण य जहा भवति तहा जत्थ अज्जयणे वणिज्जति तमज्जयणं आतचिसोही २३ । सरागो  
वीतरागो य एतेसि जत्थ सरूपकहणा, विसेसतो वीतरागस्त्र, तमज्जयणं वीतरागसुतं २४ । वाघातो निव्वाघातो  
वा भत्तसंलेहो कसायादिभावसंलेहो य जो जहा कातव्यो तहा वणिज्जते जत्थउज्जयणे तमज्जयणं संलेहणासुतं  
२५ । विहरणं विहारो, तस्त्र कप्पो-विधि च्च बुत्तं भवति, सो जिणकप्पे थेरकप्पे वा, जिणकप्पे पडिम-बहालंद-  
परिहारिया य दृढव्वा, एतेसि सवित्थरो विधी जत्थ अज्जयणे [ वणिज्जति ] तमज्जयणं विहारकप्पो २६ ।  
चरणं-चारितं, तस्त्र चिह्नी चरणविही, सभेदो चरणविही वणिज्जति जत्थ अज्जयणे तमज्जयणं चरणविही २७ ।  
आउरो-गिलाणो, तं किरियातीतं णातुं गीतत्था पचकखावेति, दिणे दिणे दृव्वहासं करेता अंते य सञ्चदञ्चदात-  
णताए भत्ते वेरगं जाणेता भत्ते निसाहस्त्र भवचरिमपचकखाणं कारेति, एतं जत्थउज्जयणे सवित्थरं वणिज्जह  
२५ तमज्जयणं आउरपचकखाणं २८ । थेरकप्पेण जिणकप्पेण वा विहरित्ता अंते थेरकप्पिया वारस वासे संलेहं  
करेता, जिणकप्पिया पुण विहारेणेव [ जे० २१५ प्र० ] संलीढा तहा वि जहाजुत्तं संलेहं करेता निव्वाघातं सचेद्वा  
चेव भवचरिमं पचकखंति, एतं सवित्थरं जत्थउज्जयणे वणिज्जति तमज्जयणं महापचकखाणं २९ । एते  
अज्जयणा जहाभिधाणत्था भणिया ॥

उक्तं उकालियं । इदाणि कालियं—

३० १२. से किं तं कालियं ? कालियं अणेगविहं पणत्तं, तं जहा-उत्तरज्जयणादं १  
दसाओ २ कप्पो ३ ववहारो ४ णिसीहं ५ महाणिसीहं ६ इसिभासियादं ७ जंबुहीवपणती

१ “जीवाचीनां प्रज्ञापनं प्रज्ञापना” इति हारिंदुक्ती ॥ २ कालियं अणेगपविहं ? कालियं अणेगपविहं अणेग ॥ सं-  
स० शु० । नायं पाठश्चूर्णि-वृत्तिकृतां सम्पतोऽस्ति ॥

८ दीवसाग्रस्पण्णती ९ चंदपण्णती १० खुड्डियाविमाणपविभत्ती ११ महल्लियाविमाणपविभत्ती १२ अंगचूलिया १३ वैगचूलिया १४ विंशाहचूलिया १५ अरुणोववाए १६ गरुलोववाए १७ धरणोववाए १८ वेसमणोववाए १९ देविदोववाए २० वेलंधरोववाए २१ उद्वाणसुयं २२ समु-  
द्वाणसुयं २३ नागपरियाणियाओ २४ निरयावलियाओ २५ कप्पवडिसियाओ २६ पुष्पियाओ  
२७ शुक्रचूलियाओ २८ वैष्णविदसाओ २९ ।

८२. से किं तं कालियं इत्यादि भुत्तं । जं इमस्स निसीहस्स सुन्तत्येहि वित्थिष्णतरं तं महागिसीहं  
६ । सोहम्मादिसु जे विमणा ते आवलितेतरठिते प्रतिविभागेण विभयइ जमज्जयणं तं विमाणपविभत्ती  
भण्णति । ते य दो अज्जयणा-तत्थेण सुन्तत्येहि संवित्ततरं खुहुं ति ११, वितियं सुन्तत्येहि, वित्थिष्णतरं महल्लं  
ति १२ । अंगस्स चूलिता जहा-आयारस्स पंच चूलातो, दिड्डिचातस्स वा चूला १३ । वम्मो ति विवक्खाव-  
सातो अज्जयणादिसमूहो वग्गो, जहा अंतकड्डिसाणं अहु वग्गा, अणुत्तरोववातियदसाणं तिणिं वग्गा, तेर्वि चूला १०  
वरगचूला १४ । वियाहो भगवती, तीए चूला वियाहचूला, पुञ्चभणितो अभणियो य समावतो चूलाए अथो  
भण्णतेत्यर्थः १५ । अरुणे णामं देवे तस्समयनिवद्दे अज्जयणे, जाहे तं अज्जयणं उवउत्ते समाणे अगगारे परियड्डेति  
ताहे से अरुणे देवे समयनिवद्दत्तणतो चलितासणे जेणेव से समणे तेणेव आगच्छित्ता ओववयति, ताहे समणस्स  
पुरतो अंतद्विते कतंजली उवउत्ते सुप्पेमाणे चिङ्गति, समते य भण्णति—सुभासितं, वरेह वरं ति, इहलोगणिपित्रासे  
से समणे पडिभण्णति—ण मे वरेण अद्वो त्ति, ताहे से पद्धाहिणं करेता णमंसित्ता य पडिगच्छति १६ । ऐंवं गरुले १५

१ धंगचूं खं० सं० लं० शु० ॥ २ वियाह० शु० ल० ॥ ३ उववद्यपदान्तानि सूत्रनामानि अस्मदाहतास्वशासु यत्प्रतिषु  
चूण्यादर्शेषु हारिष्वृत्तौ मल्यगिरिवृत्तौ पाक्षिकसूत्रयशोदेवीयवृत्तौ च क्रमव्यत्यासैन न्यूनाधिकभावेन च वर्तते । तथाहि—  
अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए धरणोववाए वेसमणोववाए वेलंधरोववाए देविदोववाए उद्वाण० जेस० मोस०  
मुस० । अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए धरणोववाए वेलंधरोववाए देविदोववाए वेसमणोववाए उद्वाण० डे० ।  
अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेलंधरोववाए देविदोववाए उद्वाण० खं० । अरुणोववाए वेलंधरोववाए देविदोववाए वेस-  
मणोववाए उद्वाण० ल० । अथ च—अरुणोववाए इति सूत्रनामव्याख्यानानन्तरं हरिभद्रवृत्तौ “एवं वरुणोववाक्षायितु नि भाणियन्व”  
इति, मल्यगिरिवृत्तौ च “एतं गरुडोपपातादिष्पि भावना कायां” इति, पाक्षिकसूत्रवृत्तौ च “एवं वरुणोपपात-गरुडोपपात-  
घैथमणोपपात-वेलंधरोपपात-देवेन्द्रोपपातेष्वपि वाच्यम्” इति निर्दिष्ट वश्यते । चूण्यादर्शेषु पुनः पाठमेऽन्यं वश्यते—१ श्री-  
सागरानन्दसुरिमुद्रिते चूण्यादर्शेषु [पत्र ४५] “एवं गरुले वरुणे वेसमणे सक्के-देविदे वेलंधरे य त्ति” इति, २ श्रीविजयदान-  
स्त्रिसम्यादिते मुद्रितचूण्यादर्शेषु [पत्र १०-१] “एवं वरुणे गरुले धरणे वेसमणे वेलंधरे सक्के-देविदे य त्ति” इति, ३ अस्मा-  
भिराहते शुद्धतमे जेसलमेस्सत्के ताल्पत्रीयप्राचीनतमचूण्यादर्शेषु च “एवं गरुले धरणे वेसमणे सक्के-देविदे वेलंधरे य त्ति” इति  
च । श्रीसागरानन्दसूरीयो वाचनामेद आदशान्तरेषु प्राप्यते, श्रीदानसूरीयो वाचनामेदस्तु नोपलभ्यते कर्स्मधिदप्यादर्शेषु इत्यतः सम्मा-  
ब्यते—श्रीभद्रिदानिसूरिभिः सुद्रितयात्मादर्शे-चूण्यादर्शान्तर-हारिष्वृत्ति-पाक्षिकवृत्त्याधवलोकमेन पाठगलनसम्भावनया सूत्रनामप्रक्षेपः क्रममेऽ-  
श्वपि विहितोऽस्तीति । अस्मामित्तु जेसलमेरीयचूणिप्रत्यनुसारेण यत्रपाठे मूले स्थापितोऽस्तीति ॥ ४ परियावणियाओ जे० सं० डे० शु० ।  
५ याओ कणियाओ कप्पवड्डे० संवासु सूत्रप्रतिषु । श्रीमता चूणिकृता कणियाओ इति  
नाम आहते नास्ति । किंव-सप्तस्त्रिपि नन्दिसूत्रप्रतिषु एदशाम वश्यते, श्रीहरिभद्रसूरि-मल्यगिरिवृत्योः पाक्षिकसूत्रटीकायां  
चापि एतशामव्याख्यानं वर्तते । तथाहि—“कणियाओ” तें सौधमादिकलगतवक्तव्यनागोचरा शन्धापद्धतयः कलिपका उच्चन्ते ।  
नन्दीहारिष्वृत्योः । एतत्समानेव व्याख्या मल्यगिरिवृत्तौ पाक्षिकटीकायां च वर्तते ॥ ६ वण्डीदसाओ इति नामः प्राक्  
वण्डीयाओ इत्यधिके नाम शु० । नेदं नाम चूणिचूत्यादिषु व्याख्यातं निर्दिष्ट वाऽस्ति ॥ ७ पवं गरुले वरुणे वेसमणे सक्के-  
देविदे वेलंधरे य त्ति आ० मो० । यवं वरुणे गरुले धरणे वेसमणे वेलंधरे सक्के-देविदे य त्ति दा० ॥

१७ धरणे १८ चेसमणे १९ सङ्केदेवेदे २० वेलंधरे २१ य त्ति । 'उद्गाणसुतं' ति अज्ञायणं सिंगणाइयकज्जे जस्स पं गामस्स वा जाव रायहाणीए वा एगकुलस वा समणे आसुरुते रुहे उबउत्ते तं उद्गाणसुते ति अज्ञायणं परियद्वेति एकं दो तिष्ठि वा वारे ताहे से गामे वा जाव रायहाणी वा कुल वा उद्वेति, उब्सइ ति चुत्तं भवति २२ । से चेव समणे [ जे० २१७ द्व० ] तस्स गामस्स वा जाव रायहाणीए वा तुडे समाणे पसण्णलेस्से ५ सुहासणत्ये उबउत्ते समुद्गाणसुतं परियद्वेति एकं दो तिष्ठि वा वारे ताहे से गामे वा जाव रायहाणी वा आवासेति । समुवद्गाणसुते त्ति वत्तव्वे वगारलोवातो समुद्गाणसुते त्ति भणितं । अप्पणा पुञ्चुद्वियं पि कतसंकप्पस्स आवासेति २३ । 'णागपरियाणिय' त्ति अज्ञायणे णाग त्ति-नागकुमारे, तेमु समयनिवद्वं अज्ञायणं, तं जदा समणे उबयुत्ते परियद्वेति तया अकतसंकप्पस्स वि ते णागकुमारा तत्थत्था चेव परियाणंति, वंदंति णमंसंति भत्तिवहुमाणं च करेति, सिंगणाइयकज्जे सु य वरया भवंतीत्यर्थः २४ । निरयावलियासु आवलियपविद्वेतरे य निरया तग्गामिणो १० य णर-तिरिया पसंगतो चण्णिज्जंति २५ । सोहम्मीसाणकप्पेगु जे कप्पविमाणा ते कप्पवडेसया ते चण्णिता, तेमु य देवीओ जा जेण तचोविसेसेण उबवण्णा ता चण्णिता, ताओ य कप्पवडेसिया भणिया २६ । संजमभाव-चिगसितो पुणितो, संजमभावविचुतोऽत्रपुणितो, अगारभावं परिद्वेत्ता पञ्चजाभावेण चिगसितो पञ्चा सीयह जो, तस्स इहभवे परभवे य विलंबणा दंसिज्जः ज्ञथ ता पुणिया २७ । एसेवद्वत्तो सविसेसो पुण्कनूलाए दंसिज्जति २८ । अंधगवणिहणो जे कुले ते अंधगसद्वावातो चण्णिहणो भणिया, तेसि चरियं गती सिज्जणा य १५ ज्ञथ भणिता ता चण्णिदसातो । दस त्ति-अवत्था अज्ञायणा वा २९ ॥

८३. एवमाइयाइं चउरासीतीपइण्णगसहस्राइं भंगवतो अरहओ उसहस्र आइतित्यय-  
रस्स, तहा संखेज्जाणि पइण्णगसहस्राणि मज्जिमगाणं जिणवराणं, चोहस पइण्णगसह-  
स्राणि भगवओ वद्धमाणसामिस्स । अहवा जस्स जत्तिया सिस्सा उप्तत्तियाए वेणतियाए  
कम्मयाए पारिणामियाए चउविहाए चुद्धीए उववेया तस्स तत्तियाइं पइण्णगसहस्राइं, पत्तेय-  
२० बुद्धा वि तत्तिया चेव । से तं कालियं । से तं आवस्यवद्वित्ति । से तं अणंगपविद्वं ।

८४. भगवओ उसभस्स चउरासीतिसभणसाहस्रीतो होत्था, पइण्णगज्जयणा वि सब्बे कालिय-उक्कालिया चतुरासीतिसहस्रा । कहैं ? जतो ते चतुरासीति समणसहस्रा अरहंतमग्नउवदिडे जं, चुतमणुसरित्ता किंचि णिज्जहते ते सब्बे पइण्णगा, अहवा चुतमणुसरतो अप्पणो वयणकोसल्लेण जं धम्मदेस्मादिमु भासंते तं सब्बं पइण्णगं, जम्हा अणंतगमपज्जयं सुत्तं दिङ्गं । तं च वयणं नियमा अणंतरगमाणुपाती भवति तम्हा तं [ जे० २१६ प्र० ] २५ पइण्णगं । एवं चतुरासीती पइण्णगसहस्रा भवंतीत्यर्थः । एतेण विधिणा मज्जिमतित्यगराणं संखेज्जा पइण्णगस-  
हस्रा । समणस्स वि भगवतो जम्हा चोहस समणसाहस्रीतो उकोसिया समणसंपदा तम्हा चोहस पइण्णगज्जय-

१ 'याति सं० ॥ २ भगवओ अरहओ सिरिउसहस्रामिस्स, मज्जिमगाणं जिणाणं संखेज्जाणि पइण्णगसह-  
स्राणि, चोहसं सं० डे० । भगवओ अरहओ उसहस्र समणाणं, मज्जिमगाणं इत्यादि शु० । भगवओ उसहरिसि-  
(सिरि)स्स समणस्स, मज्जिमगाणं इत्यादि लं० ल० । श्रयाणामाल्लेण पाठमेदानां मज्जिमगाणं इत्याद्युत्तराशेन समानत्वेऽपि  
नेकतरोऽपि पाठो बृत्तिकृतोः रामतः । ईसेकुद्धयो तु मूले आहत एव पाठो गृहीतोऽस्ति । चूर्णिकृता पुनः सं० डे० पाठानुसारेण  
व्याख्यातमस्तीति सम्भाव्यते ॥ ३ सिरिउसहस्रामिस्स आइ० सं० । अब चूर्णिकृता उसहस्र इति, हरिभद्रसूरिणा सिरिउ-  
सहस्र इति मलयगिरिणा च सिरिउसहस्रामिस्स इति पाठोऽङ्गीकृतोऽस्ति ॥ ४ सीक्षा लं० सं० चूर्णिं विना ॥

णसहस्रा भवति । अहवा 'जन्तिया सिस्ता' इत्यादि मुत्तं । इह मुत्ते अपरिमाणा पश्चिमा पश्चिमाण-  
क्षणतो, किंच इह मुत्ते पत्तेयबुद्धपणीतं पश्चिमं भाणितव्यं । कम्हा? जम्हा पश्चिमाणयरिमाणेण चेत् पत्तेयबुद्धपरि-  
माणं कीरद त्ति भणितं 'पत्तेयबुद्धा वेत्तिया चेव' त्ति । चोदक आह-णणु पत्तेयबुद्धा सिस्तमात्रो य विरुद्धते ?  
आचार्याह-तित्यगरपणीयसासुणपडिवभृत्यणतो तस्तीसा भवतीत्यर्थः ॥

भणितं कालितमुत्तं अंगवाहिरं च । इदाणि अंगपविद्वं—

५

८३. से किं तं अंगपविद्वं? अंगपविद्वं दुवाल्सविहं पण्णतं, तं जहा-आयारे १ सूये-  
गडो २ डाणं ३ समवाओ ४ वियाहपण्णती ५ णायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगड-  
दसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइं १० विवागमुत्तं ११ दिद्विवाओ १२ ।

८४. से किं तं अंगपविद्वं इत्यादि मुत्तम् ॥

८५. से किं तं आयारे? आयारे णं समणाणं णिमंथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय- १०  
सिक्खा-भासा-अभासा-चरण-करण-जाया-माया-वित्तीओ आघविज्जंति । से समासओ पंच-  
विहे पण्णत्ते, तं जहा-णणायारे १ दंसणायारे २ चरित्तायारे ३ तवायारे ४ वीरियायारे ५ ।  
आयारे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा,  
संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगद्वयाए पढमे अंगे, दो  
मुयक्खंथा, पणुवीसं अज्ञायणा, पंचासीती उद्देसणकाला, पंचासीती समुद्देसणकाला, अद्वा- १५  
स स पयसहस्राइं पदगोणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा,  
अणंता थावरा । सासत-कड-णिकद्व-णिकाइया जिणपण्णता भावा आघविज्जंति पण्ण-  
विज्जंति परुविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं नाया,  
एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरुवंणा आघविज्जइ । से तं औयारे १ ।

८६. [से किं तं आयारे इत्यादि मुत्तं] । आयरणं आयारो । गोयरो-मिक्खागहणविधाणं । विषयो- २०  
णाणातियो तिविहो वाचण्णविधाणो वा । वेणइया-सीसा, तेसि जहा आसेवणसिक्खा । भासा-सञ्चा असञ्चामोसा  
य । अभासा-मोसा सञ्चामोसा य । चरण-“वत्समिति०” गाहा [ ] १ करण-“फिंडस्स जा

१ इह तित्ये अपरिमाणा इति पाठो मलयगिरिसुर्युद्वच्छुद्वरणे ॥ २ सूयगडं सं० ॥ ३ विचाहूं लं० विना ॥  
४ वाहणा ल० ॥ ५ चूर्णीं संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, इति पाठो व्यत्यसेन व्याख्यातोऽस्ति ॥  
६-७ ‘सीईं ल० ॥ ८ ‘स्साति शु० । ‘स्साणि भो० सु० ॥ ९ चूर्णिकृता एवंआया इति पाठो न गृहीतो न च व्याख्यातोऽस्ति,  
किन्तु श्रीहरिभद्रसूरिणा श्रीमलयगिरिणा च एष पाठो गृहीतोऽस्ति, साम्ब्रतं च प्राप्तासु सर्वस्त्रियि नन्दीसूत्रमूलप्रतिष्ठु एष पाठो  
हृयते । समवायाङ्गसूत्रवृत्तादभयदेवस्त्रियि एवंआया इति पाठो नन्दीसूत्रवृत्तेनाऽदृतो व्याख्याताथापि हृयते । तेरेऽ च तत्र स्पष्टं  
विदिष्टं यद-असौ पाठो न समवायाङ्गसूत्रप्रतिष्ठु वत्तत इति । एतच्चेदं सूचयति यत-चूर्णिकारप्राप्तप्रतिष्ठो भिन्ना एव नन्दीसूत्रप्रतयो  
हरिभद्रादीनां समक्षमासन्, तथाऽभयदेवसूरिप्राप्तासु समवायाङ्गसूत्रप्रतिष्ठु एष पाठो नासीत् । सम्यति प्राप्तमाणासु च समवा-  
याङ्गसूत्रस्य कृतिपयासु प्रतिष्ठु दश्यमान एष पाठोऽभयदेवसूरिनिक्षिप्त-व्याख्यातगाठातुरोधनैत्राऽयात इति समाव्यते ॥ १० ‘वण्णया  
आ० खं० ल० ॥ ११ आचारे ल० ॥

किसोही०” गाहा [ अब्र. भा. उ. १ गा. २८९ ]। जाय त्ति—संजमजत्ता, तस्स साहणत्यं आहारो मात त्ति—मात्राजुत्तो वेत्तव्वो । वर्तने वृत्ती । एतं सब्बं आयारे ‘आघविज्जै’ त्ति आख्यायते । सुत्तमत्थस्स य पदाणं वायणा सा परित्ता, अणंता ण भवति, आदि-अंतोवलंभत्तणतो । अहवा ओसपिणि-उसपिणिकालं वा पहुच परित्ता, तीता-ज्ञागत-सञ्चर्जं च पहुच अणंता । उवकमादि यामादिपिखेवकरणं च अणियोगदारा, ते आयारे संखेज्जा, तेर्सि पण्व-० गवयणगोयरत्तणतो । वेहो—छंदजाती । ‘पडिवत्तीओ’ त्ति दव्वादिपदत्थन्मुक्तगमो पडिमा-अभिभावविसेसा य पडिवत्तीओ, ते समासतो मुत्तपडिवद्वा संखेज्जा । तिविहा जेण निक्खेवमादिनिल्लुत्ती तेण संखेज्जा । यव वंभन्नेरा पिंडेसणा सेज्जा इरिया भासज्जाया वल्येसणा पातेसणा [ जे० २१६ द्वि० ] ओग्गहपडिमा सत्तसत्तिकया भावणा विमोत्ती, एते एवं पिसीहवज्जा पणुवीसं अज्ञयणा । पंचासीती उद्देसणकाला । कहे ? उच्यते—अंगस्स सुतक्खं-धस्स अज्ञयणस्स उद्देसणस्स, एते चतुरो वि एको उद्देसणकालो । एवं सत्थपरिणाए सत्त उद्देसणकाला, लोग-१० विजयस्स छ, सीतोसणिज्जस्स चतुरो, समत्तस्स चतुरो, लोगसारस्स छ, धुयस्स पंच, महापरिणाए सत्त, विमो-हाततणस्स अडु, उवधाणसुतस्स चतुरो, पिंडेसणाए एकारस, सेज्जाए तिणि, इरियाए तिणि, भासज्जाताए दो, चत्थेसणाए दो, पातेसणाए दो, उग्गहपडिमाए दो, सत्तिकयाणं सत्त, भावणाए एको, विमोत्तीए एको, एते सब्बे पंचासीति । चोदक आह—जदि दो सुतक्खंधा पणुवीसं अज्ञयणा य अद्वारस पदसहस्सा पदगोणं भवति तो जं भणितं “एवंभवेरम॒इओ अटुर्वा॑पदशहस्सितो वेदो ॥” [ आचा० नि० गा० ११ ] त्ति एतं विरुद्धति ? । आचार्य आह—णणु-१५ एत्थ वि भणितं ‘सपंचचूलो अद्वारसपदसहस्सितो वेदो’ त्ति, इह मुत्ताल्यावयपदेहि सहितो वहू वहुतरो य वक्त-व्येत्यर्थः । अहवा दो सुतक्खंधा पणुवीसं अज्ञयणा य, एतं आयारग्गासहितस्स आयारस्स पमाणं भणितं । अद्वारस पदसहस्सा पुण पहमसुतक्खंधस्स षववंभवेरम॒इयस्स पमाणं । विनितत्थवद्वा य मुत्ता, गुरुदेसतो सिं अत्थो भाणितव्वो । अवखररयणाए संखेज्जा अवखरा । अभिशाणाभिव्यवसतो गमा भवति, ते य अणंता इमेण विधिणा—मुत्तं मे आउसं तेणं भगवता, तं मुत्तं मे आउसं, तहि मुत्तं मे आ०, आ मुत्तं मे आ०, तं मुत्तं मया आ०, २० तदा मुत्तं मदा आ०, तहि मुत्तं मदा आ०, एवमादिगमेहि भण्णमाणं अणंतगमं । अवखरप॒ज्जाएहि अत्थप॒ज्जाएहि य अणंतं । परित्ता तसा, अणंता ण भवति । अणंता थावरा वणप्पहस्सहिता । सासत त्ति पंचत्थकाइयाइया । कड-त्ति—कित्तिभा, पयोगतो वीससापरिणामतो [ जे० २१७ प्र० ] वा जहा अब्भा अव्मरुखादी । एते सब्बे आयारे मुत्तेण निवदा । निल्लुत्ति-संगहणि-हेतूदाहरणादिएहि य णिकाइया । किंच एते अणो य ‘जिणपणत्ता’ जिण-प्पणिया भावा ‘आघविज्जंति’ जाव उवदंसिज्जंति’ एतेर्सि पदाणं पूर्ववद् व्याख्या । एवंविहमायग्रं अहिजितुं से २५ पुरिसे ‘एवं’ त्ति जहा आयारे निवदा परुविता य तदा सब्बदव्व-भावणं णाता भवति । विविदे त्ति—अणेग्धा जाणमाणो विणाता भवति । अणणपावादुगेहितो वा विसिद्धतरे विसिद्धयरं वा जाणमाणो विणाता भवति । सेसं निगमणसुत्तं कंठं । से तं आयारे १ ॥

८६. से किं तं सूयगडे ? सूयगडे णं लोए सूइज्जै, अलोए सूइज्जै, लोया-लोए सूइज्जै, जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, जीवा-जीवा सूइज्जंति, ससमए सूइज्जै, ३० परसमए सूइज्जै, ससमय-परसमए सूइज्जै । सूयगडे णं आसीतस्स किसियावादिसयस्स, चतुरासीईए अकिसियवादीणं, सत्तद्वीए अणणाणियवादीणं, वत्तीसाए वेणइयवादीणं, तिणहं

१ ज्जंति ख० सं० ल० ॥ २ ज्जंति दे० शु० ॥ ३ असीयस्स ख० सं० विना ॥ ४ सीष ख० ॥ ५ यावा० दे० शु० मो० मु० ॥

तेसद्वाणं पावादुयसयाणं वृहं किञ्चा ससमए गविज्जइ । सूयगडे णं परिता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगद्वयाए विईए अंगे, दो सुयक्खंधा, तेवीसं अज्ञयणा, तेत्तीसं उद्देसणकाला, तेत्तीसं समुद्देसणकाला, छत्तीसं पदसहस्राणि पयग्गेण, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परिता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिवद्ध-णिकाइया ५ जिणपणत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परुविज्जंति दंसिज्जंति णिंदंसिज्जंति उव-दंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाथा, एवं विणाया, एवं चरण-करणयरूपणा आघविज्जइ । से तं सूयगडे २ ।

८६. से किं तं सूयगडेत्यादि मुत्तं । 'सूइज्जइ' चि जधा णडा द्वई तंतुणा सूइज्जइ, उवलब्मतेत्यर्थः । अहवा जहा सूर्यी पडं द्वृतेइ तहा सूयगडे जीवादेपदत्था द्वृइज्जाति । 'वृह' किञ्च चि प्रतिव्यूहं, तेण प्रतिव्यूहेन ते १० परप्पवादी णिष्पङ्ग-पसिणे कातुं ससमयसस सबभावे द्वाविज्जति । उद्देसयपरिमाणं नातुं उद्देसणकाला जाणेज्जा । सेसं कंठ । से तं सूयगडे २ ॥

८७. से किं तं ठाणे ? ठाणे णं जीवा गविज्जंति, अजीवा गविज्जंति, जीवा-इजीवा गविज्जंति, → लोए गविज्जइ, अलोए गविज्जइ, लोया-इलोए गविज्जइ, ← ससमए गविज्जइ, परसमए गविज्जइ, ससमय-परसमए गविज्जइ । ठाणे णं टंका कूडा सेला १५ सिहरिणो पब्भारा कुंडाइं गुहाओ आगरा दहा णदीओ आघविज्जंति । ठाणे णं एंगाइयाए एगुत्तस्याए तुड्डीए दसद्वाणगविवड्डियाणं भावाणं पर्वणया आघविज्जंति । ठाणे णं परिता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जु-त्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगद्वयाए तइए अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्ञयणा, एकवीसं उद्देसणकाला, एकवीसं समुद्देसणकाला, बावत्तरि २० पदसहस्राइं पयग्गेण, संखेज्जा अक्खरा, अैणंता गमा, अणंता पज्जवा, परिता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिवद्ध-णिकाइया जिणपणत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति

१ तेथद्वाणं खं० सं० जे० डे० ल० । हारि०वृत्ती समवायाङ्गसुत्रादिषु च तेसद्वाणं इति पाठो वर्तते ॥ २ पालंद्विय सयाणं जे० डे० मो० सु० । श्रीमलयगेरिभिरयमेत्र पाठ आवतोऽस्ति । ३ विदिप शु० । विईप ल० ॥ ४ वृज्जंति खं० शु० ल० डे० ॥ ५ → ← एतशिष्मथ्यवर्ती पाठः जे० मो० सु० प्रतिषु ससमय-परसमय गविज्जइ इति पाठानन्तरे वर्तते ॥ ६ ठाणे णं इति खं० सं० ल० शु० नास्ति ॥ ७ प्याइयाणं पगुत्तरियाणं दसठाणं सं० डे० ल० शु० ॥ ८ वृणा जे० मो० ॥ ९ ज्जंति खं० डे० शु० ॥ १० जे० डे० विनाऽन्यत्र सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं खं० सं० ल० शु० समवायाङ्गसुत्रे च । सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं मो० सु० ॥ ११ खं० सं० ल० शु० प्रतिषु अणंता गमा अवंता पज्जवा इति नास्ति ॥

परुविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरुवणा आघविज्जइ । से तं ठाणे ३ ।

८७. से किं तं ठाणेत्यादि सुन्तं । 'ठाविज्जंति' चि स्वरूपतः स्थाप्यते, प्रज्ञाप्यतेत्यर्थः । छिणं तडं टंकं । कूडं ति-जहा वेतड्डसोवरि णव सिद्धायतणाइया झुडा । हिमवंतादिया सेला । सिहरेण सिहरी, जहा वेतड्डो । जं कूडं उवरि अंबखुज्जयं तं पञ्चारं, जं वा पञ्चयस्त उवरिभागे हत्थिकुंभागिई कुडुहं निषयं तं पञ्चारं । गंगादिया झुंडा । तिमिसादिया गुहा । रूप-मुवण्ण-रत्णादिया आगरा । पोँडरीयादिया देघा । गंगा-सिधुभादियाओ णदीओ । सेसं कंठं । से तं ठाणे ३ ॥

८८. से किं तं समवाए ? समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा समासिज्जंति, जीवा-अजीवा समासिज्जंति, लोए समासिज्जंति, अलोए समासिज्जंति, लोया-अलोए १० समासिज्जंति, ससमए समासिज्जंति, पस्समए समासिज्जंति, ससमय-परसमए समासि-ज्जंति । समवाए णं एगाइयाणं एगुत्तस्त्रियाणं ठणगसयविवङ्गियाणं भावाणं परुवणा आघ-विज्जंति । दुवाल्संगस्स य गणिपिडगस्स पैलवग्गे समासिज्जंति । समवाए णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगाँ, संखेज्जाओ णिज्जु-त्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं अंगझुयाए चउत्थे १५ अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे अज्जयणे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले, एगे चोयाले पदसयसहस्रे पदग्गोणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिवद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परुविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जात । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरुवणा आघविज्जंति । से तं समवाए ४ ।

८९. से किं तं समवाए इत्यादि । समवाए निकखेवो चतुविहो । दब्बे सचित्तादिदब्बसमवातो, भाव-समवातो इमं चेव अंगं । अहवा जत्थ वा एगत्थ ओदइयाइ वहू भावा सण्णिवादियसंजोगा वा भावसमवातो । भावसमवाए वा इमं णिरुचं-जीवा 'समासिज्जंति' समं आसइज्जंति । समं ति-ण विसमं,<sup>२</sup> जहावतिथं अनूनाति-रिकं इत्यर्थः । आसइज्जंति-आश्रीयंते, झुद्धया झानेन गृह्णतेत्यर्थः । अहवा समास चि-इहमगोऽभिहितन[ जे० २१७ दि० ]सब्बपदत्थाण समासतो विमर्सिसो चि । सेसं कंठं । उक्तः समवायः ४॥

१ 'वण्या खं० सं० ल० शु० ॥ २ 'जंति खं० सं० दे० ल० ॥ ३ द्रहा इत्यर्थः ॥ ४ 'लसविहस्स दो० दे० ॥  
५ पल्लवग्गे सं० । पल्लवग्गे इत्यस्यार्थः—“तथा द्वादशाङ्कस्य च गणिपिटकस्य ‘पल्लवग्गे’ चि पर्यवपरिभाणं अभिधेयादितद्वम्संख्यानम्, यथा ‘परिला तसा’ इत्यादि । पर्यवशब्दस्य च ‘पल्लव’ चि निर्देशः श्राकृतत्वात्, पर्यक्षः पल्लवङ् इत्यादिकदिति । अथवा पल्लवा इव पल्लवाः-अवयवास्तवरिमणम् ।” इति समवायाङ्कसूत्रवृत्तिः ११३-२ पत्रे ॥ ६ 'वायस्स णं जे० दे० मो० ॥ ७ जे० सं० दे० विनाऽन्यत्र—सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं खं० सं० ल० शु० । सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं मो० मु० ॥ ८ 'ण्या ल० ॥ ९ 'जंति खं० सं० ॥

८९. से कि तं वियाहे ? वियाहे णं जीवा वियाहिज्जंति, अजीवा वियाहिज्जंति, जीवा-अजीवा वियाहिज्जंति, लोए वियाहिज्जंति, अलोए वियाहिज्जंति, लोया-अलोए वियाहिज्जंति, ससमए वियाहिज्जंति, परसमए वियाहिज्जंति, ससमय-परसमए वियाहिज्जंति । वियाहे णं परिचा वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जा ओणिज्जुत्तीओ, संखेज्जा ओ संगहणीओ, संखेज्जा ओ पडिवत्तीओ । से णं अंगद्वयाए पंचमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे सातिरेगे अज्ञायणसते, दस उद्देसग-सहस्राइं, दस समुद्देसगसहस्राइं, छत्तीसं वागणसहस्राइं, दो लक्खा अद्वासीति पयसह-स्साइं पयग्गेण, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परिचा तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिवद्व-णिकाइया जिणणणन्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परु-विज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया,<sup>१०</sup> एवं चरणकरणपरुवणा आघविज्जइ । से तं वियाहे ५ ।

९०. से कि तं वियाहेत्यादि । 'वियाहे' त्ति व्याख्या, इह जीवादयो व्याख्यायते । इह सतं चेव अज्ञायणसणं । गोतमादिएहि पुष्टे अपुष्टे वा जो पण्हो तच्चागरण [च] । सेसं कंठं । से तं वियाहे ५ ॥

९०. से कि तं णायाधम्मकहाओ ? णायाधम्मकहासु णं णायाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियंरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इहलोग-पर-<sup>१५</sup> लोगिया रिद्धिविसेसा भोगपरिचागा पंचज्जा ओ परियागा सुयपरिम्महा तवोवहाणाइं संलेहणाओ भत्तपञ्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपञ्चायाईओ पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ य आघविज्जंति । दस धम्मकहाणं वैग्मा । तथं णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं, एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं, एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइओवक्खाइयासयाइं, एवमेव सपुव्वावरेण अद्वुद्वाओ कहाण-<sup>२०</sup> गकोडीओ भवंति त्ति मक्खायं । णायाधम्मकहाणं परिचा वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा,

१-२ विवाहे जे० मो० मु० ॥ ३ विवाहस्स णं जे० डे० मो० मु० ॥ ४ डे० विनाऽन्यत्र—सिलोगा, संखेज्जा ओ संगहणीओ । से णं लं० सं० ल० मु० । सिलोगा, संखेज्जा ओ निजनुत्तीओ, संखेज्जा ओ पडिवत्तीओ । से णं जे० मो० ॥ ५ 'स्साइं, चउरासीहे पयसहस्राइं पयग्गेण, इति समवायाह्नामे पाठः । अत्राभयदेवीया दीका—“चतुरशीतिः पदवाहसाणि पदाम्ब्रेति, समवायामेक्षया द्विगुणताया इहानाश्रयणात्, अन्यथा हे लक्ष्मे अष्टाशीतिः सहस्राणि च भवन्तीति ।” इति ११६-१ पत्रे । तथेतदर्थसमर्थेकः ‘विवाहपण्णतीए णं भगवतीए चउरासीहे पदसहस्रापदम्ब्रेण’ इति समवायाङ्गे ४४ स्थानके सूत्राणोऽपि वत्तते ॥ ६ 'वणाया ल० ॥ ७ 'जंति खे० सं० ल० ॥ ८ विवाहे खे० सं० विना ॥ ९ चेतियाति वणसंडाति मु० ॥ १० पियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ इह-पारलोहया इहिद्विसेसा जे० मो० मु० । “धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोह्य-परलोह्यहृदी-विसेसा” इति समवायाङ्गे ॥ ११ एवज्जापरिचाया लं० सं० डे० ल० मु० । “पवज्जाओ सुयपरिम्महा तवोकहाणाइं परियागा संलेहणाओ” इति समवायाङ्गे ॥ १२ वग्मा पण्णता । तथं सं० ॥

संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगद्वयाए छ्डे अंगे, दो सुयक्तवंधा, एगूणवीसं णात-ज्ञयणा, एगूणवीसं उद्देसणकाला, एगूणवीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पैयसहस्राइं पय-गोण, संखेज्जा अक्तरा, अण्टा गमा, अण्टा पञ्जदा, परिता तसा, अण्टा थावरा,  
५ सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणयण्णता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति पर्लविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विणाया, एवं चरण-करणपर्लवंणा आघविज्जंति । से तं णायाधम्मकहाओ ६ ।

९०. से किं तं णायाधम्मकहेत्यादि युनं । एकूणवीसं णातज्ञयणा, णाय त्ति-आहरणा, दिदंतियो वा णज्जति जेहऽत्थो ते णाता, एते पद्ममुतखंधे । अहिसादिलखणस्य धम्मस्स कहा धम्मकहा, धम्मियाओ वा कहाओ धम्मकहाओ, अक्खाणग त्ति त्रुतं भवति, एते वितियमुतखंधे । पद्म-वितियमुतखंधे भणिताणं णाता-धम्मकहाणं णगरादिया भणिति । वितिये मुतखंधे दस धम्मकहाणं वग्गा । वग्गो त्ति-समूहो, तच्चिसे-सणविसिद्धा दस अज्ञयणा चेव ते दद्वच्चा । एगूणवीसं णाता, दस य धम्मकहाओ । तत्थ णातेसु आदिमा दस णाता चेव, ण तेसु अक्खादियादिसंभवो । सेसा णव णाता, तेसु एकेके णाते चत्तालीसं चत्तालीसं अक्खा-इयाओ भवंति, तत्थ वि एकेकाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासताइं भवंति, तेसु वि एकेकाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइयोवक्खाइयसताइं भवंति, एवं एते णव कोडीओ । एताओ धम्मकहासु सोहेतब्ब त्ति कातुं एकोणवीसाए णाताणं दसष्ट्य धम्मकहाणं विसेसो कज्जति-दस णाता दंस णव य धम्मकहातो दसहिं परोपरं युद्धा । एवं विसेसे कते सेसा णव णाता, ते णव चत्तालीसाए युणिता जाता तिणिण सता सट्टा अक्खाइयाणं, एते अक्खाइयपंचसतेहितो सोधिता, तत्थ सेसं चत्तालं सतं, तं उवक्खाइयपंचसतेहिं युणितं जाता उवक्खाइताणं सत्तरि सहस्रा, ते पंचहिं अक्खाइतोवक्खाइयसतेहिं युणिता एवं जाता अद्द्वातो अक्खाइयकोडीतो । ‘पद्मगोण’ ति २० उवसग्गपदं णिवातपदं णामियपदं अक्खातपदं मिस्सपदं च, एते पदे अहिकिच्च पंचला [ जे० २१८ प्र० ] क्खा छावत्तरि च सहस्रा पद्मगोणं भवंति, अहवा सुत्तालावयपदगोणं संखेज्जाइं पदसहस्राइं भवंति । अहवा छाहत्तरा-हियसहस्रपंचलक्खा वि संखेज्जपदसहस्रसेहिं ण विरुद्धंति । सेसं कंठं । से तं णाताधम्मकहाओ ६ ॥

९१. से किं तं उवासगदसाओ ? उवासगदसासु णं समणोवासमाणं णगराइं उज्जा-णाइं चेइयाइं वैणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया २५ इहलोग-परलोइया रिद्धिविसेसा भोगपरिचार्या परियागा सुयपरिग्रहा तवोवहाणाइं सील-ब्बय-गुण-वेमण-पञ्चक्खाण-पोसहोववासपडिवज्जणया पडिमाओ उवसग्गा संलेहणाओ

१ डे० मो० मु० विनाडन्यव—सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं ख० स० ल० शु० । सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं जे० ॥ २ ‘वीस अज्ञयणा ख० जे० डे० ल० मो० शु० समवायाहे च । चूणिकृता बलयगिरिणा च मूले स्वीकृत एव पाठो व्याख्यातोऽस्ति ॥ ३-४ एगूणतीसं ल० ॥ ५ संखेज्जा पयसहस्रा, जे० मो० ॥ ६ ‘पयसयसह’ समवायाहे ॥ ७ ‘बणया ख० स० ल० शु० ॥ ८ ‘ज्जंति ख० स० डे० शु० ल० ॥ ९ दस य धम्म जे० ॥ १० चेतियार्ति शु० ॥ ११ वणसंडाइं ख० स० शु० नास्ति ॥ १२ ‘पियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ जे० मो० मु० ॥ १३ इहलोइय-परलोइया इद्धिवि० जे० मो० मु० ॥ १४ ‘या पञ्चज्जाओ परि० जे० डे० ल० शु० ॥

भृतपञ्चकखण्डाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपञ्चायार्द्दिओ पुणबोहिलाभा अंत-  
किरियाओ य आघविज्जंति । उवासगदसासु णं परिता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा,  
संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ,  
संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगद्वयाए सत्तमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्ञयणा,  
दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पदसहस्राइं पदग्नेण । संखेज्जा  
अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पञ्जवा, परिता तमा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिवद्ध-  
णिकगद्या जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परुविज्जंति दंसिज्जंति णिदं-  
सिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरुवैणा  
आघविज्जंति । से तं उवासगदसाओ ७ ।

९१. से किं तं उवासगदसातो इत्यादि गुर्तं । उवासक चि-सावता । तेसि अणुच्चत-गुण-सीलव्वतोव-  
देसणा दसमु अज्ञयणेमु अक्खात चि उवासगदसा भणिता । तामु मुत्तपदग्नं एकारस लक्खा ब्रावणं च सह-  
स्रा पदग्नेण । मुत्तालावयपदेहि संखेज्जाणि वा पदसहस्राइं पदग्नेण । सेसं कंठं । से तं उवासगदसाओ ७ ॥

९२. से किं तं अंतगडदसाओ ? अंतगडदसासु णं अंतगढाणं णगराइं उज्जाणाइं चेतियाइं  
वैणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इहंलोग-परलोगिया  
रिद्धिविसेसा भोगंपरिच्छागा पंवज्जाओ पस्तिगा सुतपस्तिग्हा तवोवहणाइं संलेहणाओ  
भृतपञ्चकखण्डाइं पाओवगमणाइं → देवलोगगमणाइं सुकुलपञ्चायार्द्दिओ, पुणबोहिलाभा ←  
अंतकिरियाओ य आघविज्जंति । अंतगडदसासु णं परिता वायणा, संखेज्जा अणुयोग-  
दारा, संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगह-  
णीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगद्वयाए अद्वमे अंगे, एंगे सुयक्खंधे, अद्व

१ संखेज्जाओ संगहणीओ जे० मो० नास्ति ॥ २ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ख० डे० ल० शु० नास्ति ॥ ३ संखेज्जा  
पदसहस्रा जे० मो० मु० ॥ ४ पदसहस्रसहस्राइं समवायाइं ॥ ५ ‘वणथा ल० ॥ ६ झज्जंति ख० स० डे० ल० ॥ ७ अक्खाहृज्जंति  
त्ति आ० दा० ॥ ८ वणसंडाइं इति ख० स० डे० ल० शु० नास्ति ॥ ९ ‘पियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ जे० ल० मो० मु० ॥  
१० ‘लोह्य-पारलोह्या इहिद्धिवि’ मो० । ‘लोह्य-परलोह्या इहिद्धिवि’ जे० मु० ॥ ११ भोगपरिभोगा ख० ल० शु० ॥ १२ पञ्चज्ञा  
परियागा मुत्तं ख० । पञ्चज्ञा मुत्तं ल० ॥ १३ → ←एतच्छिमध्यवत्ती फाठः मो० मु० नास्ति ॥ १४ ‘दसाणं जे० स० ॥  
१५ संखेज्जाओ संगहणीओ इति जे० मो० मु० नास्ति ॥ १६ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ इति ख० स० ल० शु० नास्ति ॥

१७ परो सुयक्खंधे, दस अज्ञयणा, सत्त थमा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पद-  
[सत]सहस्राइं पदग्नेण इति समवायाहरुते पाठः । अत्राभ्यर्थीया टोका—

“नवरे ‘दस अज्ञयण’ ति प्रथमवर्गपेक्षयैव घटन्ते, नन्द्यां तर्थैव व्याख्यातत्वात् । यच्चेह पव्यते ‘सत्त वर्ग’ ति तत् प्रथमवर्गादन्यवर्गा-  
पेक्षया, अतोऽत्र सर्वेऽप्यष्ट वर्गः, नन्द्यामपि तथापठितत्वात् । तद्दृष्टिश्चयम् —‘अद्व वर्ग’ ति अत्र वर्गः समूहः, स चान्तकृतानामध्यम-  
नानो वा । सर्वाणि चैकवर्गतानि युगपद्मदिश्यन्ते ततो भणिते ‘अद्व उद्देसणकाला’ इत्यादि ॥” । इह च दश उद्देशनकाला अभिधीयन्ते  
इति नास्याभिप्रायमध्यगच्छाप्तः । तथा संख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाप्रेणेति, तानि च किल त्रयोर्विशितिर्लक्षाणि चत्वारि च सहस्र-  
णीति ॥” १३१-२ पत्र ॥

वगा, अटु उहेसणकाला, अटु समुद्रेसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पदगोण, संखेज्जा अक्षरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परुविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसि-ज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरुवणा<sup>६</sup> आघविज्जंति । से तं अंतगडदसाओ ॥

१२. से किं तं अंतगडदसातो इत्यादि मुन्तं । अंतकडदस त्ति-कर्मणो संसारस्स वा अंतो कडो जेहि ते अंतकडा, ते य तित्यकरादी, दस त्ति-पदमवगे दस अज्ञयण त्ति तेसाकरवतो अंतकडदस त्ति । अहवा दस त्ति-अवत्था, तदंते जा अवत्था सा वण्णज्जाते त्ति अंतो अंतकडदसा । सरीरा-उद्युदसाण वा दसर्ह अंतकडो त्ति अंतकडदसा । णवरं 'अंतकडकिरियाओ' त्ति अस्य व्याख्या-अंतकडाणं किरिया अंतकडकिरिया, वहूण ता १० अंतकडकिरियाओ त्ति भणिता । किरिय त्ति-क्रिया, चर्या इत्यर्थः । अहवा किरिय त्ति-कर्मक्षपणक्रिया, सा य सेलेसिअवत्थाए । अहवा किरिय त्ति-सहुभकिरियज्जाणं । अहवा धातिकम्मेसु अंतकडेसु किरिय त्ति-कर्मवंधी, सो य इसियावहितो त्ति भणितं होति । एतं च आघविज्जंति । वगो त्ति-समूहो, सो य अंतकडाणं अज्ञयणाण वा । सञ्चे अज्ञयणा जुगवं उद्दिसंति । तसु सुतपदगं तेवीसं लक्षा चतुरो य सहस्रा पदगोण । संखेज्जाणि वा पदसहस्राणि सुत्तालावगपदगोण । सेसं कठं । से तं अंतगडदसा ॥

१३. से किं तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ? अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइयाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वैणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मा-यरिया इहलोग-परलोगिया रिद्धिविसेसा भोगपरिचागा पब्बज्जपरियागा सुतपरिग्नहा तवोवहाणाइं पडिमाओ उवसग्गा संलेहणाओ भत्तपन्नकर्वाणाइं पाओवगमणाइं अणुत्तरो-ववाइयचे उववत्ती सुकुलपन्नायादीओ पुणवोहिलाभा अंतकिरियाओ य आघविज्जंति । २० अणुत्तरोववाइयदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा, संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगडुयाए णवमे अंगे, ऐगे सुयक्खंधे, तिणिण वग्गा, तिणिण उहेसणकाला, तिणिण समुद्रेसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पंयगोणं, संखेज्जा अक्षरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णता भावा

१ वण्णा ख० ल० ॥ २ चिज्जंति ख० स० ढ० ल० श० ॥ ३ तत्साक्ष्यत इत्यर्थः ॥ ४ वणसंडाइं इति मो० मु० एव वत्ते ॥ ५ धम्मायरिया धम्मकहाओ मो० मु० ॥ ६ 'लोइय-परलोइया जे० मो० मु० ॥ ७ अणुत्तरोवववत्ती श० । अणुत्तरोववाय त्ति. ख० स० ॥ ८ 'दसाणं स० जे० मो० ॥ ९ धाइणा ल० ॥ १० संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ इति ल० नास्ति ॥ ११ संखेज्जाओ संगहणीओ जे० मो० नास्ति ॥ १२ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ख० स० ल० श० नास्ति ॥ १३ एगे सुयक्खंधे, दस अज्ञयणा, तिणिण वग्गा, दस उहेसणकाला, दस समुद्रेसणकाला, संखेज्जाइं पयसयसहस्रारं पयगोणं प० इति समयायाहे । अत्राभयदेवपादः—“इह अध्ययनसमूहो वर्गः, वर्ग दशाध्ययनानि, वर्गश्च युगपदेवोद्दिश्यते इत्यतत्य एवोद्देशनकाला भवन्ति, एवमेव च नन्दावभिषीयन्ते, इह तु दद्यन्ते दशेति, अत्राभिषायो न ज्ञायत इति ।” १२३-२ पत्रे ॥

आघविज्जंति पण्णविज्जंति परुविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरुवेणा आघविज्जंड । से तं अणुत्तरोववाइयदसाओ॑ ९ ।

१३. से किं तं अणुत्तरोववातियदसा इत्यादि सुत्ते॑ । णत्थ जस्तुत्तरं सो अणुत्तरो, उवबज्जणमुववातो उपचनीत्यर्थः, अणुत्तरो उववातो जस्त सो अणुत्तरोववाइयो, तेसि बहुवयणातो [जे० २१८ द्वि०] अणुत्तरोववाइय च्छि, वग्गे वग्गे य दसउज्ज्ञयण च्छि अतो अणुत्तरोववातियदसा भणिता । संसारे मुभभावं पहुच्च अणुत्तरः, अहवा गतिचतुकं पहुच्च अणुत्तरः, अहवा देवगतीए चेव अणुत्तरः । अणुत्तरदेवेसु जेसि उववातो तेसि णगरादिया कहिज्जंति । इह वग्गो च्छि-समूहो, सो य अज्ज्ञयणाणं, वग्गे वग्गे दस अध्ययना इत्यर्थः । तेसि पद्म्भां छातालीसं लक्खा अद्व य सदस्सा, संखेज्जाणि वा पदसहस्राणि । सेसं कंठं । से तं अणुत्तरोववाइयदसा ९ ॥

१४. से किं तं पण्हावागरणाई॑ ? पण्हावागरणेसु णं अद्वुत्तरं पसिणसयं, अद्वुत्तरं १० अपसिणसयं, अद्वुत्तरं पसिणा-उपसिणसैयं, अण्णे वि॑ विविधा दिव्वा॑ विज्जातिसया नाग-सुवण्णेहि य सद्धि॑ दिव्वा॑ संवाया आघविज्जंति । पण्हावागरणाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा रिलोगा, संखेज्जाओ॑ णिज्जुत्तीओ॑, संखेज्जाओ॑ संगहणीओ॑, संखेज्जाओ॑ पडिवत्तीओ॑ । से णं अंगद्वयाए॑ दसमे अंगे, एगे सुयक्षवंधे, पण्यालीसं अज्ज्ञयणा, पण्यालीसं उद्देसणकाला, पण्यालीसं समुद्देसण- १५ काला, संखेज्जाई॑ पदसहस्राई॑ पदग्गोणं, संखेज्जा अक्षरा, अणंता गमा, अणंता पञ्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिवद्व-णिकाइया जिणपण्णता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परुविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरुवेणा आघविज्जंड । से तं पण्हावागरणाई॑ १० ।

१५. से किं तं पण्हावागरणाई॑ इत्यादि सुत्ते॑ । पण्हो च्छि-युच्छा, पडिवयणं वागरणं, पत्त्युत्तर- २० मित्यर्थः । तम्हि पण्हावागरणे अंगे पंचासवदाराइदा व्याख्येयाः परप्पत्रादिणो य । अंगुद्वाहुपसिणादियाणं च पसिणाणं अद्वुत्तरं सतं । किंच-जे विज्ञ-भंता विश्रीए॑ जविज्ञमाणा अपुच्छिता चेव मुभामुभं कहयंति तारिसाणं अपसिणाणं अद्वुत्तरं सतं । अंगुद्वादिपसिणभावं अपसिणभावं च वाकरेति तारिसाणं पसिणा-उपसिणविज्ञाणं अद्वुत्तरं सतं । अहवा अणंतरा जे कहेति ते पसिणा, परंपरे पसिणापसिणा, तं पुण विजाकहितं कहेतस्स परंपरं

१ चण्णया ल० ॥ २ चिज्जंति ल० सं० ड० ल० शु० ॥ ३ सयं, तं जहा—अंगुद्वाहुपसिणाई॑, वाहुपसिणाई॑ अहागपसिणाई॑, अण्णे वि॑ ल० ड० ल० मो० मु० । नाथं पाठशूणि-वृत्तिकृद्विग्नहीतो व्याख्यातो वा विद्यते ॥ ४ वि॑ विचित्ता दिव्वा सर्वाषु सूत्रप्रतिषु । हारिऽ० वृत्ता एव एव पाठो व्याख्यातोऽस्ति । मल्यगिरिपादः पुनः चूणिकारमनुग्रहताः सन्ति ॥ ५ दिव्वा शु० सं० एव वस्ते ॥ ६ दिव्वा संधाणा संधणंति इति चूणिकविदिष्टः पाठमेव, दिव्वा॑ सन्धानाः सन्धनन्ति इत्यर्थः ॥ ७ संखेज्जाओ॑ संगहणीओ॑ इति जे० मो० नास्ति ॥ ८ संखेज्जाओ॑ पडिवत्तीओ॑ ल० सं० ल० शु० समवायाने च नास्ति ॥ ९ घिज्जंति ल० सं० ड० ल० शु० ॥

भवति । अणे य विवेधा विज्ञातिसता कहिज्जन्ति । किंच णागा सुवण्णा अणे य भवणवासिणो ते विज-मंता-गरिसिता आगता साहुणा सह संबद्धति-जल्पं करेति । पाढंतरं वा “दिव्वा संधाणा संधणंति” तदुन्मुखा भवति, वरदाश्व गर्जितादि वा कुर्वति । दसमंगस्स पदग्नं वाणउति लक्खा सोल्स य सहस्रा पदग्नेण, संखेज्जाणि वा पदसहस्राणि । सेसं कठं । से तं पण्हाचागरणाइ १० ॥

<sup>६</sup> १५. से कि तं विवागसुतं ? विवागसुते णं सुकड-दुकडाणं कम्माणं फल-विवागा आघविज्जंति । तत्य णं दस दुहविवागा, दस सुहविवागा ।

से<sup>१</sup> कि तं दुहविवागा ? दुहविवागेसु णं दुहविवागाणं णगराइ उज्जाणाइ वणसंडाइ चेइयाइ समोसरणाइ रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायसिया इँहलोइय-परलोइया “रिद्धिविसेसा निस्यग्नमणाइ दुहपरंपराओ संसारभवंपवंचा दुकुलपचायाइओ दुलहवोहियत्तं १० आघविज्जंति । से<sup>२</sup> तं दुहविवागा ।

से कि तं सुहविवागा ? सुहविवागेसु णं सुहविवागाणं णगराइ उज्जाणाइ वणसंडाइ चेइयाइ समोसरणाइ रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायसिया इँहलोइअ-परलोइया रिद्धिविसेसा भोगपरिचागा पञ्चज्जाओ परियागा सुतपरिग्नहा तवोवहाणाइ संलेहणाओ भत्तपचक्षणाइ पाओवगमणाइ देवलोगगमणाइ सुहपरंपराओ सुकुलपचायादीओ पुणबो-१५ हिलाभा अंतकिसियाओ य आघविज्जंति ।

विवागसुते णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा, संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगड्याए एकारसमे अंगे, दो सुयक्षंधा, वीसं अज्जयणा, वीसं उद्देसणकाला, वीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइ पैदंसहस्राइ पदग्नेण, संखेज्जा अक्षरा, अणंता गमा, अणंता २० पञ्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिवद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परुविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपस्त्वणा आघविज्जंति । से तं विवागसुतं ११ ।

<sup>७</sup> १६. से कि तं विवागसुतं इत्यादि । विविधो पाकः विष्वनं वा विषाकः, कर्मणं सुभमसुभो वा

१ विवागे आघविज्जइ जे० मो० सु० ॥ २ से कि तं दुहविवागा इति खं० शु० नास्ति । समवायाङ्गे प्रश्नवाक्यं वर्तते ॥ ३ धम्मायसिया धम्मकहाओ से० जे० डे० ल० मो० सु० ॥ ४ इहलोग-परलोगिया सं० ॥ ५ इद्धिहवि० मो० सु० ॥ ६ <sup>१</sup>गमणं खं० ॥ ७ <sup>२</sup>भवंपवंधा सं० ल० समवायाङ्गे च ॥ ८ से तं दुहविवागा । से कि तं सुहविवागा ? इति खं० शु० नास्ति । समवायाङ्गे तु वर्तते ॥ ९ धम्मायसिया धम्मकहाओ खं० डे० ॥ १० इहलोग-परलोगिया इद्धिहविसेसा जे० मो० सु० ॥ ११ <sup>३</sup>ज्जा परि० खं० ॥ १२ विवागसुयस्स णं जे० मो० सु० । विवागेसु णं शु० ॥ १३ पदसतसह० समवायाङ्गे ॥ १४ <sup>४</sup>विज्जेति खं० सं० डे० ल० शु० ॥

जन्म सुते विपाको कहिजति तं विपाकसुते । विपाकसुतस्स सुत्तपदम् एता पदकोडी चुलसीर्ति च लकडा बत्तीसं च सहस्रा पदगोणं, संखेजाणि वा पदसहस्राइं पदगोणं [जे० २१९ प्र०] । सेसं कंठं । से तं विवागसुतं ११ ॥

९६. से किं तं दिद्विवाए? दिद्विवाए णं सब्बभावपरूपणा आघविज्जति । से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—परिकम्मे १ सुत्ताइं २ पुञ्चगए ३ अणुओगे ४ चुलिया ५ । ५

९७. से किं तं दिद्विवाते त्ति । हष्टिर्दर्शनम्, वदनं वादः, हष्टीनां वादो हष्टिवादः, तत्र वा हष्टीनां पातः हष्टियातः, समेदभिष्णाओ सब्बणतदिहीओ तथ वदंति पतंति व त्ति अतो दिद्विवातो । सो य पंचमेदो-परिकम्मादि ॥

९८. से किं तं परिकम्मे? परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—सिद्धसेणियापरिकम्मे १ मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ पुट्टसेणियापरिकम्मे ३ ओगाद्सेणियापरिकम्मे ४ उवसंपञ्जण- १० सेणियापरिकम्मे ५ विष्पजहणसेणियापरिकम्मे ६ चुतअचुतसेणियापरिकम्मे ७ ।

९९. से किं तं सिद्धसेणियापरिकम्मे? सिद्धसेणियापरिकम्मे चोहसविहे पण्णत्ते, तं जहा—माउगापयाइं १ एगद्वियपयाइं २ अद्वापयाइं ३ पाढो ४ आमासपयाइं ५ केउभूयं ६ रासिवद्धं ७ एगगुणं ८ दुगुणं ९ तिगुणं १० केउभूयपदिगगहो ११ संसारपदिगगहो १२ नंदा-वत्तं १३ सिद्धावत्तं १४ । से तं सिद्धसेणियापरिकम्मे १ । १५

१००. से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे? मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोहसविहे पण्णत्ते, तं जहा—माउगापयाइं १ एगद्वियपयाइं २ अद्वापयाइं ३ पाढो ४ आमासपयाइं ५ केउभूयं ६ रासिवद्धं ७ एगगुणं ८ दुगुणं ९ तिगुणं १० केउभूयपदिगगहो ११ संसारपदिगगहो १२ णंदावत्तं १३ मणुस्सावत्तं १४ । से तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ ।

१०१. से किं तं पुट्टसेणियापरिकम्मे? पुट्टसेणियापरिकम्मे एकारसविहे पण्णत्ते, तं जहा—पाढो १ आमासपैयाइं २ केउभूयं ३ रासिवद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूयपदिगगहो ८ संसारपदिगगहो ९ णंदावत्तं १० पुट्टावत्तं ११ । से तं पुट्टसेणियापरिकम्मे ३ ।

१०२. से किं तं ओगाद्सेणियापरिकम्मे? ओगाद्सेणियापरिकम्मे एकारसविहे

१ “विज्ञाति” ल० स० ड० ल० ॥ २ “परिकम्मे” जे० म० स० ल० ॥ ३ “सुथारं ख० ॥ ४ “ओगाहणसे” समवायाङ्गे ॥  
५ “विजहणसे” ख० स० ल० श० । “विष्पजहणसे” समवायाङ्गे ॥ ६ “चुयअचुय” ल० श० । “चुयचुय” ड० ॥ ७ “अहूप” स० ॥  
८-९ “परिग्गहो ल० ॥ १० “सिद्धावहुं स० । सिद्धवद्धं समवायाङ्गे ॥ ११ “परिग्गहो जे० ॥ १२ “स्वावहुं स० । मणुस्स-  
वद्धं समवायाङ्गे ॥ १३ “पयाइं पवभादि । से तं पुढ” ख० स० । “पयाइं र इच्छार । से तं पुढ” ल० ॥ १४ “परिग्गहो जे० ॥

पण्णते, तं जहा-पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० ओगाटावत्तं ११ । से तं ओगाटसेणियापरिकम्मे १ ।

१०२. से कि तं उवसंपञ्जणसेणियापरिकम्मे ? उवसंपञ्जणसेणियापरिकम्मे एकास-  
५ सविहे पण्णते, तं जहा-पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० उवसंपञ्जणावत्तं ११ । से तं उवसंपञ्जणसेणियापरिकम्मे ५ ।

१०३. से कि तं विष्णजहणसेणियापरिकम्मे ? विष्णजहणसेणियापरिकम्मे एगारस-  
विहे पण्णते, तं जहा-पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६  
१० तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० विष्णजहणावत्तं ११ । से तं विष्णजहणसेणियापरिकम्मे ६ ।

१०४. से कि तं चुयमचुयसेणियापरिकम्मे ? चुयमचुयसेणियापरिकम्मे एगारसविहे पण्णते, तं जहा-पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० चुयमचुयावत्तं ११ । से तं १५ चुयमचुयसेणियापरिकम्मे ७ ।

१७-१०४. तत्थ परिकम्मे ति जोगकरणं, जहा गणितस्स सोलस परिकम्मा, तम्हाहितसुत्तथो सेस-गणितस्स जोग्गो भवति । एवं गहितपरिकम्मसुत्तथो सेससुत्तादिदिव्वितातसुत्तस्स जोग्गो भवति । तं च परिक-  
म्मसुत्तं सिद्धसेणियापरिकम्मादिमूलभेदयो सत्तविहं, उत्तरभेदतो तेसीतिविहं मातुयपदादी । तं च सब्बं समूल-  
त्तरभेदं सुत्तत्त्वतो चोच्छिणं, जहागतसंभदातं वा वर्दं ॥ किंच—

२० १०५. [ इच्छेइयाइं सत्त परिकम्माइं, छ ससमइयाइं, सत्त आजीवियाइं, ] छ चउकणइ-  
याइं, सत्त तेरासियाइं । से तं परिकम्मे १ ।

१०५. एतेसि सत्तर्हं परिकम्माणं छ आदिमा परिकम्मा ससमइका, स्वसिद्धांतपक्षापना एवेत्यर्थः । आजीविकापासंडत्था गोसाल्पवत्तिता, तेसि सिद्धंतमतेण चुता-उत्तसहिता सत्त परिकम्मा पण्णविज्ञंति । इदाणि परिकम्मे पतर्चिता—णेग्गो दुविहो-संगहितो असंगहितो य, संगहितो संगहं पचिद्वो, असंगहितो वरदारं, तम्हा

१ केउभूयं २ इच्छादि । से तं ओगाढो ३ सं० सं० डे० ल० ॥ २ परिग्गाहो जे० ॥ ३ पाढो १ इच्छादि । से तं उवं ४ सं० सं० डे० ल० ॥ ४-५ विजहणं ६ सं० सं० ल० शु० ॥ ६ पाढो १ इच्छादि । से तं विजहणं ७ सं० सं० डे० ल० ॥ ७-८ चुयभचुयं जे० डे० ल० ॥ ९ पाढाद । से तं चुयं १० सं० सं० डे० ल० ॥ १० चुयअचुयं डे० ल० । चुयाचुयं जे० ॥ ११ एतत् चतुरस्सकोष्कान्तर्वर्ति सूत्रं सुत्रप्रतिषु न वर्तते । चूणि-वृत्तिकुञ्जः पुनरावृत्तं दद्यत इति लमवायाङ्गसूत्रात् सूत्रांशोऽयमत्रो-द्वृतोऽस्ति ॥ १२ याहं नहयाइ । से तं सं० ॥

दिद्विवाबो परिकम्मे सुत्ताइं च ]

सिरिदेववायगविरहयं पांडीसुतं ।

७३

संगहो वनहारो रिजुमुतो सहाइया य एको, एवं चतुरो णया । एतेहि चतुर्हि णएहि छ ससमइकाइं परिकम्माइ चितिजंति सि अतो भणितं—‘छ चतुकणइयाइ’ ति । ते चेव आजीविका तेरासिया भणिता । कम्हा ? उच्यते— जम्हा ते सर्वं जगं व्यात्मकं इच्छंति, जहा—जीवो अजीवो जीवाजीवश, लोप अलोप लोयालोप, संते असंते संतासंते एवमादि । णयचित्ताए वि ते तिविहं णयमिच्छंति, तं जहा—इन्द्रियो पञ्जवद्वितो उभयद्वितो, अतो [ जे० २१९ द्वि० ] भणियं—‘सत्त तेरासियाइ’ ति सत्त परिकम्माइ तेरासियपासंडतथा तिविधाए णयचित्ताए ५ चितयंतीत्यर्थः १ ॥

१०६. से कि तं सुत्ताइं ? सुत्ताइं बावीसं पण्णत्ताइं, तं जहा—उज्जुसुतं १ परिणयापरि-  
णयं २ बहुभंगियं ३ विजयचरियं ४ अणंतरं ५ परंपरं ६ मासाणं ७ संजूहं ८ संभिष्णं ९  
आयच्चायं १० सोवत्थिष्णं ११ पांडावतं १२ बहुलं १३ पुडापुडं १४ वेयावचं १५ एवंभूयं १६  
भूयावतं १७ वत्तमाणुष्यं १८ समभिरुढं १९ सब्बओभदं २० पण्णासं २१ दुष्परिगहं २२ । १०

१ सुत्ताइं बावीसाइं पण्णत्ताइं, तं जहा खं० सं० । सुत्ताइं अट्टासीति भवतीति मक्खायाइं, तं जहा सम० ॥

२ द्वाविशतिसूत्रनाम्ना नन्दिसूत्रप्रत्यन्तरेषु पाठमेदोऽधरुद्विषितकोहुकाद् शात्त्र्यः—

खं०	प्रतिः	सं०	प्रतिः	जे०	प्रतिः	दे०	प्रतिः	ल०	प्रतिः	मो०	प्रतिः	झ०	प्रतिः
१	उज्जुसुतं	०		०		०		०		०		०	
२	परिणयापरिणयं	०		०		०		०		०		०	
३	बहुभंगियं	०		०		०		०		०		०	
४	विज्ञनियच्चियं विज्ञायव्वानियं		विजयचरियं		बहुभंगीयं		बहुभगीयं		विजयविधतं		विजयचरियं		
५	अणंतर	०		०		०		०		०		०	
६	परंपर	०		०		०		०		०		०	
७	समाणं	मासाणं	मासाणं		समाणसं		समाणसं		समाणं		समाएसं		
८	संजूहं	संजूहं	संजूहं		जूहं		जूहं		संजूहं		जूहं		
९	भिष्णं	०		०	सभिष्णं		सभिष्णं		०		०		
१०	आयच्चाइं	आयच्चायं	आहच्चाये		आहच्चयं		आहच्चयं		आहच्चायं		आहच्चायं		
११	सोवत्थिष्णं	सोवत्थिष्णं	सोमत्थिष्णनं		सोवत्थिष्णवतं		सोमत्थिष्णवतं		सोवत्थिष्णं वंदं		सोवत्थिष्णं		
१२	पांडावतं	०	मंदावतं		०		०		०		०		
१३	बहुलं	०		०		०		०		०		०	
१४	पुडापुडं	०		०	पुच्छापुच्छं		०		०		०		
१५	वेयावचं	०	वियावसं		वियावतं		वियावतं		वियावतं		०		
१६	एवंभूये	०		०		०		०		०		०	
१७	भूयावतं	दुयावतं	दुयावतं		दुयावतं		दुयावतं		दुयावतं		दुयावतं		
१८	०	वत्तमाणुष्यं	वत्तमाणुष्यं		वत्तमाणुष्यतं		वत्तमाणुष्यतं		वत्तमाणुष्यं		वत्तमाणुष्यं		
१९	समभिरुढं	०		०		०		०		०		०	
२०	सब्बओभदं	०		०		०		०		०		०	
२१	पण्णासं	०		०		०		०		०		०	
२२	दुष्परिगहं	दुष्परिगहं	दुष्परिगहं		परिगहं		परिगहं		दुष्परिगहं		०		

अत्र शून्येम पाठमेदाभावो शात्त्र्यः, न तु पाठभाव इति ॥

खु० १०

इच्चेयाइं बाबीसं सुत्ताइं छिणच्छेयणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं १, इच्चेयाइं बाबीसं सुत्ताइं अच्छिणच्छेयणइयाइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं २, इच्चेयाइं बाबीसं सुत्ताइं तिगणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं ३, इच्चेयाइं बाबीसं सुत्ताइं चउकणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं ४, एवामेव सपुब्बावरेण अट्टासीति सुत्ताइं भवंतीति मक्खायं ।  
५ से तं सुत्ताइं २ ।

१०६. 'सुत्ताइं' ति उज्जुमुत्ताइयाइं बाबीसं सुत्ताइं । ताणि य सुत्ताइं सञ्चदञ्चाण सञ्चपज्जवाण सञ्चणताण सञ्चभंगविकर्षाण य दंसगाणि, सञ्चस्स य पुब्बगतसुत्तस्य अत्थस्स य सूयगति, अतो ते सूयणत्तातो सुत्ता भणिता जहाभिधाणत्थाते । ते य इदाणि सुत्त-अत्थतो बोच्छिणा, जहागतसंप्रदायतो वा वज्ञा । ते चेव बाबीसं सुत्ता विभागतो अट्टासीति सुत्ता भवंति इमेण विधिणा—बाबीसं सुत्ता छिणच्छेदणताभिष्यायतो । कहं छिणच्छेदणतो चि भणति ?  
१० उच्यते—जो णयो सुत्तं छिण्णं छेदेण इच्छति, जहा—“शमो मंगलमुक्तुं” ति सिलोगो [दश्वे. अ. १ गा. १] । एस सिलोगो सुत्त-अत्थतो पत्तेयं छेदेण ठितो, णो वितियादिसिलोगे अवेकखड़ि चि बुत्तं भवति । छिण्णो छेदो जस्स स भवति छिणच्छेदः, प्रत्येकं कल्पितपर्यंतेत्यर्थः । एते एवं बाबीसं ससमतसुत्तपरिवाडीए सुत्ता ठिता । एते चेव बाबीसं अच्छिणच्छेदणताभिष्यायतो बाजीवियसुत्तपरिवाडीए ठिता । अच्छिणच्छेदणतो जहा—एसेव दुमपुफ्फियपद्मसिलोगो अत्थतो वितियाइसिलोगे अवेकखमाणो, वितियादिया य पदमं अच्छिणच्छेदणताभिष्याययो भवति । एवं पि बाबीसं  
१५ सुत्ता अक्खररस्यणविभागठिता वि अत्थयो अणोण्णमवेकखमाणा अच्छिणच्छेदणयद्वित चि भण्णति । णयर्चिताए वि बाबीसं चेव सुत्ता, 'तेरासियाणं तिगणइयाइं' ति त्रिकनयाभिष्यायतो चित्यंतेत्यर्थः । तहा ससमये वि णयर्चिताए बाबीसं चेव सुत्ता चउकणइया । एवं चतुरो [जे० २२० ग्र०] बाबीसतो अट्टासीति सुत्ता भवंति । से तं सुत्ताइं २ ॥

१०७. से किं तं पुब्बगते ? पुब्बगते चोहसविहे पण्णते, तं जहा—उण्णादपुब्बं १  
२० अंगोणीयं २ वीरियं ३ अत्थिणत्थिप्पवातं ४ नाणप्पवातं ५ सञ्चणवादं ६ आयप्पवादं ७  
कम्मप्पवादं ८ पञ्चक्खाणं ९ विज्जंणुप्पवादं १० अवंज्ञं ११ पौण्णायुं १२ किरियाविसालं १३  
लोगविदुसारं १४ । उण्णायस्स णं पुब्बस्स दस वत्थू चत्तारि चूल्यवत्थू पण्णता १ । अंगोणीयस्स णं पुब्बस्स चोहस वत्थू दुवाल्स चूल्यवत्थू पण्णता २ । वीरियस्स णं पुब्बस्स अट्ट वत्थू अट्ट चूल्यवत्थू पण्णता ३ । अत्थिणत्थिप्पवायस्स णं पुब्बस्स अट्टारस

१-३-५-७ इच्चेइयाइं मो० सु० ॥ २-४-६-८ सुत्ताइं इति पदं लं० सं० एव वत्तेते, नान्यत्र, समधायाङ्गेऽपि नास्ति ॥  
९ भवंति इच्छमक्खायं ल० ॥ १० अग्नेणियं ख० ॥ ११ 'क्खाणल्पवादं लं० सं० विना ॥ १२ विज्जाणुं जे० ल० मो० सु० ॥  
१३ पाणाडं जे० । पाणाड डे० ल० मो० शु० ॥ १४ अस्मिन् सूत्रे उण्णायस्स णं पुब्बस्स, अंगोणीयस्स णं पुब्बस्स,  
कीरियस्स णं पुब्बस्स इत्यादिकेषु चतुर्दशास्त्रपि पूर्वोन्मस्थानेषु उण्णायपुब्बस्स णं, अंगोणीयपुब्बस्स णं, कीरियपुब्बस्स णं  
इत्यादिः पाठभेदो मो० सु० दश्यते ॥ १५ चूल्यवत्थू शु० । चूल्यवत्थू जे० डे० मो० सु० ॥ १६ अग्नेणइयस्स डे० ल० ॥  
१७ चूल्यवत्थू ल० शु० । चूलिभाष्यवत्थू जे० डे० मो० सु० ॥ १८ चूल्यं शु० । चूलिभाष्यं जे० डे० मो० सु० ॥

वत्थू दस चुल्लवत्थू पण्णता ४ । णाणप्पवादस्स णं पुब्वस्स बारस वत्थू पण्णता ५ । सच्च-  
प्पवायस्स णं पुब्वस्स दोण्णि वत्थू पण्णता ६ । आयण्णवायस्स णं पुब्वस्स सोलस वत्थू  
पण्णता ७ । कम्मप्पवायस्स णं पुब्वस्स तीसं वत्थू पण्णता ८ । पञ्चक्खाणस्स णं पुब्वस्स  
वीसं वत्थू पण्णता ९ । विज्ञणुप्पवादस्स णं पुब्वस्स पणरस वत्थू पण्णता १० । अवंज्ञस्स  
णं पुब्वस्स बारस वत्थू पण्णता ११ । पाणायस्स णं पुब्वस्स तेस्स वत्थू पण्णता १२ । ५  
किरियाविसालस्स णं पुब्वस्स तीसं वत्थू पण्णता १३ । लोगविदुसारस्स णं पुब्वस्स पण-  
वीसं वत्थू पण्णता १४ ।

दस १ चोदस २ अडु ३ इडारसेव ४ बारस ५ दुवे ६ य वत्थूणि ।

सोलस ७ तीसा ८ वीसा ९, पण्णरस १० अणुप्पवायमि ॥ ७७ ॥

बारस एकारसमे ११, बारसमे तेसमेव वत्थूणि १२ ।

तीसा पुण तेसमे १३, चोदसमे पण्णवीसा उ १४ ॥ ७८ ॥

चत्तारि १ दुवालस २ अडु ३ चेव दस ४ चेव चुल्लवत्थूणि ।

आइल्लाण चउण्हं, सेसाणं चुल्लया णत्ति ॥ ७९ ॥

से तं पुब्वगते ३ ॥

१०७. से किंतं पुब्वगतं ? ति, उच्यते—जम्हा तित्थकरो तित्थपवत्तणकाले गणधराण सब्बमुताधारत्तणतो १५  
पुब्वं पुब्वगतमुतत्थं भासति तम्हा पुब्वं ति भणिता, गणधरा पुण मुत्तरयणं करेन्ता आयाराइकमेण रथंति  
द्वैति य । अणायरियमतेणं पुण पुब्वगतमुत्तथो पुब्वं अरहता भासितो, गणहरेहि वि पुब्वगतमुतं चेव पुब्वं इतं  
पञ्चा आयाराइ । एकमुक्ते चोदक आह—णणु पुब्वावरविरुद्धं, कम्हा ? जम्हा आयारनिजुत्तीए भणितं—“सब्बेसिं  
आयारो” गाहा [ आचाराङ्गनि.गा. ८ ] । आचार्याऽऽह—सत्यमुक्तम्, किंतु सा ठरणा, इमं पुण अक्खररयणं पदुच्च भणितं,  
पुब्वं पुब्वा कता इत्यर्थः । ते य उप्पायपुब्वादिया चोदस पुब्वा पण्णता । पढमं उप्पायपुब्वं ति, तत्थ सब्बदब्बाणं २०  
पञ्चवाण य उप्पायभावमंगीकाळं पण्णवणा कता, तस्स पदपरिमाणं एका पदकोडी १ । वितिं अगोणीयं, तत्थ  
वि सब्बदब्बाण पञ्चवाण य सब्बजीविसेसाण य अगं—परिमाणं वणिज्जइ ति अगोणीतं, तस्स पदपरिमाणं  
छण्डाति पदसतसहस्रा २ । ततियं वीरियप्पवायं, तत्थ वि अजीवाणं जीवाण य सकम्पेतराण वीरियं प्रवदति ति  
वीरियप्पवादं, तस्स वि सत्तरि पदसतसहस्रा ३ । चउत्थं अत्थिणत्थिप्पवादं, जं लोये जहा अत्थि जहा वा  
णत्ति, अहवा सितेवादाभिष्यादतो तदेवास्ति नास्तीत्येवं प्रवदतीति अत्थिणत्थिप्पवादं भणितं, तं वि पदपरि- २५  
माणतो सद्धि पदसतसहस्राणि ४ । पंचमं णाणप्पवादं ति, तम्मि भतिणाणाइपंचकस्स सप्रभेदं प्रख्यणा जम्हा  
कता तम्हा णाणप्पवादं, तम्मि पदपरिमाणं एका पदकोडी एगपदूणा ५ । छट्टं सच्चप्पवादं, सच्च—संजभो सच्च-

१ चुल्लवत्थू ल० श० । २ चूलियावत्थू जे० दे० मो० मु० ॥ ३ विज्ञाणु० जे० ल० मु० ॥ ४ पाणायुस्स सं० ।  
पाणादस्स जे० दे० ल० मो० मु० ॥ ५ चुल्लव० मो० श० सम० ॥ ६ चूलिया सं० दिना ॥ ७ स्वादादाभिष्यायतः ॥

वयणं वा, तं सच्च जत्थ सभेदं सपदिकर्कर्व च वणिज्जति तं सच्चप्पवादं, तस्स पदपरिमाणं एगा पदकोडी छप्पदाधिया ६ । सत्तमं आयप्पवातं, आय त्ति-आत्मा, [ जे० २२० दि० ] सो णेगहा जत्थ णयदरिसणेहि वणिज्जति तं आयप्पवादं, तस्स वि पदपरिमाणं छब्बीसं पदकोडीओ ७ । अट्टमं कम्मप्पवादं, णाणावरणाइयं अट्टविधं कम्मं पगति-ठिति-अणुभाग-प्पदेसादिष्ठिं भेदेहि अणेहि य उत्तरुत्तरभेदेहि जत्थ वणिज्जति तं कम्मप्प-५ वादं, तस्स वि पदपरिमाणं एगा पदकोडी असीति च पदसहस्राणि भवंति ८ । णवमं पञ्चकवाणं, तम्मि सब्बपञ्चकल्लाणसर्वं वणिज्जति त्ति अतो पञ्चकल्लाणप्पवादं, तस्स य पदपरिमाणं चतुरासीति पदसतसहस्राणि भवंति ९ । दसमं विज्ञप्पवातं, तत्थ य अणेमे विज्ञातिसया वणिता, तस्स पदपरिमाणं एगा पदकोडी दस य पदसतसहस्राणि १० । एगादसमं अवंशं ति, वंशं णाम-णिष्ठलं, ण वंशमवंशं, सफलेत्यर्थः, सब्बे णाण-तव-संजमजोगा सफला वणिज्जति, अप्पसत्था य पमादादिया सब्बे असुभफला वणिता, अतो अवंशं, १० तस्स वि पदपरिमाणं छब्बीसं पदकोडीओ ११ । वारसमं पाणायुं, तत्थ आयुं-प्राणविधाणं सच्चं सभेदं अणे य प्राणा वणिता, तस्स पदपरिमाणं एगा पदकोडी छप्पणं च पदसतसहस्रा १२ । तेरसमं किरियाविसालं, तत्थ कायकिरियादियाओ विसाल त्ति-सभेदा, संजमकिरियाओ ये छंदकिरियविहाणा य, तस्स वि पदपरिमाणं णव कोडीयो १३ । चोदसमं लोगविंदुसारं, तं च इमम्मि लोए सुतलोए वा विदुमिव अकवरस्स [ सारं- ] सञ्जुत्तमं सञ्चकखरसणिवातपदितत्तणतो लोगविंदुसारं, तस्स पदपरिमाणं अइहतेरस पदकोडीओ १४ । ३ ॥

१५ इदाणि अणिओगो त्ति—

१०८. से कि तं अणुओगे ? अणुओगे दुविहे पण्णते, तं जहा-मूलपदमाणुओगे य गंडियाणुओगे य ।

१०८. अनुयोग इत्येतद् अनुरूपो योगः अनुयोग इति । एवं सर्वं एव छत्राथो वाच्यः । इह जन्म-भव-पर्याय-शिष्यादियोगविवक्षातोऽनुयोगो वाच्यः । स च द्विविधः—मूलपदमाणुयोगो गंडिकाविशिष्टश ॥ तत्थ—

१०९. से कि तं मूलपदमाणुओगे ? मूलपदमाणुओगे णं अरहंताणं भगवंताणं पुञ्च-भवा देव्यलोगगमणाइं आउं चवणाइं जम्मणाणि य अभिसेया रथवरसिरीओ पञ्चज्ञाओ, तवा य उग्गा, केवलनाणुप्पयाओ तित्थपवत्तणाणि य सीसा गणा गणधरा य अज्जा य पवत्तिणीओ य, संघस्स चउविहस्स जं च परिमाणं, जिण-मणपञ्जव-ओहिणाणि-समत्तमुय-णाणिणो य वादी य अणुत्तरगती य उत्तरवेउविवणो य मुणिणो जत्तिया, जत्तिया सिद्धा, २५ सिद्धिपहो जह य देसिओ, जच्चिरं च कालं पादोवगओ, जो जहिं जत्तियाइं भत्ताइं छेयंइत्ता अंतगडो मुणिवरुत्तमो तमरंओघविणमुक्को मुक्खसुहमणुत्तरं च पत्तो, एते अन्ने य एवमादी भावा मूलपदमाणुओगे कहिया । से तं मूलपदमाणुओगे ।

१ छत्तीसं जे० ॥ २ य बंधकिरियं जे० विना ॥ ३ देवगमं डे० ल० शु० मो० सु० ॥ ४ आयं ख० ॥ ५ उत्तर-वेउविवणा य मुणिणो इति सं० लम० नास्ति ॥ ६ छेइत्ता जे० डे० ल० मो० सु० ॥ ७ रव्युधं सं० ॥ ८ सुई च अणुत्तरं पत्तो सं० ल० ॥ ९ पञ्चमन्त्रे जे० सु० ॥

१०९. ‘मूलपदमाणुयोगो’ चि, इह मूलभावस्तु—तीर्थकरः, तस्य पथमं—रूद्रभवादि, अहवा [जे० २२१ प्र०] मूल एव प्रथमः मूलपदमाणुयोगो । एत्थ तित्थगरस्स अतीतभवभावा बहुमाणभवे य जम्मादिया भावा कहिज्जंति । अहवा मूलस्स जे पदमा भावा ते पूलपदमाणुयोगो भण्णदि । एत्थ तित्थगरस्स जे भावा प्रदत्तात्तो गरियाय-मुत-सिसाइया भाणितब्बा ॥

११०. से किं तं गंडियाणुओगे? गंडियाणुओगे णं कुलगरगंडियाओ तित्थगरगंडियाओ ५ चकवट्टिगंडियाओ दसारगंडियाओ बलदेवगंडियाओ वासुदेवगंडियाओ गणधरगंडियाओ भद्रबाहुगंडियाओ तवोकम्मगंडियाओ हरिवंसगंडियाओ ओसप्पिणिगंडियाओ उस्सप्पिणि-गंडियाओ चित्तंतरगंडियाओ अमर-ण-तिरिय-निरियगद्गमणविविहपरियद्गणेसु एवमाइयाओ गंडियाओ आघविज्जंति । से तं गंडियाणुओगे । से तं अणुओगे ४ ।

११०. गंडियाणुओगो ति इक्षुमादिपञ्चगंडिकावत् एकाहिकारत्तगतो गंडियाणुओगो भणितो । ता य १० कुलकरादियाओ, विमलवाहणादिकुलकराणं “पुच्छमन्त्र जम्म णाम प्यमाण०” गाहा [ जाव. नि. गा. १४९ ] एवमादि जे किंचि कुलकरस्स वत्तव्यं तं सञ्चं कुलकरगंडियाए भणिते । एवं तित्थकरादिगंडियासु वि । ‘चित्तंतर-गंडिय’ चि चित्रा इति—अनेकार्थी, अत्तरे इति—उसम-अजियंतरे ता दिङ्गा, गंडिका इति—खंडं, अतो चित्तंतरगंडिका भणिता । तासि पैलवणे पुच्छायरिष्टहि इमा विधी दिङ्गा—

आदिच्चजसादीयं उसमस्स पयोपदे णरतीयं । सगरसुताण सुबुद्धी इणमो संखं परिकदेति ॥१॥

१५

चोदस लक्खा सिद्धा णिर्वैषेको य होति सञ्चद्वे । एवेकेकद्वाणे पुरिसजुगा होतऽसंखेज्ञा ॥२॥

पुणरवि चोदस लक्खा सिद्धा निवतीण दोणि सञ्चद्वे । दुगट्टाणे वि असंखा पुरिसजुगा होति णातच्चा ॥३॥

जाव य लक्खा चोदस सिद्धा पण्णास होति सञ्चद्वे । पण्णासद्वाणे वि तु पुरिसजुगा होतऽसंखेज्ञा ॥४॥

एगुच्चरा तु लक्खा संञ्चद्वे णेय जाव पण्णासा । एकेकुसरठाणे पुरिसजुगा होतऽसंखेज्ञा ॥५॥ १ ।

विवरीयं सञ्चद्वे चोदस लक्खाइ निवृतो एगो । स चेव य परिवाडी पण्णासा जाव सिद्धीए ॥६॥ २ ।

२०

तेण पर दुलक्खादी दो दो ठाणा य समग वञ्चति । सिवगति-सञ्चद्वेहि इणमो ताँसिं विद्धी होइ ॥७॥

दो लक्खा सिद्धीए दो लक्खा णरतीयं सञ्चद्वे । एवं तिलक्ख चतु षंच जाव लक्खा असृंखेज्ञा ॥८॥ ३ ।

सिवगति-सञ्चद्वेहि चित्तंतरगंडिया ततो चउरो । एगादेगुच्चरिया एगादिविउत्तरा वितिया ॥९॥

ततिएगादितिउत्तर तिगमादिविउत्तरा चतुर्थेवं । [जे० २२१ दि०] पदमाए सिद्धेको दोणि य सञ्चद्गसिद्धम्मा ॥१०॥

२५

ततो तिणि णरिदा सिद्धा चत्तारि होति सञ्चद्वे । इय जाव असंखेज्ञा सिवगति-सञ्चद्गसिद्धेहि १ ॥११॥

ताहे विउत्तराए सिद्धेको तिणि होति सञ्चद्वे । एवं षंच य सत्त य जाव असंखेज्ञ दो वि ति २ ॥१२॥

एग चतु सत्त दसगं जाव असंखेज्ञ होति दो वि ति । सिवगति-सञ्चद्वेहि तिउत्तराए तु णेतच्चा ३ ॥१३॥

१ पक्षवणा पुच्छायरिष्टहि इमा दिङ्गा आ० दा० ॥ २ एगुच्चरा उ ठाणा सञ्चद्वे चेव जाव पण्णासा । एकेकुसरठाणे दा० ॥ ३ सञ्चद्गाणे य आ० ॥ ४ तेसि हारि०हली ॥ ५ दोणि ति दा० ॥ ६ एत्थ णेयच्चा आ० । राप सुणेयच्चा दा० ॥

ताहे-तियगादिविउत्तराए अउण्ठीसं तु तियग ठावेतुं । पढमे णत्थि तु खेवो सेसेमु इमो भवे खेवो ॥१४॥  
 दुग पण णकर्ग तेरस सत्तरस दुवीस छ च अट्टेव । बारस चोदस तह अद्वीस छब्बीस पणुवीसा ॥१५॥  
 एकारस तेवीसा सीताला सतरि सत्तसत्तरि या । इग दुग सत्तासीती एगत्तरिमेव बाबट्टी ॥१६॥  
 ५ अउण्ठरि चउवीसा लाताल सतं तहेव छब्बीसा । एते रासीखेवा तिगञ्चतंता जहाकमसो ॥१७॥  
 सिवगति-सब्बहेहि दो दो ठाण विसमुत्तरा णेया । जाव उण्ठीसठाणे उण्ठीसं पुण छब्बीसाए ॥१८॥  
 विसमुत्तरा य पढमा एवमसंख विसमुत्तरा णेया । सब्बत्थ चि अंतिलुं अण्णाए आदिमं ठाण ॥१९॥ गतं ॥  
 अउण्ठीसं वारा ठावेतुं णत्थि पढमए खेवो । सेसे अद्वीसाए सब्बत्थ दुगादियो खेवो ॥२०॥  
 १० सिवगति पढमादीए वितियाए तह य होति सब्बहे । इय एगंतरिताइं सिवगति-सब्बहठाणाइं ॥२१॥  
 एवमसंखेज्जाओ चित्तंतरगंडियाओ णेतव्वा । जाव जितसत्तुराया अजिताजणपिता समुप्पणो ४ ॥२२॥  
 एवं गाहाहिं चित्तंतरगंडिया समत्ता । इमा एतासि ठवणा—

सिद्धा लक्खा	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	
सब्बहे लक्खा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	५०

एवं जाव असंखेज्जा पुरिसजुगा सिद्धा । अतो परं—

सिद्धा लक्खा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	५०
सब्बहे लक्खा	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४

एवं पि असंखेज्जा पुरिसजुगा सिद्धा । एते वि लक्खा—

सिद्धा लक्खा	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सब्बहे लक्खा	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

एवं जाव असंखेज्जा आचलिया दुगादिएगुत्तरा दो [ जे० २२२ प्र० ] वि गच्छति ॥

सिद्धा	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९
सब्बहे	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०

एवं असंखेज्जा । एगादेगुत्तरा पढमा चित्तंतरगंडिया णेया ॥

सिद्धा	१	५	९	१३	१७	२१	२५	२९	३३	३७	४१
सब्बहे	३	७	११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३

२५ एवं असंखेज्जा । एगादिविउत्तरा वितिया चित्तंतरगंडिया ॥

१ इसे भवे खेवा आ० ॥ २ चित्रान्तरगणिडिका-तद्यन्तकदम्बकविशेषजिह्वासुभिद्रेष्ट्वा अस्मत्तरम्पादितनन्दिसूत्रहारिभद्रीतस्यनन्तर-  
 मुद्रितकुर्यापदव्याख्यायाः १६७ तसे पत्रे दिष्पणी ॥

सिद्धा	१	७	१३	१९	२५	३१	३७	४३	४९	५५
सञ्च्छे	४	१०	१६	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८

एवं जाव असंखेजा । एगादितिउत्तरा ततिया चित्तंतरगंडिया ॥

सिक्षणति	३	८	१६	२५	११	१७	२९	१४	५०	८०	५	७४	७२	४९	२९
सञ्च्छे	५	१२	२०	९	१५	३१	२८	२६	७३	४	९०	६५	२७	१०३	५
सञ्च्छे	२९	३४	४२	५१	३७	४३	५५	४०	७६	१०६	३१	१००	९८	७५	५५
सिक्षणति	३१	३८	४६	३५	४१	५७	५४	५२	९९	३०	११६	९१	५३	१२९	१०

सेसं गाहाणुसारेण णेतक्वं जाव असंखेजा ४ ॥

१११. से किं तं चूलियाओ ? चूलियाओ आइलाणं चतुष्हं पुव्वाणं चूलिया, अव-  
सेसा पुव्वा अचूलिया । से तं चूलियाओ ५ ।

१११. 'चूल' चि सिहर । दिद्विवाते जं परिकम्म-सुत्त-पुव्व-अणुयोगे य ण भणितं तं चूलामु भणितं । ताओ य चूलाओ आदिल्लुपुव्वाण चतुष्हं जे चूलवत्थू भणिता ते चेव सञ्चुशरि द्वितिया पदिज्जंति य, अतो ते सुयपञ्चय-  
चूला इव चूला । तेसि जहक्कमेण संखा चतु बारस अद्व दस य भवेति ५ ॥

११२. दिद्विवायस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेदा,  
संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ णिजुत्तीओ, संखेज्जाओ १५  
संगहणीओ । से णं अंगद्वयाए दुवालसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, चोहस पुव्वा, संखेज्जा  
वत्थू, संखेज्जा चुलवत्थू, संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जा पाहुडपाहुडा, संखेज्जाओ पाहुडि-  
याओ, संखेज्जाओ प्राहुडपाहुडियाओ, संखेज्जाइं पैदसहस्साइं पदग्गणं, संखेज्जा अक्खरा,  
अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कट्ट-णिवद्व-णिकाइया  
जिणपण्णता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परुविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उव- २०  
दंसिज्जंति । से एवंआया, एवंणाया, एवंविणाया, एवं चरण-करणपरुवणा आघविज्जं-  
ति । से तं दिद्विवाए १२ ।

११२. संखेज्जा वत्थू पणुवीसुत्तरा दो सता । 'संखेज्जा चूलवत्थू' चि चतुत्तीसं ॥

१-२ चूलिया खं० सं० ल० शु० ॥ ३ चूलिया, सेसाहं पुव्वाहं अचूलियाहं, से तं जे० मो० सु० ॥ ४ चूलिया  
खं० सं० ल० शु० ॥ ५ दिद्विवाप णं खं० सं० ल० शु० ॥ ६ अंगद्वयाए खं० शु० ॥ ७ बारसमे जे० मो० सु० ॥ ८ पुडवाहं  
जे० मो० सु० ॥ ९ चूलवत्थू खं० सं० सम० विना ॥ १० पदसत्तसद० सम० ॥ ११ विज्जंति सं० जे० ॥

११३. इच्छेइयमि दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा अणंता अभावा अणंता हेऊ  
अणंता अहेऊ अणंता कारणा अणंता अकारणा अणंता जीवा अणंता अजीवा अणंता  
भवसिद्धिया अणंता अभवसिद्धिया अणंता सिद्धा अणंता असिद्धा पण्णता । संगहणिगाहा-  
भावमभावा हेउमहेऊ कारणमकारणा चेव ।

५ जीवाऽजीवा भवियमभविया सिद्धा असिद्धा य ॥ ८० ॥

११३. अणंता भाव ति भवन् भूतिर्वा भावः, ते य जीवा-जीवात्मका अणंता प्रतिवद्धा । ‘अणंता अभाव’ ति अभवन् अभावः अभूतिर्वा । जहा जीवो अजीवत्तेण अभावो, अजीवा य जीवत्तेण, पडो पडत्तेण, पडो य पडत्तेण, एसादि अणंता अभावा प्रतिवद्धा । अहवा जे जहा जावइया भावा तेसि पडिपक्खतो तावइया चेव अणंता अभावा भवति । ‘अणंता हेतु’ ति पञ्चन्दसावयववैयणेषु पक्खधम्मतं सपक्खसत्तं अभिलसितप्रथसाधकं १० वयणं हेतु भण्णति, अहवा सब्बजुत्तिजुत्तं वयणं हेतु भण्णति, अहवा सब्बे जिणत्रयणपहा हेतु, मतिपाँतक्कत्तणतो, णिहोसहेतुवयणं व, सुत्तस्स य अणंत [ जे० २२२ दि० ] गमत्तणतो, एवं अणंता हेतु । भणितपडिपक्खतो य अणंता चेव अहेतु । ‘अणंता कारण’ ति कजसाधयं कारणं ति, ते य पयोग-वीससातो अणंता भाणितव्वा । जं च जस्स असाधकं तं तस्स अकारणं, जहा चक्कन्दंडादयो पडस्स, एवं अणंता अकारणा । ‘अणंता जीवा’ इत्यादि कंठं ॥

११४. इच्छेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए विराहेता १५ चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिसु । इच्छेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुपण्णकाले परित्ता जीवा आणाए विराहेता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिति । इच्छेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागते काले अणंता जीवा आणाए विराहेता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिसंति ।

११४. इच्छेयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीते काले अणंता जीवा आणाए विराहेता इत्यादि । ‘दुवालसंगं गणिपिडगं’ ति तिविहं पण्णत्त-सुत्ततो अत्थतो तदुभयतो य । एमेव आणा तिविहा-सुत्ताणा अत्थाणा

१ इच्छेयमि खं० ॥ २ ‘कारणा जीवा । अजीव भवियउभविया, तत्तो सिद्धा लं० ल० शु० ॥ ३ पश्चावयव-दशा-वयवशानार्थीमत्रोऽिल्यमानो दशावैकालिकसूत्रनिरुक्ति-चूर्ण-दृढविश्वरण-वृत्त्यादिगतो अन्धसन्दर्भोऽवधारणीयः—“पइण्णा-हेउ-दिङ्गतोवसंहार-णिगमणेहि वा णिरुविज्ञति आगमवयणं पञ्चहि, दसहि वा ।” तथा “पतिण्णा पठमो अवयवो १ पतिण्णासुद्धौ २ हेऊ ३ हेउसुद्धी ४ दिङ्गतो ५ दिङ्गतविसुद्धी ६ उवसंहारो ७ उवसंहारविसुद्धी ८ णिगमणं ९ णिगमणविसुद्धी दसमो १० ।” इति [ “कर्थति पंचावयवं” इति दशावैकालिकसूत्रनिरुक्तिगत्या २३ अगस्त्यसिद्धचूल्यो पत्र २० ] । “कदाइ आगम-हेउ-दिङ्गतोवसंधार-णिगमणदसाणेण पंचावयवेण कहिज्जद, कदाइ पुण दसावयवेण ।” तथा—“इदाणि दसावयवाणं पख्वणं काहामि, तं०-पतिण्णा पठमो अवयवो १ पइण्णाविसुद्धी वितियो २ एवं हेऊ तइओ अवयवो ३ हेउविसुद्धी चडत्वो अवयवो ४ दिङ्गतो पञ्चमो अवयवो ५ दिङ्गतविसुद्धी छ्ठो ६ उवसंहारो सत्तमो ७ उवसंहारविसुद्धी अट्टमो ८ णिगमणं णवमो ९ णिगमणविसुद्धी दसमो १० ।” इति चूर्णविश्वरणे पत्र ३८-३९ । ‘पश्चावयवार्थ प्रतिज्ञादया, यथोऽप्य—‘प्रतिज्ञा-हेतुदाहरणोपनय-निगमननीत्यवयवाः’ [ न्यायद० १-१-३२ ] दशावैकालिकसूत्ररिभद्रवृत्तिः पत्र ३३ । तथा—“ते उ पङ्क्ष १ विभत्ती २ हेउ ३ विभत्ती ४ विवक्ष ५ पडिसेहो ६ । दिङ्गतो ७ आसंका ८ तप्पडिसेहो ९ निगमणं १० च ॥ १३७ ॥” दशावैकालिकनिरुक्तिः । अस्या व्याख्यार्थं द्वारिभद्री चृत्तिरवलोकनीया । एष्वेषेषु दशावयवद्विभ्यमपि न विस्तरणीयम् ॥ ४ ‘वयणे सपक्खलधम्मत-सपक्खलत्त-अभिलसितसज्जस्साधकं आ० ॥ ५ ‘पादकस्तणतो आ० दा० ॥ ६ इच्छेयं खं० शु० । एवमप्रेऽपि सर्वत्र हेयम् ॥

तदुभयआणा य एवं पश्चिमा तदा वि अभिधाणतो विसेसो कज्जति—यदा आङ्गाप्यते एभिः तदा आङ्गा भवति, तंतुपटव्यपदेशवत् । आङ्गाप्यते यथा हितोपदेशत्वेन सा आङ्गा इति । इदाणि एतेसि विराहणा चितिज्जति—जं सुत्ततो दुवालसंगं गणिपिडगं तं अत्थतो अभिनिवेसेण अण्हा पण्वेतो ताए अत्थाणाए सुत्तं विराहेता तीते काले अणंता जीवा संसारं भमितपुञ्चा, गोदुमाहित्यत् । अहवा जं अत्थतो दुवालसंगं गणिपिडगं तं सुत्ततो अभिनिवेसेण अण्हा पढंतो ताए सुत्ताणाए अत्थं विराहेता तीते काले अणंता जीवा संसारं भमितपुञ्चा ५ जमालित् । अहवा आणं ति-पंचविहायारायरणमीलस्स गुरुणो हितोवदेसवयणं आणा, तमण्णधा आयरंतेण गणिपिडगं विराधितं भवति, एवं तीए काले अणंता जीवा संसारं भमितपुञ्चा, एसो अक्खरसमो अत्थो । इमो अणक्खरसमो—आणाए विराधेता इति जहा छायाए भुजिता गतो, णो छायाए करणभूयाए भुजिता, किंतु छायायां भुक्त्वा गतेति, एवं आङ्गायां विराधनं कुत्ता । सा य आणा इमा—‘इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं आणाए विराहेता’ । सेसं पूर्ववत् । पदुप्पण-अणागतेसु वि सुत्तेसु एवं चेव वत्तव्यं, णवरं पदुप्पणे काले परिता जीवा १० इति, अणंता असंखेज्जा य [जे० २२३ प्र०] य भवति, सणिमणुयाणं संखेज्जत्तणतो ॥

११५. इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं ऐतीतकाले अणंता जीवा आणाए आराहेता चाउरंतं संसारकंतारं वितिवैदेसु । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पदुप्पणकाले परिता जीवा आणाए आराहेता चाउरंतं संसारकंतारं वितिवैयंति । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहेता चाउरंतं संसारकंतारं वितिवैतिसंति । १५

११६. तिसु वि आराधणसुत्तेसु एवं चेव वत्तव्यं ॥

११६. इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं ण कयाइ णाऽसी ण कयाइ ण भवति ण कयाइ ण भविस्सति, भुवि च भवति य भविस्सति य, धुवे णिअै सासते अक्खए अब्बए अव-ड्हिए णिचे । से जहार्णामए पंचत्थिकांए ण कयाति णाऽसी ण कयाति णंत्थि ण कयाइ ण भविस्सति, भुवि च भवति य भविस्सति य, धुवा णीया सासता अक्खया अब्बया २० अवड्हिया णिचा, एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे ण कयाइ णाऽसी ण कयाइ णत्थि ण कयाइ ण भविस्सति, भुवि च भवति य भविस्सति य, धुवे णिअै सासते ‘अक्खए अब्बए अवड्हिए णिचे ।

११७. ण कताइ णाऽसीत्यादि । त्रिकाले नास्तित्वभावप्रतिषेधकं सूत्रम् । ‘भुवि च’ इत्यादि त्रिकाले अस्तित्वभावप्रतिपादकं सूत्रम् । त्रिकालभावित्तणतो चेव अचलभावत्ताद् धुवं मेवादिवत् । धुवत्तणतो चेव जीवादि- २५

१ परं पग० दा० ॥ २ तंतुभिः पटं व्यय, देववस्तवत् आ० दा० ॥ ३ तीप काले जे० सु० ॥ ४-५-६ धीइव० जे० मो० । वीक्षीष० शु० ॥ ७ णीते ख० ल० शु० ॥ ८ णामे ख० ॥ ९ काया ख० ड० ल० शु० ॥ १० ण भवंति ण कथाइ ण भविस्संति, भुवि च भवंति च भविस्संति य, धुवा णीया सासता अक्खया अब्बया अवड्हिया णिचा, ख० ल० शु० ॥ ११ णीते ख० ल० शु० ॥

णवपदत्थेषु नियुक्तं नियतं जहा लोकवचनं पंचास्तिकायेष्विव । नियतत्त्वाणतो चेव 'सासतं' शश्वद् भवतीतिशाश्वतम्, प्रतिसमया-७७वलिक-मुहूर्त-दिनादिष्विव कालः । सासतत्त्वाणतो चेव वायणादिषु 'अक्खयं' नास्य क्षयो अक्खयम्, गंगा-सिंधुप्रवाहेष्वापि पोडरीकहदवत् । अक्खयत्त्वाणतो चेव 'अब्बयं' नास्य व्ययो अव्ययम्, मानुषोत्तराद् बहिसमुद्रवत् । अब्बयत्त्वाणतो चेव खपमाणे अवद्वितं जंबूदीपादिवत् । अवद्वितत्त्वाणतो चेव सञ्चहा चितिजमाणं 'निञ्चं' आकाशवद् ५ अविनाशीत्यर्थः । अहवा एते धुवादिया एगद्विता । चोदक आइ-इच्चेयं दुवालसंगं धुवादिपदपर्वतिं किमाणागेज्ञं दिङ्दंततो वा सज्जं? आचार्याऽऽह-जम्हा जिष्ठा अणणहावादिणो तम्हा तेर्सि वयणं सञ्च आणाते चेव गज्जं, कहिंचि १ दिङ्दंततो वि गज्जे । इह दुवालसंगस्स धुवादिपर्वतत्थस्स साधको इमो दिङ्दंतो-'से जहानामते'त्यादि कंठं ॥

११७. से समासतो चउव्विहे पण्णते, तं जहा-दब्बओ खेतओ कालओ भावओ । तैत्थ दब्बओ णं सुयणाणी उवउत्ते सब्बदब्बाइं जाणइ पाँसइ । खेतओ णं सुयणाणी उवउत्ते १० सैवं खेतं जाणइ पाँसइ । कालओ णं सुयणाणी उवउत्ते सैवं कालं जाणइ पाँसइ । भावओ णं सुयणाणी उवउत्ते सैवे भावे जाणइ पाँसइ ।

११८. तं च दुवालसंगसुतं चतुष्विहं दब्बादि । अभिष्णदसपुब्बादियाण जाव सुतनाणकेवली ते पहुच भणितं । दब्बतो णं सुतनाणी सुतनाणेणोवयुत्तो सुत्तविष्णत्तीए सब्बदब्बादिं जाणति पासति य । णणु पासइ त्ति विरोहो? उच्यते-जम्हा अदिद्वाण वि मेरुमादियाण सुतनाणपासणताए आगारमालिहइ, ण यादिङ्दुं लिखइ, १५ पणवगाए य भणिता सुतनाणपासणत त्ति, ण विरोधो । आरतो पुण जे सुतनाणी ते सब्बदब्बनाण-पासणतासु भइता । सा य भवणा मतिविसेसती जाणितव्वा । एवं खेत-काल-भावेषु वि [ जे० २२३ द्वि० ] भाणितव्वा ॥

सुतनाणदंसणत्थं भणिति—

११८. अक्खर १ सण्णी २ सम्म ३ सादीयं ४ खलु सपज्जवसियं ५ च ।  
गमियं ६ अंगपविङ्गुं ७ सत्त वि एए सपडिवक्खा ॥ ८१ ॥

आगमसत्थगहणं जं बुद्धिगुणेहिं अंद्वहिं दिङ्दुं ।

चिति सुयणाणलंभं तं पुब्बविसारया धीरा ॥ ८२ ॥

सुस्सूसइ १ पडिपुच्छइ २ सुणेइ ३ गिणहइ ४ य ईहए ५ यांवि ।

तत्तो अपोहए ६ चौं धारेइ ७ करेइ वा सम्म ८ ॥ ८३ ॥

मूयं १ हुंकारं २ वा चाढकार ३ पडिपुच्छ ४ वीमंसा ५ ।

तत्तो पसंगपारायणं ६ च परिणिङ्गुं ७ सत्तमए ॥ ८४ ॥

१ जिणा णज्जणहा आ० ॥ २ तस्थ इति ख० ड० ल० शु० विआमन्दुदरणे ३०० पञ्च नास्ति ॥ ३-५-७-९ ण पासइ हाटोपा० ॥ ४-६-८ सब्बं ख० विआमन्दुदरणे ३०० पञ्च ॥ १० अंद्वहिं वि दिङ्दुं जे० ल० ॥ ११ आवि ख० । वा वि जे० ल० ॥ १२ या ख० ॥

सुतत्थो खलु पढ्मो, बीओ णिज्जुत्तिमीसिओ भणिओ ।  
तइओ य णिखसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥ ८५ ॥

[ आब० नि० गा० २१-२४ ]

से तं अंगपविङ्गुं । से तं सुयणाणं । से तं परोक्खणाणं ।  
॥ से तं णंदी सम्मता ॥

5

११८. अश्वर० गाहा । एसा चोद्दसविहसुतभावपरलब्धा कता ॥ ८१ ॥ एत्थं आशारादिगेणश्वरागम-पणीतस्स पत्तेगदुद्धभासितस्स वा तहाकालाशुभावतो बल-वुद्धि-मेधा-उद्युहाणि जाणित्तु जे य सुतभावा आवर्तेष्टि निज्जूदा तंसु शहणाविही दसिज्जाइ—

आगम० गाहा ॥ ८२ ॥ इमे ते अद्व बुद्धिगुणा—

सुस्सूसति० गाहा ॥ ८३ ॥ विणेतस्स अत्थसवणे इमा विही—

10

मूर्यं हुंकार० गाहा ॥ ८४ ॥ गुरुणो अणुयोगकहणे इमा विही—

सुतत्थो खलु० गाहा ॥ ८५ ॥

जं ण भणितमूर्णं वा अतिरितं वा चि अहव विक्रीतं ।

तं सम्मउशुयोगधरा कहेतु कातुं मम क्लंति ॥ १ ॥

णि रेण॑ गम त्तण्डि सदा जि या पसुपतिसंखगजद्विताकुला ।

15

कमट्ठिता धीमतचित्तियक्खरा, कुडं कहेयंतउभिधाण ककुणो ॥ ७ ॥

शकराज्ञो पंचसु वर्षशतेषु व्यतिक्रमतेषु अष्टनवतेषु नंद्यध्ययनचूर्णीं समाप्ता इति ॥ ७ ॥ ७ ॥ ग्रन्थाग्रम् १५००॥



१ 'गणधरणीतस्स आ० दा० ॥ २ जिरेणगामेत्तमहासहाजिता पसूयती संखणगद्विता आ० ॥ ३ सकराजतो पंचसु वर्षशतेषु नंद्यध्ययन' आ० ॥

प्रथमं परिशिष्टम्

नन्दीसुत्रान्तर्गतानां सूत्रगाथानामकारादिवर्णश्चमेण अनुकमणिका

गाथा	सूत्राङ्क	गाथाङ्क	गाथा	सूत्राङ्क	गाथाङ्क	गाथा	सूत्राङ्क	गाथाङ्क
अक्सर सण्णी सम्यं	११८	८१	ओही भवपञ्चतियो	२८	५२	जेसि हमो अणुओगो	५	३२
[ आव. नि. गा. १९ ]			कृमरयजलोहविणि-	२	७	णाणम्मि दंसम्मि य	५	२८
अहृष्टभरहप्पहाणे	५	३७	कालियसुयअणुओग-	७	३४	णाणवररयणदिप्त-	२	१७
अणुमाणहेउदिन्तु-	४६	६६	काले चउष्ट बुहूदी	२३	५०	णिमित्ते अथसथ्ये य	४६	६२
[ आव. नि. गा. १४८ ]			[ आव. नि. गा. ३६ ]			[ आव. नि. गा. १४४ ]		
अथमहत्थक्षाणि	५	४०	केवलगाणेणाड्ये	४१	५९	णियमूसियकण्यसिला-	२	१३
अथाणं उमाहणं	५८	७१	[ आव. नि. गा. ७८ ]			जेरतियदेवतिर्थकरा पत्र-२०	टि०८	
[ आव. नि. गा. ३ ]			खमए अमच्छपुते	४६	६८	[ टीकाद्वयसम्भता गाथा, आव. नि. गा. ६६ ]		
अभए सेट्टि कुमारे	४६	६७	[ आव. नि. गा. १५० ]			जेवदुद्धपहसासगयं पत्र-७	टि०६	
[ आव. नि. गा. १४९ ]			खीरमिव जहा हंसा पत्र-१२	टि०५		[ टीकाद्वयसम्भता गाथा ]		
अयलपुरा गिक्खंते	५	३१	[ चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा ]			तत्तो य भूयदिनं पत्र-१०	टि०७	
अह सञ्चदञ्चपरिणाम-	४१	५४	गुणभवणगहण । सुव-	२	६	[ चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा ]		
[ आव. नि. गा. ७७ ]			गुणरयणुजलकड्यं पत्र-५	टि०१०		तत्तो हिमवंतमहंत-	५	३३
अंगुलमावलियाणं	२३	४६	[ चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा ]			तवनियमसञ्चसंजम- पत्र-११	टि०११	
[ आव. नि. गा. ३३ ]			गोविदाणं पि एमो पत्र-१०	टि०७		[ चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा ]		
आगमसञ्चागहणं	११८	८२	चत्तारि दुवालस अ-	१०७	७९	तवसंजममयलंछण ।	२	९
[ आव. नि. गा. २१ ]			चलणाहण आमंडे	४६	६९	तवियवरकणगचंपय-	५	३६
ईहा अपोह वीमंसा	५८	७५	[ आव. नि. गा. १५१ ]			तिसमुद्रवायकिति	५	२६
[ आव. नि. गा. १३ ]			जञ्चञ्चणधाउसम-	५	३०	दस चोदस अदुङ्डा-	१०७	७७
उग्रह ईहाऽवाओ	५८	७०	जयह जगजीवगोणी-	१	१	नगर रह चर्क पउमे पत्र-५	टि०१०	
[ आव. नि. गा. २ ]			जयह सुयाणं पभवो	१	२	[ चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा ]		
उग्रह एकं समये	५८	७२	जसभई तुग्मियं बंदे	५	२३	न य कल्थह निम्माओ पत्र-१२	टि०५	
[ आव. नि. गा. ४ ]			जावतिया तिसमया-	२३	४४	[ चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा ]		
उण्ठिया वेणइया	४६	५६	[ आव. नि. गा. ३० ]			पठमेत्थ इदभूती	४	२०
[ आव. नि. गा. १३० ]			जा होइ पगइमहुरा पत्र-१२	टि०५		परतिथियगहपह-	२	१०
उवओगदिदुसारा	४६	६४	[ चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा ]			पुट्टु सुणेति सदं	५८	७३
[ आव. नि. गा. १४६ ]			जीवदयासुंदरकंद-	२	१४	[ आव. नि. गा. ५ ]		
ऊससियं नीससियं	६४	७६	जे अण्णे भगवंते	५	४२			
[ आव. नि. गा. २० ]								
यलावच्चसगोत्तं	५	२४						

## नन्दीसूत्रगाथानामकारादिकमेणानुक्रमणिका

गाथा	सूत्राङ्क	गाथाङ्क	गाथा	सूत्राङ्क	गाथाङ्क	गाथा	सूत्राङ्क	गाथाङ्क
पुर्व अदित्यमसुय-	४६	५७	महसित्य मुदियंके	४६	६०	संजमतवर्तुंबार-	२	५
[ आव. नि. गा. १४९ ]			[ आव. नि. गा. १४२ ]			संवरवरजलयगलियउञ्ज-	२	१५
वारस एकारसमे	१०७	७८	मंडिय मोरियपुले	४	२१	राज्यगजयामहुयरिषि-	२	८
भणगं करगं शरगं	५	२७	मिउमदवसंपणे	५	३५	सीया साडी दीहं च	४६	६३
भदं धिइवेलापरि-	२	११	मूर्खं हुंकारं वा	११८	८४	[ आव. नि. गा. १४५ ]		
भदं सञ्जगुञ्जो-	१	३	[ आव. नि. गा. २१ ]			सुकुमालकोमलतले	५	४१
भदं सीलपडागू-	२	४	वद्ददउ वायगवंसो	५	२९	सुत्तथो खङ्ग पढमो	११८	८५
भरणित्वरणसमथा	४६	६१	वंदामि अज्जवम्म	पत्र-८ दि०१०		[ आव. नि. गा. २४ ]		
[ आव. नि. गा. १४३ ]			[ चूर्ण-टीकाद्वयानाहता गाथा ]			सुमुणियणिक्काणिचं	५	३९
भरहम्मि अद्वमासो	२३	४८	वंदामि अज्जरनिख्य-	पत्र-८ दि०१०		सुस्सूसइ पडिपुच्छ	११८	८३
[ आव. नि. गा. ३४ ]			[ चूर्ण-टीकाद्वयानाहता गाथा ]			[ आव. नि. गा. २२ ]		
भरह सिल पणिय रुख्खे	४६	७८	वंदे उसमं अजियं	३	१८	सुहम्म अग्निदेसार्ज	५	२२
[ आव. नि. गा. १४० ]			विणयणयपवरमुणिवर-	पत्र-५ दि०८		सुहमो य होइ कालो	२३	५१
भरह सिल मिह कुकुड	४६	५९	[ १६ गाथाप्रथमचरणपाठमेद ]			[ आव. नि. गा. १७ ]		
[ आव. नि. गा. १४१ ]			विणयमयपवरमुणिवर-	२	१६	सेलघण कुडग चालणि	६	४३
भावमभावा हेत्तम-	११३	८०	विमलमणंतहम्म	३	१९	[ आव. नि. गा. १३६ ]		
भासासमसेढीओ	५८	७४	सम्मदंसगवदरदद-	२	१२	हत्थम्मि मुहुर्चंतो	२३	७७
[ आव. नि. गा. ६ ]			सञ्चवहुअगणिजीवा	२३	४५	[ आव. नि. गा. ३३ ]		
मूर्यहिययप्पगम्मे	५	३८	[ आव. नि. गा. ३१ ]			हारियगोतं साइं	५	२५
मणपञ्जकणाणं पुण	३२	५३	संखेजम्मि उ काले	२३	४९	हेरणिगए करिसए	४६	६५
[ आव. नि. गा. ७६ ]			[ आव. नि. गा. ३५ ]			[ आव. नि. गा. १४७ ]		

## द्वितीयं परिशिष्टम्

## नन्दीसूत्रचूर्णलग्नतानामुद्गरणानामकारादिक्रमेण अनुक्रमणिका

गाथादि	पत्राङ्क	गाथादि	पत्राङ्क	गाथादि	पत्राङ्क
अउणतरि चउवीसा	७८	एवमसंखेज्जाओ	७८	जह जुगबुप्तीय वि	२९
अउणतीसं वारा	७८	एवं तु अणतेहि	५४	[ विशेषणवती गा. २१९ ]	
अक्षुरल्लभेण समा	५५	[ कल्पभाष्य गा. ५० ]		जह पासतु तह पासतु	३०
[ विशेषणवती गा. १४३ ]		एवं वहुवत्त्वं	५६	[ विशेषणवती गा. १९२ ]	
अणो ण चेव बीसुं	२८	[ नन्दीचूर्णी ]		जं केवलाहं सादी-	२८
[ विशेषणवती गा. १५४ ]		कर्स व णाणुमतमिणं	३०	[ विशेषणवती गा. १९३ ]	
अशा भोजने	१४	[ विशेषणवती गा. २४६ ]		जाव य लक्खा चोइस	७७
[ पाणि. धातु. १५२४ ]		किंचिम्मत्तगाही	१३	जुगबमजाण्ठो वि हु	२९
अशू व्यासी	१४	[ कल्पभाष्य गा. ३६९ ]		[ विशेषणवती गा. २१६ ]	
[ पाणि. धातु. १३६५ ]		क्षमिकीटपतङ्गाद्वा:	४८	णवंभंभेरमझओ	६२
अह ण वि एतं तो सुण	२९	[ ]		[ आचाराङ्ग नि गा. ११ ]	
[ विशेषणवती गा. २०३ ]		केण हवेज्ज निरोधो	५४	णुद प्रेरणे	१७
अह देसणाणदंसण	३०	[ कल्पभाष्य गा. ६९ ]		[ पाणि. धातु. १३४३ ]	
[ विशेषणवती गा. १५७ ]		केयी भणंति जुगवं	२८	ततिएगादि तिउत्तर	७७
आदिच्छजसादीणं	७७	[ विशेषणवती गा. १५१ ]		तत्तो तिण्ण णरिदा	७७
इहराऽयीणिहणतं	२८	केवलमेगं सुदं	१४	तह य असञ्चण्युतं	२८
[ विशेषणवती गा. १५४ ]		[ विशेषणवती गा. ८४ ]		[ विशेषणवती गा. १९५ ]	
इहाऽधोलौकिका ग्रामा	२४	गणहरकतमंगगतं	५७	ताहे विउत्तराए	७७
[ ]		[ ]		तिखं भते ! तिखं ?	२६
उचउत्तसेमेव य	२९	गमणपरावत्तेगो	१३	[ भगवती श. २० उ. ८ स. ६४२ ]	
[ विशेषणवती गा. २०६ ]		[ ]		तियगादिविउत्तराए	७८
उवयोगो एगतरो	३०	गुणदोसविसेसण्	१२	हुल्ले उभयावरण-	२९
[ विशेषणवती गा. २३२ ]		[ कल्पभाष्य गा. ३५५ ]		[ विशेषणवती गा. २१० ]	
उवलद्वी अगुरुलहु	५४	गुरुलहुदव्वेहितो	५३	तेण पर दुलक्खादी	७७
[ कल्पभाष्य गा. ५१ ]		[ कल्पभाष्य गा. ६७ ]		द्वितस्स लभंतस्स व	२९
उस्सेहपमाणतो मिणे देहं	२४	चोइस लक्खा सिद्धा	७७	[ विशेषणवती गा. २०५ ]	
[ वृहत्सूक्ष्मद्वयी गा. ३३१ ]		जति पुण सो वि वरिज्जेज्ज	५६	दुग पण णवं तेरस	७८
एकारस तेवीसा	७८	[ कल्पभाष्य गा. ७४ ]		देसणाणोवरमे	३०
एग चहु सत्त दसगं	७७	जह किर खीणावरणे	३०	[ विशेषणवती गा. १५६ ]	
एगुत्तरा तु लक्खा	७७	[ विशेषणवती गा. १५५ ]			

## नन्दीसूत्रचूर्णिगतानामुद्धरणानामकारादिक्रमः

गाथादि	पत्राङ्क	गाथादि	पत्राङ्क	गाथादि	पत्राङ्क
दो लक्खा सिद्धीए	७७	पुगरवि चोदस लक्खा	७७	वतसमिति०	६१
धर्मो मंगलमुक्तुं	७४	पुञ्चभव जम्म णाग	७७	[ ]	७७
[ इश्वर्व. अ. १ गा. १ ]		[ आयश्वकनि. गा. १४९ ]		विवरीवं सञ्चटु	७८
नाणम्मि दंसणम्मि य	३०	भगितं पि य पण्णती	२९	विसमुन्नरा य पढमा	७८
[ विशेषणवती गा. २२९ ]		[ विशेषणवती गा. २२० ]		सतरं ण देह लभह	२९
निच्छ्यतो सञ्चगुरुं	५३	भण्गति जहोहिणाणी	३०	[ विशेषणवती गा. २०४ ]	
[ कल्पनाल्प गा. ८१ ]		[ विशेषणवती गा. १७८ ]		सदसदविसेसगातो	४८
पगतीमुद्धमजागिय	१३	भण्गति ण एस गियमो	२९	[ विशेषणवती गा. ११५ ]	
[ कल्पभाष्य गा. ३६७ ]		[ विशेषणवती गा. २१८ ]		सञ्चे सन्ना ण हंसञ्चा	२
पण्गवण्डिजा भाद्रा	५५	भण्णनि भिण्णसुहुत्तो	२८	[ आचाराङ्ग थु. १. अ. ४,	
[ कल्पभाष्य गा. १६४ ]		[ विशेषणवती गा. २०२ ]		उ. २ सू. ३ ]	
पायदुगं जंघोरु	५७	भंभा मकुंद मदल	१	सञ्चेसि आथारो	७५
[ ]		[ ]		[ आचाराङ्ग नि गा. ६ ]	
पासंतो वि ण जाणइ	२९	रुप्पं पलैयबुद्धा	२६	सिवगति पढमादीए	७६
[ विशेषणवती गा. २१५ ]		[ आयश्वकनि. गा. ११३५ ]		सिवगति-सञ्चटुहिं चि-	७७
पिंडस्स जा विसोही	६१	रुविससञ्चधे	१५	सिवगति-सञ्चटुहिं दो	७८
[ व्यवहारभाष्य उ. १ गा. २०९ ]		[ तत्त्वा. अ. १ सू. २८ ]			

## ३

## तृतीयं परिशिष्टम्

## नन्दीसूत्रचूर्णिगतानि पाठान्तर-सतान्तरनिदर्शकानि स्थानानि

पत्र पंक्ति	पत्र पंक्ति
अण्णायरियमतेण	७५-१७
अण्णे	२२-२२, ३२-३
अण्णे पुण	८-११
अण्णे पुण आयस्या	४१-२
अण्णे भण्णति	९-२९, २४-२९
	१७-१३
	१२-२
	४१-६
	२-१४
	८-११, ५२-६, ७०-२

## चतुर्थ परिशेषम्

नन्दीसूत्र-तचूर्ण्यन्तर्गतानां अन्ध-ग्रन्थकार-स्थविर-चृप-श्रेष्ठि-नगर-पर्वतादीना-  
मकारादिवर्णकमेणानुकमणिका

[ अस्मिन् परिशेषे \* एतादृक्मुणिकायुतानि नामानि नन्दीसूत्रमूल्यातानि हेत्यानि, ० एतादृक्शृद्ययुतानि नामानि उद्भवस्थावत्वेनास्माभिनिर्दिष्टानि हेत्यानि, शेषाणि च नामानि चूर्णि-टिणणिसल्कानि हेत्यानि ]

&lt;---&gt;&lt;---&gt;

विशेषनाम	क्रमः ?	पत्रम्	विशेषनाम	क्रमः ?	पत्रम्	विशेषनाम	क्रमः ?	पत्रम्
*अकंपित [ निर्ग्रन्थ-गणधर ]	७		अगुत्तरोबद्धाह्यदसा [ जैनागम ]	६९		अंगविज्ञा [ जैनागम ]	३८०	
०अगस्त्यसिंह [ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	८०८०		*अगुत्तरोबद्धाह्यदसाओ „	४८,६१,		*अंतगडदसाओ „	४८,६१,६७	
*अग्निभूति [ निर्ग्रन्थ-गणधर ]	७		६८,७०			अंतगडदसातो „	६८	
*अग्निवेस [ गोत्र ]	७		*अथिणिथिष्पवात [ जैनपूर्वागम ]	७४		अंधगवण्ही [ राजा ]	६०	
अग्निवेस	"	७	अथिणिथिष्पवाद „	७५		*आउरपच्चकस्ताण [ जैनागम ]	५७	
*अग्नेणिथ	[ जैनपूर्वागम ]	७४८०	०अनुयोगद्वार [ जैनागम ]	४८८०,		आउरपच्चकस्ताण „	५८	
*अग्नेणीथ	"	७४		४९८०		०आचाराङ्ग „	२,२८०	
अग्नेणीय	"	७५	*अभय [ राजपुत्र ]	३४		०आचाराङ्गनिर्युक्ति „	६२,७५	
अजितजिण	[ तीर्थकर ]	७८	०अभयदेव [ निर्ग्रन्थ-आचार्य ]	२३८०,		आजीविक [ दर्शन ]	७२,७३,७४	
*अजिय	"	६		४२८०,६५८०,		*आजीविय „	७२,७४	
अजिय	"	७७		६७८०,६८८०		आतविसोही [ जैनागम ]	५८	
अज्ज	[ गोत्र ]	८	*अभिण्दण [ तीर्थकर ]	६		आदिचज्जस [ राजा ]	७७	
*अज्जगागहस्थि [ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	९		*अमरगाहगमण-			०आभीयमासुरक्ख [ शास्त्र ]	४९८०	
अज्जगागहस्थि	"	९	गंडियाओ [ दृष्टिवादप्रविभाग ]	७७		०आभिर्य „	४९८०	
अज्जधम्म	"	८८०	*अयलभाता [ निर्ग्रन्थ-गणधर ]	७		आयप्पवात [ जैनपूर्वागम ]	७६	
*अज्जमंगू	"	८	*अर् [ तीर्थकर ]	७		*आयप्पवाद „	७४,७५	
अज्जरक्षय	"	८८०	अरुण [ देव ]	५९		*आयविसोही [ जैनागम ]	५७	
अज्जवृर	"	८८०	*अरुणोबवाप् [ जैनागम ]	५९		*आयर „	४८,६१	
*अज्जसमुद्	"	८	०अर्थविदा [ शास्त्र ]	४९८०		„ ४६,४९,६२,		
*अज्जाणंदिल	"	८	*अर्वद्वा [ जैनपूर्वागम ]	७२,७५		७५,८३		
अज्जाणंदिल	"	८८०	अवंज्ञा „	७६		आयरनिजुती „	७५	
*अणंतह् [ तीर्थकर ]	७		अंगचूलिता [ जैनागम ]	५९		आरिस „	२६	
*अशुओगदाराइ [ जैनागम ]	५७		*अंगचूलिता „	५९		०आर्यजीतधर [ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	८८०	

विशेषनाम	क्रमः	पत्रम्	विशेषनाम	क्रमः	पत्रम्	विशेषनाम	क्रमः	पत्रम्
०आर्यमङ्गु [निर्वन्ध-स्थविर]	८६०	*एश्वय	[ क्षेत्र ]	५१	कासव	[ गोत्र ]	७,८	
०आर्यसमुद्र	"	८६०	*एलावच्च	[ गोत्र ]	७	*किरियाविसाल [ जैनपूर्वागम ]	७४,७५	
०आवश्यकर्दीपिका [जैनागम]	११६०	एलावच्च	"	८	किरियाविसाल [ जैनपूर्वागम ]	७६		
०आवश्यकनिर्युक्ति	"	२,२६,४६, ४७,५१	*एलावच्च	"	७६०	कुलारंगडिया [ दृष्टिवादप्रविभाग ]	७७	
०आवश्यकनिर्युक्ति [जैनागम]	२०६०,	२७६०,३३६०	०ऐलाफ्ल्य	"	८६०	*कुलगरंगडियाओ	"	७७
०आवश्यकनिर्युक्ति	"	३४६०	*ओवाइय	[ जैनागम ]	५७	*कुंशु	[ तीर्थकर ]	७
०आवश्यकनिर्युक्ति	"	४९	*ओसपिणिगंडियाओ	[ दृष्टिवादप्रविभाग ]	७७	*कोडल्य } [ शास्त्र ]	४९	
०आवस्यकनिर्युक्ति	"	५७	*कव्यायण	[ गोत्र ]	७	*कोडिल्ल्य } [ शास्त्र ]	४९६०	
*आवस्यकनिर्युक्ति	[ शास्त्र ]	४९६०	कव्यायण	"	८	०कोडिल्ल्यदण्णीह	[ शास्त्र ]	४९६०
०आसुर्य	"	४९६०	*कणगसत्तरि	[ शास्त्र ]	४९	*कोसिय	[ गोत्र ]	८,७६०
०आसुहक्ष	"	४९६०	*कृप्य	[ जैनागम ]	५८	*क्रियाकल्प	[ शास्त्र ]	४९६०
०इतिहास	"	४९६०	*कृष्णलिंगियाओ	"	५९	*खंदिलायरिय	[ निर्वन्ध-स्थविर ]	९
*इसिभासियाइ [जैनागम]	५८	कृप्यसुत	"	५७	खंदिलायरिय	"	९	
*इंदमूलि [निर्वन्ध-गणधर]	७	*कृप्यासिय	[ शास्त्र ]	४९	*खुडियाविमाणपविभत्ति [जैनागम ]	५९		
*उद्ग्राणसुय [जैनागम]	५९	*कृप्याओ	[ जैनागम ]	५९६०	खुडियाविमाणपविभत्ति	"	५९	
उद्ग्राणसुत	"	६०	*कृप्याकृप्य	"	५७	*खोडमुह } [ शास्त्र ]	४९	
*उत्तरज्ञायणाइ	"	५८	कृप्याकृप्य	"	५७	*खोडमुह } [ शास्त्र ]	४९६०	
*उप्यादपुञ्च [जैनपूर्वागम]	७४	*कमप्पगडि	[ जैनशास्त्र ]	९	*गगधरगंडियाओ	[ दृष्टिवादप्रविभाग ]	७७	
उप्यायपुञ्च	"	७५	*कमप्पवाद	[ जैनपूर्वागम ]	७४,७५	*गणिय	[ शास्त्र ]	४९६०
उद्धक	[ दर्शन ]	१	कमप्पवाद	"	७६	*गणिविजा	[ जैनागम ]	५७
*उववाइय	[ जैनागम ]	५७६०	करकंडु	[ निर्वन्ध-प्रत्येकबुद्ध ]	२६	गरुल	[ देव ]	५९
*उवासगदसाओ	"	४६,६१, ६६,६७	करिसावण	[ नाणकविशेष ]	४५	*गहलोववार	[ जैनागम ]	५९
उवासगदसाओ	"	६७	०कल्पभाष्य	[ जैनागम ]	१२,१३, ५३,५४, ५५,५६	गंगा	[ नदी ]	६४,८२
*उसम-ह	[ तीर्थकर ]	६,६०	कविल	[ ऋषि ]	२६	गंडिकाणुओग	[ दृष्टिवादप्रविभाग ]	७६
उसम	"	७,६०,७७	*कविल	[ शास्त्र ]	४९	*गंडियाणुओग	"	७६,७७
*उस्सपिणिगंडियाओ	[ दृष्टिवादप्रविभाग ]	७७	*कविल	"	४९६०	गंडियाणुओग	"	७७
एगूरुग	[ अन्तरद्वीप ]	२२	*कविलिय	"	४९६०	गोद्वामाहिल	[ निर्वन्धनिहव ]	८१
एरवद-य	[ क्षेत्र ]	२२,५१	*कासव	[ गोत्र ]	७	गोतम	[ निर्वन्ध-गणधर ]	२६,६५
						गोतम	[ गोत्र ]	७
						०गोमटसार	[ जैनशास्त्र ]	४९६०

विशेषनाम	क्रमः	पत्रम्	विशेषनाम	क्रमः	पत्रम्	विशेषनाम	क्रमः	पत्रम्
*गोयम	[ गोत्र ]	७	०छन्दस्त्विनी	[ शास्त्र ]	४९टि०	*णायाधम्मकहाओ [ जैनागम ]	४८,६१,	
गोविन्द	[ निर्गन्ध-स्थविर ]	१०टि०	जमाली	[ निर्गन्धनिहृष्ट ]	८१		६५,६६	
गोसाल	[ आजीवकदर्शनप्रयोग ]	७२	*जसमद	[ निर्गन्ध-स्थविर ]	७	णायाधम्मकहाओ ,,,	६६	
गौतम	[ निर्गन्ध-गणधर ]	५१	जसमद	"	७	*णासिकसुंदरी-नंद [ श्रेष्ठिदम्पती ]	३४	
*घोडमुह } }	[ शास्त्र ]	४९टि०	जंबु	"	७,२६	गिसीह	[ जैनागम ]	५८
*खोडमुह } }		४९	*जंबू	"	७	*णेमी	[ तीर्थकर ]	७
*चक्रचटिगंडियाओ [ हष्टिवादप्रविभाग ]	७७	*जंबुदीय	[ द्वीप ]	१८,२४	०तत्वार्थाधिगमसूत्र	[ जैनशास्त्र ]	१५	
चरग	[ श्रमणविशेष ]	३,४	जंबुदीय	"	२४	*तयोकम्मरंडियाओ [ हष्टिवादप्रविभाग ]	७७	
*चरणविही	[ जैनागम ]	५७	*जंबुदीयपण्णति	[ जैनागम ]	५८	*तंदुलवेयालिय	[ जैनागम ]	५७
चरणविही	"	५८	जंबूदीप	[ द्वीप ]	८२	तावस	[ श्रमणविशेष ]	४
*चंदपण्णति	"	५९	जिणदासगणि-	[ नन्दिचूर्णिकार ]	८३	*तित्थगरंडियाओ [ हष्टिवाद-प्रविभाग ]	७७	
*चंदावेङ्गाय	"	५७	महत्तर					
*चाणक	[ अमात्य ]	३४	जितसत्तु	[ राजा ]	७८	*तिरियगडगमणगंडियाओ ,,,	७७	
चित्तंतरगंडिया [ हष्टिवादप्रविभाग ]	७७	जीवधर	[ निर्गन्ध-स्थविर ]	८	*तुंगिय	[ गोत्र ]	७	
*चुल्कण्णसुत	[ जैनागम ]	५७	*जीवाभिगम	[ जैनागम ]	५७	*तुंगियायण		
चुल्कण्णसुत	"	५७	०जेसलमेह	[ नगर ]	३५टि०,५५टि०	कथावच		
चुल्हिमवंत	[ गिरि ]	२२	ज्योतिष	[ शास्त्र ]	४९टि०	*तेरासिय	[ दर्शन ]	७२,७४
०चूर्णि [ नन्दीसूत्रचूर्णि ]	१टि०,७टि०,	*ज्ञाणविभत्ति	[ जैनागम ]	५७	तेरासिय	"	७३,७४	
	१०टि०,११टि०,१७टि०,	ज्ञाणविभत्ति	"	५८	*तेरासिय-तेसिय	[ शास्त्र ]	४९टि०	
	२७टि०,३३टि०,३४टि०,	*ठाण	"	४८,६१,६३	*थूलमद	[ निर्गन्ध-स्थविर ]	७	
	३५टि०,४०टि०,४३टि०,	*णेमी	[ तीर्थकर ]	७	"	"	७,३४	
	५५टि०,५९टि०,६१टि०	णमोक्तार	[ जैनागम ]	३४	०दशवैकालिक	[ जैनागम ]	७४	
०चूर्णिकृत-	[ जिणदासगणि-	*णरगडगमण-	[ हष्टिवाद-		०दशवैकालिक	"	८०टि०	
"कार	४टि०,७टि०,	गंडियाओ	प्रविभाग ]	७७	०	" चूर्णि	८०टि०	
	८टि०,११टि०,१२टि०,	*णंदिसेण	[ निर्गन्ध ]	३४	०	" निर्युक्ति	८०टि०	
	१५टि०,१६टि०,२०टि०,	णंदी	[ जैनागम ]	१	०	" वृद्धविवरण	८०टि०	
	२३टि०,२१टि०,३३टि०,	*णाइलकुलवंस	[ निर्गन्धवंश ]	१०	०	दशाशुतस्कन्ध	८टि०	
	३४टि०,४८टि०,५१टि०,	णाग	[ देव ]	७०	*दसवैयालिय	"	५७	
	५२टि०,५७टि०,५८टि०,	*णागञ्जुग	[ निर्गन्ध-स्थविर ]	१०,११	दसा	"	८	
	५९टि०,६०टि०,६१टि०,	णागञ्जुग	"	१०	*दसाओ	"	५८	
	६६टि०,६७टि०,६९टि०,	णागपरियाणिया	[ जैनागम ]	६०	*दसारंडियाओ [ हष्टिवादप्रविभाग ]	७७		
	७२टि०	णाणपदाद्	[ जैनपूर्वागम ]	७५	०दानसूरि	[ निर्गन्ध-आचार्य ]	५९टि०	

विशेषनाम	क्रम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	क्रम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	क्रम् ?	पत्रम्
*दितिवाय [जैनपूर्वगमसमूह]	४८,६१,	०निगम	[शास्त्र]	४९टि०	पुष्करूला	[जैनागम]	६०	
	७१,७९	*निरयगद्विगमण-			*पुष्करूलियाओ	„	५९	
दितिवात	„ ७१,७२,७९	गंडियाओ [दृष्टिवादप्रविभाग]	७७	*पुष्करंत	[तीर्थकर]	६		
*दीवसागरपण्णति [जैनागम]	५९	निरयावलिया [जैनागम]	६०	पुणिया	[जैनागम]	६०		
दुमपुण्डिय	” ७४	*निरयावलियाओ „	५९	*पुणियाओ	„	५९		
दुसगणि } [विश्वन्थ-स्थविर]	११,१२	०निहक्त	[शास्त्र]	४९टि०	पुराण	[शास्त्र]	७९	
दूसगणि }	१३	०निर्धण्ट	„	४९टि०	०पुराण	„	४९टि०	
*दूसगणि	” ११	निसीह	[जैनागम]	५९	*पुस्तसदेवय	„	४९टि०	
दृष्टिवाद } [जैनपूर्वगमसमूह]	७१	*पञ्चकखाण	[जैनपूर्वगम]	७१,७५	पेढिया	[जैनागम- १८,२६,		
दृष्टिपात }		पञ्चकखाण	„	७६	आवश्यकपीठिका	३१,४४		
देववायग	[नन्दीसूत्रकार]	१३	*पञ्चकखाणपञ्चाद	” ७०टि०	*पोरिसिमंडल	[जैनागम]	५७	
*देविन्दुस्थथभ	[जैनागम]	५७	पण्णति	[जैनागम]	२९	पोरिसिमंडल	„	५८
*देविन्दोववाए	” ५९	पण्णवगा	„	२९,५८,८२	पोडरीय	[द्रव]	६४	
०द्वादशारम्य-	[जैनशास्त्र]	५०टि०	*पण्णवगा	„	५७	*इलदेवगंडियाओ [दृष्टिवादप्रविभाग]	७७	
चक्रवृत्ति		*पण्हावागरणाइ	„	४८,६१,६९	बलिस्सह	[विश्वन्थ-स्थविर]	८	
*धगदत्त	[श्रद्धी]	३४	पण्हावागरणाइ	„	६९,७०	*इहुल	„	७
*धन्म	[तीर्थकर]	७	*पमव	[विश्वन्थ-स्थविर]	७	बहुल	„	८
धरण	[देव]	६०	पभव	„	७	*बहुलसरित्य	„	७
*धरणोववाए	[जैनागम]	५९	*पमास	[विश्वन्थ-गणधर]	७	(बलिस्सह)		
०नन्दिवृत्ति	” ३४टि०,३५टि०	*पमादप्पमाद	[जैनागम]	९७	*बंमदीवग	[विश्वन्थशाखा]	९	
०नन्दी-सूत्र	” २३टि०,३२टि०,	पमादप्पमाद	„	९८	बंमदीवग	„	९	
	३८टि०,४२टि०,	*पाइण्ण	[गोत्र]	७	०बाहृस्पत्य	[शास्त्र]	४९टि०	
	६१टि०,६७टि०,	०पादिकसूत्रटीका [जैनागम]	५९टि०		बिंदुसार	[जैनपूर्वगम]	३२,४९	
	६८टि०,८२टि०	० ” वृत्ति „	५७टि०		०बृहत्सद्ग्रहणी [जैनशास्त्र]	२४		
०नयचक्र	[शास्त्र]	९०टि०	*पाणाउंड-यु	[जैनपूर्वगम]	७४टि०,	ब्रह्मी	[लिपि]	४४
नंदी	[जैनागम]	५७			७५टि०	०भगवती	[जैनागम] २३टि०,२६	
*नागपरियागियाओ	” ५५	*पाणाय	„	७४,७५	भगवती	„	३०	
*नागपरियावगियाओ	” ५९टि०	पाणायुं	„	७६	भद्रगुत्त	[विश्वन्थ-स्थविर]	८टि०	
*नागपरियावलियाओ	” ५९टि०	०पाणिनीयधातुपाठ	[शास्त्र]	१४,१७	*भद्रबाहुगंडियाओ [दृष्टिवादप्रविभाग]	७७		
*नागसुहुम	[शास्त्र]	४९टि०	*पायंजली	„	४९टि०	*भद्रबाहु	[विश्वन्थ-स्थविर]	७
*नाणण्वात	[जैनपूर्वगम]	७४	पायीगणि	[गोत्र]	७	भद्रबाहु	„	७
*नामसुहुम	[शास्त्र]	४९	*पास	[तीर्थकर]	७	०भम्मी	[शास्त्र]	४९टि०

विशेषनाम	क्रिम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	क्रिम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	क्रिम् ?	पत्रम्
*भरह	[ क्षेत्र ]	१८,५१	*महागिसीह	[ जैनागम ]	५८	*रायपसेणिय-सेणीय-सेणइय		
भरह	"	२२,५१	महागिसीह	"	५९		[ जैनागम ]	५७,५७टि०
*भागवत	[ शास्त्र ]	४९टि०	*महापच्चक्षवाण	"	५७	रितम्	[ तीर्थकर ]	२,२६
भारध	"	५०	महापच्चक्षवाण	"	५८	*रुयग	[ गिरि ]	१८
*भारह	"	४९	*महापण्णवणा	"	५७	स्थग	"	२४
भूतदिण [ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	१०,११		महापण्णवणा	"	५८	*रेवदण्कखत [ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	९	
*भूयदिण	"	११	*महाविदेह	[ क्षेत्र ]	५१	रेवतिवायग	"	९
भूयदिन	"	१०टि०	महाविदेह	"	२२,५१	*लेह	[ शास्त्र ]	४९टि०
मधुरा	[ नगरी ]	९	*महावीर	[ तीर्थकर ]	१टि०,२	लोगविंदुसार [ जैनपूर्वागम ]	७४,७५,७६	
*मरणविभत्ति	[ जैनागम ]	५७	महावीर	"	७	*लोगायत } [ शास्त्र ]	४९,४९टि०	
मरणविभत्ति	"	५८	*मंडलप्पवेस	[ जैनागम ]	५७	णगायत } [ शास्त्र ]		
०मलयगिरि [ निर्ग्रन्थ-आचार्य ]	३टि०,		मंडलप्पवेस	"	५८	लोहिच-लोभिच [ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	११	
	४टि०७टि०८टि०,		*मंडिय	[ निर्ग्रन्थ-गणधर ]	७	*लोहिच	"	११
	१०टि०,१७टि०,		मंदर	[ गिरि ]	२४	*ब्रह्मसेसिय-वन्ति० [ शास्त्र ]	४९,४९टि०	
	२०टि०,२३टि०,		*मादर	[ गोत्र ]	७	*वग्माचूलिया-वंग० [ जैनागम ]	५९,	
	२७टि०,३२टि०,		मादर	"	७		५९टि०	
	३३टि०,३४टि०,			[ शास्त्र ]	४९	*वग्धावच्च } [ गोत्र ]	७	
	३५टि०,३७टि०,		माधुरा वायणा [ जैनागमवाचना ]	९		*तुंगिय } [ गोत्र ]		
	४३,टि०,४८टि०,		मानुषोत्तर	[ गिरि ]	८२	*वच्छ	"	७
	५०टि०,६०टि०,		*मुणिसुव्य	[ तीर्थकर ]	७	वच्छ	"	७
	६३टि०,६६टि०,		*मूलपदमाणुओग [ द्विष्टादप्रविभाग ]	७६	*वण्हिदसातो [ जैनागम ]	६०		
	६७टि०		मूलपदमाणुओग	"	७६,७७	वण्हीदसातो	"	५९
०मलयगिरिवृत्ति [ नन्दीसूत्रटीका ]	३टि०,		०मुगपलिरुत	[ शास्त्र ]	४९टि०	*वण्हीयातो	"	५९टि०
	३६टि०,३९टि०,		*मेतज्जन्यज्ज	[ निर्ग्रन्थ-गणधर ]	७,७टि०	*वद्रमाण+सामी [ तीर्थकर ]	७,६०	
	४०टि०,५२टि०,		मेह	[ गिरि ]	४,८१,८२	*वरुणोवदाए० [ जैनागम ]	५९टि०	
	५८टि०,५९टि०		*मोरियपुत	[ निर्ग्रन्थ-गणधर ]	७	*ववहार	"	५८
*मङ्गि	[ तीर्थकर ]	७	०यज्ञकल्प	[ शास्त्र ]	४९टि०	*वाउभूति [ निर्ग्रन्थ-गणधर ]	७	
*महलियाविमाणपविभत्ति [ जैनागम ]	५९		योग	"	४९टि०	*वागरज [ शास्त्र ]	४९	
महलियाविमाणपविभत्ति	"	५९	रत्णप्पभा	[ नरक ]	२४,२९	*वायगवंस [ निर्ग्रन्थवंश ]	९	
*महोक्ष्यसुत	"	५७	*रथगप्पभा	"	२३	वायगवंस	"	९
*महागिरि [ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	७		*रथगावली	[ शास्त्र ]	४९टि०	*वायमूढ [ निर्ग्रन्थ-गणधर ]	७टि०	
महागिरि	"	८	*रामायण	"	४९	वासिनु	[ गोत्र ]	८

विशेषनाम	क्रिम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	क्रिम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	क्रिम् ?	पत्रम्
०वासिष्ठ	[ योद्र ]	८५०	०बृत्तिकृत्-कर्तुं [ नन्दी- ११५०, १२५०,			*सद्गुरुंतं	[ शास्त्र ]	४९
*वासुदेवगंडियाऽमो [ हृषिवादप्रविभाग ]	७७		टीकाकाटौ- १५५०, १६५०,			सदपाहुड	[ जैनशास्त्र ]	९
*वासुपुज्ज	[ तीर्थकर ]	६	श्रीहरिभद्र- २३५०, ३०५०,			*समवाम	[ जैनागम ]	४८, ६१, ६४
विजणुप्पवात्	[ जैनपूर्वागम ]	७६	मलयगिर्या- ३१५०, ३३५०,			समवाय	"	६४
*विजणुप्पवाद्	"	७४, ७५	चार्यौ ] ५०५०, ५२५०,			०समवायाङ्ग	"	६३५०, ६५५०,
*विजाचरणविणिष्ठम् [ जैनागम ]	५७		५७५०, ५८५०,				६६५०, ६७५०,	
विजाचरणविणिष्ठम्	"	५८	६०५०, ६७५०,				६८५०, ६९५०,	
*विजाणुप्पवाद् [ जैनपूर्वागम ]	७४५०,		६९५०, ७२५०				७०५०, ७१५०,	
	७५५०						७२५०, ७४५०	
*वित्त	[ निर्गन्ध-गणधर ]	७	०वेद	[ शास्त्र ]	४९	०समवायाङ्गसूत्रवृत्ति	"	७४५०
*विमल	[ तीर्थकर ]	७	०वेद	"	४९५०	*समुद्राणसुय	"	५९
विमलशाहग	[ तीर्थकर ]	५७	वेद	"	५०	समुद्राणसुय	"	६०
*वियाह	[ जैनागम ]	६५	वेलधेरे	[ देव ]	६०	*ससि	[ तीर्थकर ]	६
वियाहचूला	"	५९	*वेलधोववाण	[ जैनागम ]	५९	*संडिलु	[ निर्गन्ध-स्थविर ]	८
विवागसुत	"	७०, ७१	वेसमणे	[ देव ]	६०	संडिलु	"	८
*विवागसुय	"	४८, ६१, ७०	*वेसमणोववाण	[ जैनागम ]	५९	*संती	[ तीर्थकर ]	७
*विवाह	"	६५५०	*वेसियं } [ शास्त्र ]	४९	*संभव	"	७	
*विवाहचूलिया-वियाह०	"	५९, ५९५०	*तेसियं } ४९५०		*संसूत्र	[ निर्गन्ध-स्थविर ]	७	
०विशेषज्ञवती [ जैनशास्त्र ]	२८, २९, ३०		*तेरासियं } ४९५०		संभूय	"	७	
०विशेषावश्यक [ जैनागम ]	२३५०,		०वैशिक	"	*संलेहणासुत	[ जैनागम ]	५७	
	८२५०		०वैशेषिक	"	*साई	[ निर्गन्ध-स्थविर ]	८	
०विशेषावश्यक-	{ "	३२५०	०व्यवहारभाष्य	[ जैनागम ]	४९५०, ६१	०सामरानन्दसूरि[ निर्गन्ध-आचार्य ]	५५५०	
महामाध्यमलधा-	{ "	३८५०, ४२५०	०व्याकरण	[ शास्त्र ]	४९५०	साती	[ निर्गन्ध-स्थविर ]	८
रीयटीका-वृत्ति	{ "	५२५०	शक्तराज	[ राजा ]	८३	*सामज	"	८
विसेसावस्सग	"	३२	०शाणिडल्य	[ निर्गन्ध-स्थविर ]	८५०	सामज	"	८
*विहारकृष्ण	"	५७	०शिका	[ शास्त्र ]	४९५०	सामादिय	[ जैनागम ]	३२, ४९
विहारकृष्ण	"	५८	सक	[ अमण्डिशेष ]	४	०सांख्य	[ शास्त्र ]	४९५०
वीतरागसुत	"	५८	*सगमदियाऽमो-सयम०-	[ शास्त्र ]	४९,	*सिंजंस	[ तीर्थकर ]	६
*वीयरायसुत	"	५७	संगम०-सदम०-सगडम०		४९५०	सिंधु	[ नदी ]	६४, ८२
*वीर	[ तीर्थकर ]	२	सगर	[ चक्रती ]	७७	*सीयल	[ तीर्थकर ]	६
*वीरिय	[ जैनपूर्वागम ]	७४, ७५	*सच्चण्पवाद्	[ जैनपूर्वागम ]	७४, ७५	*सीह	[ निर्गन्ध-स्थविर ]	९
वीरियप्पवाय	"	७६	सच्चण्पवाद्	"	७५	सीहवायक	"	९

विशेषनाम	क्रम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	क्रम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	क्रम् ?	पत्रम्
सुद्धित	[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	८	सेजंभव	[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	७	*हारिय	[ गोश ]	८
सुपडिबद्ध	"	८	हर	[ देवविशेष ]	४	हारिय	"	८
*सुपास	[ तीर्थकर ]	६	हरि	"	४	०हारियूत्ति [ हरिभद्रसरिष्ट- नन्दीमूत्रूत्ति ]	३४०,	
*सुपभ	"	६	०हरिभद्रसूरि [ निर्ग्रन्थ-आचार्य ]	३४०,		५४०,९४०,		
सुबुद्धि	[ अमात्य ]	७७		४४०,७४०,८४०,		३६४०,३९४०,		
*सुमति	[ तीर्थकर ]	६		१०४०,२०४०,		४०४०,५२४०,		
सुवण्ण	[ देव ]	७०		२४४०,२७४०,		५९४०		
*सुहथि	[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	७		३२४०,३७४०,		०हिमवन्तस्थविरावली [ जैनशास्त्र ]	८४०	
सुहथि	"	८		४२४०,४३४०,		हिमवंत [ गिरि ]	१०,६४	
*सुहम्म	[ निर्ग्रन्थ-गणधर ]	७		४८४०,५०४०,		*हिमवंत+खमासमण		
सुहम्म-धम्म	"	७,७४०		६०४०,८०४०		[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	१०	
सुहस्ती	[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	८४०	*हरिवंसगंडियाओ [ दृष्टिवादश्रविमाण ]	७७		हिमवंत+खमासमण	"	१०
सूयगड	[ जैनशास्त्र ]	४८,६१, ६२,६३	*हंभीमासुरक्ख-रुक्ख	[ शास्त्र ]	४९,	०हेतुविद्या [ शास्त्र ]	४९४०	
*सूरगण्डिति	"	५१	*०हंभीमासुरलक्ष		४९४०	हेमवंत	[ क्षेत्र ]	२२
सूरपण्णति	"	५८	०भंभीयमासुरक्ख		४९४०			
*सेजंभव	[ निर्ग्रन्थ-स्थविर ]	७	०हंभीयमासुरक्ख		४९४०			

## पञ्चमं परिशिष्टम्

**नन्दीसूत्र-तच्चूर्णन्तर्गतानां विषय-च्युत्पत्त्यादियोतकामां**

**शब्दानामकारादिवर्णक्रमेणानुक्रमणिका**

[अस्मिन् परिशिष्टे \*पताङ्कपुष्पिकाचिह्नाङ्किताः शब्दाः नन्दीमूलसूत्रान्तः सूत्रकृता स्वयं व्याख्याता ज्ञेयाः, +पताङ्कचतुष्कांकाचिह्नाङ्किताः शब्दाः चूर्णिकृता ग्रन्थसन्दर्भे स्वयं प्रयोजिता ज्ञेयाः, शेषाश्च शब्दाः सूत्रान्तर्गताः चूर्णिकृता व्याख्याता अवबोधन्याः ।]



शब्द	पञ्च-पंक्ति	शब्द	पञ्च-पंक्ति	शब्द	पञ्च-पंक्ति
अ	+अणियोग	उद्दीप	७६-१५	अभिलावक्तव्यर	४४-१७
अकारण	८०-१३	अणागुणामिक	१७-२१	अरहेत	४८-२०
अकिञ्चित् [ णहिन्यवादी ]	४-९	अगुकद्वय	१७-२	अलात [ जलतं दारयं ]	१६-२२
अकग्नि [ 'अश्व व्यासो' गाण्ड्यण- ताए अस्थे असइ ति इच्छें जीवो अक्षम्बो, गाणभावेण वादेति ति भणिते भवति । अहशा "अश भोजने" इच्छेतस्स वा सम्भवे असइ ति अक्षम्बो, पालयति भुल्कस्ते चेत्यर्थः । ]	१४-१५, १६	अगुनर	६९-४	अवगाढ	५-१५
अकत्वर	[ णाणं ]	अगुत्तरोववाद्य	६९-५	अवग्रह	३४-१९
अखंड [ अविराधित, निरतिचार ]	३-१७	अगेगसिद्ध	२७-९	अवधि	१३-२३, २४
अगमिय [ अण्णोण्णवज्जरभिधाणद्वितं जे पद्धिजति तं अगमियं ]	५६-२४	अगंतर	२६-३	अवथण [ कुच्छितवयण ]	४७-२७
अगग [ परिमाण ]	५२-१९ । ७५-२२	अगणित	५०-७	अवलंबणता	३५-२६
अगोगीत	७५-२२	अगणित [ अण्णाणं इत अण्णाणित ]	५०-७	अवहि	१५-११
अचरमसमयभवत्थकेवल्लग्नाण	२५-२८	अतिथि	२६-१३	अवात	३६-२३, ४१-१६
अचरिम	२५-२७	अतिथिकरसिद्ध	२६-१७	अवाय	३४-२०
अजोगीभवत्थकेवल्लग्नाण	२५-१६	अतिथ्यासिद्ध	२६-१५	*अवाय	४३-११
अजोगी [ सञ्जोगनिहङ्गो, सहस्रसभावद्वितो ]	२५-१६	अथ	११-२१	अवि	७५-२२
अज [ आर्य आद्य वा ]	८-९	अथिण्ठिष्ठपवाद	७५-२५	अवोह [ पूर्वधम्मपरिषागे सधम्माणुगतावधारणे य 'अवोहो' ति अवातो ]	४६-११, १६
		अथोगह	३५-१३, १४, १५	अवंज्ञा	७६-८, ९
		अनुयोग [ अनुरूपो योगः अनुयोगः ]	७६-१८	असणिण्सुत	४५-२१
		अपञ्जतय	२२-१९	असील [ कुच्छितसील ]	४७-२७
		अभाव	८०-७	असुतनिस्सित	३२-२६
		अभिनिवोध	१३-१८	अंगपविद्वु	५७-३, ५
				अंगवाहिर	५७-४, ५

शब्द	पत्र-पंक्ति	शब्द	पत्र-पंक्ति	शब्द	पत्र-पंक्ति		
अंगुलपुहत्	१९-१५	इंदिय	१४-२८	उबवात्	६९-४		
अंतकड	६८-७	इंदियपचक्ख	१४-२९	उबासग	६७-१०		
अंतकडदसा	६८-८,९	ईतियापज्जति	२३-१५	उबासगदसा	६७-११		
अंतगतमोषिणाण	१६-५,६	ईहा [ १ जे पुण हेत्कारति- साधणेहि सक्षमत्वस्य ]	३४-२०;	उसण्ण	१८-२०		
आ							
आउटणता	३६-२२	विसेसधम्माभिसुहालोक्या	४६-१०,	एकसिद्ध	२७-९		
आउर	५८-२३	तस्तेवउत्थस्य अधम्मविसुहं	१३	ओ			
आउरपचक्खाण	५८-२५	असम्मोहमविकलमत्वपरिच्छेदकं		ओगिण्हणता			
आघविज्ञ [ आख्यायते ]	६२-२	निते यं तं ईहा (पत्र ४१), २ अतीतकाले सुदीहे 'वि इदं तदिति कृतमण्डूर्तं वा सुमरति, वह्माणे य इदिय-योहंदिएणं वा		ओमत्था			
आगा-शा	८१-२,६	अण्गतरं संदाइअत्थसुवलद्दं अण्गत- वद्वेगाधम्मेहि ईहृ ति ईहा (पत्र ४६), 'किमेय ?' ति ईहा (पत्र ४६) ]		ओसण्ण			
आणुगामिय	१५-२७	क					
आतविसोही	५८-१७	*ईहा	४३-१०	कड	[ कित्तिम ]	६२-२१	
आता	५८-१६	उ					
आदेस [ १-प्रकार, ३-सुतं ]	४२-१५,१९	उद	६-५	कण्ठ		५८-२०	
आभिगिर्वोषिक	१३-१८,१९, २०,२१	उक्का [ दीविया ]	१६-२२	कण्ठवडेसिया		६०-११	
आभोयणता	३६-६०	उक्कालिय	५७-१५	कण्ठसुत		५७-२४	
आय	१३-२६	*उगगह	४३-१०	कण्ठिया		५९टि०५	
आयपवात्	७६-३	उघाडितत [ उद्घाडितक ]	५६-५	कण्ठियाकण्ठिय		५७-२३	
आयार	६१-२०	उज्जल	६-१५	कम्म		३-२३	
आल [ अधिकयोग्युक्तः ]	४-३	उजुमई	२२-२४	कम्मपवाद		७६-४	
आवागसीसगा 'आवागसीसगं' ति४०-१,२		उट्टाणसुत	६०-१	+क्यार [ देश, से. कच्चवर ]		३-१७	
आपागद्वाणमेव, अहवा आपाग- द्वाणस्य आसणं समेता परिपेरतं, अहना आपागमुत्तारियाण जे ठारं तं आपागसीसयं भण्णति ]		उपायपुब्व	७५-२०	करणशक्ति		४७-५,६	
आसइज्जंति [ आश्रीयन्ते ]	६४-२३	उवउज्जत	२४-५	कल्पिका		५९टि०५	
आहारपज्जति	२२-१३	उवदेस [ उवदिसणसुवदेसो, उपदेसो ति वा आदेसो ति वा पृष्ठवण ति वा पूर्ववण ति वा एर्गद्वा ]	४६-६	कहण		१२-१	
इ							
इडिटपत्त	२२-२१	उवदंसणा	५२-२	कंत		६-१८	
इथिलिंगसिद्ध	२७-८	उवधारणता	३५-२५	कारण		८०-१२	
क							
कलिओवादससणी		उवरिमखुडागपतर	२४-१८	कलिय		४६-८;५७-१४	
				किरिया		६८-१०,११,१२	
				किरियाविसाल		७६-११,१२	

शब्द	पत्र-पंक्ति	शब्द	पत्र-पंक्ति	शब्द	पत्र-पंक्ति
कुच्छी [ दो हस्ता (द्विस्त- १९-१५ प्रमाणम्) ]		च	५८-८,२२	जाया	[ संत्रमज्ज्ञा ] ६२-१
कुवलय [ १ कुविलतो उवलो ९-१३ कुवलयो; सो य कणहकायो, २ शीलुण्डं, ३ रथणविसेसो ]		चरण	५८-२२	जीत	[ सुतं ] ८-३
कूड	६४-४	चरणविही	५८-२२	जीव	१-२०
कोट्ट	३७-११	चरिम	२५-२६	जीवभाव	२८-८
ख		चहित (दि०) [ मनोरथहष्ठिदृष्ट ] ४९-१		ओई [ महगादिलितो जलंतो १६-२३ अगणी ]	
खाणी	११-२०	चित्त [ चित्तिज्ज्ञ जेण तं चित्तं ] ५-१९		जोणि	१-१७
खुइ	५९-८	चित्तंतरगंडिका	७७-१३	श	
खुडागमपत्र	२४-८	चित्र	७७-१३	शाण	५८-१४
ग		चित्रा [ जो यडणागसे य चित्रयति 'कहं वा त तत्थं कातवं इ' इति ] ३६-१३;		शाणविमत्ती	५८-१५
गण	५८-१०	अण्णोण्णालेखणाणुगतं चित्तं		ठ	
गणिविजा	५८-१४	चित्रा, २ अणेगहा		ठंक	६४-४
गदिय(दि०) [ ख्यात ] ११६०११		संकरपकरणं चित्रा (पत्र-४६)]		ठ	
गम्भ	[ पोषकेसरा ] ११-३	चुड़ली [ आगे पञ्जिलिता तण्पिली ]	१६-२२	ठवणा	३७-९
गमिय	५६-२३	चुछ	५७-२५	ण	४२-१३, १४;
गवेशणा [ १ वीसस्पयोगु- ३६-१२; नभवणिष्यमणिष्यं चेत्यादि ४६-१२, गवेशणा, २ अभिलसितत्ये १५ चेव अपहृण्यज्ञमाणे जायणा गवेशणा (पत्र ४६) ]		चुछकप्पसुत	५७-२५		४७-४, ५;
गंडिका	७७-१३	चूला	७९-११	पंदिघोस	३-५
गाढ	५-१५	चोदक	३८-६, ७	णंदी	१-२, ८
गिहिलिंगसिद्ध	२७-४	चोदित	५०-२३	णाग	६०-७
गुण	४-३	छ		णाणपरियाणिय	६०-७
*गुणपञ्चतिम-३य	२०-१३; २३-१४	छुम्बथ	२४-३	णाण-नाण	१३-११, १२, १३; २०-९
*गुणपद्धिवर्ण	१५-१८	छन्द	५०-८	णाणप्पवाद	७५-२७
गुह [ एणाति शास्त्रमिति गुहः ]	२-२	ज		णाय	६६-८
गोयर	६१-२०	जग [ १ लेखलोगो १-१७; २-१, ३ (पत्र १), ३ सव्यसञ्चिलोगो, ३ सत्त्व-प्राणी (पत्र २) ]		णिच्च	५६-५
घ		जतपडागा [ संजयपताका ] ३-५		णिच्चं	४-१०
घोस	३५-२१	जमलटुक्ति	१७-३	णोइंदिय	३५-१६
		जयति	१-१७; २-२०	णोइंदियत्यावग्गह	३५-१९
		जलोह	४-१	णोइंदियपञ्चकस्तु	१५-११
		जसवंस	९-६	त	२५-१

शब्द	पत्र-पंक्ति	शब्द	पत्र-पंक्ति	शब्द	पत्र-पंक्ति
+तवोमता=तपेमयाः	३-१		प	पमादप्यमाद	५८-२,३
तित्व	२६-११,१२	पद्मणग	६०-२३,२४	परंपरसिद्धकेवलणार्ण २६-२; २७-२२	
तित्वकरसिद्ध	२६-१६	पउर	६-११	परिकहिद्व	१७-३
तित्वसिद्ध	२६-१०	पग्नम्	११-६	परिकम्म	७२-१६
तिरियलोगमञ्ज	२४-१०	पचक्त्व	१४-१७; ३१-८	परिधोलण	१७-२३
तिसमयाहास्य	१८-३	पचक्त्वाग्यपवाद	७६-६	परित्रुड	४-५, २०
तूरसंवात्	१-४	पचाउड्ण+ता	३६-२३	परोक्त्वणाण	३१-५
तेलोक	४८-२५	पज्ञत्य	२२-१८	पछ्व	६४ टि०५
थ		पज्ञती	२२-११	पसत्थज्ञवसाण	१८-२१
थिर	४-२	पज्ञय	१३-२५	पसिण	६९-२४
द	६-५	पज्ञव	१३-२४	पसिगापसिण	६९-२४
दरित	३५-१७	पज्ञात	१३-२६	पंक	४-१
दब्वमण		पडिवर्ती	६२-५	पाणायुं	७६-१०
दर्शिदिय	१४-२८	पडिवाती	१९-१४	पारियङ्ग	३-९
दस-सा	६८-७,८	पद्मसमयसजोगिभवत्थ-		पावशणी	१२-५
दसा	६०-१५	केवलणाण	२५-१८	पासओ अंतगय	१६-१०
दंसण	२०-१०	पद्मसमयअजोगिभवत्थ-		पासणता	२४-३
दंसिज्जिति	५२-२	केवलणाण	२५-२२	पासतो	१७-२
दिट्ठिवायोवदेस	४७-१६	पणगर्जीव	१८-३	पुष्कचूला	६०-१३
दिट्ठिवात्वसणी	४७-२०	पणीत	४९-३	पुष्किया	६०-१३
दिट्ठिवात्सणी	४७-१९	पणोल्लण	१६-२३	पुरतो	१६-२३
दुआधरित	४-१०	पण्णते १३-१३, १४, १५, १६, १७		पुरतो अंतगय	१६-९, ११; १७-५
दृष्टिपात	७१-७	पण्णवगा	३८-७,८	पुञ्च	७५-१६
दृष्टिवाद	७१-६	पण्णवगा	५८-१	पूङ्य	४९-४
ध		पण्णविज्जिति	५२-१	पेरंत	१७-२२
धम्मकहा	६६-९,१०	पण्णा	१३-१४,१६	पोरिसिमंडल	५८-७
धरणा	३७-७	पण्ह	६९-२०	पोरिसी	५८-४
धारणा	३४-२१; ३७-९;	पतिद्वा	३७-१०	प्रज्ञापना	५८ टि०१
*धारणा	४१-१८	पत्तेयकुद्ध	२६-२३		
	४३-११	पत्तेयबुद्धसिद्ध	२६-२८	+फङ्ग	१७-१२
नाण	२०-९	पदीव	१६-२३		
नाणेकखर	४४-१५	पञ्चार	६४-५	बंधु	२-९
निरियावलिया	६०-९	पभव	२-२१	बुद्धबोधित	२६-२८

शब्द	पत्र-पंक्ति	शब्द	पत्र-पंक्ति	शब्द	पत्र-पंक्ति
बुद्धबोधितसिद्ध	२७-१	मरण	५८-१५	बागचूला	५९-११
बुद्धि	५०-९,१०	मरणविभक्ति	५८-१६	बहूदतु	९-४
बुद्धी	३६-२४	महत्थ	११-२०,२१	बहूदी	१८-२०
<b>भ</b>		महल्ल	५९-८	बण	५-२१
भगवंत्	४८-२१	महाकथसुत	५७-२५	बण्णक्खर	४४-१८
भद्रम्	२-२७	महात्मा	२-२३	बण्हिदसामो	६०-१५
भवत्थकेवल्लणाण	२५-११	महापञ्चक्खाण	५८-२७	बर्मेति	५०-२५
भवपञ्चतिज	२०-१३	महापण्णवण्ण	५८-१	बय	८-५
भाव	८०-६	महित	४९-२,३	बर	५-१६;६-१८
भावस्थ	१८-८	मंडलपथवेस	५८-८	बंजण	३५-२१
भाविदिथ	१४-२९	मंता	१७-१३	*बंजणक्खर	४५-१
भासापञ्जति	२२-१६	माता	६२-१	बंजणक्खर	४५-४
<b>म</b>		माधुरा वायगा	९-२४	बंजणोगह-णावगह	३५-४,५,६,७
मगणा [ १ विसेसत्यस्त	३६-११;	मिञ्चा	५०-७	बंस	९-५
अण्णय-बहूरेमध्यमसमा- ४६-११,१४		मिञ्चादित्तित	५०-७	बागरण	६९-२०
लोयण मगणा मण्णति (पत्र-२६)।		मुदिया	९-१०,१२	वातगा-यगा	९-५
विसेसधम्मणेसणा मगणा, २ अ-		मूलपढमाणुयोग	७७-२,३	वायक-ग	९-२,११
मिलसियत्थस्त मणोवयणकाएहि		मेशा	३६-१	विडलतराग २३-६,९,११;२४-२९,	
जायण मगणा ( पत्र ४६ ) ]		<b>र</b>		३०,३१	
मग्नो अंतगय १६-१०,१४;१७-६		रथ	३-२३	विक्रम	२-१६
मग्नो	१७-१	स्वति	६-११	विज्ञपुष्पवात	७६-७
मज्जगत-य	१६-२,७,८,२०;	रुयग [ अहूपदेसो रुयगे,	२४-९	विजा	५८-८,१०
	१७-९	तिरियलोगमज्जं ]		विजाचरणविणिच्छय	५८-१०
मणपञ्जति	२२-१७	रुद्ध	५-१४	विज्ञुत	६-१४
मणपञ्जयणाण-नाण	१३-२६,२८	<b>ल</b>		विगिच्छय	५८-९
मणपञ्जव	१३-२७	लद्धिजक्खर	४५-१०	विष्णाण	३६-२५
मणपञ्जव + नाण	१३-२५,२८	लेस्सा	४-१५	वितिमितराग	२३-७,९,११;
मणपञ्जाय + णाण	१३-२७	लोगविदुसार	७६-१४	२५-४,५	
मणित	२४-२	<b>व</b>		विधि	१३-१३
मति	५०-९,१०	वक्खाण	११-२२	विपाक	७०-२३
मतिव्यणाण	३२-९,१०	वक्खाणकहण	११-२२	विपाकसुत	७१-१
मतिणाण	३२-९,१०	वगा	५९-१०;६६-११;	विपुलमती	२२-२६
मनःपर्यय	१३-२५		६८-१२;६९-८	विमती	५८-१४,१५

शब्द	पत्र-पंक्ति	शब्द	पत्र-पंक्ति	शब्द	पत्र-पंक्ति
विमाणप्रिभत्ती	५९-७	श्रुतम्	१३-२२	सञ्चरण	२-२७
वियाणअ	१-१८, १९	श्रुतम्	१३-२२	सञ्चरहुअगणिजीव	१८-५
वियाह	६५-१२	स		सञ्चरो	१७-११, १२
वियाहचूला	५९-११	सद्वलेसमाव	२५-१६	संकिञ्चित्	१९-५
विनायते	६-११	सञ्चयवाद	७६-१	संज्ञा	४५-२६
विविध	६२-२५	सजोगिभवत्थकेवलणाण	२५-१५	+संताणचोदक	४७-९
विसाल	८६-१२	सगैरी	२६-१५	+संवरे	९-२६
विसुद्धतराग	२३-६, ९, ११;	सञ्जाय	११-४	सलेहणासुत	९८-१९
	२५-३, ५	*सण्णकखर	४४-२४	+संवद्ध [घन]	२४-१२
विहार	९८-२०	सण्णकखर	४४-२६	संवर	६-९
विहारकण्ठ	९८-२१	सण्णिसुत	४५-२१, २६	संसय	४१-८
वीतरागसुत	९८-१८	सण्णी-संज्ञी	४५-२१, २६	सिद्धकेवलणाण	२५-१२; २६-१
वीमंसा [ १ जिष्ठा-५णिष्ठादि-	३६-१३	+सतत्त [ सं. स्वतस्व ]	२८-८	सुत	१३-२२
एहि दब्ब-भावेहि विमरिसतो ४६-१३,		सतंबुद्ध	२६-१८	सुतणिस्तिसत	३२-२५
वीमंसा भाष्टि ( पत्र ३६ ), १५, १६		सञ्चाव	११-१३, १४	सुत	७४-७
२ आत-पर-इह-परथयहिता-		सम	६४-२२	सुयज्ञाणाण	३२-१०, ११
अहितविमरिसो वीमंसा ( पत्र		समता	१७-१३	सुयणाण	३२-१०, ११
४६ ), ३ अहवा संक्षिप्तो		समाण	५०-२४	सुसवण	
चेत्र विधिधा आमरिसणा		समुद्धाणसुय	६०-६	सुसवण	१२-२, ३
वीमंसा ( पत्र ४६ ) । ]		समंता	१७-१२	सूरपणती	५८-३
वीरियप्रवाद	७५-२३	सम्भत	५१-२		
वृहू	६३-१०	संयंबुद्धसिद्ध	२६-२३		ह
वृत्ती	६२-२	सरिपञ्जती	२२-१४	हायमाण-हूरसमाण	१९-४
वेत्ता	४-१९	सल्लित	२-१५	हेत्तिमखुडागप्तर	२४-१९
वेद	६२-५	सलिंगसिद्ध	२७-१	हेतू	८०-१०
वेणहय	६१-२१	सवण	१२-२	हेतूबदेसमण्णी-हेतुवायम् <sup>१</sup> ४७-१०, ११	
व्यञ्जन	४५-२	सवणता	३५-२६	हेतूबदेससण्णी-हेतुवायस् <sup>२</sup> ४७-४, १०	
व्यञ्जनाक्षर	४५-३				

## चूर्णिसमन्वितस्य नन्दिसूत्रस्य

### शुद्धिपत्रकम्

पृष्ठम्	पद्धकिः	अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठम्	पद्धकिः	अशुद्धम्	शुद्धम्
१	६	‘भाषो	‘भाषो(?) जीवो)	१७	२४	पसात्येसु	पसात्येसु
१	१२	भणंति—	भणंति ।	१७	२७	५-६-११	५-६
२	११	ति	ति—	१७	२८	९	९ ‘स्स परि-
२	५	तदो	तदो,				पेरतेहि परि-
३	५	नियमो	नियमो,				पेरतेहि सर्वासु
५	१३	वा उज्जल़	वाउज्जल़				सूत्रप्रतिषु द्वारि-
५	१९	चितिज्जइ	चितिज्जइ				मलय० ॥ १०
६	११	प्रचुरः	प्रचुरः,	१७	२८	१०	१३
७	३	उसम०	उसम०	१७	२८	१२	१२-१३ ओहिङ्गाणं
७	१४	तुगियायणे	‘तुगियायणे’				डै०ल० ॥ १४
८	२७	अष्टाविशं	सप्तविशं	१७	२९	१३	१५
९	२३	‘पेहाभा०	‘पेहाड्भा०	१८	१०	‘साओ	‘सा उ
१०	१०	‘खमासणे	‘खमासमणे	२०	८	तेयाभासं	तेया-भासं
११	८	भूतादण्ण	भूर्यादण्ण	२०	२४	४ थी टिप्पणी निरपयोगिनी ।	
११	१०	‘व्यासणा०	‘व्यासणा०	२१	१०	‘गच्छकंति०	‘गच्छवकंति०
११	२४	धारेव्व	धारेव्व । अद्विसा	२२	८	‘व्युसासाउ०	‘वासाउ०
१३	२९	पूर्वार्द्ध निम्नप्रकारेण ज्ञेयम्—		२३	१०	‘शते	‘सते
गमण १ परावर्त्तरगो लाभो ३ मेदाय ४ चहुपरावता ५ ।				२३	१७	ख०	ख०
१४	१४	च०	च	२३	२१	चूर्णिकृता त्र०	चूर्णि-त्र०
१४	१८	समेदं	समेदं ।	२३	२३	वर्णना०	वर्णना०
१४	१९	।	॥	२४	१३	उवरि०	जान उवरि०
१४	२७	।	॥	२४	१४	जाव	०
१६	२०	मञ्जगयं ? से	मञ्जगयं ? मञ्जगयं से	२४	१५	‘लस्याँ०	‘लस्स अ०
१७	२-३	सा(दो)पासय	सापासय(दो पासे य)	२४	१५	सत्तरज्जुओ	सत्तरज्जुओ
१७	३	‘द्विते०	‘द्विते० [का] ।	२५	५	भणिते०	भणिते०
१७	५	समंता०	से० मंता०	२५	५	‘रागं-ति०	‘रागं ति०
१७	१२	तिसच्चा०	ति० सच्चा०	२५	५	‘णाणं च	‘णाणं च०
१७	१३	‘स’	‘स’	२६	१	से० ति० कि०	से० कि० ति०
१७	१६	‘स्स परिपेरतेहि०	‘स्स पेरतेहि०	२७	७	भवति०	भवति०
		परिपेरतेहि०	पेरतेहि०	२७	१३	‘द्विताअ०	‘द्विता अ०
१७	१७	ओहिणाणं	ओहङ्गाणं	२७	१५	अण्णोण्ण०	अण्णो० (?) ण्ण, ण्ण०
१७	१७	एवमेव	एवमेव	२७	१३	‘पर्यब०	‘पर्यब०
१७	१८	ओहिणाणं	ओहिणाणं	२८	१०	‘दिया, अजीवा०	‘दिया० अजी[वभा]वा०
१७	२०	ओहिणाणं	ओहिणाणं	२९	२९	अणुरतण०	अणु-रतण०
१७	२३	अगणि०	अगणि०	३०	१५	सिद्धाधि०	सिद्धाधि०
				३०	३०	श्रुत	श्रुत

पुष्टम्	पठन्ति:	अशुद्धम्	शुद्धम्	पुष्टम्	पठन्ति:	अशुद्धम्	शुद्धम्
३१	२०	एवं लक्षणा-ऽभिधा <sup>१</sup>	एवंलक्षणाऽभिधा	४६	१३	चिता	चिता
३१	२५	तः	तः	४६	१९	‘जोगे	‘जोगे
३२	१५	सत्त्वेष	स त्वेष	४७	११	‘विसय[अ]वि <sup>०</sup>	‘विसयवि <sup>०</sup>
३२	२०	‘बृत्ती	‘बृत्ती	४७	२०	समहिति	समहिति
३२	२१	‘बृत्ता <sup>०</sup>	‘बृत्ता <sup>०</sup>	४८	८	सामर्थ्यम्,	सामर्थ्यम्
३६	१६	णोइदियावाए ।	णोइदियावाए ६ ।	५४	३३	तत्त्विमेवः,	‘तत्त्विमेवः,
३८	११	मलगदिङ्गुतेण ?	मलगदिङ्गुते ण ?	५६	२५	वंग <sup>०</sup>	वंडग <sup>०</sup>
		मलगदिङ्गुतेण	मलगदिङ्गुते ण	५९	३	देविदो <sup>०</sup>	देविदो <sup>०</sup>
३९	१	सदाह ?	सदाह,	५९	३०	त्रिमणा	त्रिमणा
३९	५	सहे ति,	सहे ? ति,	६०	२३	शु० ।	शु० हारिष्ठौ च ।
३९	१०	सुमिणे	सुमिणे ?	६१	२८	पहणवगा	पहणवगा
३९	१५	सहो ति	सहो ति	६३	१०	यत	यत्
३९	१५	सहाह,	सहाह ?,	६६	८	‘बृहं’ किञ्च	‘बृहं किञ्च’
४०	१८	‘बोह-	‘बोहग-	६८	११	आहरणा,	आहरणा
४३	१०	उग्गहो,	उग्गहं,	८२	१	सहुम <sup>०</sup>	शुहुम <sup>०</sup>
४४	२	भागितव्या	भागितव्या	८९	६	भवतीतिशा <sup>०</sup>	भवतीति शा <sup>०</sup>
						“ट्रिपणि”	“ट्रिपणी”